## রামার্চ্চনচ ক্রিকা

## হুপ্রদিদ্ধ বোগিপ্রবরেশ— আনন্দ্রন পরমহংস মহেদ্রেরন।

প্রণীতা---

যথৈৰ বটৰীজন্ম: প্ৰকৃত্ত-চ মহাক্ৰম:। তথৈৰ নামৰীজন্ম: জগদেতচ্চনাচন:।

এীযুক্ত শুরুনাথ বিদ্যানিধি ভট্টাচার্য্যেণ

সংশোধিতাভূদিতঃ চ।

( ১ নং গরাণখাটাষ্টাট দাক্ষারণী পুত্তকালয় হইতে )

শ্রীগণেশ<u>চন্দ্র ছো</u>য কর্তৃক

প্রথম স-ক্ষরণ।

## কলিকাতা।

১ নং নিমুগোবামীব লেন দঃ ভারণী ব'ল আমিশ্বনলাল বোব ভারা মুক্তিভ। সন্১২৯৬ সাল। এই পুত্তক ১৮৪৭ সালের ২০ আইনান্নসারে রেজিফীরি করা ছইল। গ্রীগণেশচন্দ্র ঘোষ।

## বিজ্ঞাপন।

ভ্ৰন্মচারীকুলচুড়ামণি মুকুলবন প্রমহৎস মহাশ্রের প্রধান শিব্য প্রাতঃস্মরণীয় অলোকিক প্রভাবশালী বোগি-প্রবর আনন্দ্রন পর্মহণ্দ মহোদয় সংহিতা প্রভতি-শাস্ত্রামুদারে এই '' রামার্চ্চ নচক্রিকা '' গ্রন্থানি প্রণয়ন করিয়াছেন, সার্তিশিরোমণি ধর্মব্যবস্থাপক রঘুনক্ষর ভট্টাচার্যা মহাশয় এই গ্রন্থের উল্লেখ করিয়া স্বকীয় স্থাতিন সংগ্রহ পরিপুষ্ট কনিয়া গিয়াছেন এবং সিদ্ধ পুরুষ প্রধান কুফানন্দ ভট্টাচার্যা প্রণীত তন্ত্রসারে ও ছানে ছানে রামার্চনচন্দ্রিকা সংগৃহীত হইয়াছে অতএব এই এছ-কতকাল যাবং যে, ভারতভবনের অমূল্যরত্ব হইয়াছে তা হার নিশ্চর করা যায়না। ইহাতে যে সকল বিষয় প্রণীত হইয়াছে ভাহার অনেক বিষয়ই শাক্ত বৈষ্ণব সাধারণের আবশ্যকীয়, রামোপাদক মহাশয় দিগের সম্বন্ধে ইহাকে অদ্বিভীয় সাধন সোপান এবং অদ্বিভীয় বান্ধ্র বলিলেও 🚉 অহ্যক্তি হয়না। এছকার অভ্রান্ত মহাপুরুষ ভিলেন 🦠 অত্তর লিপিকরের প্রমাদন্শতই বলিতে হইবে ইহার टकांन टकांन अरण निजास अनरलश हरेशो পড़ियाहरू, मूजनकार्यात कना २ थानि शुष्ठ कत गाहाया निताहिकाम व्यत्नकृष्टलहे शुळकृष्ट्रात्र व्यत्नका त्विया याहा हाक्रजन विरवहना इहेशार्छ जाहारे निरविभिष्ठ हरेशार्छ।

বহুকাল যাবৎ এত দেশে নানা পচারেই মুদ্রণ যার পরিসেবিত হইতেছে কিন্তু মাক্ষেপের বিষয় যে, এই অমৃতময় উপচার দেবকর্নের নয়নপথে পতিত হয় নাই, যাহা হউক পদে পদেই জগতের ক্লচির প্রভেদ দেখা যাইতেছে। আমি মদীয় আজীয় প্রশ্ব শীমুক্ত রাখালদাস কবিরত্ন মহাশয়ের নিকট উল্লিখিত প্রকর্ম ও প্রমোণ্পকার প্রাপ্ত ইইনা সাতিশয় আনন্দের সহিত ইহ। মুদ্রিত ক্রিলাম, এইক্রণ উৎসাহবর্জক গ্রাহকর্নের বিভব পদে প্রতিষ্ঠিত হইলেই স্থানন্দের ভাজন হইব ইতি।

বিশেষ।—কামি এই পুস্তকের স্বয় অংশ্য শুভাশী ভালন এয়ুক্ত বাবুগণেশচক্র ঘোষ মহাশয়ের কর পল্লবে সমর্পণ করিলাম, ইহাতে আমার কোন স্বয় রহিলনা। ইতি।

শ্রীগুরুনাথ শক্ষা 1

## সূচীপত্ত।

Trui :		পৃষ্ঠ
मंभगाठरनः	• • • • • •	
বৰ গ্ৰন্থ কৰা	***	
.च्य शक्त वचनः •	***	• 4
भव निया सक्तर	•••	à
व्यक्ष मीका अक्रानः	***	
च्च निकामि छक्ति क्षेत्रः	•••	
व्यथं जिल्लामि ठकः ( व्यक्षं रुकः )	•••	
चर्च क्रीकावास्त्रः	***	
चर्ष निकामीनाः छ । तांव क्षनः	•••	,
चव वक्नाड कूनरकतः		
चर्च बागापि (छपः	•••	3.0
चर्य कूनाकून हकः	***	
অধ রাশি নকত ফেলনং		5.5
অৰ বাশি চক্ৰং	***	3.9
<b>৯</b> খ নক্ষত্ৰ চক্ৰং	•••	24
অৰ মন্ত্ৰাণাং স্থপ্ত প্ৰবোধ কালঃ	•••	> €
अब क्षण धन अधि कर्णनः	***	4
অথ ঋণি ধনি চক্তং	•••	37
অথ বাশি শুদ্ধি:	•••	2.0
অথ মন্ত্রাণাৎ দশসংস্কাবাঃ	•••	52
অধ শীরামক্ত মন্তোদ্ধার প্রকরণং	•••	રફ
अथ अकांकत मञ्जानतः	•••	<b>S</b>
कार्थ का क्या महाकार	•••	3.9
कार विकृतिस व्याच्यत मन्नाः	•••	逐
অথ দিবিগ চতুরক্ষর মন্ত্রঃ	•••	(d)
भाषे शक्षांकत्र मञ्जः	***	<b>A</b>
<b>अथ वर्ष</b> विश्व वक्षक महमञ्जान हर्दे	•••	58
अथ अक्रीनबाक्कावर् भूतिक मन्त्रामाः	নকসন্ত্রা:-	(a)
चर चाराखानिश्वाः	•••	₹¢
चन कामरीकारि भूक्त व्हाः	•••	२७
অৰ অটাক্ষর মন্ত্রঃ "	*1.	في ا
चार नानाविधनगर्छक् महाहर	***	4
क्षेत्रं धनश्रहाकत्र महाई 🐪 🗥	***	4

## ( 10/0 )

<b>दिय</b> व		् 7्डा
व्यव प्रभाक्त ग्रहः	•••	२१
व्यथ भूनक्ष्याकत यतः		44
काथ विविध चान्याकात मजावतः	•••	Ø
जथ खद्याप्रयाकत मञ्जः	***	由
काथ कडी गर्भाक्षत्र मञ्जः	***	ঠ
कार्थ वाकिः नम्बन्द मञ्जः		<b>২</b> ৯
অধ সপ্তচন্ধারিংশ্যালা মন্ত্রঃ	•••	9.
অথ বড়করমন্ত্র মাহাত্যাং	•••	<b>৩</b> ১
অব সীতারা: বড়কর মন্ত্রানয়:	***	(d)
जार्थ लेक्षान मञ्जापतः	•••	وي
ঋণ ভরত শক্ষরারপায়ং বিণিঃ	•••	Ę,
कार नकान मह सन्नादिनाक्षः	•••	93
व्यथं राजान भ्रष्टमा माहाबार	•••	Ø.
অধ লক্ষণ মন্ত্ৰ জপেন কোগ প্ৰতিকাৰণ	দি বহুৰিণ ফলক্থনং	<b>©8</b>
অথ হতুমতো ময়ঃ	111	৩৬
অৰ অস্য মালামন্ত:	•••	৩৭
व्यथं व्यमा श्वण्डवन निषयः	***	৩৮
व्यथ कामा मन कथनः	••	లస
व्यवश्चिष्ठ इस्तिः ने जाकन भन्नामगः	411	8 •
अवादनन शीहामित्वांत्र माखि अत्यात्र	कथनः	D
व्यथाक नामानिष व्यक्तारशन नाम।विष	क्त लांड क्थेनः	4
व्यव इच्चिम्टाययः		£ 3
অপ হধুমতো২টাকর সূগনরঃ	***	<u> </u>
অথ অসা সালাহন্তে:	***	8.5
অথ রাম পুলারাং গণেশাদি পূলারা	অবিশাকত্বং	D.
ष्मत्र शर्मम गञ्जनशानामग्रः	111	84
व्यथं भ्रम्भानामग्रः	***	×6
कार्य निवना भन्नभागाम्यः	•••	89
व्यव ञ्चरनवृती मजस्यानापयः	•••	8
व्यथ औतामग्रम माहाचार	***	83
অৰ্থস্য বড়কৰ মন্ত্ৰ মাহাল্যাং	***	ক্র
অপ অসা আতি প্রমাণং	***	6.
अर्थ श्रीतान वोकार्थः	***	3
अथ क्षत्रार्थं कथनः	•••	æ S
অৰ স্বন্তাৰ্থ:	***	e >
ज्ञथ कविकारि निनंबः	• • •	# 5

विषय		
भाग छात्रकष कथनः	***	,
व्यव बीकाविधि निद्दव मानाः	•••	•
चार वादमित्रमः	•••	a.
चार्य नक्षा मित्रमः	•••	1
অৰ ভিশি গুৰি:		, •
ष्मव काम ७किः	***	, e'
व्यथ सूर्या शहनामि विर्मित कातः	***	ان
অথ কর্তব্যভাক্রমঃ	, , , ,	d1
व्यव कृष्ठगक्र	41.4	9,
अथ (वमी नक्न नः	•••	. 47
অৰ শুক্কৰ লক্ষণং	***	9.6
अभ अधियानन विधिः	•••	6
व्यथ हक ज्ञाननः (हामविधिक	•••	৬৭
चित्र नीक्न। श्राकारः	•••	**
অব্সংক্রেপ্টিকা প্রকাসঃ	***	11
অথ দিবি-ধাণাসনা	•••	92
च्यथ खिल्मार्ग कथनः	***	9 6
ष्त्रच भग्मेनिष्टी -	***	9.6
অথ একো মৃত্তি কুতাং	***	ঠ
काश चावनः	***	ঐ
च्चथ (भोहिविधिः	••	99
অপ আচমন বি শঃ	••	96
व्यथ मस धावनः	***	- ক্র
অথ ভাৰনা		12
জণ প্রার্থনা	••	<b>A</b>
ष्यद यस्कालवी ५ शांवनः	***	5.0
चाश (कम श्रामनः	• •	<b>D</b>
অধ শিধাবন্ধ-ং	***	গ্ৰ
व्यथं त्रानिविधः	••	香
অৰ শালপ্ৰাম্যোদকেন স্থানং	***	<b>ም</b> ን
অপ শালগ্ৰাম সম্পৃক্তোর মার্থিয়াং	***	逐
अथ निश्रापानक माहाभाः	***	45
चार्य चानन निवमः		রী
<b>७</b> थ देवस्थवाहमनः	•••	<b>b</b> 9
অপ ভিলক ধারণং	***	<b>₽</b> 0
<b>अथ यक्ष मिल्ली</b> ज्ञा विधि निर्दर्श	1.,	க்

#### ( 10 )

वि <b>वस</b>		기화( z
অৰ্থ সন্ধা		Þe
অৰ বামগায়ত্ৰী	***	re
অৰ ভৰ্গ্ং	•••	4
चर्य सम्मागामुळी	•••	<b>2-1</b>
चथ व्यथम गामगाविष्ठिश कुछार	•••	p b
व्यथ (प्रवेणात्राः निर्माणा वागरन (पारः	•••	ঠ
चर्थ विजीत गामकुठाः (वहानाडाननः	•	4
व्यथ मक्नाहे तर	•••	by.
অৰ তৃতীয় যাম কুতাং	•••	ú
अथ बीविका निवमः	•••	3
অথ চতুৰ্বাম কুতাং	•••	ঠ
व्यथ माधाकिक ज्ञान विधिः	•••	(de
অৰ অগন্ত্য সংহিতোক জীৱাম পুৰা	•••	۵٠
অব বার পূকা	***	٠.6
ज्यथं जागरन विधिनित्यर्थः		>₹
व्यथं मांना संतर्	•••	29
व्यथ ७कि हर्के बर	***	ক্র
चर्य चामन छिकः		28
व्यवं कुष्ठांत्रनावतः	•••	≥4
ব্দর্থ গুরুনতিঃ	***	<b>₩</b>
ব্দথ যাতৃকোপসংচার: ( জীবস্থাপন: )	***	<b>u</b> a
অর্থ ভূতোপসংহার:	***	23
অথ ভূতত দি প্রকরণং	***	रह
অৰ প্ৰাণ প্ৰতিষ্ঠা	***	3.5
অৰ প্ৰাণ দক্তিখ্যানং	•••	7 • •
व्यवं क्षण्यकाकतान (म.व क्षनः	• • •	2.7
অথ ন্যাস নিৰ্বঃ		205
अब माकृ कावरेनी खानीवामः	•••	(A)
व्यथं माकृकावा सवामि नामः	***	<b>A</b>
वर्ष कत्रावामि नागः	•••	9.9
অধ মাতৃকা খ্যানং	•••	
चर्च चर्चर्याञ्चा नगरः	•••	>· 8
অথ বাহ্মাতৃকা ন্যাসঃ	***	् <b>क</b> ऽ∙ <b>∉</b>
जन जन्। र्यानः	•••	<b>à</b>
क्षर्थ भ्रमान्य कर्गाना(मः क्षर्थ भ्रमा शास्त्रः	***	<b>3</b>

1 ( 10 m) 1

,विदश		***
ज्य चंडेबिश्मेर कर्ता नागिः	•••	> 4
चव दक्षत कीर्ताति जानः	•••	3-1
	141	. 3.3
व्यव क्षेत्रकीय वागः	•••	33.0
ज्य जब शार्नर		_
অব ৰাত্ৰা ভাগত ফল কৰনং	•••	333
অথ ভত্তাসঃ	•••	· <b>ب</b>
चर मृर्डिनकर अ। गः	***	220
कथ रेकित छानः	***	278
चर कित्री । छात्रः	***	224
व्यथं चराहि छातः	***	<b>(2)</b>
অথ করাজ স্তাম্ব	•••	220
चर्ष यक्तर छ।नः	•••	(a)
অপ পীঠ স্থাসঃ	***	(d)
অথ ব্যাপক স্থাপ:	***	224
वर्ष खान फनः	***	771
ष्पर्थ भागनः	***	Ġ.
<b>अर्थ</b> शांन <b>ग</b> नर	•••	275
অথ প্রকারাম্বর গানিং	••	di
অপ প্রণবায়ক ঈশ্বর নিরূপণং	•••	250
অৰ প্ৰণ্ৰশ্ভি:	•••	ঠ
অথ অর্ঘা স্থাপনং	***	254
অধ বহনাদি কলা ভাগঃ	***	ঠ
अथ जीर्थावाहन मुखानननः	***	248
অথ অঘ্যাদি পাতাণি	4 4 4	> ₹ €
व्यथ अनेकार्वक शावः	•••	4
व्यथं अर्घाति स्वाति	***	4
অৰ অন্তৰ্যাগঃ	•••	758,
व्यथ भूका राजाः	***	521
व्यव खनामि नीर्व प्रवचा भूवा		3.0 <b>3</b>
অৰ পাছকাদি মুডাদৰ্শনং	•••	3.00
व्यव भूजांगक्रगर	109	à
जर्भ मानकाम यहः	•••	১ ৩৬
जर व्यथान भूवाक्रमः	•••	4
चव गीठा गन्त्रशाम श्रवा	•••	১৩৭
जब जनामावितन भूवा	140	201
चर अनदारदर भूगा	949	363

## (100)

বিদয়		ગુકા
व्यथ धृश्मीशनीत्राजनानि	•	783 -181
व्यव देनरवषा भावः	•••	788
व्यथ देमर्थरमार मर्ग श्रकादः	•	3
ष्यथ भीत्राध्यमञ्जः	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	. 584
ष्पर्भ ८ हो मः	***	(a)
অথ এক্ষাৰ্পণ পূৰ্বাহতী	***	•
ष्यभ शक्कां कक्ष श्राप्त	*	ን8ም ን8ሎ
ष्यण डेव्हिडे ममर्थनः		<b>1</b>
व्यथ द्यमार चोकावः	••••	7 a •
ष्मे वन्द्रन।		چ کو،
व्यथं व्यष्टेग्न व्यग्नः		-
चाव दाम किन्		360
অধ শ্ৰাক্তৰ •:	***	ડ <b>૯</b> ૨ ઉક
व्यव क्यूमेर करता क खनः	***	ંદ્રક
অথ বামবল্লভা স্থোত্রং	***	269
অথ সঙ্গীতং	•••	245
অথ কপি মৃদ্রা	***	<b>₽</b> 2€
অথ প্রার্থনা	***	<b>&amp;</b>
व्यर्थ शारमामक आक्र	44	243
ष्पण डोर्थ धात्रगः	4 ,	<b>3</b> 70
অৰ ভূলদাৰ্চা	***	<b>3</b> %"
व्यथं चाविः नमनवाशः	•••	3 % )
ष्मण क्या व्यक्तिः	110	1 5 y
অপ কথাৰ্পণং		4
অপ আত্ম সমর্পণং	•••	ني
ज्ञथ यानीसाम अर्गः	•••	১৬৩
অথ বিদৰ্জনং	•••	<u>a</u>
व्यथं निवनमा वर्षकांश कुछाः	• •	351
অথ পুৰাণাদি পাঠ:	***	في
অথ শয়ন বিধিঃ		) <b>45</b> 8
ष्यथं ८ डाबन विधिः	•••	•
व्यथं व्याच्य भवन विधिः	***	39.
व्यथं जीमः नर्ग विधिः	***	4
व्यथ প्रम्हद्व विधिः	_	313
অথ হান নিরমঃ	•••	Ā
ष्यथं रुविवादाः	•••	298

## ( 10. )

<b>विवन्न</b>		পৃষ্ঠা
ष्मर्थ वर्ष्कानि	***	3
अथ जान नित्रमः	•••	3 40
অথ কুৰ্ম চক্ৰং °	•••	578
' अथ जान निषयः	•••	396
ष्यथ मानानिक्षणगर	•••	390
অধ্যাপক্ষ:	•••	395
वर्ष भक्षात्म हैंडि कर्खवाडा	•••	>₽4€
चर्य चन क्रम्भ भूर-६३१ नियमः	1.4	3 tr 8
कार्थ श्राद्यात माननः	•••	36€
व्यथ यह क्षेत्र अवनामि स्थानः	***	<b>3</b>
অংথ ষ্ট্ৰশ্ত নিয়ম:	•••	à
অধ কু গুলি	***	35-60
अथ वाङ्गीनश्यः	***	<b>L</b>
खण जण निषम·	***	À
অপ ঋতুনিরম:	441	367
অথ দিছ নিয়ম:	•••	<b>(2)</b>
অধ ভিপি নির্বঃ	***	: 66
অথ নানাবিধ অয়েগেণ নানাবিধ ফ্ল	१ इथनः	ঠ
অপ হাথ্য যুত্র	***	561
অথ বিভীয় যন্ত্	•••	₹••
অং তৃণীরং সন্ত্রং	•••	<b>(i)</b>
ष्यथ <b>ह</b> ुर्थः चयुः		203
काश भश्रमः गद्रः	•	२००
অগ্ৰক যন্ত্ৰণ -	••	3 e g
कर् मश्चभः गनः	••	2015
সংখ স্তম <b>ং</b> স <b>র</b> ং	***	Ġ,
অংশ ময় ধারণ নিয়মঃ	•••	یا ه د
অথ চৈত্ৰমাশ ক্ৰছাং	***	405
ष्मर्थ (मृह्मारम्यः	•••	(de)
অব্ধ জীগমনবদী মাহাঝাৰ	***	\$ \ a
শীরামনব্যারতক্ত নিতাতাদি বিচারঃ	***	Ø.
অপ গাম নৰ্মী ব্ৰস্ত ব্যবস্থ।	•••	454
जब देवस्थ्रम्बन्द	•••	5 2 B
অথ প্রতিনিধিঃ	***	₹3€
कथ कहेरी इन्छ। १		€2.0
<b>जल छेनदान निर्दरन मञ</b> ः	***	#7P

विष <b>ष</b>		거함(
অপ্সক্রঃ	***	چى
অথ সৃষ্টিনির্দ্মাণং	•••	٨
व्यथ मच्च श्रारिकः।	.,	>>0
অথ সর্বভোভক্তং	•••	२२১
অণ পীঠপুৰা	***	३३८
<b>অ</b> থ স্থানং	*	ر <sub>ي</sub> م
જાગ બુલા વિધિ:	***	<u>.</u>
অপ স্কিঞ্ন এতং	•••	2.4
অণ অধিকন এতে:দ্যপেনং	•••	416
অথ সমর্থকা ব্রচোদ্যাপনং	*11	<b>(2)</b>
<b>ज्य मन्द्राः ।</b>		, S
অথ বৈশাধ জোঠকুতাং	•••	₹ 9>
অপ কা', চিকু ভাং	•••	२७७
অথ হবিশয়ন কুত্যং	4	÷ 95
অণ চাতুম জি বতং	***	ঠ
অথ শরনে ভাকো ভ্রাণি	**1	- 54
অণ্ চবিষা (ভাজ্যানি	***	الأي
<b>चर्थ भा</b> नस कुटाः	• • •	ښود
ष्यथं भावज्ञ । ज्ञाभरणां स्मतः	4 1	ιψ
অথ পৰিত্য সক্ৰ	**	₩ <b>8</b> •
অ্থ পৰিত্ৰ বোপণ্ডিধিঃ	***	v^5
অণ ভ মেক চাং	***	44
অণ অাখিনকুত্য	***	*35
ষ্প কার্ত্তিক কুত্যং		<b>२</b> श्र
वर्ष वर्शारमवः	•••	. <u>ĝ</u>
व्यथं देवभूद्वारमवः		. 7:
অথ অইহায়ণ কুতাং		(g)
অণ পৌৰ মাখ কুত্যং	***	460
व्यर्थ क' हुन क डाः	•••	<b>S</b>
অথ অধিমাস কুতাং	***	₹@ @
ष्य क्षामनी अङ्गङ्गः		224
व्यथ औदाम कथाः	**	Je 3
व्यथं शहक हें बादवमनः	•••	496
वर्ण नगिर्धः।	***	₹ <b>5</b> •

# बाघाक् निक्व।

क्षांभागः भाजेताः।

#### गक्रनाइत्र म्।

र्खं वात्रहर्साय नगः।

তর্ত্থ সংস্থাবিধিং ত্রিজগতাং নৌনাম যক্তপ্রকো র্যেনেদং সকলং বিভাতি সততং জাতং শ্বিতং সংহতে। যশ্মিমো নিগমা ভবস্তি নমতাং মানং ববাধীখরে তং বন্দে সহজপ্রকাশমমলং শ্রীরামচন্দ্রং পবং॥ ১॥ বিশ্বরাপিতনোঃ শুভা রবুপভেষ্ ত্রেব মূর্তিস্ত দো-বাক্যার্থপ্রতিবাধনকচত্বঃ শাস্ত্যাদিশীলঃ শুচিং।

मक्ष्यंभिष्णमञ्चानः व्योत्रान्धाः विवानिणः।
वाञ्चमः समाद्यंश्विन् ठाक्षृष्टिः व्याप्तः हू । ) :
गण्य विभावत्यः विश्वमिष्णः विश्वावत्यः
निम्हण्यभ्यः ठावाविकः वद्यः ।
विश्वाक्षमः विश्व व्याप्तः विश्व व्यापतः विश्व व्यापतः विश्व व्यापतः विश्व व्यापतः विश्व व्यापतः विश्व विश्व व्यापतः विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विष्य विष्य विश्व विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य

अध्वेत निर्मित्र ग्रेनिमाशित घर सर्महरे या ने है (१५ हा स्व अभ्यात्रक्षण मान्नारिन विदिश्य । या वा नामि जिल्ला कर नाम नान्न छित्रा छित्र दिन धन्य हु स्व भागन निन्दान निमान, निन्दान व अभ्या, आणि एनरे अनुकल्पनि बंग्यार ने हिशा यहार आक्ष्मान निर्मान कर्मा कर्मा निर्मान स्व वा निर्मान कर्मा निर्मान स्व विद्यान स्व विद्य

-বিনে সাক্ষাৎ শগৰাণী কলেবৰ বপুৰাবৰ গুডিমূৰ্বী, গাক্যাথেৰ দুৰ্দ্ধীনান বিৰয়ে নিকান্ধনিপুন, পালপ্ৰান্ধতি স্বাচাং নিশ্চ, সোহস্কপ তিমির

#### ब्रांनाकेन्ड'क्क' !

चळानाच-निराहरेग्चछत्रनिर्विकानिष्यांवि- १० निरुवानम्भरेगकपूर्विकारक श्रेषासूक्रमा मृनिः । १ ॥

> त्वाक्षभाकार्थ इतिर्वित्राक्षण अधिन भकाः काष्मणागस्त्रा न दि । यूषाः नगानमञ्जर धर्मणिसः यस्य मूक्षमोश्राचनर क्षत्रः भन्नः । ०॥

পূর্ববিধান্তর ভাপনীর মধিলং করং বরং মারুজ জন্মাগন্তাবশিষ্ঠনামসহিতাঃ করাংত্তথা সংহিতাঃ। শার্রংমন্ত্রমবং মথা কুবলবং তালোভ্য গীভাদিকং-জীরামার্চনচল্রিকা কলিমলপ্রধাংসিকা প্রোচ্যতে।। ভঙ্গপ্রস্থাতন নিবিধিকারের ভ্যাংস্কৃতিঃ। সৌকা-ধার্থিং জ্বমঃ সম্যক্ সংক্ষেপেণ প্রভন্ততে।

লংহারের বিহিন স্থাল,বিজ্ঞানবিবরে চিস্তামণি, এবং নিজ্য আনজের মিকে-জন, গেই ভগবান্ সুজুল মুনি নর্কোৎফুটরণে বিয়াক করেন। ২।

বাবাজে বেলাফাদি দর্শন শাল্পের বাকার্থিবোধদ্ধণ কেশরী কেলি করে বিধার কার, জোধ, লোভ, মোর, বছ ও মাংসর্বারূপ গ্রহণ প্রকা-প্রম করিছে পারেলা, বাহাকে আতার করিরা পঞ্চিত্রগণ পর্য আনদ্য প্র আপ্ত কর, আমি সেই প্রমুক্তব্যক্ত আগ্রহ করি। ৩।

প্রভাগনার, উত্তর্গনার, মারত সংহিতা, এফ নংহতা, অন্ধলা সংহিতা, বলিঠ সংহিতা, গীতা এত্তি ধর্মণাল্ল এবং নিধিল মন্তর্গত হতারত কুবলরের তার আলোড়িত করিয়া আমি এই কলিওসুব্ধিনাশিনী রাম র্জনভাক্ষনা প্রশাসন করিতেছি। আমি এই প্রছে কর্মণাল করিত কিছুই লিখিতেছি মা উলিখিত ধ্যাপাল্লেক বিভন্ন থাকা ক্রিই লোকা-বাার্থ ক্রমান্ত্রসংগ্রহ করিয়া এই পুত্তক ক্রমাণ করিছেছি।

व्यवस्था कर व निरवात गकन विश्वाहत, क्वार्या करत मुक्त करे भाक-नाविक्षपुरू वर्षार वजारकशेष विषय क्यारन विवक्त वाहा ता वर्षात

#### श्रीवार्कनकृष्टिका ।

## क्राटेक व्यवस्य कत्र गणनः क्रमानियाद्त्राः । यथ क्रमाननः ।—

मारका शंकः क्नीनण विनीषः चष्टरमयान्। उदा-मातः यथानिषः एमिकः यत्रिमान्। बालमी गान-निर्वण मञ्ज्यविभातंतः। निर्धशस्त्रकार मरका अस्तिष्ठा-विभीतरक । देखि असम्बर्गः।

#### चथ नियानकरः।---

नारका विभीजः समामा ध्यापान् वात्रवक्षमः। नमबक्ष क्नीनक श्राकः मक्तिरका वनी। ध्वमानिश्वरेनवृकः निर्वा खर्यक बाक्या। श्रक्तका निवाका गानि कर्यार्वर-मत्रवामकः। छथाराकः मात्रमः और ।—मम्श्रकः बाध्यसः निवाः वर्षराकः भत्रीकरार। बाध्य ग्रामाजासा रहानः

यात्रास्य कार्या भन्नामिक यत्र ना कार्गाक मात्र कार्याम् । इत्तियापि नयननीन रहेवा यय वर्णाक्षेत्रम द्वान मिक्क, क्नीन-- मदरनकाक क कोनाहात्रयक, विनवी, निर्मानदर्भयात्री वर्षाद यकीय व्याहात विश्वक भावक्षत्यम् ह्वाटक कृषिक नटनन, मनाहात्रयक, विथाकनामा, भूकिक, कर्षात्र, मयुक्तिमानी, व्यवध्यमञ्ज्ञाते, वेदेश्यक का ठिखाटक व्यानक, मञ्जकत्व भावम्यी, निर्माली, व्यवध्यम् - व्यक्ति क कित्रवाद्य कृष्णकान व्यवस्थान याक्किके व्यवस्थान व्यक्तिमान इव ।

व्यव्यव्य निर्वात गक्षण कथिक दरेरकरक्,—नांख नर्वा क्षण्यक्ष, विवश्यक्षित, व्यव्यावित्रक, नांखार्थ वृहिविषाणी, र्याथानी, छन्नार्थित कर्राया ज्ञवं, ज्ञवंना क्षांच, लखिक, निर्वाच हित्रज्ञ, वनवान् व्यव्याच वाक्तिरकर्षे निर्वाच किर्ताख द्या, देवात व्यक्षण व्यव्याद विक्ति राज्यक्षण राज्यक्षण व्यव्याद विक्रण क्ष्यक्षण विवाच कर्राया क्ष्यक्षण क्षयक्षण क्षयक्षण क्ष्यक्षण क्ष्यक्षण क्ष्यक्षण क्षयक्षण क्ष्यक्षण क्षयक्षण क्ष्यक्षण क्ष्यक्षण क्षयक्षण क्षयक्यक्षण क्षयक्षण क्षयक्य

পদ্দীপাপং বভর্তরি। তথা নিয়ার্ভিতং পাপং তমঃ প্রাপ্তাতি নিশ্চিতং। শৈবাসমে শিববাক্যং।—ভরোঃ-শ্যাসনং যানং পাদৃপান্ৎকপীঠকং। স্থানাদকং তথা ছায়াৎ লভ্যমেন কদাচন। তত্ত্বৈব চ।—ভরোরত্রেপৃথক্ প্রামেভিত।ক বিবর্জনের । দীক্ষাব্যাখ্যাং প্রভূষক ভরো-রত্রে বিবর্জনের । ইতি শিষ্যলক্ষণং।

#### चय मीकाशकत्रवर।-

দীক্ষাৎ বিনোপদেশস্ত ছুকীরাং! প্রথমস্ত সা। পাপ-ক্ষাৎ দিব্য ভাবং সাধক্য্য করোত্যতঃ। তত্তাপি সিদ্ধনা-ধ্যাদিভেদেঃ সংশোধ্যেমানু ।

তিনি অকবংসর পর্যন্ত নিজেব নিকটে শিষাকে বাধিয়া তাহার আচাবাধিব পরীলা কবিবেন। যে হেডুক, অমাত্যকুত পাপ রাজাকে, ভার্যাকৃত্ত
পাপ ভার্তাকে, এবং শিব্যোপান্তিত পাপ গুরু কে ভোগ ববিতে হব। শৈবাপ্রমে
শিব বলিয়াছেন — গুরু র শ্যাণ, আগন, বাহন, পাতকা, চর্ম্ম পাছকা, পীঠ
কান্তৃতি, সানেব জল ও ছায়া এই সকল কোন কালেও কজন করিবে না।
স্কর্মনি কটে গাকিয়া পৃথক পূজাও উদ্ধৃত্য করিবেনা এবং দীক্ষাব্যাখা ও
নিজেব প্রস্তুতা বর্জন করিবে। দীক্ষা সাধকের পাশক্ষর ও দিব্যক্তান
দানকরে, দীক্ষা সকল সিন্দিন প্রধান কারণ, নীক্ষা, ব্যক্তিবেকে কোন উপ
দেশই কল্পাধ্যক হয় না অভ্যন্ত প্রথমতঃ দীক্ষাব প্রবাদী বলিভেছেন। কিছ,
নাধা, প্রণাধ্য ও জনি বিচার করিষা শোধিত মন্ত্রায়া দীক্ষিত হইছে
ছইবে।

সংপ্রতি কিপ্রকাবে সিদ্ধাদি পোধন করিতে হর তাহ। কথিত হইতেচ্ছে বথা, প্রথম হঃ চতুক্ষাণ একটা কোঠা নির্দ্ধাণ করিবে, পরে ম কোঠাটাকে ভূলারাপে চাবি ভাগ কবিকেই ৪টা কোঠা হটবে এবং এই চারি কোঠার প্রত্যেক কোঠাকেই পূর্বার্থ চারি কোঠাতে বিভক্ত কবিলে বোড়াল কোঠার বিজ্ঞক একটা ক্ষেত্র হইবে। এই ক্ষেত্রের প্রথম ধরে জ, ভূতীর ঘরে জা, একাগণ ঘরে ই, নধ্য খবে জ, বিভীর ঘরে উ, চতুর্থ ঘরে উ, ভাগণ ধরে

#### वावार्डमहाक्रिक. रे

#### वर निदाविकदिकर्थनः।---

छत्रकार नित्यर (कार्कः हष्ट्ः रकार्क ममस्विकः । श्र्मण्ड्रकः छक्षाणि निर्विक्षीमान् कारमण्ड्र। निक्षणावर्क रहारकार प्रतिन्द वर्णान् निर्विक्षीमान् कारमण्ड्र। रविन्द नियमः कृष्णारकारम्य वर्णान् वर्ण

भक्षरम् चाछका मछाः। कर्णन वक्षः निकः कार त्मरकार्थि-कत्मवत्ता। भूकाछि त्मायत्मरूष्टीकोन् चाछत्का नामतत्त्वम् अवः। मिकः मित्वा वत्मात्कन विक्रमार मिक्सायकः। मिक्क्षमित्वार्श्वक्रमार मिक्सित्रिक्षि वाक्ष्यान्। माश्वमित्वा-विक्रमकः माश्वःमात्था निवर्षकः। छर्ष्यमिक जिल्लेकशार माशाविर्देखि त्माळकान्। क्षमिक्षमित्वार्शक्षकशार छर्ष्यमात्वारि

### व्यथ गिषां मिठकः ।

च र पर	উঙ্গ	चावर উচ্ছ
951	***	के हमा के का मा हि
में सम	40.42	हेश य सहय
• ভ ব	जे हेत	व्यत्न व व ते त

এই রূপে বোড়ণ কোঠার পরিপূর্ণ একটি কোঠার উক্ত বর্ণ সকল লিবিরা বেই কোঠাতে মন্ত্রমধীতার মামের প্রথম বর্ণ দেখিবে দেই কোঠা হইতে ময়ের প্রথম বর্ণ বেই কোঠাতে দেখিবে দেইকোঠা পর্যান্ত দক্ষি-লাবর্জে দিল্ল, সাধ্য, স্থাসিদ্ধ ও অরি এই প্রকাষ প্রণমা করিয়া প্রকার প্রথম কোঠাকে দিল্ল কোঠা করিয়া মন্ত্রালাক্ষর পর্যান্ত নিল্ল, সাধ্য, স্থাসিদ্ধ ও অরিপ্রনা করিয়া দিল্লদিল, দিল্ল সাধ্য, দিল্ল স্থাসিদ্ধ, দিল্লির ইত্যাদি বিভার করিবে। ববি এক কোঠাতে নামের আদি অক্ষর ও মন্তের আদি ٠ و١

খণোত্র। খনিসিদ্ধ: হড়ান্ হয়াদরিসাধ্যক্ত কম্পন্ন। তৎহসিদ্ধার পদ্ধীয়ত্তদ্ধিত্তি সাধকং।

व्यक्तं खत्रनारा-गांडा निष्कृष्ठ र नाम यकाना क्रिकेटन खत्री ।

विक्रिय कर्ता देवर्गान् यत्रवर्ग श्रास्त्र । क्रिकेव मज्जवीकानि

क्षा क्षा मात्र कर्त्र । विक्रू विक्रिक् क्षा भागित क्षित्र । विक्रिकेव मिल्लिक स्था क्षा मात्र निर्मा क्षा कर्त्र । विक्रिकेव मात्र विक्रिकेव विक्

অক্ষৰ থাকে ভংগ শেই কোটাজিড কাতচাৰ ৰৰ্ণেছে পুৰ্কোজ নিয়নে প্ৰন্য কবিৰে !

সংখতি কিল্প মত প্রত্থে কিল্প মণ লাভ হল ভালা কৰিত হই-তেতে। সিদ্ধ মত্র কাণে সিদ্ধ হল, সাধামত্র লগ ও লোম করিলে ফলনারক হল, অসিদ্ধ মত্র প্রহণ করামান্ত সিদ্ধ হল, তিপু মত্র বংশনাশক হল। সিদ্ধ মত্র ৰাদ্ধবভূলা, সাধামত্র সেবকসনুল, অসিদ্ধ মত্র পোষকভূলা এবং অরিমন্ত ঘাতক হল। বাদ্ধব মত্র লগৰাবা কলপ্রান্ধ হল, সেবকমত্র অনেক সাধন বারা কলনারক হল, পোষকমত্র সেবকের পৃত্তিভারক হল এবং হাভক মত্র ৰাজিত নাশক হল। মত্র বলি সিদ্ধান্ধ হল তবে বংগান্ধ কার্য্য করিলেই কলনারক হল, সিদ্ধান্ধ হলৈ বংগান্ধ কার্য্যের বিশুণ করিলে ফলনারক হল, সিদ্ধান্ধ হলৈ বংগান্ধ কার্য্যের বিশুণ করিলে ফলনারক হল, সিদ্ধান্ধ অন্ধ লগে কলান হল। সিদ্ধান্তিম মুক্ত বিশ্ব করিল করি সাধ্যে সিদ্ধান্ত বিশ্ব করিল করি সাধ্যে সিদ্ধান্ত বিশ্ব করি সাধ্যে হিশ্ব করে স্থানিক বিশ্ব করি সাধ্য হিশ্ব করে স্থানিক বিশ্ব করি সাধ্যে করি সাধ্যে করি সাধ্যে হালিক বিশ্ব করে সাধ্যে করি সাধ্যে করি সাধ্যে হালিক বিশ্ব করি সাধ্যে কর

সমারভ্য সমং থাবং প্রশোজনে । আদ্যন্ত য়ো: নিশ্ববর্ণা গলের যামিন বরাননে । আদ্রেরণৈর কালেন সভবেৎ সর্বানিদে । সাধ্যান্তাদির্ভা যন্ত সোহতি ক্ছেব্ দিধ্যতি । আদাবন্তে স্থান্ত স্বকামবিভূতিদঃ । আদাবন্তে বিপূর্বায় ভবেত্যাল্যঃ সমন্ত্রকা হানত্রয়গতারিব্যাে মস্ত্রো মন্ত্রা মন্ত্রা মন্ত্রা মন্ত্রা মন্ত্রা মন্ত্রা মন্ত্রা মন্ত্রা দিল্ল ত্রাক্ত । শত্রু কবিত বদাদাে মধ্যে দিল্ল ন্তরে সাধ্যঃ । কন্টেন কার্যাসিদ্ধিন্ত স্যা ফলং স্থানে বিভাগত স্বিমেবান্তে । সাধ্যঃ স্থান্য বিলামিতঃ স্থাৎ প্রাক্ষেত্র স্বাধ্য স্থান্য বিলামিতঃ স্থাৎ প্রাক্ষিয়েদ্যন্ত্রাৎ । বহুরায়াসপ্রক্লিতঃ মন্ত্রং বর্জ্রেমাতিমান্ । নৃসিংহার্ক বিহুরায়াসপ্রক্লিতঃ মন্ত্রং বর্জ্রেমাতিমান্ । নৃসিংহার্ক বিহ্নায়াসপ্রক্লিতঃ মন্ত্রং বর্জ্রেমাতিমান্ । নৃসিংহার্ক বিহ্নায়াসপ্রক্লিতঃ মন্ত্রং বর্জ্রেমাতিমান্ । নৃসিংহার্ক বিহ্নায়াসপ্রক্লিতঃ মন্ত্রং বর্জ্রেমাতিমান্ । নৃসিংহার্ক বিহ্নায়ার্য ব্যাক্রিক বিহ্নায়ার্য বিদ্বামান্য বিহ্নায়ার্য ব্যাক্র বিহ্নায়ার্য বিহ্নায়ার্য বিহ্নায়ার্য বিহ্নায়ার্য বিহার স্বামান্ত্র বিহ্নায়ার্য বিহার বিহার স্বামান্য বিহার বিহার স্বামান্য বিহার বিহার স্বামান্য বিহার স্বামান্য বিহার বিহার স্বামান্য বিহার স্বামান্ত বিহার স্বামান্য বিহার স্বামান্য বিহার স্বামান্ত বিহার স্বামান্য বিহার স্বামান্ত বিহার স্বামান্য বিহার স্বামান্য বিহার স্বামান্য বিহার স্বামা

অনম্বৰ প্ৰকারাম্বরে শোধন প্ৰণালী বুলিতে:ছুনু নাধকের মাতা পিতা ও छाछि अइंडि कईक कुठनारगढ वर्ग मक्ज धरः भरत्रव वर्ग मक्नाक चवदाञ्चन (छान भुगक् भुगक् करिया गहेरव। थ, अ. >, >> € अस्याद विमर्भ किछा भूलीय डेलश्रानीय व्यक्ति छानं क्रिया वाक्ष्म्य महिल वाक्ष्म, चार्य महिन चत्र, आमावानत मधिक आमा वर्ग, विकीय वार्गर महिन विकीय वर्ग **बहेक्टल बन्छि बन्छि नामवर्शक मधुवर्शन महिल मश्माधिक कविरव ।** भारत किया जायरकत नारम विषय वर्ष इहेबा छैठि छटन बहाकत महेगा त्य भवास मम कहेरत आवश भवाय विकास कवित्व। ज्यानात्व मिछ वर्ग कहेत्त प्रक्रमाडे अस गर्सात्रिकि श्रीम क्षेत्र । गांधाविषक बहुमाधान मिक, क्यांसार स क्षतिकार्यभाषा मकन मेटनांक्षीते श्री व्या व्यापाट्य विश्व व्येटन काशास्त्र স্থান এরণত অরি হইবে মৃত্য তুলা আনিবে। আদিতে শক্র, মধ্যে সিদ্ধ जात्म मांधा बहेरन कालिकाहे कारी।मिक्ति कन व कालाज बन । करस विश् खार्थ प्रश्न माथा गांचा शहरण अ विमास कार्या निकि दम । এই कार्य निकाति श्रुतिहाति वाज्ञित वर्कन कतिरतः नृतिःह, स्या, श्रातात शैक, (हो) व्याप्त प्र कृते मह वाहे मकत अध्य कित्त मिक्रानि (नांधानव व्यासन नाहे। जनः प्रश्न तकः क्षीकर कामछ जनः विश्वष्टि कवादव अधिक अवन प्रविक

#### सम्बद्धिता ।

বরাহাণাং প্রদাদপ্রণবদ্য চ। দপিগুলারমন্ত্রাণাং দিছাদী-নৈব শোধয়েং। স্বপ্রশক্তে দিয়া দতে মালামত্রে ত্রিবীক্ষকে। বৈদিকের চ স্কেব্র দিছাদীলৈব শোধয়েং। ইতি দিছা-দিশুদ্ধিঃ।

यक्नानाक्त (उपर वक्ताता मिल्लामिक। उपाठ निवस्त ।—वाय्विज्ञ क्लाकामाः भक्षामिलयः क्रमार। भक्ष ह्याः शक नीधा विज्ञ छाः मिक्रमञ्ज्ञवाः। कामयः भक्ष्मः सक्तमहान्तः श्रकीर्विजाः। ज्ञा ज क ठ छे छ भ य मा माक्रजाः। हे त्रे जे थ छ छ थ क द का जात्वाः। छ छ छ भ ज ज ज क व न नाः भार्थिताः। या आ छ प व छ ४ छ व मा वाक्रवाः। ३ ३ चः ७ व व न मा हा नाज्याः। माधकमा। वाक्रवाः। ३ ३ चः ७ व न मा हा नाज्याः। माधकमा। क्रमाः। वाक्रवाः। ३ १ चः ७ व न मा हा नाज्याः। माधकमा। क्रमाः। यहा भूविः मानाः। माधकमा।

मह, खाणनी भवत देव मिन्न मन अहे सकत अहत विशिष्ट व्हेटल सिक्षांमि विशिष्टित च्यावकाकाल सारी। शेकि सिक्षांमि एवि ।

माना निर्देश कार्य कार्य में स्वार कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य विश्व कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य का

কানীয়াং সক্লং হি তং। ভৌমদ্য বারুণং মিত্রং আয়েয়দ্যাপি মারুতং। মারুতং পার্থিবানাঞ্চ আয়েয়ঞায়েদাং রিপুঃ। নাভদং সর্বমিত্রং স্যাদ বিরুদ্ধং নৈব
শীলমেং। চকারাং আমেয়ণ পার্থিবানাং রিপুঃ। ইতি .
সকুলান্তর্কভেদঃ।

বালাদিভেদোহপাপরো মন্ত্রাণাইছিধীয়তে।
আরত্যৈকাকরং মন্ত্রং বালা আবোড়শাকরাং। ততআবিংশতেঃ প্রোচান্ততোহন্তে স্থবিরা মতাঃ। সাহান্তাঃ
স্ত্রীপ্রপাঃ স্থানিচিংসাদ্চ নপুংসকাঃ। হুংফড়স্তাশ্চ বে
মন্ত্রাঃ পুনাংসত্তে প্রকীতিতাঃ। শন্তাত্তে ত্রিবিধামন্ত্রা বশ্যশান্ত্যভিচারকে। ইতি বালাদিভেদঃ।

> २० चः १ १ १ न म म १ १ १ वर्ष छिनित्क चाकाम वर्ष छानित्व । मांभरक बारभा भाषा वर्ष कथारा भाषिवर्ष यपि एवक छ दो खक देवतक ( এक कोठे। डि. १ १८ १८व (मेडे भ्रष्टाक **प्रकृ**ष क्रांनित्व। भ्रष्टाक्ति वर्ग अवस् লামাদি বৰ্ণ একছত লা চট্দা দলি উভ্যেৰ প্ৰশাৰ বিজ্ঞান ও থাকে ভালা करेताल अहे नव दि इक्शेक व्हेट्य मध्ये विविध मुझहे लेहन कवित्व हहार पालया व्यक्तां कहरल वनांह ए शहन करीति ना। करेकर एक कारांच मिल, কে কাষাৰ বিশ্ব ভাষ্ট কুৰিত ছ্টুটুড়েলে.-- ভৌমবৰ্ণেৰ বাবণ বৰ্ণ এবং আগ্ৰেম বৰ্ণের মাব্ত্রণ মিব ১ইবে। আকাশ বণ স্কল্বর্ণে মিছে।পাথিব बर्सिय मारूक वर्ग जबर बाकन बर्सिय कारबाय करें कारबाय रहें भाषिय उर्धन শক জানিৰে। ক্রমান্তে শিখিত স্থান্ত্র, পাধিৰে ককণ মিত্রং কৈন্দ্ৰণ শলবীবিতঃ ঐপ্ৰাণদানেঃ শত্ৰমাকতঃ পৰিকী উতঃ" **এই সকল ४५८न এই न॰ १९६९ "माक्छः পাर्थिन नाक আছে प्रकाश्वनाः विस्टः"** धारे वहन दिन हकान बादा निमाह स्ट्रेट (य. आश्वान वर्ग भार्थि दर्भंद्र महा इट्रा ध्वर वायुवर्ग भाकांग । कनवर्ता मूळ कानिरन । भावकार्या मयमित्राव त्माक्षार्थ बक्षि एक व्यक्ति कृतिया त्मख्या ताम देशव व्यक्ति एडि क्षिताई महम, बुक्ति भाषित्व ;

## अथ कूनाकून ठकः ।

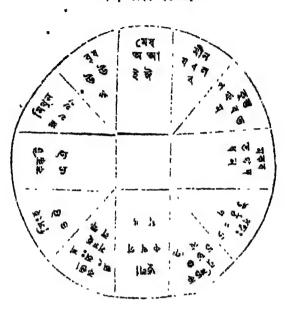
ৰাণু ।	ক্রাধ		نو'	:	44	E1414
क्ष अंध	\$ ¥	-	. '82' '70'	:	-	1 .
	.4		ij	,	*	32
4	4	ı	<b>'</b> श	1	a iè	d.
5	B		ఫ	•	4	!
3	,	·	٠.	•	õ	1
*	۶,	1	ţ-		4	i ન
ч !	Ţ		4		٠, ,	4
;	4		41	,	٠,	<b>a</b> i
ষ	باد	,	٠,		*	5

खर्डेक्षण विज्ञा करिक्षा (भक्षण, --- त्नाम वास्तित राम त्यारावण स्टंड साकि ''ताम 'दाहे मध्याकण करिए व भारित्य किए, प्रति ता दि दि (जना ) भूष साम्य सामियत १४१ भाषित्या, न्यार लागिन १४१ न्यार वास्त्र, दिवस्त्रमादद स्टंडि- त्यान भाग्यत मामान स्ट्राह है के नाम १ नामान दिवस अध्याप करिए भागित स्टूड स्टूडिम श्रीक्षण करिएक भारित्य ना भारामानामा त्राहित स्वाप्ति स्टूडिम

भन्षित मृत्यत वालाकि (इन कविष्ठ इनेटाइट्ड लाकाकः करत्य त्वाक्षणां अभवाश्व (तमकण भन्न काकानः वाद्यभाः । मार्डभावतः । भारतानिक भन्न भवाश्व (यमकल देन्द्रः (स्वीक खनः केट्टा आहेत्वः । तमकल भन्न काकाकः कवित कान्तितः । तमकण भरत्य काश्व भागः शाकितः । हास्ति खीकाकीणः (यमकण भरत्य आहेत् न्याः । कार्यक्षणां । तमकण भरत्य आहेत्वः । इने विश्वनिक । इने भारताने भारताने अधिक स्वाधिक भारताने अधिक स्वाधिक स्वाधिक

#### ' রাশিমেলনমাখ্যাদ্যে নক্ষত্রন্থিতিমপ্যথ।

## অথ রাশিচকে।



সাধকের ( মুদ্র প্রহী চার ) জন্মবালি হইতে মধ্বালি অর্থাৎ বেই বালির কোটাতে মধ্বের আদি অকব দৃশু হইবে সেই বালিপথান্ত গণিবে। জন্ম রাশি হইতে মন্ত্রালি থদি এক, পঞ্চম ও নবম হর তবে সেই মধ্ব বাদ্ধব সদৃশ হর এবং দিতীর, ষঠ, ও দশম হইলে সেবক সদৃশ বশতাপন্ন হয়। আব তৃত্বীয়,একাদশ ও সপ্তম হইলে পৃষ্টিকাবক হয় এবং দাদশ, অন্তম ও চতুর্থ মন্ত্রাশি হইলে বিনাশকারক হয়। অতএব রালিচক্রে বিচার করিয়া ঘাদশ অন্তম চতুর্থ প্রিয়া মন্ত্রাশিক বিহার করিয়া ঘাদশ

সংপ্রতি নক্ষরভদ্ধির প্রবাদী ব্রিভেছেন। অবিধরেও একটি চক্র আহিত করিতে হইবে, কিন্তু এই সংগ্রহক্ষা চক্রটি কি প্রকাব করিতে হইবে এইসম্বন্ধে বিশেষ কিছু সংগ্রহ করেন নাই, আমি পাঠক মহাশ্ম দিগের সজোষার্য অভাগ্রহ হইতে এইসম্বন্ধেব কভিপর প্রমাণ উদ্ধৃত করিয়া দিগাম। गान्तः। व भ प्रविशिष्ठणमा गर्छाः। य म इ উखतणात्रभागं गर्छाः। य यः म क त्वरणी त्वरः। ध्वराः यथार्याभागः नामान्त्रमात्वन (मन्त्रम्द्रनीयः। धानकित्नान भनत्यः माधकाकवन्नः स्थीः। कम्म मम्भिष्ठले कमानीन भूनः माधका वरः। मिख्य भवमान्त्रक कमानीन भूनः भूनः। विभवरः श्रेष्ठाविन्तः भित्रहारका मनीविनः। ইতি नक्ष्व श्रुष्ठः।

" ইন্তর্গদক্ষিণাথান্ত, বেখাং কুণ্যাক্রন্তনীং।
দশ বেগাঃ গশ্চিমাং স্নাঃ কর্জবা। বীরবন্দিতে।
ক্ষিলাদি ক্রেট্নৰ বিলিখেতারকাঃ প্নাঃ।
ক্ষীকুনেএচল্লান্ড অস্মেল্ডং গগ্যে প্রিয়ে।
চিক্রের্নএগ্রাহেন্ডেন্নের্যাধিগ্রাকান।
ম্যাদিকোহ্লিক্টোভাং হিতীয়ং নবভারকং।
বিজ্নীক্র্যাংশ্চ যুগ্যেশ নেএব্জিকান্।
বেচেন ভেদিতান্ ব্রান্ বেবভাতং গভাঃ জন্ম।

উত্তব হইতে দক্ষিণাতা চাবিটী বেখা আহি ৯ কবিয়া তন্মবো পশ্চিমান্তা দশটী রেখা অভিজ কবিছে হইছে ক্রমে তিন শ্রেণিতে বিজ্ঞ সপ্তবিশ্বতি নক্ষর সকল প্রথমকোষ্ঠা ইইছে ক্রমে তিন শ্রেণিতে বিজ্ঞ সপ্তবিশ্বতি কর্মান্ত করিছে লিখিয়া অকার হইছে ক্রমে তিন শ্রেণিতে বিজ্ঞ সপ্তবিশ্বতি কোষ্ঠাতে লিখিয়া অকার হইছে ক্রপায়ত্ব বর্ণ দক্ষ ৭ তার কর্মান্ত বিশ্বতি কর্মান্ত বিশ্বতি কর্মান্ত বর্মান্ত ক্রমে নয়টি নক্ষর মৃত্যু বে প্রথমপংক্রির স্টি বর্ম তাহার প্রথম আধিনীনক্ষরস্ক্র ক্রেটাতে ত্ইটি বর্ণ (আআ) ভরনীনক্ষরাজিত খিত্তীয় ক্রেটাতে এই বর্গ (আআ) ভরনীনক্ষরাজিত খিত্তীয় ক্রেটাতে এই বর্গ (আল) ভরনীনক্ষরাজিত ভিন্তী বর্ণ (জি উ)জংশর কোষ্ঠাতে তাবিটি বর্ণ (জ্ল ক্ল ৯৯) তৎপর ক্রেটাতে একটা বর্ণ (এ) এই নিস্থম সন্ধ্রাক্ত ক্রেটাত ক্রেটারক্ষরে একটাত ক্রিটাতে এইটা, একটা

#### गांगकिनहिंकां।

श्वश्वदाधकारनार्थ मञ्जानामिनियारक ।

श्वादाधाष्ट्रका मञ्जा विष्क्रयाः क्रुवरमेमारयाः । कर्णानाविक्रितां खाविष्ठदेशायः ममीतिष्ठाः । चार्यया मनवि रमोगाः

श्वारके च्युकां क्रियः । चार्ययाः मर श्वत्थारख श्वारन प्रविष्ठः

शक्ति । चार्यस्य जिन् व्हिः श्वारन रमोगा दोषर श्वयाखि । चार्यस्य श्वारक श्वारन मर्स्व द्वार श्वयाखि । चार्यस्य श्वराखि । चार्यस्य श्वराखि । चार्यस्य श्वराखि । व्यव्या मिन्ति । यहां — श्वानाभारन ममार्याभाष्टिवन एक्यां स्व द्वाना । श्वरामकारमा विष्क्रप्रक्षः श्वरा । देखि मञ्जानार श्वराधिकानः ।

অথর্থন শুদ্ধিত্ব কথাতে সিদ্ধিদায়িনী।

ষট্কালকালবিয়দ্যিসমূদ্রবেদথাকাশশূভদহনাঃ থলু

নাধ্যবর্ণাঃ। মুক্ষ্যিপঞ্বিয়দ্ধর্যুক্শশাঙ্কব্যামানিবেদ-

প্রশাতিতে প্রম আঁতি। ভিল দাভিতে মধাম জাতি, নাচ্বও রাক্ষে মৃত্যু, লেবতা ও রাক্ষ্যে শ্রুত হল জানিবে। মৃত্যুতি গুনুনার এম ক্রিড

ন চইটি বৰ্ণ লিখিবে। অপৰ মন্। চইতে আছি গণান্ত নৰ কাৰকাছিত বিতীয় পা-ক্তির নয় কোষ্ঠাতে ক্রমে ঘ চইতে আবন্ত করিয়া গুটটি, একটি, গুইটি, এইটি, এইটি, গুইটি, গুইটি, এইটি, গুইটি, গুইটি, গুইটি, গুইটি, কৰিয়া বৰ্ণ বিশ্বস্ত করিবে। অবিশ্বস্ত মলা ইইতে রেম্ব চীপ্যান্ত নয়টি কোলাছে ত, ১ ১, ১, ১, ১, ১, ১, ১, ৩, ৪, টি করিয়া অবশিষ্ঠ বন সকল লিখিবে। অঘিনা, রেগ্ডা প্রাান্ত মানিবে। হলা, প্রন্তির প্রাাদ্ধি, বেগ্ডা প্রাাদিবে। করিয়া করিয়া প্রাাদিবে। করিয়া করিয়া, আগালি বাছিবে। করিয়া, মান্বিগণা কেই নান্টি নক্ষা রাক্ষাল প্রাাদিবি। অহলায়া, ক্রিকা, দিন্তা, মান্ত বিশাধা এই নান্টি নক্ষা রাক্ষাল প্রাাদ্ধি।

<sup>°</sup> অজাতে । প্রমাঞী ডিম্বামঃ - দেবমাছ্যে । বক্ষোমান্ত্রয়োগোলো বৈরং দানবদেবলোঃ।

त कार्टा श्रम्बंद्	मुश्रीमंद्रा		.बाहिन	क्विक स्वाहित	
A)	9		苏		en en
(A 4:	CF4:		N N N N N N N N N N N N N N N N N N N		-
बाडी विणाबा	531	1	25		शुक्काहमी उत्हास
	وار		क्ष इ	\$	io
CHA: SINN.	K IV		**	भाग्न यः त्मवः	
न्डिया श्र्रकाष	य जिल्ल	-	खबना		श्रमात्रात्र डेखतावाता
10 No	ho ko		ir	HT	·
রাক্ষর,	अस्ति ।		(64:	माश्रिकः (प्रवः	

হইতেছে, যখা— জন্ম, সম্পদ্, বিপদ্ধ, কেম, প্রভাবি, সাধক, বঁঘ, মিজ, ও পরম মিজ এইরপে সাধকের জন্মতাবা হইতে মন্তের প্রথম বর্ণ যে নক্ষাকিত কোষ্ঠাতে দ্যাহইবে সেইকোষ্ঠাপর্যান্ত দক্ষিণাবন্তে ক্রমে গণনা করিবে। যদি জন্মনক্ষ হইতে মন্ত্র নক্ষত্র ভূতীর, পঞ্ম কিংবা সপ্রম হ্ম ভবে নেই মন্ত্র প্রহণ করিবে না। যদি জন্মতারা গরিক্ষাত মা থাকে তবে সাধকের নামাদাক্ষর স্বধী বে নক্ষত্র ভাগিকে লইরা গণনা করিবে। এইকণ চক্ষে দৃষ্টি কন্ন——

हिम्हिर्ण — ्क'न वृक्ति व नाभ राक्षाल्, कन भक्ता स्वर्ण, कहे विक्रि कि हि ग अहे मह बहन करिन्छ गाहिर्ग कि हा । प्रमा करिया (हमा दाना भवन सकत (माधन, मिन्द प्राप्त भक्ता कि हा माछ्य प्रम हेक्या व व्यापति स्वर्ण हित । स्वर्ण स्वर्ण कि शहा कि स्वर्ण कि शहा कि स्वर्ण कि शहा कि विक्र प्राप्त कि स्वर्ण कि स्वर्ण

अवस्ति माइकः व्हेट्य अनिव साम्युक्त पाप भाषापुरुक काणित्। द्य स्त्या स्य भारत्व क्रिकार कृत्रस्य स्थितः, ता मनस्य स्तृर्धमा अत्वादाः रभामा कार्याः अवद्धाः व्यवस्त काल्याः क्षेत्रः, दाकारः भारत्य एवः करिन क्रिकार्यः क्षेट्रक् (द्रकः, अंकातः, क्षेत्रः) स्व व द्राव व मन्ता वरः भारत्य काल्याः स्वार्थः । स्त्राव द्राव स्त्र स्त्र । स्त्र स्व क्षेत्रः व्याप्त स्त्र भारत्य क्षेत्रः द्रोगाः स्थापनाप् स्वाराद्य निष्ण व्यक्तिः क्षेत्रः भागत्य अवस्त्र काण्यास्त्र विष्ण व स्त्र विष्ण व्यक्तिः स्त्र भारत्य काण्याः स्त्र व स्त्र स्त्र स्त्र काण्याः स्त्र स्त्र

कांबेखि सान्याकाल वृत्ति ग्रहा। हेशारुव अकिं ठक सिक्षक कांबिट १ १४ विद्या व्याप्त अभाग अस्तरभट अन्यक्षेत्र । श्रीबरण व क्षेत्र भटकेट द्वार हो कांगार्थ व्याप्त १ १८८० करिया, विश्वक १८८१

> ्राधारता गालका जन १४८४० कृतिका स्व १ सालव्या भ्रष्टकारका स्व १ ११ है। क्रिका १ स्वयं अपरकारका कृष्टकोष्टका १ १। प्रवरं ५५१ किरणके विकास क्रिक्य क्षा स्वकः । स्वरंगामीकेकारण वस्त स्व स्वसंख्या विरुप्त स्वर्ति ।

চাহিটী কোষ্ঠা ধারা পাবিপুরিত একাদশ কোছে। বিশ্বিষ্ঠ একেটি চ্চা নিকাশ করিবে ভাষার প্রথম সাং, —লাহাং, নিতাবে –ই ঈ, ভতীয়ে উ উ, চতুহো – কাল্লা এবং প্রথমে না – এই হাকাবে হাধ্য হত তাওকালো

৯৯ পথ্যস্ত দৃশটি স্বরবর্ণ লিখিয়া অবশিষ্ট এ অবধি স্মরবর্ণ ও ককাবাদি হ পর্যায় বাগ্দ বর্ণ সমস্তকে এক এক কোষ্টার একটি একটি করিয়া বিক্রস্ত क्तित्व। এই क्ष्मिए छक्ष्माता अकामम त्कांक्षेत्र छेनविष्ठाता ५, ५, ७. ०, ७, ८, १, ०, ०, ०, वर ० वर वकामन प्रम अहित क्रिट्र हेश्ह है माधाक तमा क्या जानत निमानाम धकामन दकाहीत निमानाता २, २, ०, •. •, २, ১, •, 8, 8, 5, धारे धारामन्ति अक निश्चित धहेमदन अक्टक मांसकाक वना इस । अहेकन विठात जानानी (मर्ना ।-- श्रशीय मस्देत चत छ বাজন সকলকে পৃথক পৃথক কবিয়া রাখিবে এবং সাধকের ( সন্ত প্রহীতার) नात्मत्र यह स वाक्षन मदनात्क शृशक कविया गहेरवा अहे सम कविया हराइन (यर (कार्षाटक माध्यय भूगक भूषक कुछ चत्र व बाजन मृश्य बहेरव स्मेहे स्मेहे কোষ্ঠার উপরিভাগে অভিত ক্ষত্র লিকে গোপ করিয়া যুক্তাককে ৮ দিরা হরণ করিলে অবশিষ্ট বাধা থাকিবে, তাহা একস্থানে অন্ধিত কবিয়া বাবিতে हरे(व। जनत नाधकत नारमव भूषक भूषक कुछ चत वाश्रम छ वि दय ceifice (प्रविट्ड पार्टर्व,काशेव अर्डाट्कर भ्रम्यन अक्रम्बन श्र्येवप स्थान कतिहा ৮ विशा रहन कतिन अवनिष्ठ (य अक श्रीकित जाशांक धकशांन ब्राविश विद्वाद कविटल स्टेटब, त्य भक्तिव स्थित अह अधिक स्टेटब छात्राहक

#### क्रांबार्फनिक्टिका।

## व्यथ अगी-४नी ह कर

ж	14	**	4	ŧ
٠ŀ	: 4	"	-	- 1

3	5	5		s	8		,		•	9
181	3	द्धि थ	*	ה	এ	3	3	3	वः	ন:
*	of	গ	च	5	Б	Ę	₩ 1	ঝ	(In	5
कं	. Z	5	, <b>4</b>	5	. 9	म	1 4	न	প	ফ
4	T	<b>4</b>	য	1	«I	∢	4	ষ	স	•
۹ ا	,	2	,	, ,	- 1	2		4	3	>

नाथकाकाः ।

स्ती, रग लेक्किव कालिकाक न्म करेरव लोकारक मनी कालिया। यसि मरस्य वर्षश्वा मार्श्वीक स्वक सामास्य करेरक स्वित क्या करने मस्य स्वती करेल एक समास्य करेरक स्वित क्या करने मस्य स्वती करेल एक समास्य स्वती क्या करने कर्या करने क्या करने क्या करने स्वाक करने स्वाक स्वता करने स्वता क

नामश्रद्धकानमाद्द्र मन्द्र क्रावीत्या

"निष्ठमाञ्चलक स्थान काळा अव्यक्तिस्वकान ।

बीनर्वक खटका शैका हाकाव (बाहायर क्यां:''।

সন্তকুমারীয়ে কিপ্রকাব নামগ্রহণ করিছে ১ইবে ছাঙা ধলিয়াছেন--পিছা মাতা যে নাম বাধিবাছেন সেই নামের দেশশ্যা গ্রাড়তি গে জাতিব ٠,

#### অথ রাশিশুদ্ধি:

রাশীনাং শুদ্ধতা জ্যো তাজেচছক্রং মৃতং ব্যাং । স্বরণ্টা মন্ত্রনাশ্যন্তং গণনীয়ং বিচক্ষণৈঃ। লয়ো ধনং ভাতৃবন্ধুপুজ শাক্রকলত্রকাঃ। মরণং ধর্মকর্মায়ব্যানা দানশরাশয়ঃ। ইতি রাশিশুদ্ধিঃ।

८व डेशाबि ठाठ। ७ में शरिहाश कतिया क्ष नामहिमात शहर कतिएड इडेर्द । बर्कन रेमाव्यन (व्यून, - मध् अश्वार नाम "श्वान करा वहेनाकि "'त्राम" अञ्चल अवन कृतिर अपनित्य कि ना १ निरुष कृतिया आमार्यन सारमत धावेता करेग कक्षांत्रक धारे मकत गर्भक अन्यस मानगांक शे = a, का =- >. que, a- 2, 4..., xx., 5. 2, 21 = 2, 7 = 3, 7 = 3, 4 = 0, 21 = 21 थाहे जक्षमकत (वाश कर :: >> वा अद्या (शक क अव। हदन कहिटन व्यवनिष्ठे जुङ्याद्य ७ शक्तिन । वहे क्षकार्य "ताम" वहे मध्य वय ५ वामन भूषक भुग्या क - मा - म- म - करेगा मायाक व - क मा - ह, म = 1, म = 5 हेशामिशदक देशारी कदिएल २२ व्हेंग ५ दावी २३१ कविदेश व्यवसिष्ठे सञ्चास्त्र व थाकिन । बहेकन सामार्थन माथकाक असामान द, मानदाक रहेक माथाहर नान करेन वित्रः 'वाप'' अर्थेनक धर्म' इन्हेन द्र ध्यार भावन हुन मामक वास्कि "রাম"এইমধ্ অহণ করিতে পারেন: । কিন্তু ''গ্রিনয়ে'' এইমণ গ্রহণ করিছে गार्य कादन पुँचवरन द्वाव या विज्ञाम कविद्य छ -- इ-- च-- द्व-- च ध्य ध्रदेशेल वर्षेत्, नागाहर व .,३ - ०,४ १, आ ... ७, यू ... १, व. . १, (मांश कांनरण >> इहेल ७ द्वारा ६५० कांतरण खदलिहे ५ धाकिल, गांगकाक छ भ भारतक केंद्रपर्य कुला कानित्त :

#### व्यथ मञ्जानाः प्रथमस्याताः । ...

व्यक्तिम मखरनांचा त्य त्छता अञ्चलतांच्रेतः । निचारस মন্ত্রসংস্কারা: শারদাতিলকাদ্দ। জননং জীবনঞ্চি ভাতৃনং (वाधनः मणः। ज्यां जित्रात्का विम्नतीक त्रां भागति भूमः। তর্পনং দীপনং গুলির্দ্ধশৈতা মন্ত্রসংক্ষ্মিঃ। মন্ত্রাগাৎ মাতৃ-কামধ্যাছদ্ধারো জননং স্মৃতং। প্রণবান্তরিতান কুত্বা মন্ত্র বর্ণান জপেৎ হুধী:। এতব্দীবনমিত। তুর্ম ক্রন্তেরবিশারদাঃ। মস্ত্রবর্ণান্ সমালিখ্য তাড়য়েচচন্দনাস্তস। প্রত্যেকং বায়না মন্ত্রী তাড়নং তহুণাস্ত:। বিলিখ্য মন্ত্রং তমন্ত্রী প্রসূমে: कत्रवीतरेकः। जभाजाकत्रमः थारिकर्यमा गारस्य दर्गाधनः । खङ्खाङ्कविधारनन नहीं भङ्गार्गगः थाया । अवध्यभद्यदेव ज्ञ-মভিদিঞ্চেদ্বিশুরুয়ে। দংচিন্ত্য মনদা মন্ত্রং জ্যোতিম ক্রেণ নির্দ্দেশ্যে মত্তে মলত্রাং মন্ত্রী বিমলীকরণন্তিদং। তারং ব্যোমাগ্রিমসুযুগ্দতী জ্যোতিম সুম ভিঃ। কুণোদকেন জপ্তেন थाजार्गः तथाकमः गताः। तजनमत्त्रम विधियानजमान्।। श्रनः खुकर। माखुन वातिना मजुङ्गीनः कर्ननः खुकः। তারমায়ারমাঘোগো মনোদীপন্মজতে। জপানান্দ্য মস্ত্রদ্য গোপনং ছপ্রকাশনং। ইতি মন্ত্রদংস্কারঃ।

পর্বান্ত পথ, ধন, জাতৃ, বন্ধু, প্র, শত্ত, কলন, মৃত্যু, ধমা, কমা, আয়েও বার ইহারারা পণন। কবিবে। জন্মরাশি হউতে মন্ত বাশি মদি শত্ত, মৃত্যু অথবা বার হানে বিচাবিত হয় ওবে সেই মন্ত্রুতণ করিবে না। শঞ্চ, মৃত্যুও বার এই তিশ নামা প্রিত্যাক্ষ্য আর সমন্তই একে।

অন্ত বে সকল বিচার্যা মন্ত্রোৰ তাথা অন্তোপ্ত এছ ২ইতে কানিবে। সংশ্রতি সারদা তিলক হইতে উদ্ভ করিয়া মুধ্রের দুশ্বিধ সংখ্যার কথিত ছইতেছে। জনস, জীবন, তাড়ন, বোধন,জভিংষক, বিষদীকৈবণ, আংগানিন,

### অথ মস্তোদারপ্রকরণং।

মন্ত্রোদ্ধারমথাখ্যাদ্যে মন্ত্রাণাং রাঘ্বদ্য চ। ব্রহ্মক্সাদিরু প্রোক্তং দাধকানাং স্থাদিদেং। বচ্ছিছং শমনং বিফোরর্জ-চন্দ্রবিভূষিতং। একাক্ষরমন্থুঃ প্রোক্তো মন্ত্ররাজঃ স্থরক্তমঃ। ব্রহ্মা মুনিঃ স্যাদ্ধার্ত্রী চ্ছন্দো রামোহ্দ্য দেবতা। শীর্ষা-র্ক্রেন্দ্যুক্তাঙ্গানি কুর্যাদ্বহ্যাত্মনা মনোঃ। সর্যুতীরমন্দার বেদিকাপক্ষলাসনে। শ্যামং বীরাদনাদীনং জ্ঞানমুদ্রোপ শোভিতং।বামোক্রন্তত্তদ্বস্তং দীতালক্ষ্মণদংযুতং। অবেক্ষ্মাণ

छर्नन, मीलनक छाँ छ पह मनविस मझ मःश्वात । एवहेक न कि शकाद दकान मःश्रात क्रिटि दहेरव छाहा क्शिक इक्टेंक्ट ।---- माक्का यज क्रिया তাহা হইতে মঞ্জের যে উল্লার করা ভাষার নাম জনন সংস্কার। মজের বর্ণ मक्नटक व्यापव ( व ) पाता शृष्टिक कतिरलहे माध्य कीवन अश्याव कना हहेता। भरत्र वर्गनक्थ निश्विश वागुरीक (यः) डेक्टावर कदिया क्यन मिलिङ ললবারা প্রভাকে যে তাড়ন করা তাহাকে তাড়ন সংস্থার বলে। মন্ত্র অন্ধিত করিয়া মধাক্ষরের সংখ্যামুসারে কর্নীর পুষ্পগ্রহণ করিয়া ভাহাব ঘারা যাস্ত (রং) এই পড়িয়া অভিত মন্ত্রাক্ষরে যে আঘাত করা তাহার নাম calen । अञ्चाकरत्रत मःश्राष्ट्रमारत व्यवेश भवा जहेना उप्हाता चलर्षास्ट বিধ্যমূপারে অন্ধিত মল্লে অভিযেক করার নাম অভিযেক সংস্কার। মনে মনে মন্ত্ৰাক্ষর চিষ্টা করিয়া ক্যোতিমরি (ওঁ ট্রে) ধারা আগস্কুক সহজ্ব নারিক धारे मनजाब (क रव मार कता छाजात भाग विमनी कतन। स्वाप्तिक ह উচ্চারণ করতঃ কুশোদক দারা উক্তমন্ত্রের আন্তোক অক্সরকে বে গ্রোকিত क्या देशंत नाम काणावन । এवः क्यांकिम (ब क्यांवा त्रव मह्मवर्ण द्य खर्णन कवा खाद्यात नाम खर्णन। खात (क्ँ) मात्रा (हाँ) त्रमा (खीँ) हेर्। बाझ (र मरक्षाकीर्णन कर। इंडाटक कीर्णन राज । ध्वर कर्णामरवृद्ध अधिकाल क्यात्र मात्र महश्रात कामित्र । यह मन्दिर वाानात्रकहे महत्र मन्दिर माम्बिकद्रा

মান্ধানমান্ধ দিওতে জনং। শুক্ত কি দক্ষাণং কে বলং মোককাজনা। চিগুনন্ পরমান্ধানং ভাতুলকং জণেনানুং। বহিনারামণেনাত্যো জাঠনঃ কেবলোহপি চ। মাক্ষরো মন্ত্র নাজাহনং
দক্ষাভীক কপ্রদেঃ। একাক্ষরোক্ত মৃত্যাদি স্যাদাদ্যেন মড়ককং। তারমায়ারমানক বাক্ষবীলৈক্ত মড় বিধঃ। একাক্ষরোমন্ত্রাজঃ সর্বাভীক কপ্রদেঃ। ঘ্যক্তরশচক্রভট্রান্তা দিবিধশচভুরক্ষরঃ। মধ্যাদি পূর্ববিজ ভ্রেমমেতে যান্ত বিচক্ষ গৈঃ। দপ্রতিতৌ রমৌ বায়্ত্র ৎপঞ্চার্ণো মন্তুঃ স্মৃতঃ। বিশ্বামিত্রোগৃনিঃ
প্রাক্তঃ পঙ্কিশ্ছন্দোহস্য দেবতা। রামভট্যো বীজশক্তী
প্রথমার্ণনতী ক্রমাৎ। ভ্রমধ্যে ক্লি নাভ্যক্সপাদ্যোবিধন্যদেশকুং। বড়কং পূর্ববিদ্যাক্ষ বা পঞ্চার্ণির্মনান্ত্রকং মধ্যেবনং
কল্পত্রাম্নে পূপ্লাতাসনে। লক্ষ্যেণন প্রগ্রিতনক্ষঃ

मः अि श्रिथमण्डः वाघरवन मर्याकात क्षिण क्रेट्रिट्छ । ताः अवे अकाकत मन्न मन्न मन्न क्रिय हरेट (अर्थ अवः क्रान्य मन्न । अर्थ अकाकत मर्याव ज्ञा क्षि, शांवजीहरू अवः ताम अर्थ (प्रवटः । श्रिवणि ज्ञान प्रवाद ममः, म्र्र शांवजीहरू वादः क्ष्म ज्ञाम क्ष्म हर्ष अवः नाः क्ष्म ज्ञाम क्ष्म छ अर्थ नाः क्ष्म ज्ञाम क्ष्म छ अर्थः नाः क्ष्म ज्ञाम क्ष्म छ अर्थः नाः क्ष्म वात्र नमः वोः श्रितः व्यादः, कः श्रिका व्यादः देशः देशः द्राव ममः वोः श्रितः व्यादः, कः श्रिका श्रितः व्यादः, देशः क्ष्म वात्र द्रावः क्ष्म वात्र वात्

কোনেন শায়কং। অবেক্ষমাণং জানক্যা কুতব্যজনমীখনং।

জটাভারলসজীর্বং শ্যামং মুনিগণারতং। লক্ষ্মণেন প্রভাছত্ত্র
মথবা পুস্পকোপরি। দশাসামথনং প্রায়ৎ সন্থ্যীববিভীরণং।

বিজয়ার্থী বিশেষেণ বর্ণলক্ষণ জপেরানুং। স্বকামশক্তিবার্গ্

লক্ষ্যীতারাল্যঃ পঞ্চবর্ণকঃ। ষড়ক্ষরঃ ষড়বিধঃ স্যাচ্চভূর্বর্গ

ফলপ্রনঃ। পঞ্চাশনাত্তাবর্ণমন্ত্রঃ প্রত্যেকপূর্বকঃ।

সন্ত্রাম্পর কপিত হইতেছে : রাম এই ব্যাক্ষরমন্ত্র মন্ত্রাক্স এবং সর্ব্বাক্তিক লগান । ইচার ক্ষরানি ও অঙ্গন্ধান প্রভৃতি একাজনমন্ত্রের ভূলা । এই ব্যাক্ষর মন্ত্রের প্রশা । এই ব্যাক্ষর মন্ত্রের প্রশা । এই ব্যাক্ষর মন্ত্রের প্রশা । এই ক্ষরিটি বীজ পুথক পুথক যক্ত কবিলে ছ্যা প্রকার আক্ষর মন্ত্রের হিলে ব্যাক্ষর মন্ত্রের ব্যাক্ষর বিশ্বাক্ষর প্রকার করে । ইচার চ ভূবক্ষর মন্ত্র বিশ্বিধ—নামচক্র এবং রাম্ভিদ এই মন্ত্র্যান্ত্রের প্র্যান্তি প্রান্ত প্রকান হট জানিরে।

বামাধ নগং এই প্লাক্ষর মহ, ইহার বিশ্বামিত ঋদি, পংক্তিছ্ল, রামগুল দেবতা, বাং বীজ, নমং শক্তি। অল্পাসাদি পূর্কাবং। গানি মণা — মণেবলং কর্তিবাম্বা পূপ্লভাসনে। লক্ষ্যেন প্রথিতমঙ্গং কোবেন শাঘকং। অবেক্ষাবং জ্বান্যা কুত্রগুলন্ধীখাবং। কটাভারলন্দ্রীয়া প্রায়ং ক্রনিগ্রাব্র বিভীধলং। এই মন্ত্রের প্রথান ক্রিয়া পূজা করিবে। বিজ্ঞানী এই মন্ত্রিকাং। এই মন্ত্রের এই ধান ক্রিয়া পূজা করিবে। বিজ্ঞানী এই মন্ত্রিকাং। এই মন্ত্রের থান ক্রিয়া পূজা করিবে। বিজ্ঞানী এই মন্ত্রিকাল করিবে। কর্মান্তর মন্ত্রিকাল করিবে। ক্রিয়ান্তর মন্ত্রের ক্রিয়ান্তর বিশ্বান্য নমঃ (৪) ছাই বামান্তর নমঃ (২) বাং বামান্তর নমঃ (১) ক্রীং বামান্তর নমঃ (৪) ছাই বামান্তর ক্রিকাল করিবে। ক্রিয়ান্তর ক্রিয

धक धकि वर्ग विस्पृक कविशा " वामाय नमः " हेहाइ शृत्यं कार्याण किरता मान्याण क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया

যদা সারাদিনজাণাৎ জবাভং বা হরিৎ সারেৎ।
রামণ্চ চক্রভন্তান্তা ভেষতে নতিবৃত্তা দিখা। তারাদিসহিতঃ
নোহপি মন্ত্রস্থান্দরঃ স্মৃতঃ। তারাদ্যন্তগতঃ সোহপি নবার্ণঃ
ন্যাদনেকথা। তারৎ রামণ্চতুর্থান্তঃ ক্রোধান্তং বহ্নিতরগা।
জন্টারণ হয়ৎ পরো মন্ত্র অধ্যাদিঃ স্যাৎ ষড়র্ণবং। গুণবীজং
বদেমারাৎ হুদ্রামায় পুনশ্চ তাং। শিবোমারাসমন্ত্রোহয়ং
বন্ধণঃ হুবহুপ্রনঃ। অধিঃ স্নাশিবঃ প্রোক্তো গায়্রতী ছ্লেশ্
ভিচাতে। শিবোমারামচন্ত্রোহত্ত দেবতা পরিকীর্তিতা।
দীর্ঘ্যা মায়য়াঙ্গানি তারপঞ্চার্যুক্তয়া। রামং ত্রিনেতঃং
সোমার্ক্যারিণং শূলিনং পরং। ছুন্মোজ্বলিতস্ব্রাঙ্গং
কপর্দিনমুপাশ্রহে। রম্যাভিরামাং সৌন্দর্য্যসীমাং সোমান্বতংসিনীং। পাশাঙ্ক্রশধন্ত্র্বোণধরাং ধ্যায়েৎ ত্রিলোচনাং।

ष्यथेन क्रों व्यक्ति मर्ड करां हिंदि स्वाय क्रानित्व। व्यन्त नशाकात मण्ड क्रिंड हरेट हिंद । यथा — तामहक्षात नमः ध्वरः तामहक्षात नमः ध्वरं क्राक्ति नमः ध्वरं क्राक्ति नमः ध्वरं क्राक्ति व्यक्ति व्यक

भागत्त्वरः वर्षमकः कर्णिक्वमध्वाभ्रे रिण्डः। विवर्णरेखः करेमः भूरिणिखिरेनर्वा भक्रेक्क्ट्रांस्। व्यवभागांखि निधवः निष्वः भूरिणिखिरेनर्वा भक्रेक्क्ट्रांस्। व्यवभागांखि निधवः निष्वः भूरिक्षः भूरिक्षः। कानकीवन्नः रिष्ठः विकाशः मिक्षः नाम् विविद्याः। क्ष्मेखः राष्ट्रां नामः नोजाणांगिनिविद्याः। व्यापा वीकः विकेशः मिक्षः कार्याः नामकिष्या मजा। भिरतानगिक्वं मध्यजान्वर्रः भूक्षः कार्यः नामकिष्या मजा। भिरतानगिक्वं मध्यजान्वरः भूष्या कार्याः। व्यापानगरतः नामकिष्यः मणार्थाः प्रभागां विकाशः विकाशः विकाशः। व्यापानगरतः विकाशः विकाशः । व्यापानगरतः विकाशः विकाशः । व्यापानगरतः विकाशः विकाशः । व्यापानगर्ते विकाशः। विकाशः । व

অথবা পল্মপুন্দ, বিষক্ষণ ও জিল ইহাছারা কোম কবিতে হয়। ইংগর যথোক্ত প্রশান্তরণ হইলে শাম পলাদি নিধি সকল স্বরং আসিয়া ধনাগারে উপস্থিত হয় এবং মনোবাস্থাসিদ্ধি হয় ।

আনস্তর দশাক্ষর মন্ত্র বলিতেছেন ।—হং জানকী বল্লভার স্বাহা এই
দশাস্ক্রর ময়েব বশিষ্ট ঋবি, বিবাটছল, রামচক্র দেবতা, হং বীজ এবং
স্থাহা শক্তি । ক্লীং অস্ট্রাভ্যাং নমঃ ইত্যাদি বাবা অস্ত্রাস কর্ত্রাস
করিতে হ্য। এবং মস্তকে হং নমঃ, ললাটে জাং নমঃ, হাবে লং নমঃ,
নাভিতে ভ্যাং নমঃ উক্তের রং নমঃ, লাছতে স্থাং নমঃ, এবং পাদব্রে
হাং নমঃ এই প্রকার মন্ত্রাস করিয়া অ্যোধ্যানগরে রন্ন চিত্রসৌবর্গমগুলে
ইত্যাদি মুলোক্ত ধ্যান করিবে। ধ্যানার্থি—অ্যোধ্যাপ্রীমধ্যে বিবিধ
রম্ববাজি বিরাজিত স্থবর্গনপুল, ভাহতে ইত্তত দোহলামান পারিজাত
পুল স্থোভিত চল্রাভপ, ভল্লব্যে পুলকোপরি সিংহাসনে উপবিষ্ট রামকে
দিব্যানারক বাক্ষন, বনেব ও দেবগণ গুর কবিভেছেন, মুনিকুল চঙুপার্থে
উপবিষ্টা সাহেন, লক্ষণ সর্বান্য স্থীলে দ্বাস্থান রহিয়াছেন এবং স্থানবর্ণ

(माडिकर । क्यांबर धानमवामनः नर्वाचन्नविष्ट । धार्य-(धनः खर्णमास्तर वर्गनकममन्त्रभी । त्रांमः (७ छः श्रमण्यान-য়েছন্তে দ্যাদ্বক্তিক্সনারী। দশাকরোহয়ং মন্ত্রঃ দ্যান্ত্রিকা বিরাট প্রতং। ছন্দন্ত দেবতা প্রোক্তা রামো রাক্ষণমর্জনঃ। व्यारमा वीजः विकेश मेकिस्डिरैनवाकानि शृक्ववरः। वर्गग्रामः ज्या ग्रांनः (भोत्र-हत्रनकः विधिः। मनाकरवाक्तवः कृष्णां চাপবাণধরং সারে । ওঁ হান্তগবতে রামচন্দ্রভারে চ एखबूरको । अर्कार्ता विविधारशामा अधिशानानि पूर्वतर 1 **এপুর্বং জয়৸য়য়ৼ তদ্ভিধা রামনাম চ। ত্রোদশার্ণ** श्रामि भूक्वर मक्कामण्ड । अम्ब्रोप्तिश्राद्वी खन्नमामः দশার্ণবিং। সভারং জন্তুগবতে রামং ডেইন্ডং মহা ততঃ। পুরুষায় পদৎ পশ্চাৎ জনস্তোইন্টাদশাক্ষরঃ। বিশামিত্তো-मुनिम्हल्मा शांत्रज्य (पर्वजा मत्नाः । प्रभागापर्भप्रमत्ना त्रांम-ভদ্রঃ সমীরিতঃ। ভারবীজং নতিঃ শক্তিঃ ষড়ঙ্গং করামে खा । मूलमञ्जः (कीनलिखा माजामसमस्तरः । तावशासक नामानः गर्त्वत्नाकहित्रः छथा। श्वद्धश्रमम्बन्दः ह्यूशी नमना वरम् । निम्नशामरमाभवरन खत्रजाय कु कोकृरक । मर्टनाइत्रमुधकमन मर्वाडवरन विज्ञाहक, धरेकरण खीतामहत्तरक धान ক্ষিয়া পুঞা ক্ষিতে এই মঞ্জেঃ পুনশ্চরণে চারিলক লপ ক্ষিতে হয়।

এবং রামার প্রপণাণয়ে স্বাহা এই ও একটি রামের দশাক্ষর মন,
ইহাব জন্ধা থাবি, বিরাটছন্দ, রাম দেবতা, ছং বীল এবং সাহা শক্তি ও
পূর্বাবং অক্ষানাদি করিতে হয়। বর্ণনান ধ্যান এবং পুরণভরণের বিধিও
পূর্বোক্ত দশাক্ষর মধ্রের সদৃশ। অনস্তর বাদশাক্ষর মন্ত্র কথিত ইইতেছে—
ও নমো ভগবতে রামচন্দ্রায় এবং ও নমো ভগবতে রামভন্তার এই বিবিধ
বাদশাক্ষর মন্ত্রে গ্রাদিকাস ও ব্যানাদি পূর্বাক্ষণ। এবং জীরাম জ্বরাম
ক্রম ক্ষর রাম এই অবোদশাক্ষর মন্ত্র ইমন্তর্ জীরাম, অন্ধ রাম এবং জ্ব ক্ষর

ন্দার হণিতি পূল্যালৈ হর্ কথিও দি মতিত। নিশানতেরী
পঠহশঅভ্রাদিনিখনে। প্রতন্ত্য পরিতাে অয়মঙ্গল
ভাষিতে। পটার্থুসংশেশিরকর্পরাঞ্ডুপদ্ধিতে। নানাকুস্ম
সেরভাবাহিণকবহাঞিতে। দেবণক্ষর্কনারীভিগায়ন্তীভির
লক্ষতং। সিংহাসন-সমারতং পূল্পকোপরি রাঘবং।
সেমিত্রি-নীভা-নহিতং জটামুক্টশোভিতং। চাপবাণধরং
শ্যামং সহত্রীববিতীষণং। হছা রাবণমায়ান্তং কৃতত্রি-লোক্যরক্ষণং। রামভত্রং হুদি ধ্যায়ন্ দশলকং অপেশসুং।
রামভত্রমহেপূর্বং স্বাদাবিশ্ব ততঃ পরং। বীরং নরোভ্যমপ্রাদেশাস্যান্তক মান্ততঃ। ততাে রক্ষ ততাে দেহি পশ্চাদাপয়
মে জ্রিয়ং। ছাজিংশদক্ষরে। মজ্রো বিশ্বামিত্রো মুনিম নােঃ।
ছন্দোহমুক্ত্রক্ষেরনা। মৃদ্ধিভালে দৃশােঃ জ্রোত্রে গত্রযুগ্রে চ নাসিকে। আন্যে দেহিসন্ধিষ্ গলে ন্তন্ত্রমাভিমণ্ডলে।

রাম এই পদত্তরকে ছইবার আবৃত্তি করত: অক্সাসাদি করিবে, ধান দশাক্ষর মত্তের স্থার। ওঁ নমো ভগবতে রামার মহাপুক্ষার নমঃ এই অটাদশাক্ষর মত্ত্র, এই মত্তেব বিশামিত্র অবৈ, গায়তীছদ্দ এবং রামভত্ত দেবতা, বীক ওঁ, শক্তি নমঃ। বড়ক্ষপ্রকার বলা হইতেছে। মূলমন্ত্র, কোশলেক্সায় নমঃ, সভ্যসন্ধার নমঃ, রাবণাক্ষকার নমঃ, সর্কলোকহিভায় নমঃ এবং গুরুপ্রস্করণকার নমঃ এই বলিরা অক্সাসাদি করিতে হইবে। এবং নিক্সায়কোপনে ভরভার ভূ কৌতৃকে ইত্যাদি মূলোক্ত ধান করিবে। ধ্যানার্থ অভি সরল বলিয়া পরিত্যক্ত হইল। দশলক্ষ অপে এইমন্ত্রের প্রশ্বের হয়।

चन्द्रत् वाजिः मनम्ब वेद छेद् छ दरेट छ। बाम केद मरहवाना विश्वीतः बर्गालम् ननामास्य मार वक्त त्वति वानग्र त्व शिवः, धरे वाजिः नव्यव मरद्यत्र विवासिक स्वि, जक्षेत्रे कुम ध्वः बामक्त त्वर्णा । बामक्त, मरहवाना

নমুরত্রের প্রেন পার্সেনাথ বা ফুলৈ:। হোমং দর্শাংশতঃ
কুর্রাৎ ভথাসন্ধার ভর্পং। সর্বের রামমন্ত্রের নত্ররাজঃ
বড়করঃ। একধা চ বিধা তেথা চঙুর্যা পঞ্চধা তথা। ঘট্সপ্রধাহকথা চৈব বহুধাহয়ং ব্যবস্থিতঃ। রামচন্দ্রস্য ভেদান
শ্রীপিবো জানাতি তৃত্বতঃ। রমাসীতা চঙুর্যস্তঃ স্বাহাস্থোহয়ং বড়করঃ। সীতামস্ত্রশ্চ কথিতঃ স্বতন্তোহকপরোহপি চ।
জনকোহস্য থবিশ্ছন্দো গায়্রতী দেবভা মনোঃ। সীতাভগবভী প্রোক্তা শ্রীজং শক্তিরস্তর্জো। দীর্ঘরমুক্তাদ্যেন
ঘড়কানি প্রকর্মের । প্রমেদ্বিফবৈ পীঠে ধ্যায়েভাব্বসংযুতাং। স্বর্ণভাগুক্তরাং রামালোকনতৎপরাং। বাম-

রীভার্বারে অক্টাব ও করিতে কটবে। এই মন্ত্রারা প্রাতে দশাকর মন্ত্রাক্ত ধাান, প্রক্রণে একলক লগ এবং বিষফল, পূলা, জিমধুব ( ঘৃত মধু চিনি) যুক্ত পত্র অথবা জিমধুর বুক্ত গায়স অথবা পদ্ম পূলাবাবা দশাংশ হোম এবং ভক্ষশাংশে তর্পবাদি করিবে। বড়কর মল সকল মন্ত্রের প্রধান, রামচন্ত্র মন্ত্রের ষত্রিধতেদ তাহাব স্বিশেষ একশিব্যাত্তই অবগত আছেন।

সংপ্রতি নীতামত্র কথিত হইতেছে—ই। সীডারৈ খালা, সীভার এই বড়কর মন্তের জনক কবি গাল্লীছক্ষ: এবং ভগবতী সীতাদেবতা। অর্থাৎ জনকার ক্ষরের নমঃ, গাল্লথীচ্চক্ষণে নমঃ তগবতা সীতাদেবতারৈ নমঃ এই প্রকার ক্ষরাদিক্সাস করিতে হর, পূর্বাং ভগেও এইবলই চতুর্বান্ত পদধারা ফ্রামাদি জানিবে। ইহার প্রীবীন্ধ ও খাহা শক্তি। প্রাঁ, প্রাঁ, প্রাঁ, প্রাঁ, প্রাঁ, প্রাঁ, প্রাঁ, প্রাাঁ, প্রাাান প্রাাান ক্ষরবাভাত্তকরার আমা বেক্ষর পিঠে পূক্ষা করিতে হর । গ্রানার্থ। সীতাব গ্রান প্রাাহ প্রাণ্ডিবল ক্ষরতার প্রাান্ত প্রাান্ত প্রাান্ত প্রাাান ক্ষরতার বামতালে—উপবিষ্টা ক্ষরা একাঞ্রতিত্তে প্রীয়ামকে অবলোকন করিতেছেন, ছই হবে প্রবর্গস্থ প্রায়র বাবল করিবলৈছেন এবং অভিগ্রিক চরিত্রা। এইমল প্রশারণ করিবলৈ দ্বীতার্থ সিদ্ধি হর।

ভাগে সমাসীনাং ধ্যায়েৎ সীতাং পরাদ্ধিকাং। বর্ণকাং কপেনন্ত্রমিউবিং সাধ্যেতভঃ। মন্তরাজনগন্ত্যোক্তং লক্ষ্মগদ্য প্রভন্যতে। রেফপূর্বিং সমৃদ্ধৃত্য সেন্দুংলক্ষ্মণ সংমৃতং।
ভেন্তোহয়ং লক্ষ্মণমন্ত্রমা চ সমন্বিতঃ। অগস্ত্য ঋষিরস্যাথ
গায়ত্রী কল্প উচাতে। লক্ষ্মণো দেবতা প্রোক্তা লং বীজংশক্তিরদা হি। নমন্ত্র বিনিয়োগো হি পুরুষার্থ চতুষ্টয়ে।
দীর্ঘভাজা স্থবীজেন বড়ঙ্গানি প্রকল্লেছে। বিভূত্তং স্পানিভেক্ষণং। বসুর্বোণকরং রাম্দেবাদং
সক্তন্মানসং। পূজাহণি বৈষ্ণবে পীঠে অসাবরণবর্জিতে।
সপ্তলক্ষ্মন প্রশ্বর্ধা ততঃ সিদ্ধিন্ত সাধ্যেৎ। ভরতস্যৈবমেবং স্যাৎ শক্তব্দ্যাপ্যয়ং বিধিঃ। অস্তেনোদ্তা হোতে
প্রাবান্ত্রমাণি সন্তমাঃ। আদৌ চাপ্যন্ততো বাহণি পূজায়াং
রাঘ্যমা চ। এতেবামপি কর্ত্ব্যা ভুক্তিম্কিক্টলেপ্স্তিঃ।

व्यन्त वन त्या कि नवार न मार्य मार्य व्यक्ति कि विश्व के हे एए हि। ताः नवा मार्य वर्षे न द्या के नवार न व्यव मार्य वर्षे के विश्व के नवार के वर्षे के वर्षे

थांवात्स्यन शृथक्रवन सम्बद्ध तामशीक्रेटक। लक्ष्मवस्य मना शृक्षाः बाधारक्रदेनव निकामः। यवा बायमा शृक्षा मार्गक्षा छमांशि বিভাশঃ। সাক্ষাং রামপূজায়াং যদীচ্ছে মিয়ভতাতঃ। তেন খড়েন কর্তব্যা লক্ষণস্যাপি বিস্তর্থাত। জীরামচন্দ্র Cक्ष्माख बह्बर मिख- देव मूटम। मदमां धटेकर मान कार्या। সৌমিত্তেরপি নিত্যশঃ। অফৌতর্মহত্রং বা শতং বা ত্দমাহিতৈঃ। লক্ষাৰ্দ্য মতুর্জ্জপ্যে মুমুক্ষুভরতত্তিতৈঃ। অঞ্জা লক্ষণমসুৎ রামমন্তান্ জপত্তি যে। তজ্জপদ্য कनः रेनव क्षयांखि कूनना व्यापा। व्यातीमजावित्यरकांश्री নৈব কাৰ্য্য। ভবেদিছ। যে। জপেলক্ষণমনুৎ নিত্যমেকাস্ত মান্তিঃ। মূচ্যতে সর্বপাপেভাঃ স কামান্যা তেহ্থিলান্। व्यद्यांगारेयव मत्लाश्यम्भागरिको हि मानिना । अव्युनिश्व পুরা সমাগনেলৈ: ধনপ্রয়ঃ। দিলো বিজিত্য দকলাঃ দ कुत्तानक्षव हि। প্রাভিত্তিপদ্র্মরাজং পৈতকে রাজ্যউভ্যে। क्य अथानमस्यार्थः तांका शास्त्रक माधनः। त्यां कर्णात्रः য়তো মন্ত্রং লক্ষমেকং সমাহিতঃ। সোহচিরাম্টরাজ্যং স্থ व्यादियोदकाव न मध्नायः। अख्यिकमद्यायायाः साद्यक्षाम मननाथीः । शकायु जमपु कथा नके ताकामनाश्वार । क्षण खड़ेश्विक्तरूय वर्षना बड़ेश्विक माउनात कनिएड इत । यादाना लगा.गत मझ बाग मा कतिशा जाममझ बाग कविरन, ए। हावा गाधक (लाई कहे। नक (महे बर्भत क्वनां कि किंदिक नाति दिना ।

বে ব্যক্তি একাপ্রভাবে অভিনিন কল্পণ মন্ত্র জনকরিবে বে সকলপাপ ছইতে সুক্তি ও বাজা সিদ্ধি লাভ করিবে। ইকার সর্বে অরিমিজালি ববেচলা করার আরোধন নাই। পৃথাকালে মর্জুন জীক্তকের নিকটে এক মন্ত্রে উপাদ্ধি হইরা ধন্তব ছইরাছিলেন। এবং একাকী কুককুল পরাভূতি বরিবা শৈতৃক রাজ্যে ধন্তরাক্তে অভিনিত বার্মাছিলেন। এই মন্ত্র গ্লাক্ত ক্বিল

নাগণাশবিনিমুক্তিং ধায়িমেকান্তমান্তিঃ। অৰুত जनाम् कः मामिगमरिनखरनव हि। आश्वरनममनीज খোষধীভিগতিব্যথৎ। ধাায়নিযুত্তেন সাপমৃত্যুৎ कारामकः। हेळाकिर थानर्र्छात् शाप्तामनर मगाहिणः। इन्ह्यंकां भरवरणन करम्पतिकून वर् । मृर्भनेशां नामार्थाः C इन्दान युक्त यानमः । शायन् महत्यक त्थान श्रूक हु जानिक श करम् । तामलामाखदनवार्थः कुछवत्रमत्था জপদিযুত্তেকান্তে মহারোগান্ বহুনপি। ক্য়াপস্থার কুষ্ঠাদীল্লাশয়ত্যের তৎক্ষণাৎ। ত্রিমাসংনিয়তাহারো জপন্ भश्चमहत्यकः । पिरन पिरन विधारन शृक्षम् विकित्छः ক্রিয়ঃ। অকৌতরশতৈঃ পুল্পেনিছিলেঃ শতপত্তকৈঃ। পায়সং শর্করোপেতং নৈবেদ্যং বিধিবন্মুনে। খনসার সমাযুক্তচন্দ্রেনাত্মলিপ্যতে। দেবেদ্দেশেন নিত্যঞ সংপ্রৈর বং বিজোতমান্। কুষ্ঠরোগাৎ প্রমূচ্যেত তুল্চি-কিৎস্যাদনেকশঃ। ত্ৰােদাৰজা ৰহুবিধা মঙলাদিপ্ৰভেদতঃ।

নই রাজ্যধন করন্থ হয়। নাগণাণ হউতে মুক্তিপাপ্ত লক্ষ্যকৈ একান্তমনে ধানে করিয়া অস্ত জল করিলে মুক্তিহন। এবং প্রনতন্যক্ত আনীত ঐষধে শ্বন্থ কই বাছিলেন এই চিম্লাক্রিয়া নিযুত জলকরিলে অং মৃত্যু নিবাবন হয়। ইক্লাজিতের আনে হরণ করিয়াছেন এই চিম্লাক্রিয়া কপ করিলে ছ্র্জার অরিকুল ও পরাভ্ত হর। আর পূর্ণগধার নাসিকাচেদনে উদ্বাসী হইরাছিলেন এই আকার ধানে করিয়া সহস্ত জলকরিলে ইক্ল ও পরাভব লাভ করেন। এবং শ্রীবানচন্তের পারপদ্ম লেবায় স্ক্রিয়া একাঞ্জ চিন্ত, এই ধান করিয়া ছির্ভিতে নিযুত অপ করিলে মহারোগ কর, অপসার মুদ্ধ শুভৃতি রোগদকল বিনইছন। আর তিনমাস পর্যাপ্ত হবিব্যালী ও লিভেজির হইয়া সপ্তস্কল লগ এবং প্রভিদিন ব্যাবিধি অটোভারণত নিন্দিল প্রস্তুল, গাছস ও প্রবিদ্ধি বিশ্বিক দিনেনাাধি বারা অর্কনা এবং ব্যেতার উদ্দেশে ব্যাক্ষ

टि **मर्क्त** नाममोन्नासि प्रन्टिकिश्मा अभि करार । अकारता নিয়তাছারঃ বত্মাদান বিভিতে জিয়ঃ। জগলেবং বিধা-८वन करारतांगांदे अगुहारक। मञ्जूभावरेनरवरेताकंशम् , মন্ত্ৰং সমাহিতঃ। বাভৱোগাৎ প্ৰমুচ্যেত মহজেনাদাস ক্ষণাং। অভিমন্ত্ৰা জলং নিভাং মন্ত্ৰেণ তিঃ সমাহিতঃ। म्भरनकां निमर् क्राया कार्या कार्या । भाषा कि মস্তাচ জলৎ কুক্রোগান্বহুন্জয়েৎ। দেবসা প্রতিমা-मानः कृषा चन्छा दिशानजः। मत्नित्वाश्याश्यारागः ভ্যোম্চাতে নাত্র সংশয়ঃ। কন্যাথা চোশিলাপাণি গ্রহণাশক্তমানদং। ইপ্দিতাং প্রাথ মাথ কন্যাৎ শীতামের তপোধন। দীক্ষিতং জ্ঞ্বাস্তাণাং মন্ত্রেয়ু নিয়ত্রতং। সংস্থারন বিধি।মিত্যা মাসত্রয়মননাধীঃ। পূজাপুরঃসরং সপ্তাসহত্রং বিজিতে জিয়ঃ। জপন্লিখনদিগানাণ ভত্তে। ভবতি ধ্রবং। বিশাসিত্রজত্বরে কুভাদুতপরাক্রমং। ধ্যায়ন্ত্রজপোন ভয়েভো মুচাতেইচিরাথ। দন্ধাঞোপাদ্য বিধিবন্মূলমন্ত্রণ মন্ত্রবিং। ত্রিকালং নিয়তো ভূষা ক্তনি-ত্যবিধিঃ সয়ং । দীক্ষাযুতো নথান্যায়ণ গুর্শবস্থুজ্ঞাপুরঃদরং । মুচ্যতে সর্বাপালেন্ড্যা যাতিঃ বিষ্ণো পরং পদং। ঐতিকা-ভোজন করাছলে ছশ্চিকিৎজ বুর বোগ বইতেও প্রাণীকুত ১ম এবং চ্যাবি বোবেলাত মণ্ডলাদি ভুলিকিংজ্ঞান সকল অভিবাৎ বিনাপ ক্রাপ্ত হয়। আৰু চৰষাৰ পৰ্যান্ত হৰিবাাশী ও লিভেক্সির চর্চমা বিধানাকুবাবে ক্রপ করিবে बाबा भूमा व्यवः भूरसीक मारण भूरभावन कविता ममल धीनाव वास्तान बहैट बार्सिश नाउहत। जाव এहे बाह्य बास्त्र क्रा क्रम अंडिमिन अक्रि পুরংসর ভিনশার করিয়া পানকরিলে মুখে, নম্নাদিশে ও কুন্দি প্রভৃতি ত্যান ममुद्रुक क्वस द्वांश ममेल विमेट हरे। विमानाध्रमाद्र वर्गाम दादा रामहत्व

নপেকৈ।ব নিকামো যোহজনে বিজ্বং। দীক্ষাং প্রাপ্য বিহানেন গুরোবিগি চকল্যবাং। স্থানার নিরতাদ্ধান্তাৰ গৃহস্থানিজিতে-জিলাং। তদপুজ্ঞানুসারেণ পুরশ্চর্যা যথাবিধি। স সর্বান্ পুরাপাপে বিদান দক্ষা নির্দ্ধানসঃ। পুনরার ভিরহিতং শাশতং পদমাপ্র রাং। সকামো বা হিভান্ লক্ষ্য পুক্তা ভোগান মনোহরান। জাভিশ্যর শিচরং ভূতা যাতি বিফোঃ পরং পদং। যথা জীরামমন্ত্রাণাং প্রযোক্তঃ পাপসন্তবঃ। তথা দলক্ষ্যণমনোঃ কিন্তু দাতি পরাং গভিং। কেচিন্মুক্ত্যর্থমের স্থাঃ কেচিনহিক সাধনাঃ। ভূকি মুক্তিপ্র দশ্চায়মেকো বিজ্ঞায়তে পরং।

আপ্তনেয়মকুং বক্ষ্যে ভুক্তিমুক্ত্যেকসাধনং। প্রকাশিতং

অভিমা প্রস্ত করিয়া ভাকেপ্রংসর দান কবিলে সমস্ত রোগ হইতে মুক্ত হয়। আনে কলা সন্ততিতে অভিলায়ী থাজি শক্ষণ উর্মিলার পাণিত্রহণ কবিতে বাজ হইয়াছলেন, এইরপ ধ্যান কবিরা উক্ত মন্তের লক্ষণণ পুরুষ্টবেশ ও দশংশে পালহোম প্রস্তি করিলে নিশ্চরই ইছ্ছামুক্ত কঞাসম্বতি লাভ করেতে পাবে। এবং তিন্যাস প্রায় অনল চিক্ত হইয়া শক্ষণ জ্ঞানত্তি ও মধ্যে দিক্ষিত ছিলেন এই চিন্তা করিয়া ব্যাবিধি পূজা ও সন্তাসহত্র অপে প্রশান্ত হিলেন এই চিন্তা করিয়া ব্যাবিধি পূজা ও সন্তাসহত্র অপে প্রশান্ত করেতে সমস্ত বিদ্যার পাবদলী হয়। বিশ্বামিন্তের মন্তাকেন্ত্র অলোকিক প্রক্রমপ্রকাশ করিয়াছেন। এইক্স লক্ষণকে চিন্তা কবিয়া অযুত্ত জলে প্রশান্তরণ করিলে ভয় হইতেমুক্ত হয়। ইত্যাদি লক্ষণ মন্তের অশেষ মাহাম্যা সংগ্রুত বচনে স্পাই লেখিত আছে চৃষ্টি করিবেন।

জনতার হন্মানের মন্ত্রাদি কথিত হইডেছে। মুক্তির এইমানে সাধন এই হন্মান্ত লোকের হিত্তা মহাদের কর্ক প্রকাশিত হইরাছে। ভূত,প্রেত্ত, বুক্স, রাজুস, ডাকিনী, বোগিনী, ও শিশাচ অভৃতি এই মন্তের সাধককে দর্শন করিয়া প্রায়ন করে। এইমন্ত জলভূত হইলেওপ্রধান ও সম্ভাজ কানিবে। নুম্মেক্স্বতে আন্তর্নার মহাব্যার স্থায়া এই জটাংশাক্ষর সম সক্ষ শিক্ষি প্রশান করে। শহরেণ লোকানাং হিভনিছত।। ভূতুঁপ্রেভণিশাচাদি ডাকাকিনীব্রহ্মরাক্ষসাঃ। দৃষ্ট্রা চ প্রশাসতে সন্ত্রাস্ত্রান তৎপরং। প্রধানোহপ্যক্ষভূতোপি মন্ত্রনাক্ষোহয়মূত্রয়ঃ। পূর্বাং নমঃ পদক্ষোজ্যা ততো ভগবতে পদং। আঞ্চনের পদং ডেইন্তং মহাবলপদং তথা। বহ্নিকারান্ত এব স্যাম্মন্ত্রো হন্মতঃ পর:। সর্বাসিদ্ধিকরঃ প্রোজ্যে মন্ত্রশ্যাক্ষণাকরঃ।

নালাখ্যাহপরমন্ত্রোহপি মাক্রতেঃ সর্বাসিদ্ধিদঃ। প্রণবং প্রবিদ্ধার্যা নমো হন্মতে পদং। ডেইন্ডং প্রকটনং মুক্তং পরাক্রমপদন্তথা। তথাক্রান্তপদং সর্বা দিওমওলমুদীরয়েছ। যশোবিতানধবলীকৃতজগক্তিত্যায় চ। বজ্রদেহেতি চোক্ত্রা চ ক্রমাবতার পদং তথা। সমুদ্ধ্যন্তং পদং লক্ষাপুরীদহন-মীরয়েছ। উদ্ধিলজ্জনক্ষাপি দশ্জীবক্তান্তকঃ। সীজা-শসনেতি পদং অঞ্জনাগর্ত্তান্তব। জ্রীরাঘলক্ষ্মণানক্ষর ক্লি-বৈক্ত প্রাকার। স্থ্যাবসাধারণ পদং পর্বতোহপাটনং তথা।

অনন্তৰ মালামন্ত্ৰ কৰিত ছইতেছে। বথা—ওঁ লমো হন্দতে প্ৰকট প্ৰাক্ষণাৰ ক্ৰান্তপৰ্কি ছিল্লাৰ বলাধিতানগৰলীক ভাগনিত বাধ বন্ধদেহ ক্জাৰতাৰ লক্ষাপ্ৰীদহন উদ্ধিল্লৰ দশ্জীবন্ধান ক্ষাপ্ৰীদহন উদ্ধিল্লৰ দশ্জীবন্ধান ক্ষাপ্ৰীদহন উদ্ধিল্লৰ দশ্জীবন্ধান ক্ষাপ্ৰীদহন ক্ষাপ্ৰাক্ষণ ক্ষান্তবাকাৰ ক্ষাপ্ৰীদ্ধান ক্ষাপ্ৰাক্ষণ ক্ষান্তবালাৰ ক্ষাপ্ৰাক্ষণ ক্ষাত্ৰ বিনাশন স্ক্ষাবেশ ক্ষাক্ষণ ক্ষাত্ৰ বিনাশন স্ক্ষাবেশ ভাকিনীবিধ্বংগন ওঁ জাঁং হা হা হা হালী হালী ক্ষাপ্ৰাক্ষণ ক্ষাপ্ৰাক্ষণ ক্ষাপ্ৰাক্ষণ ক্ষাপ্ৰাক্ষণ কৰে ইয়াৰ ক্ষাপ্ৰাক্ষণ ক্ষাপ্ৰাক্ষণ ক্ষাপ্ৰাক্ষণ ক্ষাপ্ৰাক্ষণ কৰে ইয়াৰ ক্ষাপ্ৰাক্ষণ ক্ষাপ্যাক্ষণ ক্ষাপ্ৰাক্ষণ ক

বালব্রন্মচারিমিতি গন্তীরশব্দপদং তথা। সর্বতাহবিনাশন সর্বাত্তদনেতি চ। ভাকিনীবিধাংসনপদ: ভতস্তার-मृगीतरार । माग्रा हाजसमूकार्या हमार्ता हिनरमञ्ज्ह ( रनपन्-হুদৌ পুন: )। সর্কবিষ: হর পরবল: ক্লেভিয় মে ইতি। দৰ্ককাৰ্য্যাণি সাধয়েতি পদং বিৰুচ্চরেৎ। ছুঁ ফট্ স্বাহেতি-সজোহয়ং মালাখ্যঃ সর্বকামধুক্। ঋষিরীশক্ষ এব স্যাদসুষ্টুপ্-ছন্দ উচ্যতে। হনুমান্ দেবতা প্রোকা হুঁ বীদ্ধং শক্তিরস্তাদা। कीनकः हाळप्रः (প্राक्तः अमा मखने। निन्हितः। हन्मर-थीननरेक्षव कत्रमानामृनाक्षर । नत्मा जनवरजन्यामान भूर्षरमान (रमर । ऋज मूर्खप्रहेरला वर जर्म्ब्नीलामनस्तरः । वाग्र्-মতারাহপি তথা মধ্যমাভ্যামপি ক্ষুটং। অগ্নিগর্ভায় চ তথা নামিকাভ্যাৎ প্রবিশ্বদেৎ। রামদূতায় চ পুনঃ কনিষ্ঠাভ্যাং বিচক্ষণঃ। জ্বনান্ত্রনিবারণায় অন্ত্রমন্ত্রঃ সমীরিতঃ। এবং यङ्क्रक मृत्न कृषा धार्यप्रमनग्रधीः। ऋषिकां अर्थकां खिः ষিভু**দ**ঞ্চ কৃতাঞ্জনিং। কুগুলদমুনংশোভিমু**ণান্তো**জং মৃত্যু তঃ। অযুতঞ্চ পুরশ্চর্যা রামদাত্যে শিবস্য বা। পূজাস্ত বৈষ্ণবে পীঠে শৈবে বা বিদধীত বৈ। আরুত্তিভি-বিনা নিত্যং নক্তাশী বিজিতেজিয়ঃ। কুজরোগনিবৃত্যর্থ-মন্টোত্তরশতং মুনে। জপুা ত্রিদিনমেকাস্ত তেভ্যো মুচ্যেত

জন্তর অলন্যসাদি বলিতেছেন।—নমো ওগৰতে অসুঠাভাাং নমঃ, ক্ষেম্বরি তর্জনীভাং বাহা, বায়ুস্তার মধ্যমাভাগং ব্যট, অধিগর্তার আনা-বিকাভাগং হং, রামদ্তার কনিঠাভাগং বৌষট, অক্ষাত্রনিবারণার অলার কট এবং অলভাগ ও এই রীতিতে করিরা ফটিকাভং বর্ণকাভিং ইভারিই মুলোভাধান করিতে হইবে। গানের আকার এই —হন্মান্ ফটিকের ভার ভ্রবর্ণ; বর্ণকাভি, বিভূত, কভারলি এবং কুইটি কুগুলে ইবার সুব্পরের অভিশ্ব

**उर्द्भगार।** कुङ द्विङ्यनास्त्रपर भड्नाकोखन् भूनः। দিনজন্মধো জপু। ভূতানাং মুচ্যতে ভনাং। মহারোগাদি-भासार्थमत्कोतंत्रमहत्यकः। अश्र ভন্মাৎ প্রযুচ্যেত নিশ্চিতং নিম্নতাশনঃ। জয়াভিকাজ্মিণাং রাজ্ঞাং যশ্মাদন্য-ধ্যারেন্ত্রাক্ষসহস্তারং অযুতং নিয়তাশনঃ 🗗 জপ্তা সংযতচিত্তঃ সন্ জয়েদ্ধু ক্রমপ্যরিং। সন্ধানায় তু হুঞীব সন্ধাতারং শার্মপি। অযুতেনৈব বলিনা সন্ধিনাপ্রোভ্যসং-শরং। লকায়া দাহকং ধ্যায়ন্ জপমযুত্যাঞ্জনং। শক্তরাষ্ট্রং **परहरानव क्रुदाकिमिन हानवः। क्रभार्थः तिश्रमध्यानामन्त्रापरका** নবিদ্যতে। যন্ত গেছে হনুমন্তং সর্বদৈব প্রপূক্ষয়েৎ। তৎ বঙ্গে-अगुनरञ्जन जमानक्यीबहकता। मीर्चनायुक्ततान मर्क्ता ৰীজয়ী ভবেং। মাৰ্য্যাদিভূতসংকোত: তদ্দেশে নৈৰ লায়তে। শত্রবঃ দর্বদা মিত্তভাবেটনবাদতেলদ।। শৈবানাং বৈক্ষবা-নাঞ্চ বটকর্মাত্র প্রদর্শিতং। নাগুৎসাধনমন্ত্যের মন্ত্রাদক্ষা-দ্বন্যতঃ। চৌরব্যান্তাদিভীতানাময়মের পরায়ণঃ। পহতরাজ্যানাৎ ধর্বিতানাং পরৈঃ দদা। সন্নাত্ভাজাং যুদ্ধেশু

শোভা বছন করিবাছে। ইহার প্রশ্ন:শে অব্ত জপ করিতে হয় প্রার বিধান বৈক্ষরপীঠে অথবা শৈরপীঠে জানিবে। সালিতে নিয়ামির ভোজন করিয়া সংযতভাবে অঠোত্তর শত হথমরার শিন্ত্রের জপ করিলে ক্ষ্ববোগ হইতে মুক্ত হয় এবং এই বিধানে জপ করিলে ক্ষ্তুতাদির ভয় নিবারণ হয়। মহাব্যাধি নিবারণের জন্ত এইমন্ত্র অঠাধিক সহত্র অপকরিশে কলপ্রাপ্ত হয়। জন্ত্রাভিলারী রাজগণের এই, করে প্রধান সহত্য। রাক্ষ্য বিনাশ করিয়াছেন এইরপ হন্ত্রান্ত্র ধ্যান করিয়া অব্ত জপ করিলে ছ্র্জন অরিও পরাভূতা হয়। এবং হত্মান ক্ষ্মীবের সহিত স্কি করিয়াছেন এইরপ চিঙা ক্ষিয়াজণ করিয়া অ্যুক্ত রপ্ত করিয়াছিলেন এইরপ ধ্যান করিয়া জ্যুক্ত রপ্ত করিয়াছিলেন এইরপ ধ্যান করিয়া

क्रकानार शत्ररेमिनरेकः । याखाकारण इम्मखर अवन् यस पकान शृहार । निर्शन्तिक म त्यरणन देखीर्थमिशम्बि । খাপকালে পার্নিভাং চৌরভূতাদিকান জয়েং। প্রশ্বি-ভন্নং স্বোজাতযুক্তং হনুপদং। মহাকালঃ শশাহ্বাঢ্যঃ ক্ৰমিকাফলকজিয়া ৷ সনেত্ৰাণান্ত্ৰীনোগদাছতো গিভ আয়ুরা। যলোহিতং রুরাহেতি বেদনেত্রাক্রো মসুঃ। श्रीहादाशहतमामा मुखानार शृक्वमण्डर । श्रीहायूटकानदत नामा नागवधीपमः छः। ততুপর্যাউগুণিতং বস্ত্রমাচ্ছাদয়ে বংশদং শকলং তদ্যোপরিমুঞ্ছে কপিং শারণ্। আরণ্যপ্রতারে বিং বিভাগেরে । ৰদরী চরুসস্ভূতাং মন্ত্রেণানেণ সপ্তশ:। তয়া সস্তা-फुरब्रम् वमब्रमकेनः कर्रबन्धिः। मश्रकृषः भीर त्रार्थाः नभारकाव नृगाः कगार । श्रृष्टाकारत ख्रमत लिथना ক্যেকিলোখয়া। অফার্টেরলিথে তাপং কপিরাজস্য হশরং। তমধ্যেহকীদশার্ণন্ত শক্রনামযুত্ত লিখেৎ। তেন মক্সাভিজপ্তেন শিরোবদ্ধেন ভূমিপঃ। জয়ত্যরিগণং দর্কং मर्मनार्मि निम्हिखर। युक्तः जिगीयून् পिकिः शृर्द्वाखः त्नथ-ध्वक्रमानारयां भेतार्ग मः च्लानीरमाक्रनाविध । द्यम् भ्रद्भ ।

णाशास्त्र मद्य कतिरण সমर्थ वत्र । त्य शृष्ट वन्मान् मर्तामा भृतिष्ठ ७ छण दन रमवे शृष्ट गन्नी नित्रण वग्रणि कर्तत्र अवर मावक मीर्थाष्ट्र ७ मर्ताल कर्त्र । त्यवे एएए व महामात्री टाष्ट्र छिनक्ष्य एक् ना, भज्याम मिळणार व्यविष्ठि कर्त्त । त्ये ए देवस्थव टाष्ट्र जिल्ह छम्मनम् इते वर्षा मिछ वर्षे । त्या चार्ति । वर्षे चार्षि । वर्षे चार्षे चार्षे चार्षे चार्षे चार्षे । वर्षे चार्षे चारे चार्षे चार्ये चार्षे चार्ये चार्षे चार्षे चार्ये चार्ये चार्ये चार्ये चार्ये चार

। बाज्काः काभाग्रद शम्हाक्रमाः त्मन ह श्वरहर । महर्षन-खिननः विदेखः मरम्भारमाकगानवा भक्षणः अकः দৃষ্টা পলায়তে হরয়েহিচিরাং। মালামত্র: জপেদ্বস্ত হন্-মন্তং সারন্বে। বজাবো জায়তে যুদ্ধে হনুমৎসমবিক্রমঃ।

चाळाड এवर युद्ध त्करच भत्ररेगळ कर्ड्क व्यवक्ष वाग्रस्कान भवम महाब अहे सम्मानदक सानित्व । भवैनकारण अहे श्रम्यञ्ज ऋ व कडिएल (होबस्य, मछ:व ना।

व्यनस्व रनुभारतम् ह्यूसिंश्निष्ट् व्यक्तत्र मञ्ज कशिष्ट रहेर्ड्युष्ट । यूथा (स) (स) হন্মৰ ফল কলিত ধৰ্গ ধৰিতঃ আঘ্রাব পর ড়াহ এই চতুকিং-শভাক্ষববর্ণ মন্ত প্লীহানাশক। ইহার ঋষ্যাদিক্সাস প্রভৃতি সমস্তই পুরুষত জানিবে। সংপ্রতি লীহা নিৰাবক আয়োগ অপিছিত ২ইতেছে।--

প্রীহার উপরি কতিপর নাগবলী ( সর্পলতা ) পত্র বিরুত্ত করিয়া ডাটাকে অষ্টগুণিত ('আট ভাক করা) বস্ত্রদারা আফ্রানিত কারবে। পরে ভতুপদ্ধি ध्यकांथिन वः नथ्छ (वाटनव उछा) वाथिया धनुमानटक यान कत्रछः आक्ष्मा পাৰাণ (চকমকা) হটতে নিফাশিত অগ্নিতে অকথাত বদ্বীবৃক্ষের ষ্টি (কুলের লাঠা) সম্ভাপিত করিলা তদ্বাবা উক্ত মন্ত্র সংভ্যার পাঠকবিরা পূর্বস্থানিত বংশবতে আঘাত করিবে এইরপ সাতবার করিলে ওৎক্ষণাৎ सीहा विमन्ने हडेरव । श्कृतिवात्क व्यासान क्षित्र १०१०८६,---- धक्यानि পুছাকৃতি বল্পে কোকিল পাথিব পাথার লেখনীতে মট গলবলা হনুমানেব অভিনাপ অঙ্কিত কৰিয়া তল্পাধাশক্ৰৰ নাম ও পুৰ্নোক অন্তাদণাকৰ হন্মশান্ত निभिट्य। भट्य छेक्नभन्न भाष्ट्रिया औ तक्ष थानिएक एएएक देशियान, भव्यन्त डेबाटक मर्भन करा माज পराष्ट्रक कहेटवा साह्य हाई अवाधिनायी ৰাজি ধৰছেতে পূৰ্বোজ্নম ও শতানামের সহিত কণীখারের অভিমৃতি निविधा वासित्व। भरत हत्तर्या अध्य प्रस्थित कानाव्य प्राक्षणास अध्यस्य ভিখমিঞিত স্বিপ্ৰায় (২:ম भाजको स्रश कविया मनाश्मामि निषयास्त्राद्ध कतिरव । अनस्त युक्ताकात्व रखित शृं छ छक अनु याभिष्ट कतिया वाधिल नक्षान स्व म मर्नन कतिबाहे भनामन कविद्व। आव (ग द) कि तनक्षात्व বাট্যা হনুমানকে অৱণ করতঃ ইহার মালামত্র জপ করিবে দে বজাল ও ১৭-সানের স্থার পরাক্রমশালী হইবে।

সংখা হত্মতো ষন্ত্রং বক্ষ্যে রক্ষাবিধায়কং।—লিখেদক্তদলং পদ্যং সাধ্যাধ্যযুত্তকণি কং। দলেষ্টার্ণমালিধ্য
মালামন্ত্রেণ বেন্টয়েং। তছহিমায়য়াবেন্ট্য প্রান্থানমাচরেং। লিখিতং স্থালেখন্যা দলে ভূর্জ্জভরোঃ শুলে।
রোচনাকুক্ষমাভ্যান্ত বেষ্টিতং কণকাদিভিঃ। সংপাত
সাধিতং যন্ত্রং ভূজে বা মূর্দ্ধি ধারয়েং। রণে জয়মবাপ্রোতি
ব্যবহারে ছ্রোদরে। গ্রহৈবিদ্যাক্ষিঃ শক্তিশেচারৈনিবাভিভূয়তে। রোগান্স্কানপাক্ত্য চিরং জীবতি ভাগ্যবান্। বিয়দ্যিযুতং দীর্ঘট্কাচ্যং তারসংপুটং। অন্টার্ণোমন্ত্র আখ্যাতো মালামন্ত্রোহণ কথ্যতে। বজুকায়

সংশ্ভির্কাবিধায়ক হন্মান্যর কাণত হতৈছে। -- একটি অটনল পদ্ম অকিত কবিমা ভাগাব কবিকাতে রক্ষণিযের নাম এবং অটদলে ওঁ জাঁ জীং লুং হৈং ছৌং হং ওঁ এই আই টানিলব একটি একট লিখিলা পদ্মেরবছি-কেশে মারাবীল (জাং) দ্বাগ বেসন কবিনা প্রাণশুভিষ্ঠা কবিবে। এই বন্ধ লিখিতে ভূজনিত, স্ববিদ্যানী ও গোবেচনা ক্রুন প্রভৃতি আবন্ধকীয়। অনস্কর স্বর্ণিণ দ্বাগ বহু বেসন কবিমা দক্ষিণ ভূলে অপবা মন্তবে বাবণ করিলে মৃদ্ধে, বিবাদে এবং দ্বাগ জালতে সক্ষরত ভ্রবাত কবিবে এবং দ্বাগল্ভাহ, বিষ্কারী পাকিয়া স্প্রোণ করিবে।

অন্তর পঞ্চাংশ চাষ্ধ শতাক্ষর মালামন্ত্র কার্যত হউতেছে।—ওঁ
বন্ধনান বজ্ঞ কিশিল পিক্ল উর্কাবেশ মহাবল এক্তমুখ তড়িজ্জিন্থ
মহাবৌদ্র দংট্রেবেণ্ট কহ কহ করালিনে মহাদৃঢ্প্রহারিন্ লক্ষে
খবংধান নহাসেতৃবল্ধ মহাশৈলপ্রবাহ গগনেচর এহোহি
ভগবন্ মহাবলপথাক্রম ভৈরবাজ্ঞাপয় এহেহিমহারৌদ্র দীর্ঘ পুজেন বেইর
বৈরিণং ভঞ্জয় ভঞ্জয় তং ফট্ এই মালামন্ত্র স্কাঠীইপ্রদ। এই মন্ত্র যুদ্ধসময়ে
প্রস্তুপ্ত করে এবং বোগ উপস্থিতে প্রস্তুপ্ত হলৈ আবোগ্য প্রদান করে।

গণেশদি চতুর্ণান্ত রামাঙ্গত্বং প্রতীয়তে। সর্ব্বে দেবাঃ স্তবস্তীতি সামান্যক্রতিচোদনাৎ। অস্যাগ্রেয়ে গণেশানং সূর্য্যৎ নৈথাতিকোণকে। বায়ণ্যে হলিকামীশনৈশান্যাং

ও সংংখ্যাং ই গাণি অষ্ট:ক্ষর নরে। এবং এই মালা মন্ত্রে ঋষ্ণাদিয়াস প্রাবিধান প্রস্তৃতি সমস্তই পুলগত জানিবে। এইসকল মধ্যে মাহায়া অবিক আব কি বলিব কণীবর সলিধানে জানীভা কিছুই নাত।

क्वि कार्ष ता, अमछ (मनभावे विक्न छन करनमाठ कर विभू भूजार गराम, मिराम, ज्ञान छ पूर्ण छ पूर्ण छहे प्रमुख क्विश्व स कामकर्ता भूजा कविर्व हम । यस्त्र कांत्रवार भराम देशांक्रक देना क कार्य क्या, वामुरकार पूर्ण छवा केवानकार प्रमान देशांक्रक क्कामान सानमञ्ज सार्य भूजा किवर्य । वेशामन वर्णिय मन उ नक्षित साम कार्ष्य प्रमुख कार्याच छार्य क्ष्ममुम्हान किव्य कांनियन अम् कृष करणनन कहर विश्वा मरक्षण छक्षि छक्ष सान स महाम कर्णिय हेटल । वें क्यां क्वांर क्वीर त्योर गर नम्मकरम व्यवस्थ मक्कानर रम यममानम प्राहा छक्षे क्वेरिय क्वांर त्योर गर नम्मकरम भूका किवर्य हेटल । विश्व मन्क स्वरम

হরিপৃন্ধনে। তেষামনেকমন্ত্রা: হ্যাজেরা গ্রন্থারাদ্বুধৈ:। সংক্ষেণেণেছ কথ্যন্তে গ্রন্থবিত্তরভাতিত:।

শব্দ গণেশমন্ত্রাদয়ঃ। তারং শ্রীশক্তিয়য়ভূষবীকং
গণণাতং বদেৎ। ঙেহন্তং বরান্তে বরদং সর্বযুক্তং জনক্ষমে। বশক্তে বদেৎ পশ্চাৎ আনয়েতি চ ঠয়য়ঃ।
অক্টাবিংশত্যকরোহয়ং মহাগণপতের্মসুঃ। গণকোহস্তঋষিশ্চন্দো গায়ত্রী নিরদ্বিতা। মহাগণপতিঃ প্রোক্তোদেবো ভূবনবন্দিতঃ। তারাদ্যাদিস্ববীজেন দীর্বভাঙ্গাককল্পনা।
নবরত্বময়ং দ্বীপং সারেদিক্র্রসাম্বুধে। তদ্বীচিধোতপর্যক্তং
নশ্মাক্তেগেবিতং। মন্দারপারিজাতাদিকল্লব্রক্তা
কুলং। উদ্ভূতরত্বচ্ছায়াভিরক্রণীক্তভ্তলং। উদ্দিনকরেকুত্যামুদ্রাসিতদিগন্তরং। তারা মধ্যে পারিজাতং নবরত্বময়ং
স্মরেৎ। ঋতুভিঃ সেবিতং ষড়ভি রনিশং প্রীতিবর্দ্ধনৈঃ।
তদ্যাধন্তামহাসীঠে রচিতে মাতৃকামুজে। ষট্কোণান্ত-

नभः, भूटच नितुष त्रायकी क्ष्मटन नभः, श्रांष मश्यापण करव नभः। कहे व्यकार व ध्यापिश्चाम कित्रिया क त्राः कृष्याय नभः क त्रीः नित्रम श्राः, क त्रुंः निवादेश वरते, क त्रिः क वत्राय हैं, क त्रां क्ष्मे ह्याः नगः क त्रीः क्ष्में क व क्ष्मिष्ठाः क्ष्याय कृष्टे क्ष्यः क्षम् श्राः क्षम् ह्याः नगः क त्रीः क्ष्में नौक्षाः श्राचा हे क्षांप क्ष्यः क्षम् क्षांम क वन्याम कित्रया नमूर्वत क्ष्मित्रः केक्षांप म्रांचा क श्रांच कित्रया भ्यानार्यं न हेक्ष्य प्रभण ममूर्वत क्ष्मित्रं, भन्य व्यविकाक क्षा क श्रांच क्षित्र वृक्ष्मकृष्ट विश्वत्रक व्यक्षित्र क्ष्मित्रक व्यक्षित्रक विष्यक व्यक्षित्रक व्यक्षित्रक विष्यक्षित्रक विष्यक्षित्रक विष्यक विष्यक्षित्रक विष्यक्षित्रक विष्यक्षित्रक विष्यक विष्यक विष्यक विषयक विष्यक विष्यक विष्यक विष्यक विषयक वि স্থিকোণকং মহাগণপতিং স্মরেৎ। হস্তীক্রাননমিন্দু চূড়মরুণচ্ছায়ং ত্রিনেত্রং রসাদালিউং প্রিয়য়া সপদ্মকরয়া
বালকয়া সন্ততং। বীদ্যাপুরগদাধকুত্রিশিখমুক্চক্রাজ্ঞপাশোৎপলং ত্রীক্ত্রশ্বিষাণরত্বললসান্ হত্তৈর্বহন্তং
ভল্পে। গণুপালীগলদানপূরলালসমানসান্। ছিরেফান্
কর্ণতালাভ্যাং বারয়ন্তং মুত্র্যুভ্র। করাগ্রম্ভমাণিক্যক্তর্বক্র বিনিঃস্মৃতিঃ। রত্ববর্ষিঃ প্রীণয়ন্তং সাধকান্মদবিহলেং।মাণিক্যমুক্টোপেতং রত্বাভরণভূষিতং। ইত্যসা
ধ্যানং। অগ্রেহণ বিল্মভিতশ্চ রমারমেশো ভদ্দিশে বটমুমৌ গিরিজার্ষাক্ষো। পৃষ্ঠে চ পিপ্পলমুমো রতিপুষ্পবাণো সব্যে প্রিয়ন্ত্রশভক্ত মহীবরাহো। স্ব্যাপস্বাভাগে
তস্য ধ্যেয়ৌ শঙ্মপন্ত্রশিং। বিরম্ভেশি—ত্রিকোণস্য
বহির্দিল্ববর্টপিপ্পলভ্রত্বং। প্রিয়ন্ত্রেরণ্যান মন্ত্রী

রচিত যে মহালীঠ তাহাতে উপনিষ্ট, গলানন, ত্রিনয়ন, চ্ডাতে চক্স. রক্তবর্ণ থবং বামভাগন্থিত। পরজ্ঞানি নিজকান্তাকর্ত্বক আলিঙ্গিত গণপতিকে চিম্বাকরিবে। ইনি হস্ত্রকলে দাড়িম্বকল, গলা, চাপ, থিশুল, চক্তে, পল্প, পাশ, উৎপল, ধানাগুছে, গজদন্ত এবং বহুনিশ্বিতক্ষ্ণ ধারণ কবিবাছেন। ইছার গণ্ডদেশ হইতে অবিরক্ত মদবাগ পতিত হইতেছে। এই মদবালা পান কবিবাবজনা ইতন্তত চঞ্চল অনিক্লসকল কর্ণছল্প সঞ্চালন হালা আবিরত নিবারিত হইতেছে। ইনি নিজকরস্থ রক্তমন্ত কল্পত হৈতে বিনিঃস্প্ত রহ্ব বর্ষণ করিবা সাধকবৃন্দকে আপ্যান্তি করিতেছেন, এবং উত্তমান্ত মাণিকামলমুকুটে স্থানিভিত ও নানাবিদ অলকারে অলক্ত । এইপ্রকার চিম্বা করিয়া মন্ত্রাদিতে যথাবিদি পূজা করিবে। যজ্যের প্রান্থিকার চিম্বা করিয়া মন্ত্রাদিতে যথাবিদি পূজা করিবে। যজ্যের প্রান্থিকার দিক্ষণে বিব্যুক্তের নিকট ও প্রতিক্রক্তর সমীপে ও ত্র্গারৈনমঃ, ও বিভাবন্ধঃ, ও বহিতা নমঃ, ও বহিতা নমঃ, ও বহিতা নমঃ, ও বহিতা নমঃ,

দিক্ষু প্রবাদিতো যজে । বে বি জিয়ং শ্রীপতিঞ্চ পৌরীং গোরীপতিং তথা। রতিং রতিপতিঞ্চাপি মহীমপি বরাহকং। অতাে চ পুজয়েলক্ষীসহিতং গণনায়কং। অতাে
কোণে তথা দিদ্দিহিতামোদমিত্যাপি। অয়িকোণে সমৃদ্ধাে
চ সহিতঞ্চ প্রমোদকং। ঈশানে কান্তিসহিতং স্থাধং
পশ্চিমে তথা। ছুমুখং মদনাবত্যা সহিতং নৈঋতে তথা।
সহিতং মদদ্রবয়া গণস্যাপ্যধিনায়কং। ঈশানে জাবিণ্যাসহিতং বায়ে বিশ্বকর্তারমেব চ। ষটকোণপার্শয়োঃ শথং
নিধিং বহুধয়া য়ুতং। বহুমত্যা মুতঞাপি যজেৎ পদ্দনিধিং জেতং। ধ্যায়য়ত্রং জপনাক্রী চতুর্লকং সমাহিতঃ।
চতুঃসহত্রসংযুক্তং চত্বারিংশৎসহত্রকং। দশাংশং
জুতুয়াদ্দ্রবিষরক্টাভিমেণিকাদিভিঃ।

## व्यथ मूर्यमञ्जापग्रह।

তারং দ্বণিস্থ্যপদমাদিত্য ইতি চোদ্ধরেং। এবনন্টা-ক্ষরঃ সূর্য্যমন্ত্রোহয়ং সমুদাহতঃ। ভার্গবোহস্য ঋষিশ্ছন্দো-

ও ববাহর নমঃ, এবং অথো ওঁ লাকো নমঃ, ওঁ গণনায়কার নমঃ ইন্ড্যাদি সংস্কৃত বচনোক্ত দেব গাসকলকে পূজা কবিবে। ইহার পুরশ্চরণে ৪ চারিলক্ষ ৪৪ হাজার জ্পকবিয়া বিবানোক্ত স্থান্ত হাবা ধাবা হোমাদি কবিতে হয়।

আন্তর প্রায় মন্ত্রাদ কথিত হবৈওছে। ওঁ ঘণিপ্রা আদিতা এই অষ্টাকর প্রায়র। এই মন্তের ভাগিব ধ্বি,গায়ত্রী ছলঃ এবং দ্টাদৃইফণপ্রদ আদিতা দেবতা, ভার (ওঁ) বীজ, যং শক্তিঃ। অত মন্ত্রত ভাগিব ধ্বি-র্দাররী ছল আদিতো৷ দেবতা ও বীজং যং শক্তিঃ দৃষ্টাদৃষ্টফলপ্রাইগ্রাধিনিয়োগঃ এই প্রকার ধ্বাণাদি পাঠ করিবে। এবং স্ত্যায় হৃদয়ায় নমঃ, বৃদ্ধবি শব্দে স্বাহা, বিক্ষবে শিশ্বি ব্যট, কলাম করচায় ত্, অমন্তে নেত্রবার বেবিট, সর্বায় করতনপৃষ্ঠাত্যাং অস্তার ফট,এবং স্ত্যায় অষ্ট্রান্ত্রাং নমঃ, বৃদ্ধবি ত্রতন্ত্রাং স্বাহা ইত্যাদি ক্রমে অক্সন্তাস করস্তাস

গায়ত্রী দেবতা মনোঃ। আদিত্যো মুনিভিঃ প্রোক্তে। দৃষ্টাদৃষ্টকনপ্রদাঃ। তারং বীজমিতি প্রোক্তং যং শক্তিঃ সমুদাহতা। অসমজ্রাঃ প্রদর্শন্তে— সত্যায় হলয়ং পুনঃ। ত্রহ্মণে
চ শিরঃ প্রোক্তং বিষ্ণেবে চ শিথা মতা। রুদ্রায় বর্মনির্দিষ্ট
সময়ে নেত্রমীরিতং। সর্বায়াজ্রঞ্চ বিজ্ঞেয়মিতি স্যাদন্দকল্পনা। রক্তাজবুখাভয়দানহন্তং কেয়ুরহারান্দদক্গুলাতাং।
মাণিক্যমোলিং দিননাথমীড়ে বন্ধুককান্তিং বিলস
জিনেত্রং। ইতি ধ্যানং।

व्यथं निवमा मञ्जानीन् वरका मश्क्लभरजार्थुना ।

শান্তাকু গ্রহদং যুক্তো বিন্দু ভূষিতমন্তকঃ। প্রাদাদাধ্যান্ন করে প্রোক্তো ভজতাং কামদো মণিঃ। ঋষিঃ স্যাদ্বামন্দেবাইস্য পত্তিশ্চন্দঃ সমীরিজং। সদাশিবো দেবতা চহং বীজং শক্তিরোং শ্বভঃ। দীর্ঘ স্বর্মুজা মূলবীজেন করিঃ। রক্তাজ্যুলাভ্রদান হতং ইতাদি নৃগোক্ত ধান করিবে। ধানার্থহ্যা চারিহত্তে ক্রনে বক্তপন্তম অভয় ও কবচ ধাবণ করিয়াছেন, এবং কেযুব
হার বলয় ও কুগুলাদি আভবণে বিভূষিত, বঙ্গুক পুলেশ গুলা রক্তবণ, তিনেক্র
এবং ইহার কপালে মাণিকা আছে এইজপ ধানে করিয়া মথাবিধি পূজা
করিবে।

ध्यम् व निर्द्द मञ्जानि कथि इंटेट्ड्ड्ड निष्य निष्य ध्यानि कथि इंटेट्ड्ड्ड निष्य निष्य भाष कि वर्ष को ध्यानि कर्ष के प्राप्य करित हो के ध्यानि कर्ष के ध्यानि क्षानि क्षानि कर्ष के ध्यानि क्षानि क्षानि कर्ष के ध्यानि क्षानि क्षानि क्षा करिया का ध्यानि क्षानि क्षा करिया का ध्यानि क्षानि क्षानि क्षा करिया का ध्यानि क्षानि क्षानि करिया क्षानि क्षानि क्षानि करिया क्षानि क्षानि करिया क्षानि क्षानि करिया क्षानि क्षानि करिया क्षानि क्षानि करिया क्षानि करिया क्षानि करिया क्षानि करिया क्षानि करिया करिया क्षानि करिया क्षानि करिया क्षानि करिया क्षानि करिया क्षानि करिया करिया क्षानि करिया करिया क्षानि करिया क्षानि करिया क्षानि करिया करिय

স্যাৎ বড়দকং। মুক্তা-পীত-পয়োদ-মৌক্তিক-জবা—বলৈ

মু থৈঃ পঞ্চজ্জাকৈরকিত্রীশমিলুমুকুটং পূর্ণেলুকোটি
প্রভং। শূলং টক্কপাণবজ্জাকাবালেলভাকুশান্ পাশং
ভীতিহরং দধানম্মিতাকল্পোক্তলাকং ভজে।ইতি ধ্যানং।

অথ ভুবনেশ্রীমন্ত্রাদয়ঃ।

चनसत्र ज्वानयती प्रशांत महाणि कविठ व्हेरण्डः। नक्नीन—ए, ध्विन्त, वागरन्व—पे, च्विह्य—पे वहेरण्य गुळ हहेरा हो। वहेर विकास महा चिक् वहेरा हो। वहेर वहेरा हो। वहेर विकास महा चिक् विविद्या विकास महा चिक् वहेरा विकास केरा केरा विकास के

সংকাশাং ত্র্যক্ষাং স্মেরমুখীং ভজে। পাশাক্ষণভিয়ব্রান্ দশভীং জগদখিকাং। নিদ্ধাদিশোধনং নৈবামলতে সভি বা জপেং। পূজাপ্রকারঃ প্রাধান্তে দেউব্যো গ্রন্থবিস্তরাং। ইত্যসদেবতানাং মন্ত্রোদ্ধারাদয়ঃ।

> অগন্ত্যোক্তঞ্চ মাহাত্ম্যং প্রাধান্যে কারণং মহৎ। ৰক্ষ্যে জীমন্ত্ররাজস্য শ্রুত্বা যদয়তি সদগতিং!

मर्त्वम् मल्लवर्षाम् ट्लिकः विकायम्हारः । नानभाजाम् नार्त्वम् वेन्तरमित्वम् नीकिषः । विकायम् नार्व्वम् नान्तर्वम् वान-मल्लाः कनाषिकाः । नानभाजापिमरस्म त्राम्हिकारिकारिकारिकार्यः । विवेनविकारः विवेनविकारः विवेनविकारः । विकारः । मल्लाः । ।

আনত্তৰ অণাত্তাক প্রীন্মমন্ত্র (জব মাহাত্মা কণিত চই তেছে, ইচা প্রবণ কানলে সাধকগণ সক্ষাতি লাপ করিয়া থাকেন। পাণ পতা, সৌর, বৈধ ও শাক্ত প্রাকৃতি যাবতীর মন্ত্রাক্তের মধ্যে এই বাম মন্ত্র সক্ষেপ্রেই, বৈধ্যমন্ত্র সকলেব মধ্যে ও প্রীরাম মন্ত্র প্রেই জানিবে। গাণ পতাাদি মন্ত্রে কোটিং প্রশংসা থাকিলেও এই মন্ত্র সেই সকল অণেকার অধিক ফলারক। দীকা, প্রেছবেণ নাাস প্রস্তুতি বাতিরেকে কেবল জল নাজ করিলেই রামমন্ত্র কলপ্রত্ব নাাস প্রস্তুতি বাতিরেকে কেবল জল করিলেই রামমন্ত্র কলপ্রত্ব নাাস প্রস্তুতি বাতিরেকে কেবল জল হউডেও বছকর মন্ত্রের অসীম মাহাত্মা, বেহেতুক এই মন্ত্র আনার্হাসেই ফল প্রাণান ও পাণসমূত বিনাশ করে। আনল বেই প্রকার পর্বতাকার তুলান্রাশিকে নিংশেব কর্ম করিলা থাকে তল্পে এই বন্ধ আভিদিন, পঞ্চ, মাস, ক্ষু ও বংশরে সমূৎপর পাণ সকলকৈ অভিনে বিনাশ করে। রামন্ত্রের অসহীর্বন করিলে জানাকানক্ষত প্রস্তুত্বিন করিলে করিলে জানাকানক্ষত প্রস্তুত্বিন করিলে করিলে ক্রালান্ত্রত্ব প্রস্তুত্বিন করিলে জানাকানক্ষত প্রস্তুত্বিন প্রথিক করিলে জানাকানক্ষত প্রস্তুত্বিন প্রথিক স্বাণাক

শেষং তুলাচলমিবানলঃ। ত্রহ্মহত্যাসহস্রাণি জ্ঞানাজ্ঞান
কুতানি চ। স্বর্ণন্তের্ম্বরাপানগুরুত্রাযুত্যনি চ। কোটি
কোটিদহস্রাণি ছ্পপাপানি যান্তাপি। সর্বাণ্যপি প্রগুলার রামনজ্রাকুকীর্ত্রনাং। তথাচ প্রুতিঃ— ২এততারকং
ব্রাহ্মণার নিত্যমন্ত্রাকে গ পাপ্নানং তরতি, স মুঞ্যুং তরতি,
স সংনিহত্যাং তরতি, স সংসারং তরতি, স সর্বাং
তরতি। স বিলিক্তাব্রিতো তরতি সোহ্যুত্ত্র্প্থ গছতি।
জানেন সদৃশো মন্ত্রো জগংস্থাপ ন বিদ্যুতে। অনেনারাধিতোরামঃ প্রসাদত্যের সম্বরং। স্যাত্তিনেবসর্বেষাং মন্ত্রাণাং
রাঘ্বস্যুত্র। অনুষ্ঠানবিধিজেন্ত্রা বিশেষস্তত্ত্ব তত্ত্ব বৈ।
ইতি জ্ঞীরামচন্ত্রমন্ত্রমন্ত্রাহ্যায়াং।

শ্রীরামনস্তরাজস্য সমগের্থেহিভিধীয়তে।
সংহিতোপনিষন্দঃ সর্বকামার্থনিদ্ধিদঃ।
রকারো বহুিবচনঃ প্রকাশে পর্য্যস্যতি। সফিদানন্দ রূপোহস্য প্রমাত্মার্থ উচ্যতে। ব্যঞ্জনং নিক্তনং ব্রহ্ম

শুরুপদ্বীগমন এবং কোটিং সহল উপপাতক পর্যান্তও বিনর্ট চয়। ঞ্চিও বিলয়ছেন——বে ব্রাহ্মণ এই ভাবকরন্ধ রামমন্ত্র প্রতিদেন উচ্চারণ কবে সে পাণ হইতে আগ পার, সে সৃত্যু হইতে আগ পার, সে পণ্ডিড হততে আগ পার, সে সকল হততেই আগ পার, বে বিবেকী হত, সে মুক্ত হয়। পার, সে সকল হইতেই আগ পার, বে বিবেকী হত, সে মুক্ত হয়। ইহাব সদৃশ মন্ত্র জগতে অভিতীয়। জ্যম এই মলে আগমাধিত হইতে সহসাই প্রসর হন।

আনতার স্বানীইপ্রান বীধার্য আভিহিত চলতে। রশক বহিলাটী কিন্ত এই স্থানে প্রকাশার্থে প্রানাসভাহেত্ত সভিদানকরণ পরমান্তাকে কুমতে হইবে। "ব" এই নাজনের অথ নিজ্লারক এবং "আ,— প্রাণো মারেতি চ বরাঃ। ব্যঞ্জনস্বরূপংবোগো বিদ্ধি তৎপ্রাণ্যোজনং। বেনো জ্যোতির্মরস্তন্মাৎ ক্ষুত্রনাকার
বোজনং। নকারোহভূদেয়ার্থরাৎ সমার ইতি কথাতে।
ক্ষুত্রনার্থনার বুলি কথাতে।
ক্ষুত্রনার সমারং ব্রল্ম উচাতে। প্রকৃতিঃ পুরুষক্রোত্রনার ক্ষুণ্ডতঃ। বিন্দুনালাপ্সকং বাজং বহিংসমারাধুক্ষণিস্ততঃ। বিন্দুনালাপ্সকং বাজং বহিংসোমকলং মতং। অগ্রীনোনাত্মকং বিশ্বং রামবীক্ষে প্রতিতিতং। যথৈব বটবীজন্তঃ প্রাকৃতশ্চ মহাক্রমঃ। তথৈব
রামবীক্ষরং জগদেত্যভ্রাচরং।

ইতি বাজার্থঃ।

অক্ষরার্থে ধ্রনালৈয় বিশ্লীক্রিয়তে মনো:। বীজার্থমূভ্যাগড়ং ধামনামনি দৃশ্যতে।

বীজ: সায়াবিনিশ্মকং পরাত্তক্ষেতি কীর্ত্যতে। মুক্তিদং সাধকানান্তশ্মকায়ো ভুক্তিদো মতঃ। মারূপছা-

এই শ্বৰণে অৰ্থ মানা, (॰ এই স্কাবের অৰ্থ অনুন্ধন এই স্কল বর্ণ ব্যাসকাবলে সাং এই একাজর মণ হঠন। ইয়াহারা মাধাবিশিই বীজা-মান একা অভিনিত ইইভেচে। প্যায়নানে এইটি বুলিতে ইইবে বে, বউনুক্ষেব নীজ মাধ্য বে প্রকার সেই আন্ত বিশাল মহাক্ষে প্রায়েশ্ব আছে দ্বলেশ লাং এই বীজে প্রকৃতিসুক্ষান্ত্রর স্থল প্রবাহিত থাকাতে এই চবচের ভাগতই ঐ অহাক্ষর বাবে প্রকৃতিস্ক্ষান্তর করা প্রবাহত এই চবচের ভাগতই ঐ অহাক্ষর বাবে প্রকৃতিশিত ইইডেচে। মানস্ত্র অক্ষরার্থ ক্ষিত্র ইইডেছে। 'লাং এই বব্দের অর্থ মাক্ষরেশ' মা এই বর্ণের অর্থ বেলাপ্রকৃতি প্রকৃত্র মান্তর পান্তর্ভাগ বলেন—-রাশক্ষে 'ভার দার্ঘণ' এবং মানক্ষে 'ভূমি সেই প্রায়া বিশিষ্ট ' অর্থার ভত্তমান ইত্যাকার অর্থ ব্রায়া। কিন্তু ভত্তমনি ইত্যাদি বাক্য স্কল্য মুক্তি অধ্যান ইত্যাকার অর্থ ব্রায়া। কিন্তু ভত্তমনি ইত্যাদি বাক্য স্কল্য মুক্তি

দত্যে রামো ভূজিমৃজিফলপ্রনঃ । আদ্যো রা তৎপদার্থঃ স্যাৎ
মকারস্তৎপদার্থনান । তয়ে।ঃ সংযোজনমসীত্যাত্মতত্ববিদাে
বিচঃ । তত্বসাদিবাকাস্ত কেবলং মৃজিন্থ যতঃ । ভূজিমৃজিপ্রদক্ষেত তত্মাদপ্যতিরিচ্যতে । রমস্তে যোগিনো
নিত্যং যদা রময়তি স্বকান্ । নিগুণং স্ফিলানন্দং স্কুণঞ্চেত
কার্ত্যতে । জীববাচি নমো নাম চাত্মারানেতি কার্ত্যতে ।
তদাত্মিকা যা চতুর্থী তয়া চার্দাতি কথ্যতে । মস্ত্রোহয়ং
লাচকো রামো বাচ্যঃ স্যাদ্যোগ এতয়োঃ । ফলদকৈব সর্ক্রেয়াৎ
সাধকানাং ন সংশয়ঃ । চিয়য়স্যাত্মিতীয়স্য নিজলস্যান্রীরিলঃ ।
তপাসকানাং কার্যার্থং প্রক্রনা । রূপক্রনা । রূপস্থানাং
দেবতানাং ক্লাবন্ত্রীপুংপ্রক্রনা । মননাৎ ত্রাণনাৎ মস্ত্রোমন্ত্রিণং কর্মভুক্রঃ । মূল্ডাৎ সর্ক্রমন্ত্রাণাং মূলাধার

ভ্ৰম্য্যাদি বাণ্ড হইভেও ইহাকে প্ৰধান ও শতিবিক্ত স্বাকাৰ কারিছে। হয়।

আব খোগীগণ বাংতে আববত বত অথবা বিনি বোগীগণৰে বত করাইতে, ছেন পেই নাচিদান দট রামপদেব প্রতি পাচা, ইহাতে সপ্তণ ও নিস্তুর্ণ উত্তবট অভিতিত হছল এবং নমঃ শ্বা জীববাচক স্থতরাং ''আগ্রা রাম এই প্যান্ত লক্ষ হইল অনশ্র বামায় এই চতুর্বীতে 'প্রান্তি' এই বুঝাইল অত্যব রামায় নমঃ ইহাতে আরা রামেহাস কর্যাং আল্রা আর রাম অভিন এই অর্থ শ্যাবনিত হই বা এই মন্ত্র বাচক, ইহাব বাচা রাম এই বাচা বাচকের বে যোগ ভাষা সাধকসকলের অভিশয় কলভারক। রাম চিন্তর নিক্ষণ আশ্রামী অভিভায় এক হইলেও উপাশক দিকের কার্য্যের অন্য ইহার কাশ করনা ক্ষিতে হয়। রূপ ক্ষিত হইলেও জাগাক দিকের কার্য্যের অন্য হহার কাশ করনা ক্ষিতে হয়। রূপ ক্ষিত হইলেও জাগাক দিকের কার্য্যের অন্তর্গান্ধ হইতে উৎশন্ধ এবং শ্রমণ যে ভাষাকের ক্ষেত্রক সন্তুল। স্কল মন্তের মূল, মূলাধার হইতে উৎশন্ধ এবং মূশ শ্রমণ যে ভাষাকে মূলমন্ত্র বলে । মূলমন্ত্র সাভাষাতি, উপমন্ত্র কাশ্যের প্রতি

मग्रहार । मृगवल्लानिकषार मृगमज है जिस्का । नश्यकां कि महामजा के नमजान्त जानूनाः । वर्गमाजाः यताः मद्ध् मृगमजार मृश्विजाः । रक्षमागितः व्यन्तः रक्षम पर्वतः म्मृजिजर । मृगमजार विकानां जित्रा विवान क्षक्रमानिकः । मृगविकानमार्वतः कोवन् रक्षा जरमहरः । किमानिक-रेमचर्शमित्रारम्य कार्यस्य ।

# ইতি শ্রীরাসচন্দ্রবীজার্থঃ। অধাধিকারনির্ণয়ঃ।

মসুষেতের সর্বেষামধিকারোইন্তি দেহিনাং। মুমুক্ষুণাই বিরক্তানাই তথা চাজমিণাই সদা। রামো ধ্যেয়ঃ প্রণবজাই যতীনাম্ভ বিশেষতঃ। শ্রুহাক্তজাভারকত্বই মন্ত্ররাজদ্য যহ ক্ষুটিই। ভ্রমন্ধাত্তা বিক্ষুণ্ট নাদো বর্ণাই ক্রমেণ ষট্। তারকত্বাভারকত্তই শ্রুহাক্তমবধারিন্তই। অথ ভ্রম্বাক্তঃ প্রথাই যাজ্ঞবক্তাং—কিং তারকং? স হোবাট যাজ্ঞবক্ষাঃ। ভারয়ভাতি তারকং দীর্ঘাননং বিক্ষুপ্রকিই। দীর্ঘাননং

(काहि। त्रमख वर्ग म्नप्रच स्टेप्ड छेर्पद्र। (य वाक्तित क्षक स्टेप्ड म्नम्बद्धयथाविश्व प्रेणा इत काहात काहार के चनासमानि त्रमञ्ज्ञांन त्रमञ्जातिक इत क्षर काहारक विद्यान करहा अध्या मृनमञ्ज बानामाळ जीवजूक इत क्षर चांनप्राति के वर्षा मुक्त चांति इस।

क्षनस्त्र वासम् द्र दर्भ क्षिकाती वह छाश निर्मिष्ठे व्हेट्छ । महीशी माद्यत्त बहे यह मनम तामगद्र क्षिकात कारक, किछ मःमाद्र विश्वक (माक्षा-किमापी द्रकाती छ काल्यो मनद्रम मध्य तामगद्र होका व्यथा विद्यम व्यवस्थानीत द्र द्रक् केछि हाता महत्राक्षत काश्मत्वक्ष व्यवस्थि व्यवस्था विवस्था व्यवस्था विवस्था व्यवस्था विवस्था वि

পুন্মায়া নমঃ। ইত্যেতদ্ ব্ৰহাত্মকাঃ স্চিদানশাখ্যা ইত্যু-পাদিতব্যং। অকার: প্রথমাকবো ভবতি, উকারো দিতীয়া-করোভবতি, মকারস্তীয়াকরো ভব্তি, অর্থনাত্র-**শ্চত্রক্ষরো ভবতি, বিন্দু: পঞ্চাক্ষরো ভবতি, নাদঃ** ষষ্ঠাক্ষরো ভবতি, তদেব তারকং ত্রহ্ম ঘং বিদ্ধি ইতিশ্রুতিঃ। রামেতি পরমং জপ্যং তারকং এক্ষদঙ্গিতং। তথাচ রাম-রামেতি রামেতি এত ভারকষ্চ্যতে। ইত্যাদ্যাঃ শ্রুতয়ঃ সন্তি স্মৃত্যুণ্ট সহস্রদ:। এতদেবাবিমুক্তে জ্রীরুদ্র: কথয়তি স্বয়ং। मुम्र्वार्य निकर्निक्रामर्द्धानक निवामिन । जहर निनामि ८७ মন্ত্রং তারকং ত্রহ্মসঙ্গিতং। ত্রহ্মত্বং জানকীনাথ ইতি পাল্পে শিবোক্তিতঃ। রুদ্রস্ত তারকং ত্রন্ম ব্যাচটে শ্রুভিরপাথ। সর্বেধামধিকারে। বৈ জ্ঞাতব্যো দেশিকোতনৈঃ। অগস্তা-সংহিতায়ান্ত হেতদেবোপপাদিত:। শুচিত্রতত্যাঃ শুদ্রা ধার্মিকা বিজ্ঞদেবকাঃ। স্তিয়ঃ পতিত্রতান্টাত্তে প্রতিলোমারু লোমভাঃ। লোকাশ্চাগুলপর্যস্থাঃ সর্বেঽপাতাধিকারিলঃ।

ভ, ত্রী ও নমঃ এই সকল সচিদানন্দ ব্রহ্মায়ক মন্ত্র, ইহারা সকল উপাস্য জানিবে। ভ'—ইহাতে চন্ত্রট অকর, তাহার প্রথম অকর অবার, বি তীয় উকার, তৃতীয় মকার চত্র্য অর্কমাত্র, পঞ্চম বিন্দু এবং বর্চ নাদ ইহানিশকে তারক ব্রহ্ম আনিবে। আর ''রাম'' এই নামটি শ্রুণিড তে এবং সহস্র সহস্র স্মূর্কে সক্ত করিবার জন্য ''বাম'' এই তারকব্রহ্ম নাম বলিয়া থাকেন এবং পাল্লেও মহাদেব শ্রীরামের তারকব্রহ্ম প্রকাশ করিয়াছেন। রাময়ত্র গ্রহণে সাধারণের অধিকাব আছে জানিবে। অগতা সংহিতাত্তেও এইটিই প্রণাকিত হইয়াছে। জী, শুল্ল এবং প্রতিলোম ও অন্নোমে আত চঙাল প্রস্তৃতি সাধারণই এই তারকব্রহ্ম রাম্যমের অধিকারী। সংগ্রতি এই

শ্রুতির্বাদ্ধির কার্যতে বার্যতে । ব্যাধিবোধঃ
সংপ্রাপ্তো নাশ্যতে তহাবহুয়া। শ্রুতিবিরোধে তু
শ্রুতিরেবগরীয়সী। ব্যবস্থালাগনাশ্রিত্য বাক্যমেতিলিয়ানকং। বড়বর্ণং রাক্ষণাদীনাং রেয়াণান্তদ্দিবর্ণকং। অস্পেষাং
দেশিকেন্দ্রেণ বক্তব্যঃ তারকং পরং। বিনা তু প্রবং মন্ত্রং
গায়ত্রীং শ্রুতিবাধনাং। তথা চ সাবিত্রীং প্রণবং মন্ত্রং
গায়ত্রীং শ্রুতিবাধনাং। তথা চ সাবিত্রীং প্রণবং মন্ত্রুণ ক্ষীঞ্চ
মদি জানীয়াং স্ত্রী শৃদ্ধঃ স মৃত্যোহধো গছাতি তথাং সর্বাদা
নাচন্টে স আচার্য্যন্তেনৈব মৃত্যো ভবতীতি তাপনায়শ্রুতিঃ।
তন্মুলং দ্বাক্ষরং বাচাং ন চপূর্ণং বড়ক্ষরং। গ্রেইন্ডান্তালাং
হীনত্বাং শ্রুতিরপ্যাহনির্ত্র মং রমস্তে যোগিনোইনস্তে গত্যানন্দে চিনায়নি। ইতি রামপদেনাসো পরং ব্রক্ষেতি
কথাতে।

ইভ্যধিকারিনির্ণয় । 
অধাভিষেকৎ বক্ষ্যামি দীক্ষাবিধিমস্তুম ।
উপাসকশভেনাপি বিনা যেন ন সিধ্যতি ।
মধুমানে ভবেদ্তু:খৎ মাণবে রত্তসক্ষয় । মরণৎ ভবতি

একটি বিরোধ উপস্থিত হইল যে, জ্ঞাতি বলিতেছেন ধড়ক্ষর ভারকএক্ষর ক্ষৃতি বলিতেছেন দাকর ভারকএক্ষা আর জ্ঞাতি ও স্থাতি এ উভরের বিরোধ উপাস্থিত হইলে জ্ঞাতিই মাননীর হয় অভএব হাক্ষরের ভারকএক্ষর সক্ষত হয় না। অভএব এইছলে এইরপ মীমাংসা করিছে হইবে যে আকার ক্ষৃতিব ও বৈশা এই বর্ণাব্রের স্থক্ষে বড়বর্ণ ভারকএক্ষা, প্রা, শৃত্র ও চণ্ডাল প্রভৃতির পক্ষে কেবল দাক্ষর, রাম এইময় ভারকএক্ষা। স্ত্রী ও শৃধাদির বড়বর্ণাস্থক ভারকএক্ষে অধিকারই নাই। ভাপনীয় জ্ঞাতি বলিয়াহেন বে. গ্রা শ্রুতি বলি গার্থী, প্রণ্ড, মন্ত্র ও স্ত্রীবীক্ষ প্রভৃতি অবগত হয় ওবে ইহারা মন্দানস্কর অধানামী হয় এবং উপদেষ্টাও এইরপ প্রভাবায়ক্ষালী হন। অগন্তান্ত বলিয়াহেন এই সক্ষ মন্ত্রে প্রাক্ষান্ত বলিয়াহেন এই সক্ষ মন্ত্রে প্রাক্ষান্ত বলিয়াহেন এই সক্ষ মন্ত্রে প্রাক্ষান্ত উপদেশ

रेकार्छ भाषात् वसूनाभनः। मृत्रुक्तः खावरः। मृत्रुक्तः खायरः। खायराव मानि मर्क्कः खायरः। खायराव दि। खानः मानि मर्क्कः खायरः। खानः मानि मर्क्कः खानः। खानः मानि मर्क्कः खानः। खानः कार्किः तर्गाशः भाषाः। कार्यकः वार्यकः। कार्यकः मानि मानि कार्यकः। कार्यकः मानि मानि कार्यकः। कार्यकः मानि मानि मानि कार्यकः वार्यकः।

ইতি মাদনিয়মঃ।

त्रवी श्वरती उथा मार्म कर्खन्या वृष्ठकाशाः।

### ইতি বার্নিয়মঃ।

শশিনা রোহিণী স্বাতী বিশাখা হস্তভের চ। জ্যেষ্ঠো-ভরত্তিয়েষের কুর্য্যামন্ত্রাভিষেচনং। নারদতন্তে।— রোহিণী শ্রেণার্ক্রাচ ধনিষ্ঠা উত্তরাত্রয়ং। পুর্যা শতভিষাচৈর দীক্ষা নক্ষত্রসূচ্যতে। ইতি নক্ষত্রনিয়মঃ।

দিবে। অর্থাৎ ওঁ কার প্রভৃতিপূর্কক যে মন্ত্র ভাষা আন্ধানি বর্ণনারক, ভাজির বালা দেই সকল স্থীপুদুপাভৃতিকে দিবে, ত্রী পুড়ানির রাম এই বাক্ষরই মূল জানিবে ইহান্তে চতুথী প্রভৃতির অপেকা করে না। বোগীপ্র পরেই সচিদানক অনস্ত পর্যাত্মাতে নীন হইরা থাকেন রামপ্রে সেই প্রসন্ত্রক্ষেই যুঝার।

অনতর অভিবেক ও দীকাবিধি কথিত হইতেছে দীকা ব্যতিকেশত উপাসনা করিলেও কণ লাভ হর না। অধনতঃ দীকাগ্রহণে কোন মাস অশত, কোন মাস অপ্রশন্ত তাহা কথিত হইতেছে।

ेटिज मार्ग मह अवन कवित्त कृत्य नाहेटिक हत, देवनाथ नाह्य त्रमाण, देवार्ट मृत्रा, जावार्ट वक् विमान, जावार्ट मन्निक, जार्ज मण्डिक नाहिक मार्ग जावार्ट मन्निक महिल्ल मार्ग व्याचार्य ज्ञानिक कहिल मार्ग द्विक मार्ग मार्ग प्राप्त व्याचार्य ज्ञान क्ष्म कहिल महिल कहिल मार्ग विक मार्ग विक महिल मार्ग विक मार्ग विक मार्ग विक मार्ग मार्ग विक मार्ग विक मार्ग विक मार्ग मार्ग महिल मार्ग महिल मार्ग महिल्ल मार्ग महिल मार्ग महिल्ल महिल्ल मार्ग महिल्ल मार्ग महिल्ल महिल्ल महिल्ल मार्ग महिल्ल मार्ग महिल्ल महिल्ल महिल्ल महिल्ल महिल्ल महिल्ल महिल्ल महिल्ल मार्ग महिल्ल महिल महिल्ल महिल महिल्ल महिल महिल्ल महिल्ल महिल महिल्ल महिल्ल महिल्ल महिल्ल महिल्ल महिल्ल महिल्ल महिल

পূর্ণিমা পঞ্চমী চৈব ছিতীয়া সপ্তমী তথা। এরে দশী চ
দশমী প্রশন্তাঃ সর্বাকামণাঃ। মন্ত্রসারসংগ্রহে।—ছিতীয়া
পঞ্চমী চাপি বন্ধী চাপি বিশেষতঃ। ছাদশ্যামপি কর্তব্যং
ব্রেয়োদশ্যামথাপি বা ইতি তিথিশুদ্ধি।

পকাঙ্গভাদিবনে স্বোদয়ে রাশিভারয়ো:। গুরুশুকো-দরে শুদ্ধনায় বাদশহশাধিতে চন্ত্রগানুকুলে চ শসতে সর্বাক্ষা তু। ইতি কালশুদ্ধি:।

স্থা এইণকালে তুনা অদ্যেষণং ভবেং। স্থা এইণকালেম সমানো নাজি কশ্চন। তত্র যদ্যংকৃতং সর্কামন স্তফ্লদং ভবেং। ন মাসতি থিবারাদিশোধনং স্থাপকিণি। দদাতী উৎ গৃহীতং বত্তমিন্ কালে গুরোন্ধ্। সিদ্ধিত বিভি মন্ত্রসার্বনায়াদেন বেগতঃ। অত্তত্তিব রামস্য মন্ত্রীপাভিষেচনং।

বারনিরম কথিত হইতেতে— থাব, বৃত্তপতি, সোম, তক্র, বৃধ এই সক্ল বাবে দীকা প্রশস্ত ।

नक्छ निरम — विनी, (वाश्मि, वाशी, विभाषा, श्वा, (बाई। উछा छन् धनी, উछा। १६ छ छ उत्ताह १३ नकत नक्ष्य यह वाहत वामछ छ। न(व। नात्रहात विविष्ठ व्याह-- (वाहिनी व्यवना व्याही धनिहा, छेखाइएसनी উठवावाह। छेखाउतास, श्वा ५ न'इस्टिन। यह नकत नक्ष्य एोका बहन कतिव।

অনস্তাব তিথি নিরম কথিত হর্ততেছে।—— পূর্ণিমা, প্রুমা, াষ্ট্রীয়া, স্থামী, অরোদশী ও দশ্মী এই সকল তিথিতে মন্ত্র এইণ করিলে মনোছ-ভীষ্ট সিদ্ধাহয়।

मावमध्याद विश्विष्ठ व्याहि---विश्वीमा, नक्षी, वही, पामनी अवद्यामनी अहे मकन नक्ष्य यज्ञ बाहन कविद्य।

লগ্নন্ত আর লগ্নের থাদল কানে গুজ্পার থাকিলে এবং চন্ত ও ভার। জন্মুক্র কান্ত আর লগ্নের থাদল কানে গুজ্পার থাকিলে এবং চন্ত ও ভার। জন্মুক্র কান্ত কান্ত কান্ত শ্রেশস্ত । কর্ত্তব্যং সর্ব্যক্তেন মন্ত্রসিদ্ধিনতীপ শৃতি:। তথাছি।— ততীর্থেক বিধুগ্রাসে তথৈব দেবপর্বাণি (তন্ত্রদামন- পর্বাণাঃ) ইতি পাঠান্তরং। মন্ত্রদীক্ষাং প্রকৃর্ব্যাণো মাসক্র্যাদিবাধয়েং। ইত্যপ্রাদক্ষালঃ।

উপাদকস্ত শুদ্ধাত্মা গুরং যত্নেন তোষয়েং। স্ববিত্ত-চিত্তকাথৈশ্চ ভক্তিশ্রদ্ধাদমন্বিতঃ। যথা দদাতি সং তুষ্টঃ প্রথমো বরদো মনুং। স্বয়মেব তথাচৈব মিভি কর্তব্যতাক্রমঃ।

শুরুর্বিশুদ্ধঃ প্রাগেবং শুদ্ধালা সপ্তমেহহনি। সং-কল্পোপোষ্য কর্ত্তব্যমঙ্কুরারোপণং শুভং। কুর্ব্তমান্দীমুখং প্রাদ্ধং পূর্বেছাঃ স্বন্তিবাচনং। স্বগৃহ্যোক্তবিধানেন তদেব বিদধীত বৈ। চতুর্ভিব্বর্ণ কৈঃ সম্যক্ নীলপীত সিতাসিতৈঃ। স্বতোভদ্রমালিখ্য তত্ত্ব ধান্যাঞ্জলিদ্বয়ং।

কর্ত্ব্যতা।—গুক যাহাতে সন্তুষ্ট হইয়া প্রসন্ন চিত্তে অভিল্যিত ফ্ল-দায়ক মন্ত্র দান কবেন তদপুসাকে শিবাকে ভক্তিশ্রদাপুরঃসর অর্থ, মন ও শরীর হাবা গুরুর সংস্কাষ জ্লাইতে হটবে।

অনস্তর গুরুকে ওচি হইরা দীক্ষাব পূব্য সপ্তম দিবৰে সকর উপবাসাদি কিরিরা অন্ত্রারোপণ করিতে হইবে। শিষ্যকেও স্ব গৃহোক্ত বিধানাসুসারে স্বান্তিবাচনাদি পুরংস্ক নাদ্যীমুখলাত প্রভৃতি করিতে হইবে। গুরুও

নিধায় কলসং তত্ত্ব ভীর্থতোয়প্রপুরিতং। বেষ্টিতং বস্ত্র-যুগোন পঞ্চরত্বসমন্বিতং। আত্রাম্বত্পপ্রস্নাচ্যং শাখাডি-ক্লপশোভিতং। 'নারীকেলফ্লোপেতং মাঙ্গলৈঃ পরিতো-দর্কোৎদবসমাযুক্তৎ কৃষা তত্তার্চয়েদ্ধরিং। ঋগ্-য়ঙ্গুঃ দামদূজৈশ্চ স্মার্টের্ডঃ পৌরাণিকৈরপি। মক্তিকাগমিকৈ-टेम्हर टेवस्थटेनटम वमर्क्टरप्रथ । वन्नद्राम् वाकान् वाकाः কুওলাঙ্গুলি ভূষণৈঃ। আবয়েতিস্ত সৃক্তানি মন্ত্রনিধ্যুৎসবে শুভে। গুরুত্তৎকল্পবিধিনা ভূতশুদ্ধাদিমারভেৎ। ক্যাস-জালঞ্চ বিশুস্য বিধিবতত পূজয়েৎ। পুজনীয়ৈশ্চ পূৰ্কোক্ত-সাধনৈঃ পুরুষোত্তমৎ। পুর্ন্মোক্তনৃত্যগীতালৈয়কুৎসবং কারয়েৎ। পুণ্যন্ত্রীভ্যো গৃহস্থাভ্যো দণ্যাদ্বছ ञ्चिखः । गऋतूष्यायुजायुनमन्वारमाष्ट्रमगानिकः । ८ । अन्न हामभानादेवतरनारकार्शन अभीवरक । जनः हर्ताः ननः कृषा त्रार्धी क्षागतपक्षत्तर। जयर निया ह तार्खी ह जिकालः পূজায়েৎ প্রান্থ: বট্ সহস্রং জপেতত পূজাতে হহনি শং শুরুঃ।

নীল শুক প্রাচ্চি পঞ্বর্ণবাবা যথাবিধ স্প্রেল্ড্রন্ড্র করিয় ভালতে অজ্লিক্র পরিমাণ শুক্র ধ্যান্তোপরি পঞ্চত্ত্ব, পঞ্চল্বর, বস্তু মুগ্ল ও নারীকেলন্ক তার্থজনপূর্বকুত্ত জালিত করিবেন। এবং ভাষতে বল্লিষ্ উৎসব প্রাণ্ডর চূর্যেদীয় স্কুক্ত এবং স্তৃত্ত্ব, পূর্ণোক্ত ও ওংগাজ মসকাবা বিস্তৃত্বক যথাবিধি অর্চনা করিবে। অন্তর্ব অজ্লী, কুণ্ডল বলর প্রভৃতি নানাবিধি অল্কার ও বল্লাক্রিয়া ব্রাহ্মণদিগ্রকে বরণ করিয়া স্পাণোক্ত পাঠাস্কু স্কল শুনাইতে ইইবে। এবং গুক্ ভৃত্ত দি ও জাস সকল করিয়া মণ্ডলোপবি যথাবিধি শী হবালাদিপুনা স্বৰ বিশ্বুব অর্চনা করিলে শিষা স্প্রাণ্ডলোপবি যথাবিধি শী হবালাদিপুনা স্বৰ বিশ্বুব অর্চনা করিলে শিষা স্প্রাণ্ডলোপবি যথাবিধি শী হবালাদিপুনা স্বৰ বিশ্বুব অর্চনা করিলে শিষা স্প্রাণ্ডল প্রান্তিই করিয়া নিত্র স্থলনকে শোজন করাইবে। এই প্রাকার করিলা প্রান্তিই করিয়া নিত্র স্থলনকে শেলকরে পাত্রব অর্চনা করিয়া

পরেহ্ বি তথা প্রতিষ্ঠ পূর্বেবৎ সর্ব্যাচরে । সংপূজ্য বিধিবলাময়য়িকার্যমথাচরে । বিশিষ্ঠ সংহিতায়াস্ত কুলকণনীরিতং। তথাহি ।—গৃহ গৈশোনভাগে তুমভাপং কারয়েদ্রুণঃ। বড় ছাদশাউর্ভিহ তৈঃ বোড় শৈর্বা সমস্ততঃ। চতুর্ঘারসমাযুক্তং তোরণাদ্যেরলঙকুতং। কুতং তম্মগুভাগে তু কারয়েচতুরক্রকং। বিতত্তি দ্বম্পতিং যথ কুণ্ডমুক্তং মনীষিভিঃ। বিপ্রাণাং ক্ষরিয়াণান্ত দঙ্গুলিল্রয়্মণযুক্তং। বৈশ্যানাং ছ্যঙ্গুলাধিক্যং পূজাণাং হন্তমাল্রকং। প্রথমা মেখলা তত্র ছাদশাঙ্গুলবিস্তৃতা। চতুর্ভিরঙ্গুলিক্তমন্ত্রে। ক্রমাত্রকং। তস্যাক্ষেদ্রক্র সমন্ত । তস্যাশ্চেণিরি বপ্রঃ স্যাচতুরঙ্গুলিক্তমন্ত । ক্রমাত্রি সমন্ত । তস্যাশ্চেণিরি বপ্রঃ স্যাচতুরঙ্গুলিক্তম্ব প্রতি প্রান্ত কার্যো বপ্রঃ সেম্য বিস্তীর্ণস্ত সমস্ত । ত্রের্গুলবিস্তীর্ণ- ক্রমাত্রণ্ড তথাবিধঃ। যোনিস্ত পশ্চমে ভাগে প্রাঙ্গুণী মধ্যমংক্তি। ষড়ঙ্গুলিশ্চ বিস্তীর্ণ চায়তা ছাদশাঙ্গুলৈঃ।

রাজিতে জাগরণ করিবে। এবং গুরুকে পূজা সমাপন হইলে দিবা রাজিতে জন্মভাষার মূলমন্ত্রণ কবিতে হঠবে। অপর গ্রন্থিক প্রতিংকাকে পূর্কোকে সমত এইজন করিয়া যথাবিধি আঁবামপূজা সমাপন করিয়া কুণ্ড অথবা স্থিতেল বহিন্দ গ্রাসন করিতে হঠবে।

সংগতি ইপিনের্ছাক কুওনুক্লু ক্থিত ক্টড়েছে। অধান প্রের ঈশানকোণে ৬২৫, ৮২৫, ১২২৫ অথবা ১৬২৫ পরি-মিত চতুর্বিযুক্ত ও ভোরণ—প্রভৃতিঘারা স্থানান্তিত মণ্ডণ নিশ্বিত করিয়া ভালার মধান্থানে ব্রাহ্মণের পক্ষে একহন্ত ও অসুলি কারেরের পক্ষে একহন্ত ৩ অসুলি, নৈপ্রের পক্ষে একহন্ত ২ অসুলি, শৃঞ্জের পরে কেবল ১ হন্ত পরি-মিত ধাত কলিয়া চতুরক্ষ কুণ্ড করিবে। ইহাতে ৪ অসুলি উন্নত এবং ঘাদ্শাস্থ বিশ্বত নেবলা, করিয়া ভাহাব উপরি ভাগেও অসুলি উন্নত ৮ অসুল বিশ্বত চতুর্দ্ধিণে বস্তা নিশ্বাণ ক্রিয়া ভাহাব উপরি ভাগেও প্রক্ষার

পৃষ্ঠোরতা গলেকে বিদ্ধান মধ্যমেরতা। কঠোইনং বরমাত্র: ল্যাং ক্তেচ করমাত্রকে। কঠো বত্নেন কর্তব্যা ভূকিমৃক্তিকলেপ ভিঃ। নাভিরপাথবা ক্তমেকমেধলকং ভবেং। এবং লক্ষণসংমুক্তক্তমিক্টার্থাসিদ্ধিনং। অনেক-দোষদং ক্তং তত্ত্ব ন্যাধিকং যদি। তত্মাৎ সমাক্ পরী-ক্যৈবাং কর্তব্যং ভভমিদ্ভতা। হস্তমাত্রং স্থিলং বা সংক্তিপ্ত হোমকর্মণি। ইতি ক্তলক্ষণং।

বায়ব্যে চাথ বৈশান্যে পূজাবেদীং প্রকল্পন্থ হস্তো-,
মতাঞ্চ বিস্তাণিং চতুর্ন্তাং সমস্ততঃ। শালিভগুল চুণিশ্চ
নীলণীতানতাসিতৈঃ। রক্তারুণেগুল্রগৌরের্বাণর্য্তং
সমালিথেং। রাজ্ঞা দীক্ষা যদান্যত্র বহুপত্রং নিরূপিতং।
আদৌ রেখা চতুর্দিকু দশ সপ্ত চ কার্যেং। মধ্যে ষোড়শকোষ্ঠানি যন্তার্থং পরিমার্জ্জ্মেং। ততঃ পংক্তিষ্মং
মার্জ্জাং দিকু কোণধ্রং গৃহং।বিদিকু চ সমা রেখা স্তত্র দাদশ
রাশ্মঃ। কৃষ্বা পংক্তিষ্মং বাহ্যে বহুস্থং স্থাপয়ে ওতঃ।
শেষপঙ্কিষ্ম্মের ষড়ভিঃ কোঠেন্ত্রিং সমস্ততঃ। শোভো-

ডভূলা বথা কৰিছা কুণ্ডেৰ পশ্চিম ভাগেও অসুল বিজীপ ১২ অসুলি আয়ত এবং পৃষ্ঠভাগে উন্নত, লচ্চিত্ৰ পূৰ্বমূখী খোনি নিৰ্দাণ করিয়া ক্ষমান কুণ্ডে বৰমান কণ্ঠ কৰিতে কটবে। এই প্ৰকান লক্ষণে লক্ষিত কুণ্ড অভিলব্যি ক্লাৰান করে,ইছাতে যদি নানাধিক কিছুহম তবে অনেক, আনিই হয় অভন্যৰ বিশেষ অবধানের সহিত কুণ্ডনিৰ্দ্মণ করিবে। হোমের সংক্ষেপ ছইলে হস্তপনিমিত স্থানিক করিতে হটবে।

আর বাষুকোণে অথবা লিশান কোণে একছত উরত ৪ হাত বেনী করিরা ভাষতে জর, পীত কৃষ্ণ ও রক্ত প্রভৃতি বর্ণবারা যন্ত্রগিধিবে। রাজাভির সাধারণের পক্ষে অইপঞ্জ পদ্ম লিখিতে হইবে। ইহাতে প্রথমতঃ পুর্বে ও পশ্চিমে ১৭ টা রেখাবারা একটি ক্ষেত্র করিয়া ভাষার সধাত্ব বোড়শ

কোষ্ঠা যন্তের জন্ত মার্জিত করিয়া রাখিবে। এবং ভাহার পরেব গৃইপাঠিশ মার্জিনা কবিয়া ভাহাতে দাদশ রাশি ও কোপ কোষ্ঠা কবিবে। আব বহি-ক্ষের পংক্তিবব বহ্ছি স্থাপনার জন্ত মার্জিজ কবিবে। শেষপংক্তিবরের অধন্তন পংক্তিব চারি কোষ্ঠা এবং উপরিতন পংক্তির ছই কোষ্ঠা এই চর কোষ্ঠাগারা চন্তুর্দিগেই চন্তুর্দাব করিয়া উক্তপংক্তিব্যের ভিন ভিন কোষ্ঠাণ্ডে শোলা ও উপশোলা করিবে। পঞ্চায়তন দীক্ষাভে এই সাধায়ণ নিয়ম জানিবে। বহির্ভাগে ভিনটি বৃত্তাদিয়া ভাহার মধ্যে অইদলপদ্ম করিবে। ঐ বৃত্ততার চক্ত স্থাও বহ্নির সদৃশ। ভাহার বহিংক্তাদেশে চতুরক্ত এবং কর্ণিকার মধ্যভাগের ঘট কোণ লিখিবে। পদ্মের পূর্বাদিগের পঞ্চ পীতবর্ণ, পশ্চিমে ভক্তবর্ণ, উত্তর্নদিগের পত্র রক্ত, দক্ষিণের ক্লক্ত, অগ্নিকোণের পাটল, নৈখতে নীল, বার্কোণের ধূল এবং ঈশান কোণের ক্লে, গাইকোণের পত্র নিরমে অইপ্রা কিবিয়া মণ্ডলে শব্দ, চক্র, ধন্ত বাণ শিধিয়া মণ্ডলোপরি জীরামের পূলা করিবে। জারোপাজ্জিত বিভ্রারাতেই দান ও বঞ্চাদি কার্য্য করিবে। জারাপাজ্জিত বিভ্রারা তিজিপুরঃদর কার্য্য করিলেভ

#### वर्ष क्रिटिंगिकनः।

• আগস্তো।— আচং ৰাজ্প্রমানেন হোমান্নং । বদ্ধাত বৈ। বিংশত্যংশৈর্জবেশ্ব বেদীতৈর্জভির্তবেশ। একাংশেন মিতং মুধং। বেদীত্ত্যংশেন বিস্তান্তঃ কঠিঃ সপ্তাংশেন মিতং মুধং। বেদীত্ত্যংশেন বিস্তান্তঃ কঠিঃ সপ্তাংশেন মিতং মুধং কাঠ প্রমাণং স্থাৎ মুধ্য মার্গং প্রকল্পরেশ। কনিঠান্গ নিমানেন সর্পিয়োনিন্দির্মান্ত। বেদীমধ্যে বিধাতব্যা ভাগেনৈকেন কর্ণিকা। বিদ্যাত বহিস্তায়া একাংশেনাভিত্যে বইং। তদ্য থাতং তিভির্ভার্কির্কৃত্তমন্ধাংশতোবহিঃ। অংশেনেকেন পরি-তো দলানি পরিকল্পয়েশ মেথলা মুখবেদ্যোঃ স্যাৎ পরি-তোর্দাণ স্থান্তঃ। দশুমূলাগ্রয়োঃ কুম্জো শুণবেদাস্থলৈঃ ক্রমাণ্ড। গণ্ডীযুগ্মং সমাংশংস্যাথ। দশুস্থানাহ নিরতঃ ষড়ভিরংশৈঃ পৃষ্ঠভাগো বেদ্যাঃ ক্র্মাক্ষতির্ভবেশ। হংস্ব্যু বা হস্তিনো বা পোজিশোবা মুখংলিখেশ। মুখস্য পৃষ্ঠ-

অংশাগানী হইতে হইবে। আর কুণ্ডান্তব হইবেও এইরপ নিষ্মাতু সারেই পূজা করিবা হোমাদি করিবে।

আনন্তব শ্রুক ক্রেৰের লক্ষণ অভিত্তিত চ্টুভেছে। হোমাণ বাত প্রমাণ লাত করিছে। করিছে হর, প্রথমত প্রভাবে কাই থানিকে ৩৬ ভাগ অন্ধিত করিয়। তাহার বিংশতি অংশবাবা দণ্ড নির্মাণ কবিবে এবং পর্কোক্ত অন্ধিত ভাগের ৮ ভাগবাবা বেদীর আকৃতি করিবে আর একভাগে কঠ এবং সংগমভাগে মুখ নির্মাণ করিবে। উক্ত কঠের বিস্তার বেদীর তিনভাগের একভাগে হইবে। কঠের পরিমাণামুসারে মুখ করিয়া ভাহাতে মুজ নিঃসরণার্থ কনিটা সুলি প্রবেশ হয় এইরূপ একটি পথ করিবে। আর পুর্কোক্ত বেদীর মধ্য স্থানে প্রমাণ পরিমাণে কর্নিকা করিবে। ঐ কর্ণিকার বিভিত্তাগে চতুর্দিকে প্রকাগবারা ক্রিবিট্ করিবে ঐ বটের যে প্রমাণ ভাহাব থিভাগে পরিমাণে ভাহাতে থাত করিবে এবং ভাহার বৃহ্নিগে অক্ষণাগ পরিমাণ বৃদ্ধ করিতে

ভाগে गार मर श्रीखः मक्तर खेकः। खेक क्ष्मिर्मेखं विर्धार करिया खेरा कर्मे खेरे कर्म खेरे कर्म खेरे कर्म खेरे कर्म खेरे कर्म खेर कर्म खेरे करिया कर्म कर्म खेरे करिया कर्म करिया कर

व्यक्तर वाक् ध्यांति (हां गार्थर विषयी छरेत । हजू इक्षर विश्वांति । स्विश्वंति । स्विश्वंति । स्विश्वंति । स्विशंति । स्

ভইবে, ঐ বৃজ্ঞের চতুর্দিকে অকজাগ পরিষাণে পত্র ক্ষিত করিবে। আর

মুখ ও বেদীর চতুর্দিকে অর্জাগে পরিষাণে যেখলা করিবে। দণ্ডের মূলে তিন

অন্ত্র্ণা এবং দণ্ডের অত্যতাগে চারি অস্থূলি পরিষাণে ছইট কুক্ত করিবে।

আর তুলাভাগে বলর ব্যা অভিত করিবে। শ্রক্ষণেওর পরিষাণ এই প্রকার
ক্ষিত্র আছে। অনস্তর পূর্বোক্ত বেদীর পূর্চকে ও ভাগে বিভক্ত করিব।

পুর্চন্তানিটকে হুল্ডির পূর্চদেশের ভুলা নির্দ্ধাণ করিবে। আর নির্দ্ধিত মূণের
পুর্চহাগে হুংস এবং হুলা ও বরাহের মুখের আকৃতি অক্তিত করিবে।

स्वतंत्र कर्ततं नक्षण कथिछ क्टें(छर्छ । अरहतं । खर्रात अण्णान गविकानं कित्रा जिनकानं वाता अन्य निर्माण क्षिरछ -ब्टें(व । खर्यार वर्षेत्र ज्ञित्वर ज्ञातंत्रक हटेरव जाशतं अरुक्तम गतिकानं क्षित्र २० व्यवसानं स्वयं कृतिर्घ रहेरव । छेक हकूर्विश्मिक ज्ञातंत्र २२ व्यवस्थ कृतिरम् व्यवस्थि २ जानवाता अर्थतं मूच्छानं व्यक्ति कृतिरम् । अर्थानं वर्षेत्रम् শঞ্চাল লমথাপি বা। ত্রিছয়াল্পকং তদ্য মধ্যান্তস্তু শোলনং। শুনিরং কণ্ঠদেশে দ্যাৎ বিশেলয়াবৎ কনীয়সী। শেবং কৃওস্তু কর্ত্তবাং যথাক্ষচি বিচিত্রিতং। চমকেণ দমায়িকে হুডেমাত্রং অবো ভবেছ। চতুক্ষকং শোভনং স্তুতং লালুলং বিদধীত বৈ। যথালপ্রসে গোল্পাদে প্রচিরং দৃশ্যতে তথা। এক মিন পুস্তকে এতা দৃশানি শুক্রকার প্রমাণানি।

ততঃ কৃশুস্থলং সম্যুক্ গোময়েনোপলিপ্য চ। আদে বিহ্নমথং কুর্যাত্পবিষ্টঃ স্থবিষ্টরে। প্রাণানায়ম্য মনসা জপেমন্ত্রমননাধীঃ। যাবৎমাক্তং সঞ্চরতি সর্বাঙ্গেরপি নিশ্চলঃ। সংক্ষা স্থপ্তিলে কুণ্ডে কুড়া সেগাশ্চ মধ্যতঃ। মটকোণং বা জিকোণং বা বহ্নিমন্ত্রাদধীত বৈ। প্রোশ্চাপদার্য্য তৎ পশ্চাৎ দত্বা বিষ্টরমাদরাৎ। লক্ষ্মীয়তুমতীং তত্র প্রভানে রািয়নস্য চ। প্রাম্যধর্মেণ সংজ্ঞাতং বহ্নিং তত্র প্রভানে রািয়নস্য চ। প্রাম্যধর্মেণ সংজ্ঞাতং বহ্নিং তত্র বিচারয়েছ। প্রথমাবিধিনেবাামিমাহিতামেগ্রাদিপি। ক্ষিত কবিবে বে সাহাতে কর্মপ্রিমিক গ্রুত পার্মিক হয়। আন কন্দমে পতিত হবিণপদ চিহ্ন যেরপ স্ক্রিত হয় তদমুদাবে উক্ত ক্রেবে অগ্রন্থা নির্মিত কবিবে। ক্রেবে অগ্রন্থাণে ও নিয়ন্তাগে বল্যকুক ক্রম্বেম নির্মাণ করিতে হইবে। এই প্রকাব ক্রম ক্রব প্রকৃতি অসংগটিত হইবে নিশ্চিদ অশ্বপ পত্র হাবা অথবা প্রাশাপত্রহাবা ক্রমের ও মুল লিখিত হইরাছে, ক্রাব্রুক বিরিয়া ভাহাব অস্বাদ করা হইল না।।

আনন্তর অগ্নিছাপন বিধি ক্ষিত হুইতেছে। কুওৱানে গোমর ঘাব।
ভালারপ পেশন করিয়া কুশাসনে উপথেশন পুরুক বাজ্তাপন করিব।
ভালারত ধেঁপর্যান্ত বায়ু সর্বাচ্ছে সঞ্চরণ করিয়া নিচ্চল না হল তাবংকাল পর্যান্ত
আনম্ভটিত হুইয়া প্রাণারাম ও মন্ত জল করিয়া সংল করিবে। অনন্তব
ছাত্রলৈ করেবা কুন্তে মধাহানে জিকোল অববা ইটকোন অববা পূর্বাঞ

णांनीय वामिशेकां क्रेनः श्रद्धाना यद्वछः। সংश्राका याखिरेकः करिष्ठे भूनः श्रद्धाना यद्वछः। সংश्राका याखिरेकः करिष्ठे भूनः श्रद्धाना प्रमिन्न श्रिका श्रद्धाना विश्वा विश्वा श्रद्धाना विश्वा क्रिका श्रद्धाना विश्वा विश्वा क्रिका विश्वा विश्वा क्रिका विश्वा विश्व विश्वा विश्व विश्व विश्वा विश्व विश्व विश्वा विश्व विश्

রেখারর লিখিরা তোকণ করিতে হইবে। অনক্তর কুণ্ডমধ্যে অণ্য স্বভিলে বিষ্টৰ প্রদান করিয়া মদনাত্রা অভ্যতী লক্ষার অর্চনা করিবে। অবস্তুত্ত অপ্নিকে লক্ষ্মীনাবায়ণের সম্পর্মে উৎপন্ন চিক্তা করিয়া সাগ্নিকের গৃহ হইতে অগ্নি আনম্বন করিমা কুশাধাঞা প্রজ্ঞলিত করিবে। এবং ওছ জলের প্রোক্ষণ করিয়৷ যজ্ঞার কাঠবারা অগ্নিকে পুনর্বার অভিশর প্রজ্ঞানিত করিবে। অনম্বর প্রাণামাম করিয়া কুশাকুর বিশুত করিয়া তাহাতে বিধানা-**भा**वात्रासन कतित्व। अनवत वागेकामि भावमकन देखानी कुछ कतिया त्राचित्रा भूनर्सात क्षणानन कृत्रक छन्न सनदाना लिह्मिन कित्रिए। আর ঐ প্রণীতাতে আতপ তভুগও পবিত্র ক্ষেণণ কবিয়া ঐ পবিজ্ঞৱাবা धानीजात कन डिर श्रवन छ क्मान कतित्व धवर थे धानीजानावित्क अधिव উদ্ভর দিকে স্থাপিত করিবে । অনন্তর ঐ অগ্নিতে বিষ্ণু ও ব্রাহ্মণের সহিত এক্ষাকে অন্তনা করিবে এবং বিধিপূর্মক আজা ও প্রাক ক্রব প্রভৃতির সংস্কার ভবিষা ( e ) এই মত্ৰ উচ্চারণ পূর্বক আচিত বহ্নিতে আশ্বির গর্তাধান তইতে বিবাহ পর্যান্ত অভ্যেক সংস্থারের ৮টি হোম করিয়া বড়ক হোম ◆तिरव 1 व्यनखत नक भूगानिवाता अधित वार्कना कृतिया देशामानामि आका-

থবময়ে হুসম্পন্নে বৈশ্ববং প্রাপন্নেচক্রং। সাঞ্চাবরণমত্রামো প্রুমেদ্রমুনন্দনং। সমিদার্জ্যচরণাঞ্চ প্রত্যেকং
বোড়শাহতীঃ।. জুহুয়ামালমন্ত্রেণ পরিবারেভ্য এব চা
ভিল্রো বিনায়ক।দিভাঃ সর্বেভ্যোহপ্যাহতীমুনে।
দ্বারাসপরিবারেভ্যঃ হুরেভ্যো জুহুয়াৎ পুনঃ। হুত্বা তে
নাহতীস্তত্ত প্রদ্যাতত্তদাপ্তরে। অঙ্গ দিবৈশ্ববান্তেভ্যন্তিক্র
আজ্যাহতীঃ পৃথক্। ততঃ সিন্তিক্তৎ হুত্বা রতেন মুনিগত্তম। অনেন বিধিনা সম্যক্ পরিধিচ্য সমস্ততঃ। প্রণীতান
মার্চ্ছনং কৃত্বা দদ্যাক্ত ক্রমদক্ষিণাং। স্বস্ববিতাক্র্যারেণ
লোভমোহবিবর্জিতঃ। ততো ক্রমাণ্যুদ্বাস্থ্য ক্রাম্মণান্
ভোজয়েরতঃ। অগ্রিমধ্যগতং দেবং পুনঃ স্বাস্থানি যোজন
য়েহ। একীভূতং বিচিত্ত্যবং বাচয়েহ স্বস্তিবাচনং।
সাশীর্বিচোভির্বিহ্যামেধ্যমানঃ স্থা ভবেহ। হুত্রশেষং
ভাগান্ত কার্যা সমাপন করিয়া প্রধান হোমাদি করিবে। বিশেষ প্রেই লিখিড
হুইবে। ইত্যান্ত্রগ্রানং।

আনস্থ প্রকৃত হোম কৃথিত হুইতেছে। এই প্রকার বিধানাস্থাবে আনি সংখ্যাপিত হুইলে যথাবিধি বৈশ্বৰ চক্ষশ্রণণ কৰিয়া, আনিডে আদ ও আবেষণ দেবতাগণের সহিত গুলুনন্ধনের পূজা করিবে এবং যথোক্ত সমিধ, বৃত্ত ও চক ইহার প্রভাকে ধারা রামের মূলমন্ত্র উচ্চারণ করিয়া কোড়শান্ততি প্রদান করিবে। এবং বিনায়কাদি সমস্ত পবিবার দেবতা সক্ষেপ্র ও প্রভাকে উক্ত প্রত্যাক্তর্যথার। তিন তিনটি করিয়া আন্ততি দির প্রকার আন্তাথারা ধারদেবতা, পীঠ বেবতা ও অন্ত দেবতা প্রভৃতিব আন্ততি প্রদান করিবে।এবং সন্ধাদিবৈক্ষবান্ত সক্লেণ পূথক পূথক তিন তিনটি আন্তাতি কাদান করিবে।এবং সন্ধাদিবৈক্ষবান্ত সক্লেণ পূথক পূথক তিন তিনটি আন্তাতি কাদান করিবে।এবং সন্ধাদিবৈক্ষবান্ত সক্লেণ পূথক পূথক তিন তিনটি আন্তাতি কাদান করিবে।আন্ত হুতিবার বিধ্বানাস্থাবি কাদানিব ও প্রশীজানার্জন করিয়া বান্ধদিশিশ কাবেৰ। অনপ্তর শিষা নিক্ষের বিস্তান্থার বিধানাস্থাবির কাদানিবার করিয়া আন্তান্ধার করিয়া আন্তান্ধার কেলাভ মোহ বজ্জিত হুইয়া আন্তান ভোজনাদি ব্যাপার সকল নিক্ষাহ করিয়া আন্তিম্বান্তি চিল্ডব দেবতাকে আয়াব সহিত ব্যাপ্ত

ততঃ প্রাণ্য কুরুটাগুপ্রমাণকং। মস্ত্রিতং রামগান্তরা।
ততন্ত স্মৈ বলিংহরেং। সম্মিধাবপি দেবন্য বাহ্যান্তর্দিকু চাক্ষনা। নিত্যনৈমিত্তিকে কাম্যোপ্যহতেদ্যিমুখং স্মৃতং। সর্বাত্রাভ্যাদয়প্রাদ্যারোপণং তথা। আদাবেব প্রকৃবীত
কর্মাণেহভাদয়র্থিণং। ইতি হোমবিধিঃ।

কলসন্থায় রামায় দণ্যাৎ পুষ্পাঞ্জলিতরং। ভতঃ শিষ্য মুপানীয় ভক্তিনঅমকল্ময়ং। প্রাণানায়ম্য বিধিব দভূতভূদ্ধিৎ স্থরাস্বামিতি মন্ত্রেণ বহুভিত্রা ক্ষণৈঃ বিধায় চ। गर। অভিধিঞ্চে তং মুদ্ধি ভদেতৎকলদোদকং। ওঁ স্থরাস্থামভিষিক্স ত্রন্মবিষ্ণুমহেশ্বরাঃ। বাস্থদেবোঞ্জণ-শ্বাথ তথা সন্ধর্যণঃ প্রভুঃ। প্রভ্রান্তশ্চানিরুদ্ধশ্চ ভবস্তু বিজ্ঞ-রায়তে। আপওলোহগির্ভগবান যমে বৈ নৈঋ তন্তপা। বরুণঃ প্রনশ্চের ধনাধ্যক্ষত্ত থা শিবঃ ৷ ত্রহ্মণা সহিতঃ শেষো-দিক্পালাঃ পান্ত তে দদা। কীর্ত্তির্ন ক্ষীধু তিমে ধা পুষ্টি: এদ্ধা ক্ষমা মতিঃ। বুদ্ধিল জ্ঞা বপুঃ শান্তি মায়ানিদ্রা চ ভাবনা। এতান্তামভিষিক্স দেবপত্ন্য: সমাগতা:। আদিত্যশ্চন্দ্রমা ভৌমে। বুণজীবদিতক জাঃ। গ্রহাস্তামভিষিঞ্জ রাছঃ কেতৃশ্চ তার্পতাঃ। ৠষয়ো মূনয়ো গাবো দেবমাতর এব চ। দেবপড়্যো ধ্রুবা নাগা দৈত্যাশ্চাপ সরসাংগণাঃ। অস্ত্রাণি সর্বশাস্তাবি রাজানো বাহনানি চ। ঔদধানি চ র্ত্নানি

করিবে। এবং আত্মাও দেবতা এক হটণ টহা চিন্তা করিব। আত্মণদিগকে সান্তবাচন বলাটবে। আত্মনগণেরে আশীর্নাদে বর্দ্ধি টইনা চিন্নদিন হাধ্ব-ভোগ করিবে। অনস্তর শ্রীরামের গার্মী পাঠ কবিলা কুকুট (পন্দিবিশেষ) ডিম্ব পরিমাণ মুক্তশেদ ভোজন কবিবে এবং সঞ্জীয় অন্নদালা দেবভার সমীপে দশ্দিকে বলি প্রাদান করিবে। নিত্য, নৈসিত্তিক ও কামা সাধারণেই এই কালস্যাবয়বাশ্চমে। সরিতঃ সাগরাঃ শৈলান্তীর্থানি জল-দা নদাঃ। এতে ছামভিষিক্ত বর্দ্দকামার্থসিদ্ধয়ে। ইতি বলিষ্ঠসহিতোক্তা অভিষেক্ষমন্তাঃ।

नात्रात्रयः खाः तामः निर्धा मनिनशंकु रेव । मर्व्वशः मर्व्य-তোহপ্যান্ত প্রদীবভূ কুণানিধিঃ। ইজি সংস্কৃত্য সংস্কৃত্য **उच्छतित्र**चिर्यहर्ष्यः। পরিধাপ্য প্রবাসন্ট চন্দনাদ্যব-निना ह । क्खरन हान्नु नीयक शाविष्य नारमञ्जः । रेवकवीः মাতৃকাঞৈব তত্বসাদৎ বিশারদঃ। তশা র্তিপঞ্জরন্যাস-म्यानिकामत्यव ह। श्रृक्ववन विधिव नियाजनात्वव धरि-ততত্তিরেদি স্বদ্য হত্তং দত্তা শতংজপেৎ। षरिकेत जाता महा विकास कर्मिक विकास विकास करा व कनामा ভবতে उत्रम्भी तरायः । श्रममतमन खरेषा मिनाम मूनि-পুৰুব। স্বতো জ্যোতিৰ্ময়ীং বিদ্যাৎ গচ্ছস্তীৎভাবয়েদ্গুরুঃ। আগতাং ভাবয়েচ্ছিব্যোধন্মোহস্মীতি বিশেষতঃ। কৃতকৃত্য-खथा भिमा भर्यदः उटेना निरंतराष्ट्र । यक योवक उत्ज्वा গুরুবে ছাউচেতনঃ। গোভুছিরণ্যবিপিনগৃহকেতাদিকৎ वर् । नटमर्कः जनकः वा जनमाः ममथानि वा । अत्मा-দনবস্ত্রাদি দদ্যাদ্বিত্তানুসারতঃ। শ্রীভাগবতে।—ইয়-মেব হি সচিছবৈয়: কর্ত্তব্যা গুরুনিকৃতি:। যথা বিশুদ্ধ ভাবেন সর্ব্বার্থান্থার্পণং গুরাবিতি। প্রকারাস্তরমালস্ব্য রুণ হোম বিধান আভ্।দরিক আছে ও অভুরারোপণ প্রভৃতি আদিতে করিয়। शत खश्चन कार्या आवस कतित्व छत्वहे कार्या यक्षण स्हेरव ।

देखि दशम विधि।

অভিবেক বিধি কৃষিত হটতেছে। তার কলসত্ব রাষকে প্লাঞ্জলি বিয়া ভক্ত ও নিলাপী শিষ্যকে স্থীপত্ম করিয়া প্রাণায়াম ও ভূত তার শুরুং যত্ত্বেন তোষয়েৎ। শুরুপুরকল্রাদীং স্থোষয়েৎ
কণকাদিভিঃ। অর্হণাভিন্দ বছ্ধা ভজ্যাচ্ছাদনভূষণৈ:।
এবমুক্তপ্রকারেণ শুরবে দন্তদক্ষিণঃ। কৃতকৃত্যং তথাজ্বানং
মত্বা বিপ্রাংশ্চ ভোজয়েং। তেভ্যোহিণ দক্ষিণাং দত্বা
সর্বাং তৎপরিপূরয়েং। ত্রাক্ষণাশীর্বচোভিন্দ গুর্বাশীভি:
সমেধিতঃ। বিশক্তমেচগুর্বাদীন্ ততো ভুঞ্জীত মন্ত্রবিং। এবং
লক্ষমপুর্বিপ্র: কৃতার্থঃ স্যাদ সংশয়ঃ। ইতি দীক্ষাপ্রকারঃ।

প্রভৃতি করিবে। অবস্তর বহুতর প্রাহ্মণের সহিত (প্রবাদ্ধামভি-विक्रक ) वेज्यापि मात कनमङ कन पांत्र निरमात मखरक व्यक्तिसक कतिहर । স্কাণ স্বয়, দ্যান্য বাম শিব্যের স্ত্রিভিত ক্ট্রা প্রসন্ন ক্উন এই বলিয়া क्लान्य क्ल बाता चाकिरवर मन्नामन व्हेटन निवा देखम बलामि नविधान कत्रज हन्त्रनापि दावा मंत्रीदि चदल्यान धवः कूछल यूनल ७ चन्नुदीवक व्यकृष्टि व्यवद्राव बावन कविरत। व्यवद्यत श्रुक निरमान नेवीरन माकृका, খব্যাদি ও মুর্ত্তিপঞ্জর প্রভৃতি ন্যাস সকল করিবেন। এবং শিব্যের মন্তকে ঋণ क्षणान श्रुक्तक नित्मत्र इस बाचित्रा चार्डाखरणक मृतमञ्ज क्रश कतिवा हेडेएमव आप्रातमञ्ज উভয়েরই তুলাফলপ্রদ হইলেন এই বলিবা প্রসন্ত ক্রিমের व्याचा रहेटक ब्याजि: चन्ना विमा नित्या मःकाख रहेन बहेनन छिन्ना कत्रिः नियारक अध्य धरः कुछकाया मनामान कतिया मुख्डे हिट्छ পো,ভূমি,কাঞ্চন,উপ বন ও গৃহ প্রভৃতি সকল সম্পত্তি ভক্তি পুর:সব গুরুলদে निर्दारन कदिए इहेरन । अने क इहेरन छप्तर्क किया हुनुगारन अथेवा मनारन चर्नन कदित्व। धकां च चमक हरेल विश्वाकृतात्व चत्र वञ्चानि धावा प्रवहे কবিবে।ভাগৰতে শিখিত আছে ভক্তশিষা সমস্ত সম্পত্তি ও আগ্বাকে সমর্পন কৰিয়া গুৰুৰ নিক্ট নিকৃতি লাভ কৰিবে। এবং গুৰুপুত্ৰ শুৰুপত্নী প্ৰভৃতিকে ও ভক্তি পূর্বক অর্চনা করিয়া স্থা অলফার ও বস্তাদিয়ার। সম্ভষ্ট করিবে।এই व्यकात अकटक प्रक्रिया क्रिया क्रुआर्थकता रहेका आक्रयमित्र एक क्रिया ভোজন দক্ষিণা দিবে। अनश्रद छक ध्वर खाक्रान्त्र आभीकाम श्रद्ध क्रिया ভাষাদিগকে विषाप कतिया नित्य (जायन कतिहव । এই এপ विधानाक्ष्मारव দীক্ষিত হইবে নিক্ষরই ক্লতার্থ হইবে।

দীকাং বক্ষেত্রণ সংক্ষিপ্তামশক্তাবার্য্যসম্প্রতাং। ভত্মসারে।—যদৈবেচ্ছা তন। দীকা গুরোরাজ্ঞানুরূপতঃ। ন
তিথিন ব্রতং হোমোন স্নানং ন জপক্রিরা। দীক্ষারাঃ কারণং
কিন্তু ক্ষেহাবাপ্তে তু সদ গুরাবিতি। তদেব লগ্নং ফ্রিনং
তদেব তারাবলং চক্রবলং তদেব। বিদ্যাবলং দৈববলং
তদেব লক্ষ্মীপতে রঙি স্ল ইচিস্তনে চ। মূহুর্তে সর্বতাভক্রে
ন বকুন্তং বিধায় চ। সোদকং গদ্ধপুশাভ্যামর্চিতং বস্ত্রসংরতং। সর্বেবিধাপঞ্চরত্বপঞ্চপত্রবসংযুতং। ততোদেবার্চনং কৃত্মা ভ্রেনদফ্যোত্তরং শস্তং। শিষ্যং স্বলক্ষ্ তং বিদ্যান্ত্রপায়ি চোপবেশয়েও। মন্ত্রিতং প্রোক্ষণীতোরিঃ শান্তিকুন্ত
জলৈত্তথা। মূলমন্ত্রেনাই্টশতমন্ত্রিতরভিষেচয়েও। অথ
সম্পাদয়েশ্বন্ত্রং হন্তং শির্দি ধার্গ্রেও। সমাহন্ত্রিত্যক্ষতান্দ্রাদ্রণ শিষ্যোর্চ্যেদগুরুং।

অত্তাপ্যশক্তঃ কশ্চিচেদজমভ্যর্চ সাক্ষতং। তদ-বুনাভিবিচ্যাক্টবারং মূলেন মস্তকে। নিধায়াক্টো জপেৎ

আন্তর সংক্ষেত্রীকাবিধান ক্রিড হইতেছে। তদসারে নিখিত আছে—গুরুর আজ্ঞারসারে যে সমগ্র ইচ্ছা হইবে সে সমগ্রই মন্ত্রহণ ক্রিডে পারিবে। গুকুর অভিব্রেডদিনে তিথি বিচার, হবিষ্যাশন, হোম, স্থান গুরুপ প্রভৃতি কিছুই আবশাকীয় নহে।

श्वक्त हेळ्। इहेरनहे माधरकत शरक बहेक्कण विरवहना कतिए इहेरव रय, अपा श्रष्ठमिन, श्रष्टनक्ष, श्रष्टनक्रब, रेमववन, विम्यादन, छात्रावन आत्र हत्त्ववन ममस्त्रहे इहेन।

শংশ্রতি কাথাপদ্ধতি বিবৃত হইতেছে। গুরু নিজের অভিপ্রেত দিনে
মূহ্র্তিসময়ে সর্বতোভ্যমগুলোপরি নৃতন বস্ত্র, পঞ্চগরব, পঞ্চরত গলপুশ সংক্ষারধীযুক্ত জলপূর্ণ নৃতন কুন্ত স্থাপিত করিখা ভাষাতে যথাবাধ দেবভার অর্চনা করিয়া স্থাপ্তিলে অষ্টোত্তরশত হোম করিবেন। অনন্তর অলফাখাদি বিভূষিত শিষ্যকে অগ্নিসমীপে উপবেশন করাইখা অষ্টোত্তরশত মুলময়ে कर्ल छेन्यान प्रश्रिक्षः। हस्त्रमूर्वाधाद छीर्ल निष्काक्रत्व निर्वातम्बर्धाः मस्त्रमाळश्रक्षसम्भातमः मस्त्रहारक। हेजूल-रममः।

দ্বিবং স্যাল্লক্ষননার্বাহ্যান্তরমুপাসনং। স্থাসিনাঞ্চান্তরং প্রোক্তমন্তেবামৃত্যন্তথা। পঞ্চবর্ণাত্মিকা শক্তিনিক্দ্বাধ্যা সমুদাহতা। নাদান্তকে শিবে বর্ষ্ঠে সংহত্যাত্মান্ত চিন্তনং। আত্মনন্তহিতা তু তত্যাপ্যাত্মনি চিন্তনং। উত্তর্যান্তরহাত্তর তু তত্যাপ্যাত্মনি চিন্তনং। উত্তর্যান্তরহাত্তর

ইহাতেও বে সাধক অপক্ত হইবে তাহার পক্ষে গুরু সংক্ষিপ্তবিধানে ইউদেবের পূজা সমাপন করিয়া অর্থ পাত্রন্থ জল হারা মূলমঙ্গে ৮বাও অভি-বেক কবিয়া মন্তকে হন্তার্পণ করিয়া কর্ণে ইউমন্ত্র বলিবেন।

দীক্ষিত বাজির উপাসনা বিবিধু—বাহ্য ও আন্তর ( মানসূক ) ডথাধো মাহারা স্তাসশাল তাঁহাদের আন্তরিকী উপাসনা,তদভিরিক্তেরআন্তর আন্তাধন বাহ্য আরাধন উত্তরিধই হইতে পারে। ওং এই বে গঞ্চবর্ণান্থিকা শক্তি ইহাকে কিন্দু বলে এই শক্তিকে ষষ্ঠ বে সহস্রার ভিতনাদ ( ৮ ) রূপ শিব তাঁহাতে সংমিলিক্ত করিছা৷ সেই পরসায়ার বে চিন্তা করা এবং আয়াভ্য স্কল চিন্তা করত আয়াওতন্ত স্কল এই উভ্রের বে একাচিকা ইহার নাম পূর্তব্যে বিধিনা নৈব কঃ কুর্ঘাদেতদম্বহং। ন প্রকালের দাতুমধিকারোছতি ভাবিনি। গুরুভ্যাহপাত্র সর্বেভ্যঃ কোবা দাস্যত্যপেক্ষিতং। নারণ্যবাসিনাং শক্তিন তে সন্তি
কলো মুগে। পরিপ্রাড্জানমাত্রেণ দানহোমাদিভির্বিনা।
দর্বকঃহথপিশাচেড্যো, মুক্তো ভবতি নাতথা। পরিপ্রাড্
বিরক্তণ্ট বিরক্তণ্ট তথা গৃহী। কুস্তাপাকে নিস্কেতাং
তাবুভৌ কমলাননে। পুণ্জিয়ে গৃহস্থান্ট মঙ্গলৈর্জ্বলার্থিনঃ। পুজোপকরণৈঃ কুর্যুদ্দিল্যুদ্দানানি চাহণং।
বানপ্রয়ান্ট যতয়ো যদেবেং কুর্যুদ্দিল্যুদ্দানানি চাহণং।
বানপ্রয়ান্ট যতয়ো যদেবেং কুর্যুদ্দিল্যুদ্দানানি চাহণং।
ব্যক্তিভ বিধ্যতিক্রমদোষভঃ। আর্চপতিতা হ্যুতে ভবেযুদ্বুংখভাজনং। অহিংশা প্রমো ধর্মস্তেষানেয়া ন পদ্ধতিঃ।

भावत छेलाममा जन्य १००४ नाकित मानानित छवा बाबा त्व नजात त्य जाता-धना कता छाहात्क नाठा छेलामना नत्य। मंश्वितात्त लिन के फाव हीते मिक्छे बिल्बाएम त्य, किंद्यन्त । शृशे पान व यद्यानि गिठित्तत्व त्कृते क्षानमात्व हें काल अन्त जात्य ज्ञाल प्रसाल एका मुक्त वाल आहात्व ना । विद्यान मानानित प्रधानित मानानित हाम व किंद्र काल अन्ति प्रधानित मानानित हाम व किंद्र वाले. वननामी नित्यत्व के किंद्र व व व्यक्ति होते व त्यानित किंद्र किंद्र व व्यक्ति ना त्यानित किंद्र किंद्र व व्यक्ति ना त्यानित किंद्र किंद्र व व्यक्ति ना त्यानित के ना त्यानित किंद्र किंद्र व व्यक्ति ना त्यानित के किंद्र व व्यक्ति के ना त्यानित के किंद्र व व्यक्ति के ना त्यानित के ना त्यानित के ना विद्यान के ना विद्यानित के नामित के नित्यानित के ना विद्यानित के नित्यानित के ना विद्यानित के नामित के ना विद्यानित के नित्यानित के नामित के नामित के ना विद्यानित के नित्यानित के नामित के नाम ন হিৎ শাবাভিরেকেশ লভাস্তে তানি তানি বৈ। ভাবনাক বি-তৈঃ পূজা সাধনৈরেব যুজাতে। ন বহিরোগযুজানাং অস্ত্র-স্তেঘাং প্রশাসতে। আত্মানং সভতং রামৎ সম্ভাব্য বিহরন্তি বে। তেবাৎ ন ছফ্তং কিঞ্চিদ্দু ফ্তোখা ন চাপদঃ। যতি-ভিতাবিতৈদু বৈয়ঃ পূজ্যো রামোহয়হৎ ততঃ। সংপাদিতৈ-গৃহিকেশ্চ ল এব ক্রম উচ্যতে। ইত্যুপাননা।

ইতি শ্রীমৎপরসহৎদ পরিব্রাজকাচার্য্য শ্রীমম্মুক্ষান।
চরণ শিষ্যানন্দনন বিরচিতায়াং রামার্চ্চনচন্দ্রিকায়াং প্রথমঃ পটনঃ॥

গৃহত্বের ন্যায় বিধি হণ না বেহেণ্ড্ হিংদ। বাতিরেকে সেই সকল উপকরণাদির সম্ভব হর না অতএব বতিদিকের চিন্তা বারা কলিত উপচারেই আরাধনা করা উপযুক্ত। আর গৃহত্বের পক্ষেও কেবল মানসিক আরাধন প্রশন্ত নহে। যাহারা আবরত আয়াকে রামকপে চিন্তা কবে তাহাদেব ত্রিত নিকর ও বিপদসকল বিদ্রিত হয়। পর্যাবসানে যতি ও গৃহত্ব সম্ভে এই নিয়র অভিহিত হইল যে, যতিগণ মানসিক তাব্য বারা এবং গৃহীগণ নানাবিধ উপপাধিত তাব্য বারা প্রতিধিন শ্রীরানের আরাধনা করিবে।

व्यवम भहेल नमाख ।

# দিতীয়ঃ পটলঃ।

## · -widelikkim-

বদন্তি ভতত্ত্বিদশুর্থ বজ্জানমন্বয়ং। একোতি
পরমাম্মেতি ভগবানিতি শক্যতে। তচ্গ্রহ্মধানা মুনরো
জ্ঞানবৈরাগ্যস্ক্রয়া। পশ্সন্তাশ্মনি চাল্মানং ভক্ত্যা শ্রুতি
গৃহীত্যা। অতত্তে চ বিজ্ঞানি চাল্মনিবভাগকে।
ক্রম্ভিত্যা ধর্মায় সংমিদ্ধিই রিভোষণং। তত্মাদেকেন
মনসা ভগবান্ সাম্বতাং পতিঃ। শ্রোতবাঃ কীর্তিত্বাশ্চ প্যেরঃ পৃত্যশ্চ নিত্যশঃ। অব্যক্তব্রহ্মদেবী চ নির্কিশ্বং ন
পরং ব্রজেং। ভ্রুত্যো হ্যারষ্ট্ বর্গো মুর্ত্তং ব্রহ্ম তথ্যা
ভ্রেত্র

## ইতি ভক্তিমার্গ:।

शीव शीव धर्म व्यवस्य कृतिवाहे छेलाममा करा कारनाक त्राहकू च्रम्य

অন্তর ভৃতিমার্গ অদার্শ হাত্তেছ। তথ্নিদণ্ণ বাহাতে অবৈ চ বলিয়া জানেন এবং দিনি জন্ধ, পরমাত্রা ও ভগবান এই লক্ষরের প্রতি-পাদা, মৃনির্গণ উচাতে দৃঢ় বিখাসী হইরা জানবৈধ্যায়ত থবং শুনি নির্দাণ চিত ভক্তি ছালা আত্মাতে দেই পরমাত্রাকে দেখিতেছেন, এই জন্তই মৃনি-গণ বর্ণাশ্রম বিভাগে বিজ্ঞান । হরির সংজ্ঞাবই সমাক্ প্রকাণে অপ্রতিত বংশার ফ্রমাপ্তি, এই কেইই সেই ভগবান যাদ্বেশ্বর স্থাদা চিন্তনীব, প্রনার, শ্রণীর এবং প্রসংশ্রমীয়। যিনি অবাক্ষ প্রশ্লোপাদ্র হন ভিনি নির্দ্ধিয়ে নদ্গতি লাভ করিতে পাবেন না বেছেতু কাম, ক্রোধ, লোভ, মোহ, মৃদ্ ও মাৎস্থান্ত্রপ করিক্ল ছক্তর। অভএব সেই মৃর্জিমান এক্ষকে উপাসনা করিবে।

বিলা স্বধর্মং স্থকিঞ্চি দেবতারাধনাদিকং। পরিজৎখ্যেত যন্তস্মাৎ ক্ষণাৎ শৈকতহর্ম্যবং। ইতি ধর্মনিষ্ঠা।

ব্রাম্ম্যে বৃহুর্ত্তে চোখায় চিন্তয়ে জ্বন্দনং । রামরামেতি
রামেতি তারকাখাং পরং স্মরেও। শ্রীপূর্বাং জয়য়য়য়ড়ং
ছিল্লয়ান্তং বিচক্ষণঃ। প্রাতঃ স্মরামি দিননায়কবংশভূবং বেদান্তবেদ্যমভয়ং কৃতরাজবেশং। বৈদেহিলক্ষণযুত্তং ভূবনাভিরামং সংসারস্পারলোপশমায় রামং।
প্রাতঃ স্মরামি চরিতং তুরিতং নিহন্তং রামস্য তস্য প্রভক্ষকৃতান্তক্যা। যঃ সিক্ষ্বক্ষকথয়া ভববক্ষহন্তা রাজ্যং
ভনোতি চ বিভীষণরাজ্যদাতা। প্রাতঃ করোমি কলিকস্মধ-

হুইতে প্ৰিতাক হট্যা যে দেবতাৰ উপাসনা কয়। হয় তাহা হুইতে ক্ষ্ম-মন্ত্ৰপোসাংদ্য নাম তৎক্ষণেই অধঃপ্ৰিত হুইতে হয়।

সংপ্রতি শ্বণনিত্র অভিহিত ১ইতেছে। আক্ষা মৃহতে গাজোপান করত শ্রীনাম রাম জর বাম সম জর এই ভানকএজনাম উচ্চাবন করিয়। বভু নক্ষনকৈ শ্বনণ কবিবে। এবং প্রাত্তঃ শ্বনামি দিননায়কবংশভূষং বেদান্ত নেদানভয়ং কভনান্ধবেশং ইভ্যাদি মৃশোক্ত স্বব পাঠ কবিবে। স্বোজার্থ— বিনি দিবাপতি বংশেন ভূনল শ্বক্ষণ, নেদান্ত শ্বাবা বোধবিষয়, সৌমা মৃত্তি, রাজবেশভূষাতে নিভূষত, জানকী ও প্রশ্নণের সহিত বিবাজমান এবং বিশ্বমনোরম, শ্বামি সংসারকপ ভ্রঙ্গাবিষ নিবাববেদ কভ সেই শ্রীরামকে প্রাতঃসমন্ত্রে চিন্তা। কবি এবং মাংসানী রাক্ষ্যকৃত্যের কালস্করপ আর বাহাকে সম্প্রবন্ধন মোচন প্রভাবনাদ্বাধা সংসাব বন্ধন নিবীবক এবং বিভী-বণকে রাজা প্রদান কবিরা ভিলেন ইহাছারা রাজাদ্বাভা জানা জাইভেন্ত্র্ শ্বামি পালাপনাদনের জন্য প্রাতঃসময়ে সেই শ্রীরামচল্লের স্থাক চরিত শ্বন করি। আমি সেই অভ্যন্তবন্ধিত মনোহর জগন্বাণী কলেবর সচিচ দানক্ষয় শ্রীরাম কর্তৃত নিবৃক্ত হট্যা কলি ক্রুর বিনাশক কল্ম করিভেছি। এই বে রক্ব প্রাতঃক্রিনি কাথা করিভেন্তি ইহা স্বামার ভক্তিকর ও প্রথ- নাশকর্ম ডচহর্ছদং ভবতু ভক্তিকরং পরং মে। অন্তঃ বিজেন অথভানচিদান্তকেন রামেণ রাজ (রম্য) গুরুদেহবতা নিমুক্তঃ। প্লোকত্তরং যঃ পঠতি প্রভাতে জ্রীরামচন্দ্রাপিতি চিত্রবৃদ্ধিঃ। স্নার্থ প্রিয়ৎ কীর্তিমনস্তসোধ্যং কর্ম চিরৎ রামপদং স এতি। গুর্বর্থে ত্যক্তরাজ্যো ব্যচরদমূবনং পদ্মপদ্ধাং প্রিয়ারাঃ পাণিম্পর্শাক্ষমেণােন্য জিতপবিক্রেলা যো হরান্দ্রামুজেন। বৈরূপ্যাৎসূর্পনিখ্যা প্রিয়-বিরহক্ষধারােপিত্ভ বিজ্পপ্রস্তার্কিক্সিদ্ধেত্ঃ খলদবদহনঃ কোশলাক্রেহিবভারঃ। ইতি স্মরণং।

সন্ধ্যাসুদঙ্গুথোহভাপি নিশি তু পুনর্দকিশাস্যো নিবীতী কুর্য্যান্তাদিশোচং বহিরথ সলিলৈভত্ত লিছে মুদেকা। পঞ্চাপানেহথ হত্তে দশ পুনরুভয়োঃ সপ্ত বৈ তদগৃহত্তে

প্রায় হউক। যে ব্যক্তি শ্রীরামচল্পে মন ও বৃদ্ধিকে অর্পিত কবিয়া প্রান্তঃ সময়ে এই শ্লোকজ্ঞর পার্চ করে সে দার্ঘায়, সমৃদ্ধি, কীর্ত্তিও অপার স্থপ লাভ করিয়া বামপদ প্রাপ্ত হব। যিনি জনকের অনুষ্ঠিতে রাজা ত্যাগ করিয়া পদর্প্তে বনে বনে বিচরণ করিয়াছিলেন, যিনি বনপথে বিচরণ সময়ে প্রিয়তমার করপার্শে অসমর্থ কপিরাজ কনিও প্রথীব কত্ত্ব সেবিত হওয়াতে কঠায়ভব করিয়াছিলেন লা, অভিলবিতের প্রতিকৃত্য আচরণ নিবন্ধন প্রিয় বিরুদ্ধে কোপিতা শুর্পাথার প্রতি যাহার কর্কৃটি কৃতিল হউয়াছিল, বিনি সিদ্ধ্ মধ্যে সেতু বন্ধন করিয়াছিলেন এবং যিনি প্রণারণ দারু নিচয়ের প্রান্তি অনলক্ষরণ সেই কোশ্লাধীশ্রব প্রীরাষ্ঠক্ত আমানিগকে রক্ষা করন।

আনজুর শৌচ্বিধি কথিত হইতেছে। দিবসেও সন্ধার সমনে উত্তরাস্য এবং রাজিযোগে দক্ষিণাস্য হটরা বক্ত স্থাকে কঠাবলম্বিত করিয়া,
মুজিকাদি বারা মুলাদি শৌচ করিতে হয়, তাহার বিধান এই লিম্পে
১বার বৃত্তিকা লোপন করত প্রকালন করিবে এবং গুঢ়াস্থানে ধ্বার, দক্ষিণ
হত্তে ও বানহত্তে দুশ্বার, উত্তর্ভক্ত মুক্ত করিয়া সাত্তবায় লোপগালি করিবে ব

देव अशामिक मा तब् जिवित्य जिव् मा जनकः निणाबार । दे जि ट्यो विविध ।

ক্রাদে পাদশেচং বিমলমথ জলং তিঃ পিবেছুম জে দি দেশিগুস্ত বৃথাৎ সজলমভিম্জেয়াসিকারক যুথাং। অসুষ্ঠানামিকাভ্যাং নরনযুগযুতং কর্ণমুখাং কনিষ্ঠান্তাং নাভিদেশং হৃদয়মথ তলেনাস্গীভিঃ শিরোহশং। ইত্যাচমনবিধি:।

দন্তোলেখে। বিতন্তা ভৰতি পরিমিতাদায় রিত্যাদি-মন্ত্রাৎ প্রাতঃ ক্ষীর্যাদিকাঠে কবিউখদিরপলাশৈত্তখাত্রা-কবিবৈ:। ভূক্ত্বা গণ্ডুষষ্ট কং দ্বিরপি কুশমুভে দেশিনী-মঙ্গুলীভিন ন্দাস্তাই (স্তাদি) পর্বন্যপি ন চ নব্মী

এই নির্মটি গৃহত্তের পক্ষে নির্বাচিত জানিবে, ত্রতী, বনবাসী ও বতি দিকের জনাত্সারে উলিখিত নিরমের বিশুণ করিতে হয়। কিন্তু রাজিবোগে সাধারণেরই স্ব স্থানিরমের কর্ম কর্মতা।

সংক্রতি আচমনবিধি প্রদণিত হউতেছে। প্রথমত যথাবিধি পাদবর প্রকালন করিরা বারত্তর বিশুদ্ধ জলপান করিবে অনন্তব (অঙ্গলির মূলভাগ বারা নাসিকারকের অধন্তন ভাগে) ছউবার উন্মার্ক্তন করিবা অনুসাল পূর্ত্তক অসুষ্ঠ ভর্কতনীকে মিলিত করিয়া ভাগার অগ্রভাগ বারা মার্কিন করিবে এবং মিলিও অসুষ্ঠ ও অনামিকা বারা নেত্র-বারে এবং কর্ণবার ছউবার মার্ক্তন করিবে এবং মিলিও অসুষ্ঠ ও অনামিকা বারা নেত্র-বার এবং কর্ণবার ছউবার ভ্রত্তবাব মার্ক্তন করিবা মিলিও কান্ট্র ও এসুষ্ঠ বারা নাভিতে, করতল বারা ছলরে, একত্তিত অসুনি সমন্ত বারা ভ্রত্তবার ম্বান্তির উর্ভ্রাণে ও যতকে একবার একবার মার্ক্তন করত আচমর সমাপন করিবে।

্ৰ বন্ধাৰন ৷—প্ৰাতঃসময়ে ( সুৰ্যোদয়ের পূর্ব্ধে ) ছাদশাসূল পরিবিত্ত আত্র বট থদির পলাশ বিশ্ব অখথ প্রভৃতি প্রাণম্ভ কীরীবৃক্ষের কঠে ছারা "আরু-র্বাবং বংশা রর্জ্য প্রজাঃ পশুবস্থিত । ক্রক্সপ্রজাক সেধাকজনো ধেরি বন- सन्दर्भाव उप्तर्भ । श्रे चाहुर्वन र यागा वन कंट शकाः शख्यम् विष्ठ । वक्त श्राप्त विष्ठ । वे जिन स्थापन महाः । नथर नमक्षर मः गांधा चिक्र चा विष्ठ क्रिया विष्ठ विष्ठ विष्ठ क्रिया विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ क्रिया विष्ठ विष्ठ

ত্তৈলেক্যতৈত অময়াধিদেব শ্রীনাথ বিক্ষো ভবদাজারা বৈ। প্রাতঃ সমুপান্ন তব প্রিয়ার্থং সংসারবাত্তামপুবর্ত্ত-গ্লিয়ো। জানামি ধর্মং ন চ মে প্রবৃত্তির্জ্জানাম্যধন্মং ন চ মে নির্ভিঃ। ত্বরা ছ্রাকেশ ক্ষ্ দি স্থিতেন যথা নিষ্কোহ্মি তথা করোমি। ইতি প্রার্থনাবিধিঃ।

ন্পতে" এই মন্ত্র পাঠ করিয়া দক্তধাবন করিতে হয়। উক্ত প্রশস্ত কাঠের অস্তাবে এবং প্রতিপদ, দশমী, বহী, নবমী, চদুর্দশী, অইমী, অমাবস্যা, পূর্ণিমা। সংক্রান্তি, প্রাদ্ধবাসর, জন্মবার ও প্রতিধিবস প্রভৃতিতে হাদশগগুদ জল দারা মুখ গুদ্ধি করিবে ঐ সকল দিবসৈ ও তৃণাদি হারা দ্বধাবন শান্ত বিক্লন্ধ। এবং দক্তধাবনে তর্জনী ভিন্ন অস্থাল সকল নিদিট হইল জানিবে।

ভাৰনা—নথাদির সংশোধন হইলে সাধক গুচি হইয়া আন্তিকাদি আসনে উপবেশন কারমা সেই প্রমাত্মা র্যুনক্ষনকে চিন্তা করিয়া আমি সেই রাএই অন্ত ন্তি, সেই,সচিচদানক ব্রহ্মত্বপ্রই শোকাশ্রম বহি এবং নিতামুক্তক্ষরণ এইরূপ আন্থাকে ভাৰনা করিবে।

আর্থনা—হে শ্রনাথ! হে বিফো! তুমি ত্রিণোকের চৈতপ্রময় অধীবর, আমি তোমার আজ্ঞাতে প্রাতঃকাশে গাজোখান করিরা ডোমার তৃত্তির জন্য এই সংসার যাত্রার অন্তবর্তন করিতেছি। সংকার্যা করিলে ধর্ম হয় আমি আমি অর্থি কইতেছে না, আর অসং কার্যো অধর্ম হয় ইয়া জানিরাও ভাগতে আসার নিরুভ হইতে ছে না, মুদারত্ব তুমি সাহাতে নিযুক্ত করিতেছ তাহাই করিতেছি।

ভাচো দেশে বিধানেন কৃতং যদু কাস্ত্রকং। যজোপনীজ্ঞানিত্যতমন্ত্রেণ ধাররেচ্ছৃতং। ন দক্ষিণামুখো নোর্দ্ধঃ কুর্যাৎ কেশপ্রনাধনং। স্থাকারঞ্জ গায়ত্রীং নিবদ্ধীয়াচিছখাং ভতঃ। ধোঁতাম্বরাণি দর্ভাংশ্চ গৃহীত্বা মৃত্তিসাংস্তথা। নদ্যাদিজীরমাগত্য স্থায়াৎ স্বস্ববিধানতঃ। অধোতেন চ বজ্রেণ নিত্যনৈমিত্তিকাং ক্রিয়াং। কুর্বন্ কলং ন চাপ্নোভি দতং ভবতি নিক্ষাং। ধোঁ ভাজ্যি পাণিরাচান্তঃ কুর্যাৎ সংকল্পাদুতঃ। রামার্চান্সতয়া স্পানং করিয়েত্হং তদাজ্ঞা।

বৃদ্ধিতং পুগুরীকাকং মন্ত্রমূর্তিং প্রভুং শ্বরন্। অনস্তাদি-ত্যসং কাসং বাস্তদেবং চতুর্ভুরং। সম্বাচক্রগদাপদ্ম মৃকুটং বনমালিনং। তৎপাদোদংকজা ধারাং নিপতস্তাং শ্ব-

অনস্তব স্থান বিধি কথিত হইদেছে। পবিত্র স্থানে বিধানাকুসাবে নিশাদিত বে যজোপবীত তাহাকে 'যজোপবীতং পরমং পবিত্রং বৃহ-শানিবিৎ সহলং প্রস্তাৎ আয়ুং সমগ্রং প্রতিম্ঞ শুদ্রং যজোপবীতং বলমস্ত শেজকঃ (সামবেদীর ও যজোপবীতমদি যজসাজোপবীজেনোপনেহামি) এই মত্রে ধারণ করিয়া। দক্ষিণাসা ও উপ্পিত্র না হইয়া কেল প্রাসাধন করিয়া ও কার উজ্ঞারণ পূর্বক লিখাবন্ধন করিয়ে। অনস্তব ধৌত বস্ত্র, উস্তরীর, দর্ত্ত, মৃত্তিকা ও তিল প্রহণ করিয়া নদী প্রভৃতির ওটে গমন করেজ স্থ স্বিধানাম্পারে মান করিবে। অবোত বল্ধ পরিক্ষন করিয়া নিদ্যু নৈমিজিক কার্যা করিলে ভাষার ফল প্রাপ্ত ক্ষ না এবং দানাদি করিলে ভাষার ফল প্রাপ্ত ক্ষ না এবং দানাদি করিলে ভাষার ফল প্রাপ্ত ক্ষ না এবং দানাদি করিলে ভাষার বিজ্ঞান করিয়ে। অনস্তর্গ প্রস্তা সমস্ত্র ক্ষ করিয়া সান করিয়ে। স্থীর ক্ষর্মিত, ব্যাসাক, ভেলোমর, চতুত্বি, শক্ষক্রগদাণখানারী, সুকুট ও বন্ধনালাভে বিভ্রিত প্রস্তু বাস্থদেবকে স্থরণ করন্ত ভদীর প্রিচরণে সমৃষ্কুত ক্ষণধারণ, নিজের সমস্ত্রেক প্রিত হুইয়া প্রস্তর্গ দাবা আকীর বৃহৎ রথে। প্রবেশ নিজের সম্বন্ধ প্রিত হুইয়া প্রস্তর্গ দাবা আকীর বৃহৎ রথে। প্রবেশ নিজের সম্বন্ধ প্রতিক হুইয়া প্রস্তর্গ দাবা আকীর বৃহৎ রথে। প্রবেশ নিজের সম্বন্ধ প্রতিক হুইয়া প্রস্তর্গ দাবা আকীর বৃহৎ রথে। প্রবেশ নিজের সম্বন্ধ প্রতিক হুইয়া প্রস্তর্গ দাবা আকীর বৃহৎ রথে। প্রবেশ নিজের সম্বন্ধ প্রতিক হুইয়া প্রস্তর্গ দাবা আকীর বৃহৎ রথে। প্রবেশ নিজের সম্বন্ধ প্রতিক হুইয়া প্রস্তর্গ দাবা আকীর বৃহৎ রথে। প্রবেশ নিজের সম্বন্ধ প্রত্র ক্ষ ব্যাস্থ্য স্বর্গ স্বর্

শ্বনে। চিত্তবেদ্রকাংকে প্রাণিতাং স্বকাং ভশুং। তথা
দাকালবেং দর্বমন্তর্দেহগতং মদং। দহকণাৎ নির্বান মন্ত্রী
কারতে কটিকোপমঃ। ইদং স্লানং বরং মন্ত্রাং সক্তমধিকং স্মৃতং। ক্রাদে বৈদিকং স্লানং ততন্তান্ত্রিকমাচরেছ।
বিক্রদারে যড়পানি প্রাণায়ামপুরংসরং। প্রিদ্র্থমন্তলাতীর্বমার্ব্যাপ্ত্রুপারা। বিল্তানেন চাপ্লাগ্য কন্তেনাবন্ত্রিকমার্ব্যাপ্ত্রুপারেণ মূলেন র্ম্যযেক্তস্রসংগায়া। নিম্ভ্রা
তিন্মিন্ গাবেছ গুরানং ভল্যা জপেনাস্থ। উন্মন্ত্রা কৃষ্তমুদ্রাঞ্চ বদ্ধা স্লায়াদ্ভিদন্ ততঃ। শার্ল্যামন্ত্রাইং
তুলসীগন্ধনিপ্রিতং। ক্রা শান্ত্র্য প্রামন্ত্রিকমুদ্রিন। শাল্গামন্ত্রিনেশ্রা যার মন্তকে। প্রক্রেন্
মুদ্রিন। শাল্গামন্ত্রিনেশ্রা যার মন্তকে। প্রক্রেন্
পূর্বাহ বিপ্রপাদেশকং পিরেছ। বিক্রম্যাচরেন্মোহানাজ্বপূর্বাহ বিপ্রপাদেশকং পিরেছ। বিক্রম্যাচরেন্মোহানাজ্ব-

তেছে এইকপ ছিল্লা কৰিয়া ছব বা শ্রীন্থনি মন সমন্ত লাক্ষালিত করিবল ভেল্পন্থেই সাধক সন্দেশ্যে বির ১৬ ১ নিটা ক্রিন্তি বা নায় নিজাল প্রভা বিশিপ্ত হয়। এই লান মন্ত্রান ২০০ ও ৫০ছি, সংজ্ঞান ফ্রিক্র ছাইলাছে। প্রথমত বৈ, দ্বান কান্ত্রা অনাত্র ভালিকে স্থান করিছে হয়। প্রান্ত্রাম প্রান্ত্রান সভ্লালাস তিন্তা ভঙ্গুল মূলা হারা প্রথমগুল ছউতে ভীপিকের্বন করিয়া বরণ নালা (বং) ধাবা আগ্রবন, করত (ভূতু) ধারা অব্যক্তিন, করা (ফেট) হাবা লাক্ষত কবিছা ১৬বাৰ মূলমন্ত্র জন বরভ ভালাতে নিম্ম হউবে এবং জীলামকে ধান করিয়া বরণালাক মূলাছ ভাল করিবে। ক্রিন্ত হুইলাইল স্প্রান্ত ভুলদী চনান মিলেন্ত জল হাবা দ্বান্ত্রান প্রথম বিরুদ্ধ ভালাকে প্রথম করিছে। আব্রক্তি করিছা ভালাকে মান্ত্রান করিবে। আব্রক্তির বালাকার প্রথম করিয়া আহাকে মান্ত্রাকারী ক্রিক্ত হুইলাছে। প্রথম্ক আহ্বের প্রান্ত্রাকারী ক্রিক্ত হুইলাছে। প্রথম্ক আহ্বের প্রান্ত্রান ক্রিকে প্রান্ত্রাকারী ক্রিক্ত হুইলাছে। প্রথম্ক আহ্বের প্রান্ত্রাকারী ক্রিক্ত হুইলাছে। প্রথম্ক আহ্বের প্রান্ত্রাকারী ক্রিক্ত হুইলাছে। প্রথম্ক আহ্বের প্রান্ত্রাকার ক্রিক্ত হুইলাছে।

হা দ নিগদ্যতে। পৃথিব্যাৎ যানি তীর্থানি তানি তীর্থানি দাগরে। দদাগরাণি তীর্থানি পাদে বিপ্রদ্য দক্ষিণে। ততঃ সংক্ষেপতো দেবান্ মন্ত্র্যাৎক্তর্গরেৎ পিতৃন্। পীড়িছ্মিছা-মরং চোর প্রকাল্যাচম্য মরতঃ। ধারয়েম্বাদদী ভাছে পরিধানোত্তরীয়কে। অফ্রিম্পদশে ভাল আচাদেৎ পঠিনং-ক্রিস্ত বিক্রানিটে।—যতীনামালনং ভারং ক্র্যানকারস্ত্র কারয়েৎ। অভ্যোস্ত চতুপাদং চত্রভান্ত কারয়েৎ। গোলক্ল্যুম্মরং ভিরৎ তথা পালাশনিপ্পলং। কোহবিদ্ধং সদৈবাক্রং বর্ষানি বিশ্বং বর্ষানি বিশ্বং বর্ষানি বিশ্বং বর্ষানি ব্যালনং দেবতার্জনং। প্রোচ্পাদো ন ক্র্তিত মাধ্যায়-বিশ্বং। আসনায়চ্পাদন্ত প্রোচ্পাদঃ স উচাতে। ইতি সান্বিধিঃ।

মুক্ত পান করিছ। অনস্তর বিষ্ণু পাদোদক পান কবিৰে। মোহ বশত বাজি-ক্ষেম আচিয়ণ কবিলে আগ্রহজ্যাপণেড।গী ১ইবে।

পৃথি নী মণ্ডলে যে সকল তীর্থ আছে দেই সমল তীপ ই সাগবেকে বর্তমান আছে। কিন্তু প্রাথনের ক্ষেত্রপাদে দেই সাগবের সহিত্য সমস্ত তীর্থ বিদামান জানিব। অনন্ধর সংক্রেণত দেবতা, মনুষা ও পিতৃপুক্রগণের ভর্ণণ করিয়া বস্ত্রনিপাড়ন করিবে। এবং উক্তব্গল প্রকালিত করিয়া আচমন করত পরিশুদ্ধ শুকুরণ অছিরদশাখিত উদ্ভবীয় ও প্রিধেয়বস্ত্র প্রিধান করিয়া পীঠোপরি উপ্রেশন করিবে।

ৰহ্ম্ চ পরিশিষ্টেক্তে আসনের নিরম অভিনিত চউতেছে। ব্রহ্মচানীবিক্রের আসন শুক্রবর্ণ ও কুর্মাক্তি, তন্তিগরব চকুপদাধিক ও চকুর্দিকে তুলা
করাইবে। গোমর, মৃত্তিকা, পলাশ গিপ্রল ও অক্রেক্ত হারা নির্মিত
এবং লৌচবিদ্ধ ও ভয় আসন বর্জনীর জানিবে। প্রেট্পাদ হইয়া
কান, আচমন ভোজন, জোম, দেবার্জন, অধারম ও তর্পণ করিবে না।
আস্বাক্তি পদে অর্পাং কার্যর উত্তোলন করিরা পাদ্ধর মাত্র আসন্দে
ক্লেম করিয়া বে উপ্রেশন করে ভারার নাম ক্রেট্রগাদ আনিবে। ইতি
সান বিধি।

বেশবাদৈয়ন্তিভিঃ পীছা ষাভ্যাং প্রকালয়েৎ করে। বিক্রন বিভাবোটো চ সংমাজ্য ঘাভ্যামুম্মার্জ্জনং তথা। একেন হস্তং প্রকাল্য পাদাবলি তথৈকতঃ। মংপ্রোক্ষ্যেকেন মুর্জানং ততঃ সংকর্ষণাদিভিঃ।আন্যনাশাদ্ধিকর্ণাংশ্চ মাভ্যুরঃ কং ভূছং ম্পুশেং। এবমাচমনং কুরা সাক্ষামারায়ণো ভবেং। কেশব (১) নারায়ণ (২) মাধব (৩) গোবিন্দ (৪) বিষ্ণু (৫) মধুসুদ্দন (৬) ত্রিবিক্রম (৭) বামন (৮) প্রীধর (৯) ছম্বীকেশ (১০) পদ্মনাত (১১) দামোদর (১২) সম্বর্ণ (১৩) বাহ্যদেব (১৪) প্রহ্মম্ম (১৫) পনিক্রম্ম (১৬) প্রক্রেম্যান্তম (১৭) অধ্যক্ষ (১৮) নৃসিংহ (১৯) অচ্যুক্ত (২০) জনার্দ্দন (২১) উপেন্দ্র (২২) হরি (২৩) কৃষ্ণাঃ (১৪)। চতুর্থীনমোন্তেরেভির্নামন্তিঃ কর্তব্যং। ইতি

#### चनखर रेरकशास्त्रन काम्निष्ड स्टेर्डिह ।

(केनवात नमः, नावात्रणात्रमः धवः मानवात नमः धवः मण्डम উक्रांवन कत्र किन वात अवार्धन किवा त्यारिकां नमः धवः विकर्ण तमः धवे विवार क्रिया क्रिया क्रिया नमः धवः विकर्ण विकर्ण

ললাটে কেশবং গায়েৎ নারায়ণমণোদরে। মাধ্যং
লাগের গায়েদ্গোবিন্দং কণ্ঠদেশকে। বামে চ দানিশে পার্থে
বিরুণ ব্যাপ্তং চিডিউয়েৎ। তৎপার্থবাল্যথ্য তু চিস্তমেঅপ্সূলনং। ত্রিবিক্রমঞ্চ তৎক্ষয়ে বামপার্থে তু বামনং।
শ্রীপরং বাল্ডকে বামে ক্রমীকেশক্য কম্বরে। অপরে পদ্মনাভঃ
ভাৎ কক্ষ্নামে।দবং স্থারেৎ। তৎপ্রকালনতায়েন বাম্বদেশেতি মুর্নি।দবিল্লে তু করে বিপ্রো বিভ্রমীরে ক্রদর্শনং।
পদ্মং মংসাং চাপরেহণ শহাং কুর্মং গলান্তথা। ললাটে তু
গদা ধার্যা কুর্নিচাপং শংশতথা। নন্দর্শকের ক্রমধ্যে শহাচল্লে প্রক্রমে। শহাচক্রাজিতো বিপ্রঃ শ্রাণানে ত্রিয়তে যদি।
প্রাণে বা গভিঃ প্রেক্রিনা ব্রুর পান্তাৎ সন্ধ্রাং স্মাচরেৎ।
ভারাধে। নন্দিনিয়া ব্রুর পান্তাৎ সন্ধ্রাং স্মাচরেৎ।
ভারাধা কুর্নতে ব্রু স্থানং ভস্যাফলং ভবেৎ। ব্রুং ত্রিগুণিতং

#### व्यमस्य जिनक शादग्विधि चाछिहिछ इहेट्टिक।

ক্ষণাটে কেশব, উপৰে নাবায়ণ, হৃদয়ে নাধৰ, কঠে গোবিন্দ, ছন্দিপ্র পার্থে বিষ্ণু, দক্ষিণপার্থিও বাত্মধ্য মধুস্থানন দক্ষিণক্ষণ, বিশ্বন্ধ, বামপার্থে বামন, বামবাইকে শীধন, জীবাকে প্রবীক্ষণ, মক্তিণ বাহতে পদ্মনাজ্ঞ, করুং প্রনেশে দামোদৰ এবং মন্তাকে বাহ্নদেবকে চিপ্তা করিবা শালগ্রামচ্জে রুম্পুক্ত বিশুক্ষল ও সৃত্তিকা দ্বাবা তিলক ধারণ করিবে। আর ছক্ষিণ হতে হৃদ্ধন, মন্সা ও পদ্ম, বামহত্তে শ্রু, কৃষ্ম এবং গদা, ললাটে ও গদা এবং মন্তব্য ক্ষ ও বাব, হাদরে মন্দ্রক এবং ভ্রম্বরে শ্রু ও চ্জে অধিত ক্রিবে এই সকল ধারণ করিয়া সামান্ত শ্রশানে ক্ষাণ ভাগে ভালিবেও প্রমাণ্ডে মরণে ব্যর্থ স্কাভি ক্ষিত্ত হ্রমান্তে ভ্রমণসম্বিত্ত আয়ারে মরণে ব্যর্থ স্কাভি ক্ষিত্ত হ্রমান্তে ভ্রমণসম্বিত্ত আয়ার করে।

বস্তু নিক্লীভূমতি মন্দ্রীঃ । রুপা স্নানং ভবেত্তস্য নিক্লীভূমতি চালুনি । রামাজ্মকং গুরুং নহা রামস্ক্রাং সমাচরেং । সায়ং প্রাক্তক্ত মধ্যাক্তে রামং ধ্যাত্বা মন্ত্রুজণেং । সলমজ্রেণ সংশোধ্য কবটেনাবপ্রগ্য চ । চক্রীকৃত্য জলং সমাক্ দর্ভ্তক্তিন মন্ত্রবিং । আবাহনাদিমুদ্রাভিন্তীর্থমাবাছ পূজ্বরেং । জ্রেলাণ্ডোদর ভীর্থানি করৈঃ স্পৃষ্টানি তে ববৈঃ । তেন সভ্যেন মে দেব তীর্থং দেহি দিবাকর । গঙ্গে চ যমুনে চৈব গোদাবার সরস্বতি । নর্মাদে সিল্কু কাবেবি জলেহ্নিমন্ স্মিধিং কুরু । অবমাবাত্য চারাধ্য বিধিবত্তভলং মুনে । আদাঘাজ্যলিনা সম্যাজ্যেশ্যালামত্রং সর্হ । জলং দক্ষিণহত্তম্থ সব্ধেত্ত বিনিঃক্তিপের । ড্রিঃস্কৃত্তাম্বা মুর্জি সিঞ্চেন্মালান্মুং স্থারন । দশাক্ষ্রেণ ভড়েশমভিমন্ত্রা জলং পিবেং ।

বস্ত্রনিপ্টায়ন ক্রিয়। পবে সন্ধার অহঠান কবিবে, ইছার বাতিক্রম কবিলে স্থান নিক্ল হয় জানিবে। আর বে নক্তৃত্বি বস্তুকে তিওিপিন্তম্ব (ভিন ভাজ) কবিয়া জল মধ্যে নিশ্পীড়ন করে ভাহার সেই স্থান বুগাহ্য।

সদ্ধান বামকলী জ্বলাদবকে নমন্বাৰ এবং শীরামজেকে ধানি করিবা ভালীৰ মন্ত্র জপ করক সান্ধালে, প্রভিঃ গাল ও সধান্ধালে শীরাম চল্লের সন্ধাবে অনুভান কবিবে। প্রথমত জলমন্ত্র (বং ) হাবা লোধন কবচ (ভু ) হারা অবজ্ঞান এবং দত্ত্ব সুল হাবা প্রোক্ষণ করিয়া ল মভ জল মধ্যে জ্বাবাহলাদি মুদ্রা কবত 'এক্ষাণ্ডোদব তীর্থানি কবৈং স্পৃষ্টানি তে ববৈঃ তেন সভ্যোদ মে দেব তীর্থং দেতি দিবাকর। গজে চ বমুনে চৈব গোদাববি সর্ভ্রাভি সকলের জাবাহন করিব। বিধানাগুসাবে উক্ত ভলের অন্তনা করিবে। অবং নালাম্য জল কবিব। আবং মালামন্ত্র জল কবিব। আবং মালামন্ত্র জবণ কবিত্ব। আবং মালামন্ত্র জ্বণ কবিত্ব বামহত্তে ক্ষিপ্ত ক্ষণের ক্ষণিত্র ক্ষণের ক্ষান্ত্র বিশ্বাহার বিভাগ কবিব। আবং মালামন্ত্র জ্বণ কবিত্ব বামহত্তে ক্ষিপ্ত ক্ষণের ক্ষান্ত্র বিশ্বাহার বিশ্বাহার ক্ষণিত ক্ষণের ক্ষান্ত্র ক্ষণিত ক্ষণের ক্ষণিত ক্ষণের ক্ষান্ত্র ক্ষণালির মন্ত্র ক্ষণিত ক্ষণের ক্ষান্ত্র ক্ষণালির মন্ত্র ক্ষণালির মন্ত্র ক্ষণিত ক্ষণালির মন্ত্র ক্ষণালির মন্ত্র ক্ষণালির ক্ষণের ক্ষণিত ক্ষণের ক্ষণিত ক্ষণালির মন্ত্র ক্ষণালির ক্ষণালির মন্ত্র ক্ষণালির ক্ষণালির ক্ষণালির ক্ষণালির মন্ত্র ক্ষণালির ক্ষণালির ক্ষণালির ক্ষণালির মন্ত্র ক্ষণালির মন্ত্র ক্ষণালির মন্ত্র ক্ষণালির ক্ষণালির মন্ত্র ক্ষণালির মন্ত্র ক্ষণালির মন্ত্র ক্ষণালির ক্ষণালির ক্ষণালির ক্ষণালির মন্ত্র ক্ষণালির ক্ষণালির ক্ষণালির ক্ষণালির ক্ষণালিক ক্যান্ত্র ক্ষণালিক ক্ষণালিক ক্ষণালিক ক্ষণালিক ক্ষণালিক ক্ষণালিক ক্য

পুনয়ঞ্জলিমাদায় জলং মৃধি তিরুৎকিগেৎ। মণ্ডলমার রামায় নমেছে।
নমেহর্গং ক্রয়াম্যহং তেতা রাম্যেহ্রম্মীতি গায়ত্রীং নিয়ভে।
জপেৎ। জন্ম প্রভৃতি বংপাপংদশতির্বাতি দক্ষিতং। পুরা কৃত্তং
শতেনৈব সহস্ত্রেণ জপেন চা বদেদাশরপায়েতি বিশ্বছেইতি পদস্ততঃ। সীতাপদং সমৃদ্বত্য বল্লভায় ততো কলেং।
ধীমহীত্যপি তরোহধ রামশ্চাপি প্রচোদয়াৎ। এষা স্যাত্রাম্ম
গায়ত্রী ভক্তানাং ভুক্তিমুক্তিদা। পুরশ্চরণমপ্যস্থাশ্চভুলকি
জপাবধি। যচ্চ যাবচ্চ পূজাদি সর্বাং পূর্ববিদাচরেৎ। ওমাদি
রেষা গায়ত্রী মুক্তিমেব প্রযুক্তি। মায়াদিরপি বৈ মুধ্যং
রমাদিশ্চ শ্রেয়ং মুনে। মদনেনাপি সংযুক্তা সন্মোহয়তি
মেদিনীং। জনয়ায়াধিতো রামঃ সর্বাভীক্তং প্রযুক্তি।
তপ্রেক্ত ততে। মূলমন্ত্রোক্রারণপূর্বকিং। রামং তর্পয়ামি নমঃ

করিয়া ঐ অব পান করিবে। অপর অঞ্জলি পুরিয়া অব উঠাইয়া অবায়ালকে ললাট সংবা করিয়া জীরাম উদ্দেশে এব জলাঞ্জলিঃ নমো মণ্ডল
স্থাম রামার নমঃ এই বলিয়া ভিনবার অর্থা দিবে। পবে অবং রামো
হল্মি অর্থাৎ আত্মা ও রামের অভেদ চিস্তা কবিয়া রামগায়তী জপ করিকে।
মূল্মভবার গায়তী অপ করিলে জয় হইতে স্থিত এবং শত স্থ্য অপে
পূর্ব জয়ার্জিত পাল স্কল বিনষ্ট হয়।

জনম্বৰ বামগায়নী ইচ্কৃত হইতেছে। দাশরথার বিশ্বহে বীতাবরভাগ
ধীমহি। ভরো রাম: প্রচোদযাং। এই শ্রীরাম গায়নী ভক্ত বৃদ্দের ভোগ
ভ মুক্তি প্রদান করিয়া পাকে। ইহার পুরক্ষরণে চারিশক্ষ লগ ও
পূজাদি বে কিছু সমন্তই পূর্ব্বোক্ত বিধানাস্থপারে কর্তব্য। এই পারনীর
পূর্ব্বে উকার যুক্ত করিয়া লগ কবিলে মুক্তি, হ্রী: পূর্ব্বক জলে প্রাধান্য এবং
শ্রী পূর্বক জল করিলে শ্রী লাভ হয়। আর মদন বীল (রীং), পূর্বক
জলে পৃথিবী মোহিতা হয় এবং ইহার দায়া শ্রীবাম চল্ল আরাধিত হইকে
সমন্ত মনোরও প্রদান করেন। জনস্বর মূলমন্ত উচ্চারণ পূর্বক রামং
ভর্ণহামি নমঃ এই বলিয়া শীঠ ক্রেডা সক্লের সহিৎ ৪০ বার, ভূর্ণ্ড

শীঠদেবাদিপ্রবিং। চতারিংশতপ্রিত্বা সীতাদীংশচতুরঃ জ্মাৎ। হলাদীং স্থপ্রেৎ পশ্চাৎ মধ্যে মধ্যে রঘ্রহং। নাম-মত্রৈভবেদেবং চতারিংশচহতবরং। স্তবংশ্চ প্রণমেন্তামং ঘথাশক্তি মুদীখর। কৃত্রৈতংপ্রতাহং সম্যক্ ত্রিসন্ধ্যক্ষ যথা-বিধি। কৃতকৃত্যে ভবেমান্ত্রী সত্যং সত্যং ন চাতথা। ওঁ হংসং প্রবিম্নচার্য্য সোহমিত্যক্ষপাৎ জপেৎ। ঋষিহ্ৎসোহ-ব্যারং ছলাং পরমাত্মাত্র দেবতা। সুর্যাত্মনে হুৎ, গোমাত্মনে শিরং, নিরঞ্জনার শিথা, নিরাভাষার কবচং, অতকুঃ সূক্ষাং প্রচাদরাদন্তং। দ্যাং মুদ্ধানং যক্ত বিপ্রা বদন্তি থং বৈ নাভিং চকুষী চন্দ্রস্থ্যে। দিশঃ প্রোত্রে যদ্য পাদে ক্ষিতিক ধ্যাতব্যাহসে সর্বস্থিত ব্যাহ্যা য

করিয়া সীতা, লক্ষণ, ভরত ও শক্তাঘের তর্পণ কবিবে এবং মধ্যে মধ্যে প্রাম্ব ভর্মণ করত হুদ্রাদির তর্পণ ও শ্রীরামের নাম সকল উচ্চারণ পূর্বাক তদীয় তপণি করিবে। সমষ্টিতে ২৪০ বার তর্পণ কবিরা যলাশক্তি তব পাঠ পূর্বাক শ্রীরামকে নমস্বার কবিবে। এই কপ বিধানে প্রতিদিন বিস্কর্যাতে সন্ধ্যাত্রের করিলে সাধক নিশ্চরই কুলার্থ স্টবে। অনস্বর ও ২ং সং সোহং এই অক্ষণা জ্বপের কল্প এবং মন্তকে হংসার ধ্ববে নমঃ মুবে অবারহ্দেশে মমঃ, হুদ্দের পর্নায়নে দেবভাবৈ মনঃ এই প্রকাব ধ্বয়াদি নাসে করত ত্র্যাত্বনে ক্রমায়নে দেবভাবৈ মনঃ এই প্রকাব ধ্বয়াদি নাস করত ত্র্যাত্বনে ক্রমার নমঃ গোমাত্বনে শির্মে তাহা নিবল্পনার শিব্যে বর্ষা, নিরাভাষার কর্চার হং, অতর্থ স্ক্রং প্রচোদ্রাৎ ক্রায় ফট্ এই অঙ্গনালাদি করত দ্যাং মুর্দ্ধানং বনা বিপ্রা বদন্তি বং বৈনাভিং চক্ষ্মীচন্ত স্বর্ণা। বিশঃ স্লোকে ব্যা পাদে ক্রিকে খ্যাকব্যাহ্যে সর্ক্রত্বাত্বা। এই ধ্যাক ব্রিবে।

ধ্যাবার্থ—বোদীপণ থগঁ ধাহার মন্তত এবং আকাশমণ্ডল নাজি; চল্ল স্থা চন্দু, বিভ্যাত্তন শ্রোত এবং পৃথিবীকে পদ বলিয়া 'থাকেন নেট নিন্দুত্তের অন্তরাত্মাত্মকুল উত্তর আবাধের বোর। নোচ্ছাসজপেন ষট্। শতাধিকেন জ্রীরামঃ প্রীভাহস্থিতি বিস্ত্রেৎ। ইতি জ্রীরামসন্ধা।

রামং মহা গুরুন্ ভ্রেষ্ঠান্ কুশাছঃপুল্পধারকান। মুক্রা ভবৈব পারপ্তানামং শ্ব্রা গৃহং বিশেৎ। ভাগে তু প্রথমে রাজন দিবসন্য শুটিঃ স্বয়ং হোমংকুর্যাদ্ বিধানেন দ্রবৈয়ন্ত্রী-হ্যাদিভিছিজঃ। দেবপূজাং ততঃ কুর্যাৎ স্ব্যমন্ত্রেশ মন্ত্রবিং। দদ্যাদ্দানং ষ্থাশক্তি পাত্রে রামপরে ভ্রা। ভ্রাক্রান্তঃ পশুর্বিদ্ধঃ ক্তুকা চরজন্বা। দেবভা চ সনির্মাল্যা ছান্ত পুণাং পুরাক্তং। ইতি দিবসন্যাদ্যভাগর্ত্যবিধিঃ। দিবসন্য ছিতীয়েংহশে বেদাভ্যসন্মাচরেং। মীমাংসান্ভর্মবিশান্ত্রাদীনাম্পি দ্বিদ্ধঃ। সালকারঃ শ্বছ্মনাঃ সং-

শনস্তর এই ছর শত একবিংশতি সংস্র অন্ধণারূপে শ্রীরামচক্র শ্রীক্তি শাভ করুন এই বলিয়া সন্ধা সমাপন করিবে।

#### हे ि जीवाय मकार्श्विथ ।

ক্ষনন্তর প্রবিষের নমন্বার প্রক্ শুক্র শুক্র ও জোষ্ঠ সকলকৈ প্রণাধ করত প্রীবামকে পরণ কবিয়া গৃহে প্রবেশ করিবে। পাষ্ঠ ও বাহাদের হল্ডে দর্ভ, অল ও পূপা থাকিবে তাহাদিগকে নমন্ধার কবিবে না। অনপ্রর দিবসের প্রথম ভাগে উপাসক ওচি হইয়া প্রীছ প্রভৃতি দ্বনা দারা দ্বাণ বিধি হোম করিবা স্থা মাত্র প্রিরাম চন্দ্রের জর্চনা সমাপন করিয়া রাম্বাণ কিপরারণ সাধক সকলকে ব্যাশক্তি দানীর দ্রবা দান করিয়া নিশ্বাণা বিস্ত্রেন করিবে। পিপাসিত পত্তক বনি বাঁধিয়া রাথে, অবিবাহিত। ক্ষা বদি রক্ষণা হর আর দেবতা হবি নিশ্বাণা যুক্ত থাকেন ওবে পূর্বন্ধার্মিত পূণ্য সকল বিনষ্ট কর। দিবার প্রথম ভাগের-কার্যা বিধি সমাপন ল অনস্তর দিবসের বিভীর ভাগ উপস্থিত হইলে বেদ পাঠ পূর্বক নীমাংশা ভঙ্কা ধর্ম পান্ত ও অর্থ শান্ত প্রভৃতির আলোচনা করিয়া কুওলান্বি অলভারে স্থাতি প্রভৃতি মাল্লা সক্ষ দুর্শন করিবে। ইতি হিতীর ভার্য হার্যা বিধি ব পশোমকনাউকং। গোভ্বিপ্রান্ত্রস্থান-

বিজ্ঞানে ক্ষরিণ কর্মনার্জয়ে । ঋতায়তাভাগ জীবেত
য়তেন প্রতেন বা দত্যান্তাভ্যামশি বা ন শব্ভ্যা কথকন।
কতমুস্থলিলং প্রোক্তময়তং বদ্যাচিতং। য়ভস্ত নিতাযাচ্ঞা স্যাৎ প্রমূতৎ কর্ষণং স্মৃতং। সভ্যান্তক বাণিজ্ঞাং
শব্ভিনীচনেবনং। শব্ভিগিহিতা সম্যক্ নাঙ্গীকুর্যাৎ
কদাশি ভাং। স্ফল্ফচরিতঃ কখা স্বাধীনঃ ক চ সেবকঃ।
পণীকৃত্যাক্ষনঃ প্রাণান্ যে বর্ততে বিজ্ঞাধমাঃ। তেষাং ছ্রাস্থামনং ভ্ক্লা চাক্রায়ালগতবিশ্বাদা দাতা সর্কোশ্বাে
হত বিজ্ঞান্ত্রী জপেনাকুং। রামাজ্ঞাকতবিশ্বানা দাতা সর্কোশ্বাে
হতঃ। ইতি ভ্তীঘদিনভাগকৃত্য বিধিঃ।

অইধাকো বিভাগঃ স্যাক্তভূর্বেংছশে যথা দ্বিশ্বঃ। কুর্যাাশাধ্যাক্তিকং স্থানং জপদেবার্চনাদিচ। মুদেগাময়াং শুক-

অনস্থা দিবদের তৃতীয় লাগ উপপি ৪ ই ল শবিবাৰ বর্ণের পোষণার্থ বেলাদিশাল্ল বিহিত কার্যা করতঃ সংগণিশার্জন কমিবে। জীরিকা দির্ঝা-ছের পথ প্রদর্শিত ইউছে। গ্রহ—উপারার, সমূত প্রার্থনা বাজিবেকে লক্ষ্য ভূত—নিডা জিলা, প্রমুত্ত—ক্ষরিকর্ম, সভ্যানৃত—বাণিজা এই সকল বাব-গাতে জীরিকা নির্মাহ করিবে। কিন্তু কথনও স্বত্তি (নীচ সেবা) করিবে লা, বেছেরু নীচদেবা সর্ম্মণার প্রকাবে গহিত, কুকুর এবং সেবক ক্ষাচ জু খেলাচারী ইইতে লারে না। যে বিজ্ঞাণ আত্মাকে পণ করিয়া জীবিক্লানির্মাহ করে ভাষাদের অন্তল্জন করিলে চাজারণ করিতে হয়। অব্যা সাহক উক্ষ বামব্যে ক্ষিত্ত অব্যাল ব্যামান্তাক্তে প্রকাব বিশাসী হটরা জ্ঞার মন্ত্র লগ করিবে ভাষা হটকেই দাজাক ক্ষ্যুক্তের প্রমুত্ত ক্ষেত্র প্রমুত্ত প্রমুক্ত ক্ষ্যুক্ত প্রমুক্ত প্রমিরে।

কুণাসনমুক্তিকানি পুলাক্ষতাংশ্তিলকমন্তস্কানি।
নীয়া জলান্তিকমনশ্রমনা মনীনী শ্ব্ছার্চ্চয়েৎ সকলতীর্থপবিত্রকীর্তিং। স্বগৃহ্ছোকৈ মন্ত্রবরঃ স্নায়া সন্ধ্যাং বিধায় চ।
বেত কর্ববুর কৃষ্ণেশ্চ দেবাদীংস্তর্পয়েতিলৈঃ। তথেব ভ্বনেশন্য স্নানং সন্ধ্যাঞ্চ তর্পাং। পূর্ববিদাচরেশান্ত্রী রামং
নহা বিসর্ভ্রমেৎ। ততাে দেবালয়ং গত্বা স্থাসান্ কৃত্বার্চয়েদ্বরিং। লক্ষ্যাপ্টরাং বিশেষান্ত্রী মন্দিরং স্থানরং স্বকং।
ইতি চতুর্থদিনভাগক তা্বিধিঃ।

গৃহাগতোহর্চ্চবেজামং পঞ্চমে দিবলাংশকে। প্রকাল্য পাদাবাচম্য দদ্যাদর্ঘ্যৎ রবের্বহিঃ।যো দেবঃ পূজকশ্চাথ পূজা জব্যাণি যথ ফলং। প্রাণবুদ্ধাদিকং সর্বাৎ তথ্মৈ রামাত্মনে-

#### ইতি ভৃতীয় দিনভাগ কৃত্যবিধি।

দিবা অষ্টভাগে বিভক্ত তাহাব চতুৰ্গভাণে মণ্যাক্ত কালীন স্থান ও ঋণা প্ৰাদি কবিবে। প্ৰথমতঃ মৃত্তিকা, গোমন, বস্ত্ৰ, কুণাসন, মৃত্তিকা ( যাহা ছাৱা দ্বা চক্ৰাদি অন্ধিত কবে সেই যমেব নাম মৃত্তিকা ) পূপা, আভপভভূল, তিনা, কমণ্ডল্ ও চন্দন প্ৰভৃতি কইয়া জল সমীপে উপস্থিত হইবে অনস্তৱ দীৰ্থ সকলেব পবিত্ৰ মাহাত্ম্ম ত্মবন ববিয়া অৰ্চনা করিবে। অপর স্থ স্থ বেদোক্ত বিধানাল্যাবে মন্ত্ৰ পাঠ করিয়া স্থান ও সন্ধ্যা সমাপন কবিয়া খেত, ক্ষুব্ৰ ও ক্ষুভ বৰ্ণ ভিল ছাবা দেবভা প্ৰভৃতিব ভপণ করিবে এই প্রকার শীবামেব সন্ধ্যা ভর্পণাদি কবিয়া পৃষ্ঠিক প্রীয়ামকে নমন্বান্ন পৃষ্ঠিক বিসক্তন করিবে। অনস্তর দেবভাগৃহে প্রবেশ করিয়া স্থাস সকল কবত ব্যুনাপ্রের অর্চনা করিয়া আদেশগুহন করিয়া স্থায় সন্ধান ক্রিয়ে আদেশগুহন করিয়া স্থায় সন্ধান ক্রিয়ে।

#### हें डिड्र इर्थ मिनकार्ग क्रेडा विधि।

শ্বনম্বৰ পক্ষমতাপেৰ ক্ৰিয় কাৰ্য্য কৰিত হইতেছে। দিবার পঞ্চমতাগে প্রীরানের অর্জনা করিতে হব, প্রথমতঃ পাদ্যর প্রশালন করিয়া আচমন করত বহির্দেশে প্রযাধ্য প্রধান করিয়া যো দেবঃ পুঞ্জজাথ পূজাজব্যাণি বঁৎ কর্লং। नगः। चरनन मञ्जा मन् बात्रस्यान अनुकास्यः। अन्तर्रा-मर्हि बाबांख श्वानः जरकारमं छ। चमूर्वाष्ट्र कारमनाथ ভদেবোদ্ব ভা লিখ্যতে । ওঁনমো রামচন্দ্রায় সং প্রেশায় তৈ নমঃ ৷ সংস্বিত্তে হোংশিবায় ঐ হীং জ্বীং পর্ম-भक्तरम् । जीर जीननांशांत्र नमः क्लर क्लिक्श ज्या नमः। পুল্পাক্ষতাদিভিঃ পূজ্যা শ্রীরামবারদেবতাঃ। ষড্ছারপুরতঃ श्रु औः व्यमधानकराय श्रुधीः । चात्र व्यिरेय नमत्म्वार्कः रमश्रेता ছারস্য শোভনায়াথ শাখায়া দক্ষণাময়োঃ। शांत्व विशांत्व भन्नादेव यम्नादेव ह शृक्षिण्ड । ७ जलावः ञ्चलात्र भगारकृष्णंक मिन्दि। । ७ हकात्र व्यवधात्र दवनाः ভাপাঞ্চ পশ্চিমে। শুৰুং পদ্মৎ নিধিঞাৰ বাণীং বেল্বাং তথোত্তরে। চতুর্বারং অ্বংপুদ্ধ্য গ্রেণেরি ততোহর্চায়েৎ। প্রছেশার গৃহায়াথ কুলদেব্যৈ নমোহ স্থিতি। নমঃ দশর শাঙ্গায় কট্পিনাকার ফট্নম:। আভ্যামস্তর্গতং পুষ্পাশর যোগেন বামতঃ নিঃসার্য্য বিম্ননংখং ত্রিঃ পাঞ্চিঘাতং সমভ্যদেৎ।

ख्यानिक्श नर्सः एटेश्व वामाद्यान नम धरे विलयः नमकात कविया दात एवका नकरात किनाव कि किराव कि किराव का कारण नः रिका के के कि भूमा खम्म छे कृष्ठ कि तथा वामक कि वर्ष किर्ण के किर्ण किराव किराव किराव के किराव किराव के किराव किराव के किराव के किराव के किराव के किराव के किराव के किराव के

্রেন্ট্রিক্সিক্সপুশন্ দক্ষপাদপূর্বং প্রবিদ্য চ। শেষার কণাবিদ্র পতরে বাজুপুংসে নমেন্ট্রেরের ইতি ছারপুলা বিধিঃ। বর্জান্দার্লার্লার্লার্লারিতং। বর্জান্দের বাজ্বর্লার্লার্লার্লার্লার্লার্লির বিদ্যাল্ল বর্লার্লির বিদ্যাল্ল বর্লার্লির বর্লার্লির ক্ষাল্ল বর্লার্লির বর্লার্লির ক্ষাল্ল বর্লার্লির প্রক্রির প্রক্রির রপি। ক্ষুপ্রের দক্ষিণে তার্লের প্রক্রারের পুরিতং। কলসং ক্ষুপ্রের বাসভাগে ভু বিনিদ্রাল্লের এলারের পুরিতং। কলসং ক্ষুপ্রের বাসভাগে ভু বিনিদ্যাল্লের । অ্লানি পুরার্লের নিংক্ষিপের। ইত্যালনং।

ছারে ও চণ্ডায় নমঃ, ও প্রচণ্ডায় নমঃ, ও বেবাইর নমঃ, ও তাপাইর নমঃ, উত্তবহাবে ও শব্দার নমঃ, ও প্রথম নমঃ, ও নিধিভো নমঃ, ও বালৈ মনঃ, ও বেবাইর নমঃ এই প্রকার সক্ষপুলাদি ছাবা চতুর্বাবে পূজা করিয়া পূর্বধ্যে ও গৃহেশার নমঃ, ও গৃহাব নমঃ এবং ও কুলদেবো নমঃ। পরে, নমঃ সশব শার্মার ফট কৌ পিনাকার ফট নমঃ এই মন্ত্রোচারণ পূর্বক বামপাঞ্জিবাবা আঘাত এয় করত বিল্লোৎনাবেশ করিয়া মন্তক নত রাধিয়া দ্কিণপাদপ্রক গৃহপ্রবেশ করিবে। জনস্তর ও শেবার নমঃ, ও কণাবিপত্রে নমঃ। ও বারপুক্ষার নমঃ এই সমন্ত বলিয়া পূজা কারবে।
ইতি ছারপুলা।

বাণ, প্রস্তর, কার্র, মৃত্তিকা, তৃণ ও পরব এই সকল দাবা নির্মিত জাসন বর্জনীর, ইছাতে উপবেশনে দবিজ ও অন্ধ হয়। ক্রফাজিন, ব্যাস্তর্শ কুলনিশ্মিত, বেজনির্শ্বিত, বল্প, বন্ধুল, ও কখল এই সকল আসন প্রশস্ত জানিবে। জনন্তব প্রশস্ত জাসনে উপবেশন করিয়া আবহাকীর প্রবাসাদন করিবে। জ্বাসী ও পদ্ম জাতি প্রভৃতি পূজাসকল চয়ন করিয়া পূজাপাত্তে স্থাপিত করিবে। আর বাটীর দক্ষিণ দিগেব জলাশর চইতে পবিজ্ঞ জালারার পরিপূর্ণ নুষন কলস নিজের সম্পুথে বামভাগে রাবিরা অন্ধ সকল পৃত্তাপ্ত করিবে। সাম্বী সমূবে স্থাপিত করিবে।

ভুসসীকার্ডবার্টিত ক্রাঞ্চাকারকারিতৈঃ। শংশচুক্ত পদাপদাস্কাকারনির্দ্ধিতাঃ। নির্দ্ধিতাং মালিকাং কঠে মিধারার্চনমার্ভেৎ। তথামলকমাল্যঞ্জ সম্যক্ পুদর-মালিকাং। নির্মাল্য ভুলনীমালাং শির্দ্যাপি নিধার বৈ। নির্মাল্যচন্দনেনাক্ষকরেত্বল্য নামভিঃ। তদ্যায়ধানি বাজ্যোল্য তেনৈব ভিজনত্তম। পাপিঠো বা ২পাপাপিঠঃ সর্বজ্ঞোপ্যক্ত এব বা। ভবত্যেব্যাধিকার্য্যক্র পুলাকর্মণ্য-সংশরং। ইতি মালাধারণং।

পুলাক্ষতাদিদ্রব্যাণাং কুর্যাদ্যন্ত্রস্য সোধনং। ক্ষালনেনামু-লেপাদের্যু তি গুলিং সমাচরেৎ। অব্য এত্রনাম শুলিং কি ভিশুদ্ধি ততশ্চনেৎ। বিলিপ্য বেদিকাং সম্যক্ ম শুলাং তত্র কারয়েৎ। শালি গুলুল চুণৈ শ্চ নীলপীত সিতা সিতৈঃ। লিখেদ উদলং প মং চতুর অসমায়তং। ষট্ কোণং কর্ণিকা-মধ্যে কোণা গ্রন্ত সংস্কা মশুলিকৈর তত্ত্ব সিংহাসনং স্থানেৎ। চন্দ্রাতপপতাকাভিতে গার্থিরপি সর্বতঃ। চিত্রতং তত্ত্ব

অনত্তব রজাক্ষের প্রতিবিধ তুলগীকাঠ বারা নির্মিত সালা এবং আমলকী ও পদ্মের মালিকা বঠেবারণ করিরা পূজা আবস্ত করিবে। এবং
নিম্মাল্য তুলগী মালিকা মন্তকোপরি ক্রন্ত কবিরা নির্মাল্য চন্দন বারা
জীরামের নাম বকল শরীরে অবিত কবিবে বাহবরে ও জীরামের অজ্ञসকল
চিত্রিত করিবে। পূল্যাবাই ইউক আর পাণাবাই ইউক পূর্ব্বোক্ত মালিকা
ও ভিত্তকারি বারণ করিরা সমন্তই জীরামার্চনে অধিকাবী হইবে। অনন্তর
প্রশাক্ষকার্যি উপকরণ এবা সকল ও বন্তের শোধন করিয়া প্রকাশন ও চন্দ্রনাথি অন্তব্যেশন বারা প্রতিমৃত্তির শোধন করিবে। অনন্তর ছির্চিত্ত হটরা
আত্মন্তব্যি ও ক্ষিতি ওদ্ধি করিয়া গোলম্বাদি বারা বেশী লেশন করিয়া ভারতে

ज्ञाणि जिल्लिक्क क्ष्मां निष् । ज्ञू भावत्व यः क्षां ग्रंथ छन्। शचनाथ छ। भूरका गरेत्र श्रं जिल्ला रमा क्ष्म क्ष्मा भी -शार । देखि छ दि हजू के तः ।

পদাস্বন্তিকভন্তাদি রূপেণাকুঞ্চ পদ্ হরং। পৃথি হরেতি
নত্ত্রেণ স্থাপ্রেদাসনং বৃধঃ। পৃথি হরেতিমন্ত্রদ্য নেরুপৃষ্ঠথাবিঃ স্কলং ছন্দঃ কুর্মো দেবতা আসনোপবেশনে বিনিয়োগঃ। ওঁ পৃথি হয়া প্রতালোকা দেবি হং বিষ্ণুনা প্রতা।
হক্ষ ধারয় মাং নিত্যং পবিত্রং কুরু চাসনং। ওঁ ভুরু বঃ স্বঃ
কুর্মার নমঃ। ওঁ আধারশক্তয়ে নমঃ। তঁ তুক্তবিদ্রাবণায় নমঃ।
ব্রীনৃদিং হায় নমঃ ইতি পূজ্বেং। অপক্রামস্ত ভূতানি

পঞ্চবর্ক ছারা মণ্ডল করিবে। প্রথমত চতুরস্র করিয়া তদ্মধ্যে অইবল পদ্ম অঙ্কিত করিবে। পদ্মের কর্ণিকার মধ্যে বটুকোণ অঙ্কিত করিয়া ভাহার विक्रिक्त कोनाओं मान्य किवा वृत्त किक कित्र खरा छात्रात विक्रिक्त भक्षभव e (मामादिशांति दादा উপশোভিত মণ্ডল করিয়া ভাহার অর্চনা করিয়া তথ্যগো সিংহাসন ক্লম্ভ করিবে। এবং চক্রতেপ, পভাকা ও ভোরণ প্রভৃতি বারা মণ্ডণের শোষা বর্ষন করিবে। মৃত্তিকা, গোমর ও মনঃ शिनानि शांकु मकन बात्रा चिक मः किरो के मधन कतिया (य वाक्ति अवत्यत्र कर्तना करत दम व्यवस्य क्या व्याध रहा। व्यनस्तर चित्रकामन, शक्षामन छ ভত্তাদন প্রভৃতি শান্তনির্কাচিত আসনে নিষমামুসারে চরণর্যের আকুঞ্চন উপৰিষ্ট হইয়া পৃথিত্বয়া ইত্যাদি মুল পাঠ করিয়া আসন শোধন করিবে, মজ--মেরুপৃষ্ঠ বাষিঃ ছতলং ছলঃ কুর্মো দেবতা व्यानत्नाभरवभरन विनित्याशः उँ भृषि द्वा धुकारनाका हेकानि मूरनज्ञहेवा । অনস্তর গন্ধপুল বারা এতে গন্ধপুলে ওঁ ভূতু বং বং কুর্মার নমং, এতে গন্ধ-शूरण व आधात मकरत नमः, अटि नद्द्र एक व कुडेविकावनात नमः अटि প্রপুপে ও মৃসিংহার নমঃ এই অপানীতে আসনে পুলা করিয়া ও অপকাৰৰ ভূতানি ইত্যাহি মুলোক মন্ত্ৰণাঠ করত পাকি হান হার৷ ভূতৰে অংশতবার করিয়া ভূতসম্ভবে বিধুরিত করিবে এবং ও অভায় কট্

পিশাচাও সর্বভো দিশং। স্বেধানবিরোধন অক্স্রি স্বার্থেং। পাকি বাতজ্বং কুরা মস্ত্রেণানেন মন্ত্রবিং। ভূতসজ্বান্ সমুৎসার্ঘ্য সংবিশেদাসনে বুধঃ। ওঁ অস্তার্ কট্থোক্য দিশাং বন্ধশচত্রপি। করাক্যালনতো দিক্ষ্ ভতো গুর্বাদিসংনতিঃ। ইত্যাসনং।

বিনায়কং নমস্কৃত্য স্ব্যাংশে চ সরস্বতীং। দক্ষিণাং-শে পূর্ববিচ্চ তুর্গাঞ্চ ক্ষেত্রপং পুনঃ। তত আদিত আরভ্য নমেদ্ গুরুপরম্পাং। নমোহস্ত্রনন্তায় নমোহস্ত বেশসে নমো বশিষ্ঠায় নমোহস্তু শক্ত্রো। পরাশরায়াথ নমোহস্ত শর্বদা নমোস্ত তে সত্যবতীস্থতায়। যোগীস্ত্রব্পাদাংশ্চ

এই বলিয়া মন্তকোপরি করতালিপূর্বকৈ ছোটকাছারা চতুর্দিগে বন্ধন করিয়া গুরু প্রভৃতিকে প্রণাম করিবে। ক্পালের বামভাগে ও প্রেশার नमः, मिन् कार्य सँ नदचरेता नमः, सँ क्रीदि नमः, सँ स्थलानाव नमः श्नर्साय वामाःरम व अकरका नमः। व नक्षम अकरका नमः व প্ৰমেষ্টিগুক্ডো নমঃ ৷ কর কপাল সংবোগপুকাক এই স্কল দেবতার নম-স্থাৰ করিয়া নমোহত্বনপ্রায় ইভ্যাদি নমোহত্ত সীভাপতি পাতৃকাভ্য ইভাস্ক মূলোক্ত প্লোক্সকল স্বাবা নমস্কাব করিবে। অনস্তর কপালের মধ্যভাগে প্রীবামচক্রার নমঃ এই বলিয়া প্রীবামকে প্রশাম করত উর্দ্বেশ ভাগত্তয় করিয়া ওঁ অস্তার ফট্ এই বলিয়া দক্ষিণ হস্তকে দক্ষিণাবর্তে লামিত করিবে। অপর মাদ পকাদি ভত্তংকালীন নিমিত্ত দক্ত এবং আমি প্রভূব ভুপ্তার্থ তদীয় অর্চনাতে প্রাবৃত্ত হুট্লাম ইত্যাদি চিস্তা করিয়া সাজুকোপ मःशत कवित्व। अकात व्हेटक क्रमगांख वर्गमकमरक माजुका वर्ग करह, एक-माख कवारवत भूटर्स । नवार भठि इस ( यवनवनयगहनक) विलास व्यर्गार क्यांत्र नकांत्र, नकांत्र क्यांत्र क्यांत्र, मकांत्र, मकांत्र वकांत्त्र, वकांत्र শকাৰে এই ব্লীতিতে প্ৰশাৰ বাভিক্ৰমে অপৰ্য্যস্ত বৰ্ণসকলকে স্ব স্ব স্থানে লীক िया कतिया करावत्क च कारत मीन कत्रज च कात्रक असत्रकुष मध्यमस्य शोन डिका कतिरव।

বেগতেপাদাংশিচদাত্মকান্। ভগবৎপ্তাগোবিন্দাপাদান্
বন্দে ততন্ত্বং । প্রীমৎ প্রীশকরাচার্যান্ বিশ্বরূপান্ হ্রেন্
শরান্। বন্ধান্তান্ অক্ষরিপান্ ব্রন্ধানি ব্যাধার কান্। মাধারান্
বাহ্ণেবাহ্লান্ সর্ব্যক্তর্কতন্ত প্রাণাধ্যান্ বামদেবান্ ভট্টান্
ছাগনিপিণ্ডিতান্। পরমানন্দরাভাহ্লান্ দোষানিশাভিধাংন্তথা। নিত্যাদিত্যান্ মহাসিদ্ধান্ মাগান্তরদৃশঃ প্রভ্ন।
প্রীমান্ত্র্যামরাজান্ বিস্কৃতন্তি প্রবর্ত্রান্। বন্দেংহং
প্রভ্রাজাংশ্চ বিস্কৃত্যামিক্যারকান্। নমো গুরুভ্তা প্রকৃত্যা শ্রুভ্রা বিশ্বর্ত্রা নমঃ পরেভ্যঃ পরপাত্রকাত্যঃ। আচার্যাসিদ্ধেন্ধ্রপাত্রকাভ্যো নমোংস্ক সীতাপতিপাত্রকাভ্যঃ। ইত্তি শুরুলভিঃ।

ভতে দেবং নমস্কৃত্য কুর্যান্তালতেরং পুনঃ। ওঁ অস্ত্রায়ফট্ প্রোচ্য ভাময়েদ্দিশং করং। কালং স্মৃত্যা করিষ্যেইহং শ্রীরামপ্রীতয়েইচ্চনং। সংকল্পিবং ততে। ন্যাসন্থানা-স্মাত্রেস্ত সংহ্রেৎ। প্রাতিলোমে,ন কলয়ে। লকারস্য হকা-রকে। হলয়শ্চ সকারেহথ সলয়শ্চ ষ কারকে। ক্রমেনৈব মপর্যান্তং লয়মুৎপাদ্য যত্রতঃ। অওমিতি ব্রহ্মরক্ষ্রে সহস্রাজ্যে নিয়োছয়েং। ইতিমাতৃকোপসংহারঃ।

জনতার জীবছাপন কংগত হইতেছে। শরীরাপ্তর্গত সংস্রার প্রাকৃতি ছানহরে পরশার সম্বন্ধ জ্যোতির্ম। সচিবানন্দর্য দেবতাকে চিন্তা করিবে। এবং ভূতপ্রেত পিশাচের কর নিবারণার্থ বারতার বহু বীজ্ঞা (রং) ভিস্বাভিত লগ ও গর্জপুপ প্রকেশণ করত শবীবেব চহুর্দিগে অগ্নিমর প্রাচীরতার চিন্তাকরিরা ত্রহ্ম মৃশ, জ্যাসমূণাল এবং এশ্বর্য অইদলে উপপ্রেভিত বৈশাগ্য কর্ণিকা যুক্ত স্বৰ্ণক্ষপে স্থিত জীবকে হংস এই মন্ত্র্যার ম্যুক্ত স্বর্ণক্ষিত বিশিত ক্রিয়া বিধানান্দ্রারে ভূতগুর্দ্ধির সম্প্রান্ধির।

ততক চিন্তবেদতর্দেশং স্থানত্ত্বান্তরে। জোজির্মার নসুস্তিং সভ্যজ্ঞানত্থান্তথান্তং। আন্ধান পরিতো বহ্নি-প্রাকারত্বেমনের চ। ভূতপ্রেতিপিশাচেভ্যাে বিধায় ওদ-নস্তরং। অন্তিঃ পূলাকতৈ কৈর বহ্নিরীলৈ জিমজিতেঃ। প্রকিপেৎ,পরিতাে মন্ত্রী ভয়বিন্দনির্ভয়ে। হলমুলে ত্রক্ষকশা সংস্তে জ্ঞাননালকে। ঐশ্বা্যাইদলােপেতে স্থিতে বৈরাগ্য-কর্ণিকে। আরাগ্রসাত্রো জীবস্ত চিন্তনীয়ো মনীষিভিঃ। নেতবাে হংসমন্ত্রেণ ভাদশান্তে স্থিভঃ পরঃ। তেন সংযোজ্য বিধিবস্তুতগুদ্ধি মথাচরেং। ইতি জীবস্থাপনং।

পাদাদ্যাজায়য় জায়াং পীতাং ক্রহিণদেবতাং। চতুরস্তাং
পঞ্জণাং শ্লেঁ ব্রী ব্রঃ ফট ভূবং জলে। জায়াদ্যানাভিপদ্মাকং খেতমর্কেন্দু বৈঞ্চবং। রদর্পস্পর্শান্দং রং ব্রী ব্রঃ
ফট্জনং শুচো। নাভ্যাহ্লন্তং প্রান্ত্যাহ্ণ ত্রিকোণং স্বান্তিকার্মণং। বহিং রূপস্পার্শান্দং বং ব্রং হুঃ ফট্ সমীরণে।
ভ্রপর্যান্তং ছদো বায়ুং বড় বিন্দুং স্পর্শান্দবিং। রুতং সাক্ষ্
বিণং পূমং যং হুং ফুট বিহায়দি। ভ্রমার্দ্রান্ত্রহার বাহ্লেবং দশক্ষং। হং হুেং ফুট অহঙ্কারে হুং মহত্ত্রকে
চ তং। প্রকৃতী রামচক্রাণ্যে পরব্রক্ষণি সংহ্রেক।
ইতি ভূতসংহারঃ।

জনন্তর ভূতোপ সংহাব অভিহিত কইতেতে। চবণ হইতে লাসু পর্যায় চতুরুহা পীতবর্ণ। গ্রাধিপঞ্জণাক্রান্তা ব্রহাধিতি পা পৃথিবীকে মৌ হী ছা ফট এই মন্ত্রে জাল লান করিবে, জালু মবিধ নাভিপল্লপর্যান্ত বিশ্রু দৈবত অবিচল্লেব ভাল খেতবর্ণ রস রূপ স্পর্শ ভণবিশিত্র জলকে বং জুহি ছা ফট এই মন্ত্রে অনিতে নীন চিন্তা করিবে। নাকি ফইতে ল্লব্লপর্যান্ত ক্রেয়ায় বৈবত ক্রিকোণ রক্তবর্ণ রূপ রস স্পর্শ ভণাক্রান্ত বহুকে বং জং ছুঃ ফট এই মন্ত্রে বালুতে বিলীন ক্রিয়া ল্লেম্ হইতে ক্রেপ্রান্ত ক্রিল্যু স্পর্শ ক্রিয়া স্বান্ত বিলয় স্পর্শ ভণাক্রান্ত বহুকে বং জং ছুঃ

শরীরাকারস্থানাং স্থানাং বিদেশিবং। অব্যাদ্ধনান বিদ্যাদির বিদ্যাদি

গুণাক্রান্ত বর্তু পাকাব সন্ধবি দৈবত ধ্মণা বাষ্কে যং হৈং ছু: ফট্ এই
মঙ্গে আকাশে লীন চিন্তা কবিবে। পবে আবাব জন্মা হইতে এক্সরন্ধু,
পর্যান্ত শক্তাব্দুক বাহ্দেবদৈবত আকাশকে হং ছৌং হু: ফট্ এই
মঞ্জে অহ্বারে লীন কবিলা ঐ অহ্বারকে মহন্দ্র, মহন্দ্রক আকৃতিতে আকৃ
ভিকে দেই প্রমন্ত্র রামচন্ত্রে সংহাব কবিবে।

অতঃপব ভূতগুদ্ধি কথিত হইকেছে। কিতি, জ্বন, ভেল, বায়ু ও আৰু । জ্বন পঞ্চুত্তমন্থ পরীরের যে পরমন্তক্ষের সম্পান্ধে শোধন করাহন্ন তাহার নাম ভূতগুদ্ধি। জ্বাণাপান বাযুদ্ধের গতিরোধ করিয়া জন্মাদি গুংবপ্রাদ পাপ-পুক্ষকে চিন্তা করিবে। পাপপুক্ষের ব্রহ্মহত্তা জ্রাভূতি মহাপাতক হস্তাদি পঞ্চাঙ্গ, পাতক উপাঙ্গ, উপপাতক বোমরাজি এবং সে অভিতীবণ, ক্রেন্থ ও ক্রন্ধবর্ণ এইরূপে পাপপুক্ষকে বড়ল অসিত বর্জুল নাভিপল্লে ভিত চিন্তা করিয়া বামনাসা হারা বায়ু পূরণ করতঃ ও বং ও এই মন্তে শোধন করিয়া হাল্যে নির্দান্ত করিবে অনস্তব বহি বীক্স (রং) হারা বায়ুকে ক্ষিত্ত করিয়া ও বং ও সং এই মন্তে পাপপুক্ষকে দল্প করিবে অনস্তর ও ঠং ও এই মন্ত ক্ষিত্ত করিয়া ও বং ও সং এই মন্তে পাপপুক্ষকে দল্প করিবে অনস্তর ও ঠং ও এই মন্ত ক্ষিত্ত করিয়া ও বং ও সং এই মন্তে পাপপুক্ষকে দল্প করিবে অনস্তর ও ঠং ও এই মন্ত ক্ষিত্ত চল্ল হইন্তে বিনিঃস্ত্ত অমৃত হারা পথ গেব প্রাণিত করিবে।

कृरेंब्रक महत्वारक बारमार मिलि मध्यात्र । भूकारारिका **७८७। ७७७। यत्वरः जावरत्रः शूनः। शारत्रक्तीवाष्ट्रत्रेत्रकारः अवगनः** ७७ धनः । मृताबारताथया मृत्यकाना स्त्रीवृत्रमार्थकः। ख हूँ कि कि भरवगा थानः विनामा मुक्ति। अवशाद ব্ৰশ্বণো রামাৎ প্রেরকঃ পুরুষত্তথা। প্রকৃতে মহান মহত-স্ততোহ্হৎ ত্রিগুণাত্মক:। তম্মাদা এতমাদাকাশ: সংস্তঃ। व्यक्तानामन । शुः नारमात्रीय तर्यत्राभः व्यक्ताः शृथिनी शृथिना। अवस्यः। अवशेराज्याभ्वः, व्यवाराज्या द्वाराज्यः। न देव এষ পুরুষোধ্মরসময়ঃ। গ্রোমিতি পুথিবীবীজেন তং রসং चनजार नरम् । उँरः अँ देखि वीरकनावम्रवीक तनः कर्वकः। সোহং মস্ত্রেণ তাং পৃথীং নাগান্তে দিদ্ধভাবিতাং। ধ্যাত্রৈবং ব্ৰহ্মরদ্বেণ তত্ত্বীঙ্গকলাং অদেৎ। হৃদি হন্তং সমিধায় ভাবৎ প্রাণ-প্রতিষ্ঠয়। । ওঁ প্রাণ প্রতিষ্ঠামন্ত্রস্থ ব্রহ্ম বিফুরুত্রা প্রবয়ঃ ঋগ যজুঃ সামানি ছন্দাংসি অভিছেন্দো বা ছন্দঃ ক্রিয়াময়বপুঃ व्यानाथा। त्वरा व्यानव्यां छोर्थ विनित्यानः। ७ क्रथः গংঘংঙং অং পৃথিব্যপ্তেরো বাঘাকাশাত্মনে আং হৃদয়ায় नगर। उँ हर इर कर यर कर हरे नकल्लान्त्रभान नहा-जातन जेर नितरम चाहा। ७ है हैर हर एर एर गर छेर ट्यांक इक् চকুর্ব্বিহ্বাদ্রাণাত্মনে উং শিখায়ৈ বষট । 'ওঁ তং থৎ দং ধং'

এইরণে বেংবর সহিত পাপপুক্ষ দগ্ধ হইলে পর সহস্রদলে অভিন প্রভ্রামকে চিন্তা করির। ভক্তিপ্বংসর উপাসনাব অন্ত পুনর্কার অকীয় দেহের উৎপত্তি চিন্তা করিবে। জীবাত্মান্ত মন্তের ঐক্য চিন্তা করিয়া শনীরের পবিত্রতা মন্ত্রমান করত সুলাধার হইতে উত্থিত অভিস্ক অবুমাণথে ও ক্রীক্ট এই মন্ত্রায়া প্রাণারাম করতঃ মন্তকে বিক্লস্ত করিবে। অপর পুণ্রিক্ষ মান হইতে পুক্ষ, তাণা হইতে প্রকৃতি, প্রকৃতি হইতে সহব, মহক্ষ হইতে, ं नर धर याक् भाविभावभाष्मभाषात् और क्वांत हर । ·७ पर यर वर कर मर ७१ वक्क वाशामगममविम्मानमान्त्रदेन छेर दिखाखनाम दिशेष । उँ यर तर मर वर मर वर मर इर भर कर का मत्नावृद्धारशांत **हिलाञ्चात कहै कद्र**कल शृक्षी-खार बजाय करें। 'ड बार नास्त्रमः। उ जीर अन्यानी-নাভি। 'ওঁ আং ছো়েং হাং মন্তকালাহণয়ং। ততঃ ওঁ यः इर्गाणात्न नमः, कि । ७ तः अर्गाणात्न नमः, मि गांर त्या । उँ तः माः माजूत नमः, ककृति । उँ वर त्यताञ्चत नमः, वामार्त्न। उँ नः बन्धाकात नमः, रुपयानि भाविष्कात्न। ওঁষং মজ্জাতানে নমঃ, হাণয়াদি পানযুগলে। ওঁসং শুকুাত্মনে नमः इत्यानि कठेटतः। उँदः थानाज्ञात्न नमः इत्यानाम्यात्न। . ७ कर की वाजारन नमह। ७ इर मः की वाजारन नमः, खल्या कि नर्विष्य । ज्यांमरमवर श्रकार्यन क्र्याधारम् ए प्रवाश वर्षा-স্থেধিস্থপোতোল্লনদরুণদরোগাধিরত। করাথাঃ পাশং কো-मध्यिकृष्ठवयथ छन यश्रक्ष्णः शक्षवानान्। दिलाना एकः शानः विनयनमनिका शीवराकां ऋशाणा (प्रवी वालाक नर्गा ভবতি শুভকরী প্রাণশক্তিঃ পরানঃ। হতিধ্যানং। তেঁ

विश्वनात्रक व्यवसात डाहा हरेट जाकाम, व्याकाम हरेल वायू. वायू हरेल व्याप्त, व्यायू व्यू व्यायू व्यू व्यायू व्यायू व्यायू व्यायू व्यायू व्यायू व्यायू व्यायू व्यायू

वार्गी त्या वर वर जर वर मर गर वर वर मह सम वार्गाः, देह शानाः भूनछारनाव वीकाग्राकाद्या वाक्षममण्डम् व्याखाः खानशाना देहात्रांख काखरा वर्षावरख कित्र धर्मन किक्छ वार्गाः देकिमछः। ততো बन्मानिकान्यके कित्राः मरकारनिक्राः। रवाक्षम श्रानवाद्योः कृषा मक्तिः भन्नारम् ।
देकि भूनर्करहारभाननर ।

চন্ধার বাক্ পরিমিতানি পদানি তানি বিহুত্র কিবা মনীধিণঃ। গুহাদীনি বিহিতাগুলয়ন্তি তুরীয়ং বাচো মমুষ্যা বদস্তীতি ভূতশুদ্ধিঃ।

ভূতশুদ্ধিং বিনা কর্ত্তুপহোমার্চনক্রিয়াঃ। ভবস্তি নিক্ষলাঃ
দর্বাঃ প্রকারেণাপ্যসূ চি তাঃ। তত্মাদ্রামাত্মকা যা বৈ উৎপদ্মা
লিপিমাত্কা। স্বাভিন্ন গাং স্বকার্যায়া স্তদ্যা ন্যাদঃ প্রকীর্ত্ত্যাদে বিনা জপং প্রাত্তনিক্রিলাং ভূতমান্ত্রং (মৃক্মানবং)।
ন্যাদান্তদাত্মকো হি দ্যাদ্রামো ভূত্বা মনুং জপেং।

বামাঙ্গুর্চাদক্ষিণান্তঃ পাণ্যোরুৎপত্তিসঙ্গকঃ। সংহারো বিপ-রীতোহসৌ কনিষ্ঠান্তঃ স্থিতিপ্রদঃ।শির আরভ্য পাদান্তো দেহ-

সাধক ভূতগুদ্ধি না করিরা ডজিপ্রঃসর জপহোমাদি কার্য্য করিবেও ফলডারী হইতে পারেনা। মাতৃকা সকল রাম হইতে উৎপর ও অভিন বিধার রামার্চনে ভাষারখারা অবশুই স্থাস করিতে হয়। স্থাস বাতিবেকে ফণাদি করিলে তাহার ফললাত হর না এবং সেই অপকে আহ্রর অপ অভিনিত্ত হুইবাছে। ন্যাস করতঃ হামসর হুইবা সমুদ্ধণ করিবে।

ধকু, ইক্ষুৰণ্ডণ, অঙ্গ, পঞ্বাণ এবং কপাদ ধারণ করিয়াছেন, জিনরনা, শীনন্তন্বরে সুশোভমানা এবং প্রাতঃ কালীন সুর্গ্যের ন্তার অকণবর্ণা প্রাণ্শক্তি আমাদের মন্ত্রনাধন করিতেছেন। অনস্তর আং হুংই ইত্যাদি মধ্যে প্রাণশ্রতিষ্ঠা এবং জন্মাদি সংখ্যার কার্যসিদ্ধার্থ বোড়শবার প্রণব পাঠ করিয়া পর্মা শক্তিকে স্ববণ করিবে। ইতি ভূতত্ত্বি

ক্তিংগভিদংজকঃ। সংহারো বিপরীহতাহবেদা মূর্দ্ধোহতেত্তঃ বিভিনাভিগঃ। ক্তিন্যাদো গৃহস্ব্যা সংহারো বশিনো যতে:। অক্ষারিণ উৎপত্তিঃ জ্বিয়াঃ শুদ্রদা চেকদঃ। ইতি । ন্যাস নির্ণয়ঃ।

हेण्या श्रायः शानः स्रोति र्राम् क्छायः । तिहरमः स्राविके दिर्निखन् भिन्नमा श्राः । छरेषव श्रामः वार्याः क्छनः तिहनः श्राः । हेण्या माजिला घाणाः श्रामि ख्राः श्राः ।
व्यानामान्ययास्त्र क्या वानिकमान्यः । ज्ञानिकार्यः
काखवर्गिताभाष्णम मस्रकः । ज्ञान्य ज्ञान्यका द्यार्थि
तात्रां भाष्रको हन्नः ज्ञान्या मत्रक्वो त्मवना हत्ना वीक्षानि
स्रतमः श्राः । जिन्दिश्वः स्रिमाल्या नात्रको त्मवना हत्ना विनित्यानः । जिन्दिश्वः स्रिमाला नात्रका नात्रका स्रामः । भिरतापान हत्त्वस्थात्र क्रिमाला नात्रका नात्रका स्राम् स्रामः ।

ন্যাস ত্রিবিধ—উৎপত্তি, স্থিতি ও সংহার। বামাক ঠ হইতে আরম্ভ ক্রিয়া দক্ষিণাকু ঠ পর্যন্ত যে ন্যাস করাহর তাহার নাম উৎপত্তি। আর ইহার বিপরীত অর্থাৎ দক্ষিণাকু ঠ হইতে বামাক ঠু পর্যন্ত যে ন্যাস করাহর তাহার নাম সংহাব। কনিঠান্তন্যাস স্থিতিদান করে। আর মন্তক হইতে গাদপর্যান্ত যে দরীরে ন্যাস করাহর তাহার নাম উৎপত্তি, চরণ হইতে আরম্ভ করিয়া মন্তক পর্যান্ত যে ন্যাস করাহর তাহার নাম সংহার, নাতিগত ন্যাস ক্রিয়া মন্তক পর্যান্ত যে ন্যাস করাহর তাহার নাম সংহার, নাতিগত ন্যাস স্থিতিপ্রদ এই ত্রিবিধ ন্যাসের মধ্যে গৃহত্তের স্থিতিন্যাস। ক্রন্ধচারীদিকের সংহার, স্লী ও শৃত্রের উৎপত্তিন্যাস কর্তব্য।

অতঃ পর ইড়া বাবা খরবর্ণে প্রাণবায়ুকে প্রিত করিরা ক্কারাদি মপর্যন্ত বর্গীর বর্ণ সকল বাবা কুন্তিত করিবে এবং য অবধি কা পরাত্ত বর্ণ
সকলে পিল্লা, বারা রেচন করিরা প্নর্কার পিল্লাবারা প্রণ কর্তত করিয়া ব্যাবারা ব্যাবারা রেচন করিবে অনতঃ উত্তর বারাই পূরণ, কুন্তক ও রেচন

পঞ্চাশর্ণভেদৈ বিহিত্বদনদোঃ পাদযুকু কিবকো—দেশাং ভাষৎকপর্দাক লিভ শশিক সা মিন্দু কুন্দাবদাতাং । অকঅক্স্ত চিন্তালিখিত বরকরাং ত্রীকণাৎ পদ্ম সংস্থা মছোকল্লামত ছেন্ত নভরজঘনাৎ ভারতীং তাং নমামি। ইতি
কেবলমাতৃকাধ্যানং।

কৰিয়া অকাৰাদি ক পৰ্যান্ত বৰ্ণসকল ধারা মন্তক হইতে পাদণ্ৰ্যান্ত ব্যাপক ন্যাস করিবে।

অনম্ভর মাতৃকার ঋষাাদি ন্যাস প্রভৃতি কথিত হইতেছে। অস্য প্রী মাতৃকামস্ত্রসা ইত্যাদি মূলোক্ত ঋষিদ্দল পাঠ কবিয়া ঋষাদি ভাস করিবে যথা শিরসি ব্রহ্মণে ঝারে নমঃ, মুগেগায়রীচ্ছলসে নমঃ হৃদি শ্রীমাতৃকা সব-খাইত্য দেবভারে নমঃ, গুংছ্ হলেভো নীজেভ্যো নমঃ, পাদ্ধরে খবেড্যঃ শক্তিভো নমঃ।

অনম্ভর মাতৃকার অঞ্নাস করন্যাস করিতে হয় এই সমত মৃলেই স্পষ্ট বিখিও আছে দৃষ্টিকরিবেন। অতঃপর পঞ্চাশ্বর্ণ তেগৈঃ ইত্যাদি মৃলোক্ত খানে, খারা দেবীকে চিন্তা কবিবে। দেবীর আকার।—মুখ, বাহ, চয়ণ, উদর ও রক্ষণেশ পঞ্চাশ্বনিয় চল্ল ও কুক্ষ প্রভাব ন্যায় ওজবর্ণ, অথান্ত মাতৃকান্যাসঃ কণ্ঠহরাভি শুহুকে। পার্মৌ জন-ধ্যকে পরে যোড় প্রাদশজ্বল। দশপত্রে চ ষট প্রে-চতুস্ত্রে-ছিপত্রেকে। পঞ্চাশহর্ণবিন্যাসঃ পত্রসংখ্যাক্রমাদ্ভবেৎ। একৈকবর্ণমেকৈক পত্রান্তে বিন্দুযুদ্ধন্যসেৎ। ইত্যন্তর্মান্ত্-কান্যাসঃ।

অবমন্তঃ প্রবিন্য মনসাতো বহিন্যসেৎ। শিরোবদনরভেৎপি চক্ষঃ শ্রোজযুগেহপ্যথ। নাসাকপোল যুগলে তথোঁঠাধরযোরপি। উর্জাধো দন্তপংক্তো চ মূর্জ্যাস্যে ধোড়শ
স্বান্। ক চবর্গছয়ং বাহ্বোঃ পঞ্চাব্ধিস্থলে ন্যসেৎ। ট তবর্গছয়ং পাদসন্ধ্যথেষ্ চ সংন্যসেৎ। পবর্গৎ পার্যসুগলে পৃষ্ঠনাজ্যদবেষ্ চ। হুদো মূল ককুৎক্ষন্ধে হুদাদি করপদ্ ছয়ে।
ক্রচরাননযোইশ্চব ব্যাপকং বিনিযোজয়ে । ওুমাদ্যক্তো ন-

छात्र द वर्षक दिव छात्र छात्र ठ छ व व्यक्त ना थावन कि विदाय हिन्द है दिव क्या कात्र व्यव है दिव क्या कात्र कि विदाय है । विदाय है ।

स्पिट्रेश वा मिनिन्द्र्विम् वर्षिक्ष । शकाममक्त्रनामः कारमेरेनरः विवीपारकः। देखि क्विन माज्यानामः।

खखः गविष्मू एक नारम श्रविष्क्रमण्ड शृर्ववर । गःहारक • मात्रमा रमवी मविष्यर्थिः वस्क्रकर ।

শক্ত লং হরিণপোত মৃণ এটকং বিদ্যাং করৈর বিরতং দধ-তাং তিনেতাং। অর্দ্ধেল মোলিমক্লণামর বিন্দুসংস্থাংবর্ণে-খরীং প্রণমত স্তনভারনআং। ইতি দবিন্দু মাতৃ কাধ্যানং। বিন্দু বৃক্তাং মাতৃ কাস্ত বিন্য দেশ মুলোমতঃ। ইতি দবিন্দু-মাতৃ কান্যাসঃ।

স্থানেবেতেরথ পুনর ভিকারা: কলা ন্যদেশ। অস্য ক-লান্যাসস্য প্রজাপতি ধাষিগারুত্রীচ্ছন্দঃ কলা সরস্থতী দেবতা ইন্টার্থে বিনিয়োগঃ। অং তুঁ আং ক্ষরায় নমঃ। ইং তুঁ ঈং শির্দে স্থানে। উং ও উং শিখারৈ ব্যট্। এং ও উং ক্রচায় হুং। তুঁ ওঁ ওং নেত্রত্রয়ায় বৌষট্। অং ও জঃ অস্তায় ফট্। ইতি কলাষ্ড্রন্যাসঃ। ইত্তঃ পদ্মং রধাসং

एक कर, डेमरव मर, अमरवयर, क्वमृत्य वर, कक्र्रश्रात गर, क्मवाविमिक्निक्रिक्ष सर अमवीकि वीमञ्द्र पर, अभवीकि मिल्निशास मान्य विमानि वीमञ्द्र पर, अभवीकि किर्द्र कर, । এই श्राकारिय वीद्य कार वाह्य काम किर्द्र । अहे ज्ञान विक्र विक्रिक्ष कर हत्र, किन्द्र शृद्धांक निविक्त काम किर्द्र हिंदा काम किर्द्र हिंदा काम किर्द्र हिंदा काम किर्द्र हिंदा काम किर्द्र किर्द्र विव्यक्त काम किर्द्र किर्द्र विव्यक्त किर्देश काम किर्द्र किर्द्र विव्यक्त काम किर्द्र विव्यक्त काम ।

জনত্তর এই সকলতানে মাতৃকার কলাতাস করিবে। প্রিক্ষ ও পদতাসাদি মুলেতে স্টে রহিয়াছে, করতাস ও প্রকালের তার। হতৈঃ পদ্ম রধাদং ইত্যাদি মুলোজনান করিরা ও আং নির্হৈত্য নমঃ ইত্যাদি মুলোক্ত ভাস করিবে। ধানার্থা শার্ষা হত সকলে পদ্ম ড্রু, খুন, মুন, পুরুক শুণমথ হরিণং পুস্তকং বর্ণমালাং টক্ষং শূলং কপালং নবমন মৃতলসন্ধেমকুস্তং বহস্তীং। মুক্তাবিছাৎপয়োদকটিকনব-জবাবদ্ধুরৈঃ পঞ্চবকৈ প্রতক্ষিক্তিকালন্ত্রাং সকলশিন-নিভাং শারণাং তাং নমামি। ইতি কলাদেব্যা ধ্যানং।

্ ওঁ, অং নিরুক্তা নমঃ। ওঁ আং প্রতিষ্ঠারে নমঃ। ওঁ ইং विमारिय नमः। ७ वेः वेशानिरिय नमः। ७ छः देखिकरिय, खँछर. नीशिकारेश, खँ श्रः Cतािकारेश, खँश्रर त्याठकारेस, खँ कर भवारेय, खँ ककर मृक्षारेय, खँ धर मृक्षाय्छारेय, खँ खेर क्वानाञ्चलिया, व उर वानात्रात्रिता, व उर वातिता, ७ वर त्यामक्रभारेय, ७ वः व्यन्तारेय, । कर श्रंकी, धर श्रीका, गः श्राटेजा, चः त्युशिरेय, ७९ कारेखा। हर नरिया, ছर मृटेका, कर व्हितारेय, यर व्हितारेय, वार मिटेका, वेर क्या-देव, र्रुर शानिरेना, जः भारेखा, तर क्षेत्रर्रेश वर बरेखा। उः कामिकारिय, थर वतनारेय, मर बाइलामिरेना, धर श्रीरेजा, नर मीर्घारेय । शः जीक्कारेय, कर दर्जाखारेय, वः अख्यारेय, खर निकारिय, मर मरेखा। यर क्रूसिरेय, तर टकासिरेना, नर किया-देश, বৎ উল্কাটিয়, শং মৃত্যবে, বং পীতাটিয়, সং খেতাটিয়, **२: ज**क्रगोरेस, नर जनिजारेस कः जनस्रोरेस । ইতি পঞ্চাশ**-**-কলান্যাসঃ (

उँ चः चत्रवारित्र नमः। उँ चार चानमारित नमः। उँ हर श्वारित्र नमः। त्रेर जूरिकाः। छः शूरिकाः, छर तरेकाः, सरसरिकाः,

বর্ণ সকল, টক, কপাৰ, বাৰ,এবং কথা পরিপূর্বকৃত্ত ধারণ করিয়াছেন, জিনয়ন যুক্ত মুক্তা, বিছাৎ মেল ফটিক ও জবার সমবর্ণ পঞ্চবদ্ধে বিয়াল সানা পূর্বচন্দ্র নদুলী এবং তাল ভারে নত্র।।

(बरेंद्रा) स्ट मनिरेना, ३१ हिल्लारेश, ३३६ कार्रेसा, अर . त्कांदश्चरित्र, थेर खिरेत्र, थर खीरेला, खेर मक्नारित, मर পূর্ণারে, অংপূর্ণায়ভারে নমঃ। ইড্যেডাঃ সরস্থানে সংপূজা ं श्रुखवाः। कर धर छिनितः, धर वर छानिता, गर कर भूजारित्र । घर भर मतीरेका । ७९न९ कानिरेना । हर ४९ ऋरेका, हर पर श्यु सारित,। जर थर त्यांगगरित, अर छर विचारित खार वर दाधिरेना । हेर हर धान्निरेना, हेर छर कमारेन, यर धुआकित्य । तर जैशार्रेंग, नर क्वांनिरेना । वरक्वांनामानिरेना मर विक निर्मिता। यर द्रिक्टिय, मर खत्रभारेय, हर किनारेय। এতা হস্ত পাদযুগলমাসিদু ন্যস্তব্যাঃ। লং হব্যবাহনায়ে नमः देखि मस्रद्या। कः क्यानाहनादि नम देखि वाशिकः। हेजाछे जिएमे व कताना गिर ।

মায়াদৈয়ঃ পুটিতান বর্ণান কেশবাদীংস্তথা পরান্। সশ-ক্তিকান্ ন্যদেদ্যক্লাৎ মন্তকাদিক্রমেণ তু। তথাছি কেশবাদি-মাতৃকান্যাসদ্য প্রসাধ্যনারায়ণ ঝ্রিগায়ত্রীচ্ছন্দো লক্ষী-নারায়ণো দেবতে স্বরাঃ শক্তয়ঃ ইন্টার্থে বিনিযোগঃ। এঁঞ্জী ও নমো নারায়ণায় হংসঃ সোহং অং কং থংগং ঘং এংআং हीँ ६९मः त्माहर 'अँनत्मा नात्राय्याय कुरक्षास्त्राय चाहा। শ্রী বেবৈর ছারায় নমঃ। শর্বতে ওঁনমো নারায়ণায়েত্যসূস। ঞ্জনীয়ং। এবং মহোক্ষায় স্বাহা 🕮ং পত্মিন্যৈ শিরসে স্বাহা ৰীরোক্ষায় স্বাহা শ্রেং বিষ্পুপজ্যৈ শিখায়ৈ বষট্। হ্যক্ষায়স্বাহা ेखं वत्रनारेत्र कवहात्र हुर । महत्याकात्र श्राहा त्थारकमना-क्रभारित त्नजाना (वोषठे । स्नरस्ताकात्र वाहा सः म्लिरेना অন্তায় ফট্। ইতি কেশবাদি মাতৃকাষড়ঙ্গন্যাসঃ। বিদ্যার।

বিশ্বলগুড়ামৃত কুম্বলগুকুত কোনোদকী দরত্বপর্ণন শোভিষতং ।
সোদানিনী জলদকান্তি বিভাতি লক্ষী—নারায়ণাত্মকমণ্ড
মনাদিমূর্তিং ইতি মাতৃকাধ্যানং।

खँ हीँ बीँ को बाँ दीँ की की खँ दक्ष नामिकी खंस नमकः देखि मस्तक मम्भूषेशः जार नातांग्रगानिकारेखा नगशः हर यांधवात कृटेकें नमः। त्रेश शांविन्नात्र भूटेकें नमः। छेश विक-८व श्रेडा नमः छेर मश्रूक्षनाग्र भारेखा नमः। श्रर खिनिक-भाग्न कियारिय नमः। शृर वामनाय मयारिय नमः। ৯९ अधिता-ब (स्थिति नमः। ৯৯९ इवीत्कनात्र इर्वारेश नमः। ७९ भव-नाञात्र व्यक्तिरेश नमः। वेश नारमानतात्र नञ्जारेश नमः। **७ वाञ्चर न वाग्र न रेकार नम्ह । ॐ महर्ष नाग्र महत्र्वरेख नमः ।** অং প্রচার প্রীত্যৈ নমঃ। অঃ অনিরুদ্ধার রত্যৈ নমঃ। कर ठक्तित क्यारिय नमध थर गिमत्न छुगिरिय नमः। गर শাঙ্গি পে প্রভারে নমঃ। ঘৎ খড্গিনে সত্যারৈ নমঃ। ঙৎ अधिदन हथारेश नमः। हर इरितन वार्रेगा नमः। हर मृत्रनि-নে বিলাসিনৈর নমঃ। জং শূলিনে বিজয়ায়ে নমঃ। ঝং পা-नित्न वित्रकारेश नमः। ७९ जङ्गुनित्न विश्वारेश नमः। हे९ मूकुम्माय विनयादित्र नयः । ४९ नम्मजाय स्नन्यादित्र नयः । ७९

भनत म्रांच भहेतिः न कात जात कतिश मछकाि क्रांच मात्राधि (ही: निः हो:) वीक्षत्र मृष्टिं व्यवः मिक्स्क रक्वाित जात किर्दा । व्याच्या स्वाधित स्व

मन्दिन पूर्वेषा नमः । घर नजीव सरिका नमः । नर मनकविद्य भञ्चरेका नमः । छर् दशदत छरेका नमः । वर कृष्णांत्र वृरेकामनः দৎ সত্যায় ভূক্তিয় নমঃ। ধং সাত্মতায় মতৈয় নমঃ। নং भौतरत क्यारिय समा । अर मृतात तमारेय नमा । यर समा-र्कनात्र छेमारेश नमश । वर कृथतात्र दक्षिरेख नमः। छर विध्यमुर्खिए क्रियारिय नमः। मर देवक्षीय वद्यनारेय नमः। ষং দ্বগাত্মনে পুৰুষোত্তমায় বহুধায়ৈ নমঃ। রং অস্গাত্মনে ৰারাহৈয় নমঃ। লং মাংদাজুনে বলাকুজায় পরায়ণারে নমঃ। वर स्माज्यात वलाय मुक्यारिय नमः। मः अव्याज्यात द्वयवाय नकारिय नमः। यः मञ्चाजातन त्रयांत्र প्रञ्जारेय नमः। नः **ख्याबार रः नारा अन्ति स्थाः। हर आगाबार दहाराय** निर्भादेश नम्ह । तः क्रियां भक्तां ज्ञान विमनात्र क्रामां देश मनः। ७ ही की को ही कर की और टकाशायात नृनिः श्रम् विद्वार्कारेय नमः। ट्रिक्नवानित्रयः यादमा यानमाट्यन দেহিনাং। অচ্যুতত্বং দদাত্যের সত্যং সত্যং ন সংশয়ঃ। ইতি কেশবাদিমাতৃকাম্যাসঃ।

वाक्ष्याञ्चामानिकान् वर्गान् माजुकाञ्चाः ममक्तिकान्। **এ কিঠাদীনখেশান্তান্ন্যসেৎ স্থানে**ষু তেযু হি। দিন্যাসস্য অম্বরীশ ঋষিরসুফী প্ছন্দঃ অর্দ্ধনারীখরো দেবতা हत्ना वीकांनि खताः भक्तमः कानविकानार्थ विनिर्मागः।

कब्रुक विवासमान । छारमब खनानी यथा मस्रदक थेँ होँ औँ 🞳 ँ घर हीं औं क्री व दक्षवानिकीर्दर्श नमः, मृत्य व हों और क्री कार हों @ की दे: e माताबनाविकाटेका सम: देखावि माकुकांकात्मत निविधे चाममकरन अकाताविवर्शास्त्रादा स्नाम कविरव। धरे कम्पावि साम क्षानकत्राम । छ है नाथकविशतक दक्षेत्र क्षेत्र करते ।

আনন্তর প্রী কঠাদি ভাগ কথিত চইতেছে। ইচাতে ও ললাটাদি সাত্ কাল্যাসোক্ত স্থানসকলে অকারাদি প্রভাক নাড্কাবর্ণের পূর্বে ঐ ইা প্রী এই বীল্লেরযুক্ত করিরা শক্তিব সচিত প্রীকঠাদির ভাগ করিবে। নৃগনির্দিন্ত প্রীকঠাদিভাসভ অফ্নীশ থাবিঃ ইত্যাদি থাবিছেন্ড পাঠ করিবা ঐ হ্রা প্রী অং কং পং গং ঘং ওং আং অক্টান্ত্যাং নম ইত্যাদি ক্রমে ম্লোক্ত করভাগ ও এই রীত্যাহসারে হল্যাদি বড়কভাগ করিবে। অতঃ পর সিক্ষ্কাঞ্চনসম ইত্যাদি ম্লোক্ত ধ্যান হারা ধ্যান করিবা মন্তকে ঐ হ্রা প্রী অং প্রীকর্তেশপূর্ণাদ্বীত্যাং নমঃ ইত্যাদি মূলে দৃষ্টিপূর্বক পূর্বোক্তিনিরমে ভাগ করিবে। দেবভার আকার অর্থনারী অর্থক্তর পারী শক্তর ইত্যার বামার্ছ সিক্ষ্রবর্গ ক্ষণার্ছ স্থান বর্ণ, হত্তসকলে। चर्वा है जिन्हींनत्नानाकीछार नमः। छर समरतः सद्भवर्त्त नाकी छार नमः। छ वनी वीं मनी व (लाहना छार दम:। याँ ভাবভূতীশদীর্ঘুমীভাগং নমঃ। श्राँ তিথীশ পোমুখীভাাং নমঃ। ৯ং ছামীশদীর্ঘ জিহ্বাভাাং নমঃ। ৯৯ং হ্রেশকুণ্ডোদরীভ্যাং নমঃ ৷ এং বিণ্টীশোর্দ্ধকেশীভ্যাং क्यः और ट्लेंबिटकमविकुलंब्शीन्तार नमः। ७ माना-জাতেশ জালামুখীভাগং নমঃ। ঔ অমুগ্রহেশোক্ষামুখীভাগং নমঃ৷ অং অকুরেশ জীমুখীভাং নমঃ৷ অঃ মহাদেনেশ বিদ্যামুখীভ্যাং নমঃ। কং ক্রোধীশ সহাকালীভ্যাং নমঃ। খং চল্লেশ সরস্বতীভ্যৎ নম: ৷ গং পঞ্চান্তকেশগোরী-छ। १ नमः । घर भिर्वाहरम देवलाक विनाखार समः । ७९ একরুদ্রেশমন্ত্রশক্তিভাগে নমঃ চং কুর্ম্মেশাক্সশক্তিভাগে নমঃ। ছং একনেত্রেশ ভূতমাত্ত্যাৎ নম:। জৎ চতুরাননেশ লখে। पत्रीकाः नमः। यर चरक्षणााविगीकाः नमः। कर मर्द्यम নগরাভ্যাং নমঃ। টং সোমেশথেচরীভ্যাৎ নমঃ। ঠৎ লাঙ্গুলীশ মঞ্রীভ্যাৎ নমঃ। ডং দারুণেশ রূপিণীভ্যাং নমঃ। চং অর্ধনারীশশরীরিণীভ্যাৎ নমঃ। গং উমাকাত্তেশ কোটরীভ্যাৎ নমঃ। তং আষাঢ়ীশ পূতনাভ্যাৎ নমঃ। थर पढीगडमकानीजार नमः। पः अमीगरगिनीजार नमः। ४९ मीरनणणियनी छाः नमः। नः स्यापणपिकनी-ভार नमः। १९ लाहिएजभकानताळि छाः नमः। कर गित्रिष्ठभवक्तिनेखार नमः। वर छग्तमक्रशक्तिनेखाः नमः। ७९ वित्रदेशनकत्रान्तारं नमः। मर महाकादनभ-विकन्नान्त्रार नगः। यर द्वाष्त्रनाः वागेणस्यूर्यपद्गीनार নমঃ | রং অস্থাত্মভ্যাং ভুজক্ষেশরেবভীভ্যাৎ নমঃ ৷ লং

মাধ্যাত্মভাং শিনাকীশ মাধ্যীভাং মনঃ। বং মেনাম্মভাং
বড্গীশ বারুণীভাং নমঃ। শং অস্থাত্মভাং বকেশ বারুণ
বীভাং নমঃ। ষং মজ্জাত্মভাং বেতেশবিদারিণীভাং
নমঃ। সং শুক্রাত্মভাং ভ্যীণ সহজাভাং নমঃ। হং প্রাণাত্মভাং
ভাং নকুলীশলক্ষ্মীভাং নমঃ। সং ক্রিয়াশক্ত্যাত্মভাং
শিবেশব্যাপিনীভাং নমঃ। কং পরশক্ত্যাত্মভাং স্বর্ত্তকেশমহামায়াভাং নমঃ ইতি শ্রীকণ্ঠানি ন্যাসঃ।

শুদ্ধা সবিন্দুকা যুক্তা কলাভিঃ কেশবাদিভিঃ। প্রীক্ঠমাতৃকা চাত্র ভাসাঙ্গে পঞ্মী স্মৃতা। ক্লডির্যুক্তাং কেবলাং
বা মন্নাং কর্মারস্তে মাতৃকাং বিষ্যুসেদ্যঃ। মন্ত্রাঃ সদ্যঃ
কুর্বতে তস্য সিদ্ধিংদােষৈঃ সার্দ্ধং যাতি নাশং জরা চ। স্বর্ধতত্ত্বং প্রক্রামি তত্ত্বভাসং তদর্থিনাং। যতত্ত্বনাসমাত্রেণ
তত্ত্বমেব প্রজায়তে। ওঁ মঁ নমঃ পরায় জীবাত্মনে নমঃ।
ওঁ ভং নমঃ পরায় প্রাত্মনে নমঃ। এতন্দ্রিতয়ং সর্বাঙ্গে।
বং নমঃ পরায় বৃদ্ধাত্মনে নমঃ। ফং নমঃ পরায় অহকারাত্মনে নমঃ। পং নমঃ পরায় নম আত্মনে নমঃ এতক্তিতয়ং
ফদি। লং নমঃ পরায় শকাত্মনে মৃদ্ধি। ধং নমঃ পরায়
স্পর্শাত্মনে ইতিমৃথে। দং নমঃ পরায় রূপাত্মনে ইতি
লিক্ষে। ডং নমঃ পরায় দৃগাত্মনে ইতি চক্ষ্ধোঃ। ঠং
নমঃ পরায় জিলাত্মনে ইতি জিলায়াং। টং নমঃ পরায়
ভ্রাণাত্মনে ইতি ভ্রাণে। ঞং নমঃ পরায় রাগাত্মনে ইতি
বাচি। বং নমঃ পরায় প্রাণাত্মনে ইতি পাণ্যোঃ। কং

সংগ্রতি মাতৃকা ন্যানের ফলগুদলিত হইতেছে। বে সাধক কার্যারজে 'লিবাদিযুক্ত অথবা কেবল অকারাছি বর্ণবারা মাতৃকান্তাস কর্মেন, তথক-শ্বিই বন্ধ তাঁহার অন্তাই ফলগুদ হয় এবং লোববাল ও কাডা বিদ্যু হয়।

श्रेमः भ्रतिय भागाञ्चरम देखि भागरमाः। हर नगः भेतिय পাঠান্ত্রনে ইতি পার্যে। চৎ নমঃ পরায় উপস্থাপ্রনে ইজি . छे शर्ष । छः नगंः श्राम जाकामाञ्चात है कि मुर्कात । घर नगः পরায় বাঘাত্মনে, মুথে। গং নমঃ পরায় তেজদাত্মনে, श्रुति । थर नगः भवाश कलाचारन, लिस्त्र । कः नगः भवाश পৃথ্যাত্মনে, পাদযোঃ। শং নমং পরায় পুওরীকাত্মনে নমঃ। হং নমঃ পর!য় সোমমগুলাস্থানে যোড়শকলাস্থানে নমঃ। ওঁ সং নমঃ পরায় স্বাল ওলাছানে আদশতলাভানে নমঃ। ওঁরং নমঃ প্রায় বহ্নিম ওলা মনে নমঃ। এতত তৃষ্টাং ছদি। 'डें धर नमः भवांत्र भवत्यक्षेत्राञ्चान वाद्यापवात्र हेकि मुर्कमि । धः नमः পরায় পুরুষাভ্রনে সঞ্জনিয়া, মুখে 1 वः नमः পরায় বিশ্বাত্মনে প্রভাগনা, ধ্রণি। লং নমঃ পরায় নির্ভ্যাত্মনে অনিরুদ্ধায় নমঃ ইতি ওচ্চে। কং নমঃ পরায় স্কাত্মন नाताग्रगाय नगः, পानरयाः। उ (का) नगः भवाय (का) জ্বনে নৃদিংহায় নমঃ ব্যাপক্ষিতি। অতত্ত্বসাস্থ রূপদ্য তৎপ্রাপ্তেং ভুনা পুনঃ৷ ভর্কাসমিতিপ্রাহ্ অনিতর্-निरमा वृक्षाः । यः कूर्याहद्विनामः म शूर्ता छवि अवर र কণাল্যনামুপ্রবিশ্য ভগবানিহ তিষ্ঠতি। ইতি তলুন্যাপঃ।

তন্ম ব্রিপঞ্জরন্তাদং কথয়িষ্যেইধুনা পরং। যন্ত্রাৎ कलाखतर नाखि प्रमुखन्य हिं निक्षात्र । 'उँ वर ताः दकनवात्र

अनवन कवाकिनाती विश्वत उच्च कन अप उप्रांत अधिकि व्हेटल्ट म्रात्तरे खुम्भडे छेननिक रुडेरव मृष्टि करिरवन। गिनि जानविक्तित अवः क्षर्वार्थ व्यवाना, मुनिशन धरे उद्गानक छै।शत व्यक्ति स्वाप विश्वाद्यत । य वाकि उद्यान करत ति निकारे भविता दम अवर क्रमहीचेत्र क्रामद्भरन 'छोहाटक भवेषिठि करतन ।

ধাত্রে নমঃ, ললাটে। ওঁ আং লং বাং নারায়ণীয় অব্যক্তে নমঃ,নালে। ওঁ ইং মোং মাং মাধবায় মিত্রায় নমঃ, হাদ। ওঁ ঈং ভং বং গোবিন্দায় বরুণায় নমঃ, কঠে। ওঁ উং বং মং লং বিঝবে অংশবে নমঃ, দক্ষিণাংশে। ওঁ এং বাং ত্রিবি-ক্রমায় বিবস্থতে নমঃ ইতি দক্ষিণকন্ধরে। ওঁ এং বাং ত্রিবি-ক্রমায় বিবস্থতে নমঃ ইতি বামপার্শে। ওঁ ওং মাং প্রীধ্রায় পৃষ্ণে নমঃ ইতি বামাংশে। ওঁ ওং দেং যং হ্রবী কেশায় প্রে নমঃ ইতি বামকন্ধরে। ওঁ অং বাং নং পদ্মনাভায় স্থায় নমঃ ইতি বামকন্ধরে। ওঁ অং বাং নং পদ্মনাভায় স্থায় নমঃ ইতি বামকন্ধরে। ওঁ অং বাং নং পদ্মনাভায় স্থায় নমঃ ইতি বামকন্ধরে। ওঁ অং বাং নং পদ্মনাভায় স্থায় নমঃ ইতি ক্রুদি। ওঁ নমো ভগবতে বাস্ক্রমা বিষ্ণবে নমঃ ইতি করুদি। ওঁ নমো ভগবতে বাস্ক্রমার বিষ্ণবে নমঃ ইতি করুদি। ওঁ নমো ভগবতে বাস্ক্রমার বিষ্ণবে মার ইতি মূর্দ্ধি, ন্যাসেং। ইতি। তল্ম বিপঞ্জরন্যাসো-হভিহ্ন পরমেন্তিনা। সক্রমানাভ্রেক্সন্তা রামমূর্ত্তিরস্ক্রমা ইতি মূর্ত্তিপঞ্জরন্যাসঃ।

বক্ষোহ্ছমি ক্রিন্যাদমি ক্রিয়াণাং বিশুদ্ধয়ে। যা সং-প্রাপ্যতে রামো দেশিকে ক্রেণ ধীমতা। ওঁ দিগ্ভ্যো নমঃ ইতি প্রোত্রোঃ। বায়বে নম ইতি প্রচি। ওঁ আদিত্যায় নম ইতি চক্ষুধোঃ। বরুণায় নম ইতি ক্রিহ্বায়াং। অধিনীভ্যাং

জতঃপব মৃত্তিপঞ্জবগুলে অদশিত হউতেছে এইটি ভগবদারা-ধনার অধিতীয় উপায়। তালপ্রণালী মৃলেই স্কুপ্টি রহিয়াছে। এই মৃত্তিপঞ্জবস্থাদ চত্রাননকর্তি নির্দিষ্ট ইউয়াছে, সাধক একবার স্থাস করিলেই রামমৃত্তি প্রাপ্ত হইতে পারেন।

সাধকগণ ইজির ওজি ঘারা প্রভ্রামকে লাভ করিয়া থাকেন অতথব অনস্ক্রম ইজিরসকলের পবিওজার্থ ইজিরভাস অভিথিত হইভেছে। ওঁ বিগ্রভাব নম ইত্যাদি স্বে জটবা।

नम रें ि खार्टा। व्यारा नम रें ि योहि। रे सिमाय नम ইতি পাৰোাঃ। বিফাবে নম ইতি পানয়োঃ। মিজায় নম ইতি পায়ো। প্রজাপতয়ে নম ইতি উপস্থে। চক্রমদে नम इंडि मनि । जक्कर नम इंडि बुक्ती । ऋक्षां मम इंडि প্রহারে। ক্রেয়ন্ম ইতি চিত্র। ঈশ্বায়ন্ম ইতি মনসি। ইল্ডিয়নাসঃ।

অথ কিরীটন্যাদঃ। তুঁ কিরীটকেযুরহারমকরকুওল শহাচক্রগদান্তোজহন্ত পীত পীতামরধর ঐশ্রীশ্রবং সান্ধিত-বক্ষঃস্থল শ্রীভূমিদহিতাল্পড়োতির মদীপ্রিকরার সহস্রা-দিতাতেজনে নম ইতি শরীরে প্রমতেজোব্যাপ্তিং শ্বরন কিরীটমুক্রযা মূর্দ্ধি বিন্যাসেৎ। ইতি কিনীটন্যাস:।

ন্যাদমশ্য প্রবন্ধ্যানি মনোঃ দর্বফলপ্রদং। ন্যাদং বিনা জপং প্রান্তর হৈরং নিক্ষলং বুধার। খাষিত্র ক্রান্ত মন্তর্গ গায়ত্রী ছল উচ্যতে। রামাখ্যং বৈষ্ণবং ধাম দেবতা পরিকীর্ত্তিতা আদ্যবীজংনতিঃ শক্তীরানামেতি চ কীলকং। ঋষিগু রুত্বাৎ শির্মেব ধার্য্যশ্চলো রসহাদ্রসনাগতং ন্যাৎ।

অত্তর কিরীট আস কবিলেচয়। ও কিরটে কেনুর ইত্যাদ স্পোক্ত মুরোজারণ করত শরীবমুধো একটি প্রধান কেন্দ্র প্রবিষ্ট হট্ল এইরূপ िखा कविया कितौरे मून, बाता मछाक छात्र करिता।

অত:পর অভীপ্রদান মধ্যান ক্থিত হটতেছে। প্রিডগণ স্থান वाखिदारक कुछ खनरक चासूत व निकल विन्ता नारकन । এই माध्रव श्वि बन्ना, इन्न शावजी, व्यञ्जान एनवडा श्रेश बीख, नमः निक्त जबः রামার এই কীলক। অস্ত জীরামনস্থ একা ক্ষি গাণ্ডী ফুল: প্রমান্তা खिदारमा रचक्का दाः वीकः नयः निकः वामात्र कीनकः एक्सर्ग निकार्ष विनिद्धांत्रः हेकाकांत्र श्रविक्रम गाठे कतिया नाम कदित्व । श्रवि श्रव विवश काशांक मक्का मांग करिया वर्षाय मित्रि अभाग भगाम मनः देशां-

विशायगखराजशा मरेनर किन क्षिकिं। समूरणरकाशः । वीकार एक्ष्य क्ष्यकील क्षया निकः भरमान्यविष्क हार । ज्या वीक्ष्यकीलः खनदार्श्वि कीमकः । जनगावमर्थः । अवस्य नम हेकि भित्रमि । भाग्रकील्ड्रम्परम् नम हेकि मूर्य । खीतामात्र भत्रमाज्ञात्न नम हेकि किन । वीक्षाज्ञात्न नम हेकि क्षरहा । भक्तरत नम हेकि भागराह । हेकि अध्यानिनगामः ।

ওঁ রাং অঙ্গুছাডাং নম। ওঁ রীং তর্জ্জনীভ্যাং নমঃ। ওঁ রেং মধ্যমাভ্যাং নমঃ। ওঁ রেং অনামিকাভ্যাং নমঃ। ওঁ রৌং কনিষ্ঠাভ্যাং নমঃ। ওঁ রঃ করতলষ্ঠাভ্যাং নমঃ। ইত্যসুলীন্যাসঃ।

ওঁ রাং হৃদয়ায় নমঃ। ওঁ রীং শিরদে স্থাং। ওঁ রং শিখায়ে বষট্। ওঁ রৈং কবচায় হৃং! ওঁ রোং নেতা-ভ্যাং বৌষট্। ওঁ রঃ অস্থায় ফট্। ইতি ক্দয়াদি ন্যাসঃ।

শিরোজমধ্যগুদয়নাভিগুহ্যপদস্থলে। মূলমক্সাক্ষর-ন্যাসস্ত ক্ষরন্যাস উচ্যতে।

রাং নমঃ ইতি শির্দা। রা নম ইতি ক্রবোম ধ্যে।
মা নম ইতি হৃদি। য় নমঃ ইতি নাভো। ন নমঃ ইতি
লিঙ্গে। মঃ নমঃ ইতি পাদয়োঃ। মণ্টুকায় নম ইতি আধারেঃ।
কালাগ্রিক্রভায় নম ইতি স্থাধিষ্ঠানে। কচ্ছপায় নম ইতি
নাভো। আধারশক্তয়ে নমঃ। রজ্বীপায় নমঃ। রজ্বমগুপায়
নমঃ। কল্লরক্ষেভ্যো নমঃ। রজ্বিশিয় নমঃ। রজ্বমগুপায়
নমঃ। কল্লরক্ষেভ্যো নমঃ। রজ্বিংহাসনায় নম ইতি হৃদয়ে।
ধর্মায় নম ইতি দক্ষিশক্ষেকে। জ্ঞানায় নম ইতি বামক্ষেকে।
কার করিবে। এবং চল রসময় অভএব রসনাতে নাসে করিবে বলা
দ্বে গায়লী হৃদ্দে নমঃ। আর ময় ও দেবভা বৃদ্ধিগাছ বলিয়া হৃদয়ে.
বাল ক্ষিতি গুলু সুসাং গ্রুসং এবং নস্পার চবণে বিধের বলিয়া রভিনায়ে

रेषत्रानाश नम देखि वामशामग्रम । जैथवाय नम देखि मक्तिनभाषम् । अथनीत नग देखि वटका । अञ्चानात নম ইতি বামপার্থে। অবৈরাগ্যায় নম ইতি নাভো। অনৈশ্রনায় নম ইতি দক্ষিণপার্বে। সপ্ততিবলয়োপেডায় महत्रकशांत्र व्यवस्थाय नम देखि क्षायकमलगर्धा मारम्य। जनात्या कर्षां शिव जानककनाय नमध मध विकास मार দৰ্বতত্বাস্থ্যকৰ্মনায নম:। প্ৰকৃতিপত্তেল্যো বিকারময়কেশবেভ্যো নমঃ। পঞ্চাশদীজ্বাত্যকর্ণিকাথৈ ममः। अर वक्रमश्रनाय द्यानगकनाज्ञास नगः। छर रिश्तम छलाय रशिष्ट कलाजारन नमह । मः महाय अरवाधा-ত্মনে নমঃ। রং রজদে পুথিব্যায়নে নমঃ। তৎ তম্পে মোহালকায় নমঃ। আং আত্মনে নমঃ। ইতি তস্য দক্ষিণে। অং অন্তরাত্মনে নম। ইতি উত্তরে।। ট্রা জানাত্মনে নম ইতি পর্বে। মায়াতভায় নমঃ। কামতভায় নমঃ, কাশ-তত্যায় নমঃ। বিদ্যাত্ত্যায় নমঃ। প্ৰতিভ্যায় নমঃ। हेट्डारकांशवि। अन्यानिमर्ख्यञ्चान् मः नामा आनानि-पत्लम् सत्भा ठ नवनकौर्नारमः। जथाहि-विमलारेम्। छे १ विदेश । अनिद्या कियारिय । त्यात्रीरेय । अरेग । পত্যাবৈ। সশানাবৈ অমুগ্রহাবৈ। নমঃ। ও নমো छगनरङ विकाद मर्स्य छात्रास वायानवात्र मर्साष्ट्रमरः বোণবোগপীঠাল্লনে নমঃ। ইতি মধ্যে। ভশ্মিন্ পীঠে সহস্রাদিত্যসংকাশং মুন্তুৎ ধ্যাত্বা খাদমার্গেণাঞ্জলাবানীয় ব্যাপকং ন্যােশ্ছ। ইতি ব্যাপকন্যাসঃ।

श्रद्धात, शंक्षमांक छत्न व्यवः कीमरक्व क्षप्रव नाम कवित्व । वर्षा क्षर्य श्रीवायांक नम्बेकानि ।

'এবং বিনাস্য বিধিবৎ সাক্ষারায়ণো ভবেৎ। ভ্র-রোগভিচারাদ্যাঃ প্রসরং যান্তি নান্যথা। ভূতপ্রেডপি-শাচাশ্চ তথৈব ব্রহ্মরাক্ষসাঃ। কৃষ্মাণ্ডাশ্চেব ডাকিন্যো নৈব দ্রন্থীয়ান্ রামঃ সাক্ষাৎ শ্বরং ভবেৎ। নাতঃ পরতরং কিঞ্ছিৎ পাবনং পুণ্যান্তি হি।

ইতি এমং পরস হংস পরিব্রাক্ষকাচার্ব্য শ্রীমন্মুকুন্দবন-শ্রীচরণশিষ্যানন্দবনবিরচিতায়াং শ্রীরামার্চনচন্দ্রিকায়াং বিতীয়ঃ পটলঃ। । ওঁ।

অথধ্যানং—। অযোধ্যানগরে রম্যে রত্মগুপমধ্যগং।
ধ্যায়েৎ কল্পতরোম্লে রত্মগিংহাসনং শুভং। তন্মধ্যেহস্তদলং পদ্মং নানারত্বপ্রেষ্টিতং। তক্র জীরামচন্দ্রাখ্যং ধ্যায়েতেজ্ঞঃ পরাৎ পরং। প্রকৃত্যা সীতয়াসার্দ্ধং শিত্তাৎপত্তিলয়োদহং। দেবাহ্রর্থনীক্রৈশ্চ যোগস্বাক্ষণ্ড দেবিতং। চতুর্ভুজং শুভাক্রগদাপক্রপ্রানিগং।
কিরীটহারকেযুররত্বকুগুলশোভিতং। দেবতাগুরুমন্ত্রাগাং
ভাবয়েদৈক্যমাত্মনা। গদাদি শুভাক্রাজ্ঞ ধরং ভবারিং যো

আনরর অক্সান্তাদি কবিয়া ম্লোক্ত স্থাস সকল করিবে। এই প্রকাব বিধিমত স্থাসের অঞ্চান করিবা নাধক সাক্ষাৎ নারায়ণ হন। আবাদি রোগ সকল বিনষ্ট হর। এইরূপ স্থাসকারীকে ভূত, ক্রেভ, শিশাচ ব্রহ্ম রাক্ষ্য কুয়াও গণ ও ডাকিনীপ্রভৃতি দর্শন করিতে ও সমর্থ হরনা ইহা হইতে প্রিক্তারক ও পুণালনক আর নাই। ইতি দিতীর গটল সমাপ্ত । ধানার্থ। মনোহর অবোধানগরে রুমওপত্ত কর্তুক্তর গুলে

ধানার্ব। মনোহর অবোধানগরে রত্তমণ্ডপত্ত করবৃক্ষের শুলে রত্তানিশ্বিত বিংহাসন, ভর্মাত্ত নানারত্বে প্রশোভিত অইবলগরে প্রকৃতি সীভার সহিত স্টিভিতি প্রশাসকারী তেলোমর প্রভু শীরাম বিরাম করিতে। ছেন। ইইাকে লেব, দানব, স্নীক্ষক রোগীক্ত সকলে আরাধিতেছেন। ইলি

খায়ে খোকসাথোতি ইতি জ্ঞাতঃ। ইতি ধাছা কপেছারং
ইঠ্সহস্রং দিনে দিনে। বাচঃ জ্ঞায়ঃ পতিভূছা কবির্জবতিবংসরাথ। ঐতিকানবিলান্ ভোগান্ ভূজ্য চাত্তে পরথ
ক্রমেথ।

মত্বা (ধ্যায়েং ) সিংহাদনে তশ্মন বীরাদনদমাজিতং।
সম্যপ্জানময়ীং মুদ্রাং দধানং দক্ষিণে করে। তেজঃপ্রকাশনং
বামজামুদ্ধনি চাপকং। জানকীবল্লভং দেবমিজ্রনীলমণিপ্রভং। ব্যাখ্যাননিরতং দেবং দ্বিভুলং রঘুনন্দনং। বলিষ্ঠবামদেবাদিমুনিভিঃ পরিদেবিতং। বামভাগে সমাদীনাং
সীতাংকাঞ্চনদন্দিভাং। ভজতাং কামদাং নিত্যং রজেংধপলকরামুদ্রাং। লক্ষ্মণং পশ্চিমে ভাগে ধৃতছ্তেংসচামরং।

ভূপচভূইরে শহা, চক্র গদ। ও গল ধাবণ করিবাছেন অবং মুকুট হার কেন্ধ্র ও বন্ধ নির্শিত কুওলগ্রভূতিতে অভিশয় শোভিত হইমাছেন।

আয়ার সহিত দেবতা গুরু ও ময়ের ঐক্য চিন্তা করিবে। প্রতিতে ক্থিত
আছে, যে যে বাজি শত্ত চক্র গদা গল্প ধানী সংসারের অবি কাগদীশকে ধ্যান
করে সে নুজিপ্রাপ্ত হয়। অতএব পুর্বোজ ধ্যান করত প্রতিদিন ছয় হাদার
অপ করিবে তবেই সবস্থতী ও লক্ষীর অধীখন হইলা বংসরমধ্যে প্রথান করিছ
লাভ করিয়া সমস্ত ঐতিহ স্বধ্বতাগ করিবে এবং অস্থেতে প্রমেশ্রে মৃত্তা
হথবে।

ধানাম্বর কপিত সইতেছে। রঘুনন্দন, প্রসিদ্ধ বসু নিশ্মিত সিংহাসনে বারামন। মুসাধে উপবিষ্ট, দক্ষিণাহতে সুবাক জান্মরী মুসাধারণ করিবাছেন, বানজাম্ব উপরিভাগে শরামন স্থাপিত করিয়াছেন, তেজাম্ব, জানকী-প্রিম্বতম, ইজনীল সমবর্ণ, সর্বাদ্ধা বাাধানি নির্ভ এবং হিভুজ। ধশিষ্ঠ বাম-দেব প্রভৃতি মুনিগণ কর্ত্বক সেবিভ। ইইার বামভাগে স্পর্বা সেবকগণের মনোভীই প্রদা সাহাদেবী করপক্ষে রক্তাভ্জাগ্রণ করত বিরাজ করিভেছেন এবং পশ্চিমভাগে পশ্মব চামর ও ছ্রা ধারণ করত দ্বাহ্মান, পার্যদেশে ভর্জ প্রাক্ষ ভালবৃত্ব স্কালন ক্রিভেছেন। যে বাজি রঘুন্সন্বকে এইরুস খান

পার্বে ভরতশত্ত্ব হো তালবৃত্তকরাবৃত্তো। এবং ধ্যাত্বা লপে-শান্ত্রং জ্ঞানলক্ষ্যোও সভাজনং। জপতাৎ মন্ত্রিণামেবং ধ্যান-যোগেন ধীমতাং। পুরশ্চরণকুত্যেন বিনাপি ফলদো মমুঃ। वकामार्ग महाँठ छिं कर्निकासः नित्रक्षनः। मर्द्यः म वश्रेष मक्तर मिक्तानन्ति । इंक्लान ख्याला क्रिशः वीय-**শ্যান্তত কর্মণঃ।** শেবস্তে যোগিনো নিত্যং শোহহং ভাবেন ভদ্মিরঃ। তথাচ শ্রুতিঃ তথৈতে শ্লোকাভবন্তি। অকারাক্ষর-সংস্তঃ সৌমিত্রিবিশ্বর্দ্ধন:। উকারাকর্মস্কৃতঃ শক্রম ব্রেজ্বপাত্মকঃ ৷ প্রজ্ঞাত্মকস্ত্র ভরতো মকারাক্রসম্ভবঃ ৷ অর্দ্ধনাত্রাত্মকে। রামো ত্রন্ধানলৈক বিগ্রহঃ। এরাম সামিধ্য-বশাঙ্জগদানন্দকারিণী। উৎপত্তিস্থিতিসং হার্বারিণী সর্বদেহিনাং। সা সীতা ভগবতী জ্ঞেয়া মূলপ্রকৃতিসজ্ঞিতা। প্রণবত্বাৎ প্রকৃতিরিতি বদস্তি অধাবাদিনঃ। ওঁ ইত্যেতদ-ক্ষর মিদং সর্বাৎ তদ্যোপব্যাখ্যানং ভূতং ভব্যং ভবিষ্যদিতি সর্বমোক্কার এব বচ্চান্সজ্রিকালাতীতং তদপ্যোক্কার এব

করিয়া তদীয় মত্রপকবে দে জ্ঞান ও প্রীকে লাভ কবিয়া থাকে। বাঁথারা এইরপধ্যান করত অপকরেন তাহাঁদিগেব বিনা প্রশুরণে ও ময় ননোতীই-প্রদাহইরা থাকে বিয়াগাণ সোহং ইত্যাকার জ্ঞানে নহাচক্রত কর্ণিবাতে নিবশ্বন সচিদানক্ষমর চতুপাদে পরম ব্রদ্ধ অঙু ত্রাহাকার ইতে প্রিরামচন্দ্রের
জ্ঞানা কবেন। শ্রতি বলিয়াছেন। অকার হইতে শক্ষা, উকার হইতে তেলো
ময় শক্রম এবং মকার হইতে প্রজাম্মক ভরত সমৃত্যুত হইয়াছেন, আনক্ষমর
পূর্ণ ব্রদ্ধরাম অর্থমান্তা (ব্রহ্মন) রূপী। মৃগ প্রকৃতি ভগবতী সীতা প্রীরামের
মহবোগে অগতের স্প্রতিতি প্রশার করিতেছেন। ব্রদ্ধাদীগণ ও কার হইতেই জগতের স্প্রতি বলেন ও কার ই পরমব্রদ্ধ ভ্ততবিষ্যাৎ বর্তমান এই ক্রিয়া
গাতীক পদার্থিও ও কারকেইজানিবে এবং মৃথাল, উন্ধিংশতি বৃধন, বাক্

হোতদ্রকা অরমাতা তেকা সোহয়মাতা চতু व्याच्यार्गात्र ब्रह्मात्मा विष्टि थेख्वः नश्चाम धारमानिष् णिक्रम्थह । भूलजून् देवचानवः 'প্रथमः পानः।' **यश** একোনবিংশতিমুখঃ স্থানোইন্তঃ প্রজঃ म था अ প্রবিক্তিভুক্তিজ্বসো দ্বিতীয়ঃ পানঃ। যত্র স্বপ্তোন কঞ্দ কামৎ কাময়তে নককনম্বর্থ পগতি তৎ গুমুগুৎ হাছপ্ত-স্থান একত্রীভূতঃ প্রস্তানখন এবানন্দময়ো হ্যানন্দভূক চেতো-मूर्यः প্रक्ष जुरीयः भाषः । वस् मर्द्यम् अस मर्द्यस्यः अस्मार-স্তর্যাম্যের যোগিঃ সর্বাস্থ্য ভবাত্যটো হি ভূতানাং নান্তঃ প্রজ্ঞাং নোভ্যপ্রজ্প নপ্রস্তুং নাগ্রস্তুং ন গ্রন্থান্যনং ন ঘনপ্রস্তুং আদৃ• केम गुनहार्य र श्राह्मभलकाम विद्यागवा शास्त्र मा सामा अल्या स मातः धनारकानमगरेषठः ठठुर्गः गगरः। म जाजा विख्छतः मानाञ्चाता विना उर कार्याशीनः आज्ञवस्त हिंड भवता বৈতরহিতঃ সানন্দরূপঃ সর্বাধিষ্ঠানঃ সন্মাত্রো নিরস্তাবিদ্যা-ज्यास्मारहारहरमरविक मञ्चारवारहिमरकार ७९ मर यद পরং ব্রহ্ম রাম্ভদ্র ভিদায়কঃ দোহত্যোৎ তদ্রামভদ্রঃ পর্ৎ Cकाां श्रीत:मारुष्टः देखाञ्चानमानात्र मनमा खचारेगको कूर्याए। সদা রামোহহািত্যভক্তরুতঃ প্রবদন্তি যে। ন তে সংসারি-শো কুনৎ রাম এব ন সংশয়ঃ। ইত্যুপনিষ্ য এবং বেদ সমু-

আধারক জ্ঞানমর এবং খুলপদার্থের দাহকারী বৈখানর ও ওঁকাংকে জানিবেন। ইনিই অন্তর্থানী, সকলের ঈর্খাং, সকল অবগত চইতেছেন সকলের উৎপত্তিরান, সকলের খুক্তি প্রল, এবং অচিপ্তা অলক্য অবাবহার্যা অপ্রায়, প্রবাপদেশ্র, অভিরক্তঃনের বিবরী ভূত, ভেল্ঞানের নিবারক ওঅবৈদ্ধঃ আহিই বেই প্রশ্ন প্রশাসকলের ক্রিয়ের অবৈদ্ধ ও বিরয় শীর্ষ প্রশাসকলের ক্রিয়ের ওঁকারস্থানীরাম ইত্যাকার প্রথমের শহিত আছাল অভেল্ঞান ক্রিয়ে। যে ব্যক্তি বৃথ্ধি বৃত্তিত্তে সোহং

ভো ভবভীতি যাজ্যবন্ধ্য: । এতদেব পরং ধানমেত দেব পর্ তপঃ। এতদেব পরং রামপূজনং ভবকুন্তনং। অখ-মেধসহস্রাণি বাজপেয়শতানি চ। একস্য ধ্যানযোগস্য কলাং নাহ ন্তি যোড়শীং। ইতি ধ্যানং।

ততঃ সামান্যার্ল্যাদকেন চত্রস্রং ষট্কোণং মণ্ডলং
কৃষা শন্মক্রথাবকতঃ পুল্পাক্ষতিরায়েয়নৈথতবায়বৈগশানেষ্ হ্লমশিরঃশিথাকবচানি মধ্যে নেজং পূর্বাদিদিক্ষ্ চাস্ত্রং সংপৃষ্ঠ আধারণ ফুলমন্ত্রেণ প্রফাল্য মং বহিদ্
মণ্ডলায় দশকলাজনে শ্রীরামার্যপাত্রাসনায় নমং ইত্যাধারং
প্রতিষ্ঠাপ্য পূর্বাদ্যকদিক্ষ্ উপর্যধন্ত অয়ের্ছণ কলাঃ পূজয়েহ
তথাহি যং পূত্রায়ে । রং নীলরক্তায়ে । লং কপিলায়ে । বং
বিক্ষুলিসিন্য় । শং ছালিজৈ । ষণ পত্রিকায়ে । সং হব্যবাহিক্য । লং ঝৌলো । কং সংহারিল্যে । অবং সর্বত্রাধারো
পরি এতাঃ কলা সম্পৃদ্য ততঃ শন্ধং মন্ত্রেণ সংশোধ্য অং
সূর্ব্যমগুলায় ঘাদশকলাজনে শ্রীরামার্যপাত্রায় নমঃ ইতি পাত্রং

ইড্যাকাৰ শক্ষে অভেদ জ্ঞান কৰে ভাষার সংগ্রভোগ হয়না নিশ্চরই বামনর হব ৷ এই বাজ্ঞাৰক্যোপনিষং অবগত হইলে সুক্তি লাভ হর এই মাত্রই প্রমধানে, প্রমত্প্রামার্চনের প্রধান সাধন ও সংসাব নাশক এইরূপ একবার ধ্যানে যে ফলহর ভাষার যোড়েশ ভাগৈড় ভাগ ও অব্যামধ সহত্রে অথবা বাজ্ঞাস সহত্রে হয়না।

অনন্তর সামালাগ্যপাত্রত্ব ক্ষণধারা বামভাগে চতুছোৰ মণ্ডল করত তথাবো বটকোণমন্তল করিয়া শন্ধ মৃলাধারা আছোদন করিবে। অনন্তর গর্মপুলার্লনকবিয়া অনিকোণে এতেগরপুলে ওঁ ক্ষরায় নমঃ, এবং নৈবত কোনে ওঁ শিরসে নমঃ। বাষু কোণে ওঁ শিখাবৈ নমঃ, ঈশান কোণে ওঁ ক্রচার নমঃ। মধ্যে ওঁ নেত্রাভ্যাং নমঃ, পূর্বদিকে ওঁ অল্লায় নমঃ। এই প্রকার বড়ল প্রদাত্তে মৃল মন্ত্রায়া অকানিত, অর্থা সাত্রকে মং বহিষ্ঠালাভ্র নদাধারে নিকিপা। কংজং তপিজৈ। খং বং তাপিজৈ। গং কং দক্ষিতে তিং নং কামিলৈ। চং ধং শোধিনা, ছং দং বরে-গায়ৈ। কং খং আকর্ষিণা। ঝং তং বৈফালো। এং বং বিফুবিদ্যায়ৈ। তং ডং জোহস্লায়। ঠং ডং হিরণ্যায়ে! এতাঃ সম্পূজ্য মাত্কাং প্রাতিলোম্যেন উচ্চরন্ শুদ্ধোদকেন তং শহাং সম্পূর্যা তিং সোমমগুলায় ষোজ্শকলাড়ানে শ্রীরামাঘাপাত্রামৃতায় নমঃ ইতি সংপূজ্য তাত্রব চক্রমসঃ বোড্শ কলাঃ পুজয়েং।

ज्याहि। जः व्यावादि । वाः वानकादि । हेर क्रिके । केर भूरिके । जेर श्रीरेक । जेर बरेका । याः नक्कारि । याः श्रिके कर व्यादि । केर श्रीरेका । जा क्वारिय जेर महस्वरेका जा कारिय । जेर श्रीरेका । या वामारिय । व्या व्यादि । मर्ने क जिले । जो नियो । म्याविक । केर निक्रियो । व्यानियो भिक्तिका रेक्य ह्यार्था क्वारिय । क्वा वाहिनिका द्यो को मा हाबिनाद्याः कना मा । जिलियो जालियो रेक्य मिस्स्वी द्यापियो ज्या । कामियो स्थापियो क्विंश व्यापा कर्षिने

দশকলাপ্ননে জীবাম। থা পাত্রাসন। গ্রন্থ এই বিনিধা অন্তনা করত অখ্যপদ্ধি স্থাপন কবিরা ততুপনি পুর্জাদি অইদিনে, উদ্ধে ও নাগেদেশে সচন্দ্র পূজা লইবা এতে গন্ধ পূজো যণ্দ্রাথৈ ইন্যাদি ক্ষং সাহাবিলৈ ননঃ ১ গ্রন্থ মূলোক্ত দেবতা সকলেব পূজা কবির। মূলনম্ভে শন্ত শোকন কবিবে। জনতর সংস্থান গুলান্ধ লাদশকলাপ্রনে জীবামান গোত্রায় নম এইময়ে শথ্যে জাদনা করিয়া শধ্যাত্রকে বিপদিকাদি পাত্রোগবি স্থাশিত করিবে অপব ওচপনি এতে গন্ধপুলেও বং ডং ডপিতে নম ইত্যাদি ঠং ড॰ হিরণ্যাগৈ নম ইত্যক্ত দেবতা সকলেব পূজা কবিবে। জনক্তর বৈশালিত মাতৃবাবর্ণ সকলের উচ্চারণ করত শুলাকবিবে। জনক্তর বৈশালিত মাতৃবাবর্ণ সকলের উচ্চারণ করত শুলাকবিবে। শত্রিক করিয়া এতে গন্ধপুলে উং ক্রেক্ত

ব চ। সূর্যাস্য স্থাসংখ্যাতা: কলাঃ প্রোক্তান্ত সূরিভিঃ।
অমৃতা মানদী তুর্ত্তি: পুর্তি: প্রতির্তিহ্নিঃ। জ্ঞীঃ স্থা
চ তথা ধাত্রী ছারা জোংসা সরস্বতী। পূরণী চ তথা বামা
অমা চন্দ্রস্য বৈ কলাঃ। ইতি বশিষ্ঠসংহিতারাং কলাসং্মহঃ।

ততন্ত্র শন্ধ জলে গলে চ মন্ত্র্ করন্। তীর্থাবান হয়েছে দুং গন্ধালৈর চা হৈ ততঃ। শন্ধ পাণিতলং করা জপেমন্ত্র বড়াদরাধ। চিন্মনং চিন্তুরে নীর্থমানীয়ান্ত্র শন্ধা। ব্রক্ষাণ্ডোদর তীর্থে তো দেলু মৃদ্রাং প্রদর্শ্য চ শং অন্মুদ্রাং চক্রমুদ্রাং গরুড়াগ্যাঞ্চ দর্শনন্। পর্মীক তা যত্নেন পাবনং তিনি ভিয়ে । করা বেক্ত্র সংযোজ্যাবারা ত্রিক-মিব প্রিয়ে। পর্মীকরণং নাম মৃদ্রেং দর্শকামদা। দেবসা মৃদ্রি চাদিঞ্ছে পূজাদ্বাস, চাল্মনঃ। অভ্যক্ষাং প্রোক্ষণঞ্

মাজানায় ব্যেতৃশকলা সুনে জীবাম এলে পাত্র দুখার নম্ম এই বলিয়া শাটনাকৰণ জিল্পবি চল্লেব বাঙেশ কলাও অস্থান কংগ্রে যথা একে গ্রেপ্ত প্রথ জামুহাবৈ নমঃ ইছাপি ক্র ম জ. শ্রম হৈ ক্ষাব্য শ্রম স্থানাত যোগ্র কলাব আন্ধানা ক্রিথে । অন্ধান্ধ শ্রমির প্রকাশ ক্রমেনা ক্রিথে । অন্ধান্ধ শ্রমির প্রকাশ ক্রমেনা ।

অ গ্রেণৰ শক্ষার করে ওঁ গ্লের মৃত্রে হৈব কোলাবনি মবল'ত। নদ্মনে
সিন্ধ্রুলবেরি অলেই'বন স্থিতি পুক্র এই বান্ধা অটেন। করিয়া পর্বাদ্ধাল
লইয়া এতে গদ্ধপুপে ওঁ জনায় নদঃ এই বান্ধা অটেন। করিয়া শব্দের
উপরে হস্ত রাথিয়া দশ বাব ম্নদ্ধান্ধ লপ করিবে। অনস্তব অন্ধূপ মুদ্রাদ্বারা
বন্ধাণ্ডের তীর্থ ইউতে তীর্থাকর্ষণ করিয়া ধেরুম্দা, শস্কা মৃদ্রা, চক্রমুদ্রা এবং
গদ্ধপুরা দশন করাইয়া পর্মীকরণ মৃদ্রাতে পর্মীকংণ করিয়া শব্দ পারেছ জলকে অভিপ্রিত্র ভিন্তা করিবে। সংপ্রতি প্রমী কংণ মৃদ্রা ভ্রতিত ইতিক্ত। আর্থি করার ভার কর্মার করিবেল স্বলভাবে অধ্যাসুণ করিয়া बीकनः जाएनः जया। बार्कनरेकन मर्द्यनाः भागमङ्ख्य-

পাত্রাণি নাম ছেমাদিনির্মিতানি বিশেষতঃ। প্রশতরানি বিচিত্রাণি ভবান্ত ছহ ণাণিষু। মর্ঘাপাদ্যপ্রদানার্থং মধ্
পর্কার্থমপরিছে। তথৈবাচমনার্থক নাদেং পাত্রচভূকীরং।
আত্মনঃ পুরতঃ শহুং বামতঃ সাধরেন্ততঃ। অর্ঘাণাত্রে
পাদ্যাদিপাত্রেয় সংপ্র্যা সালিলং শুনং। তত্রাঘাপাত্রে
দাতবাং গন্ধপুশাজলাকতং। কুশাগ্রতিলদূর্বান্ত সর্যপান্তবাং গন্ধপুশাজলাকতং। কুশাগ্রতিলদূর্বান্ত সর্যপান্তবাং দ্বাপত্রং মনোরমং। অব্ ক্রঞ্ক বিমলং তত্র পাদ্যাদিদ্যো সমর্পয়েছে।
তথাচমনপাত্রেয় দদ্যাক্ষাতীকলং মুনে। লবসম্পি
কলোলং শন্তমাচমনীয়কং। দল্লা চ মধ্দপ্রিটাং মধ্পা
কৌ ভবিষ্যতি। এক্সিয়্রথবা পাত্রে পাদ্যার্ঘাদীনি
কল্পয়েছে। সর্বোপ্টারবস্ত্রন্মভাবে ভাবনৈ হি নির্মান্তবাদেকেনৈর পূর্ণতেত্যাহ নারদ্যা ইতি পাত্রাদাননং।

পরস্পাধ মিলিত কবার স্থায় প্রমী করণমূচা এই মুদ্রা স্বাচীত সদান কৰে।

অতঃপর অধা পাত্রত জল হাবা দেবতাটে ও প্রাচ স্বাচিন্দকলে

এবং আল্ল শ্বীবে অভ্যক্ষণ কবত উপ্রবাদিদ ব্রালকলে বীক্ষণ
ভাত্ন ও অর্চন করিলে সমস্ত পাবিজ কবিবে। ইতি শ্রাহাতিই।

পারাসাদন কথিত হইতেতে। পুরার্থ খণাদিখালা নির্দিত পাত্রই বিশেষ প্রশক্ত, অঘ্যু, পাদ্য আচমনীয় ও মধুপার্ক ব কাল্প পান্দচ হুইব সাথিবে ভ্রমধ্যে অর্যার্থ শঙ্কা পাত্র প্রশক্ত জানিবে নিজেব সন্মূপে বানভাগে অর্পান্ধ দির পাত্র সকল রাবিয়া জলবারা পূর্ব করিয়া অর্থাপাত্রে দ্ব্রা পূলা পূলা ভূগ ভিল কুল ও সর্বপ বিজ্ঞ করিবে। পাদ্যপাত্রেতে দ্ব্রা ও প্রমুপ্ত দিরা সাথিবে গুবং আচমনীরপাত্রে আতীফল, লবক্ষ ও কজোল (কলবিশেষ) মধুপক্ষপিত্রে দ্বি, মুক্ত ও মধুবিক্তত করিবে। বহুপাত্রের সংগ্রের আন্তর্কে

পাত্রাণি চৈবমাসাণ্য ততোহস্তর্যাগমারতে । তথা হি—
ত্রহ্মকন্দসমুদ্র জাননালং হলোভনং। ঐশব্যাইনলং
পদ্মং পরং বৈরাগ্যকর্ণিকং। তদ্মিন্ পীঠে চিদাত্মানং
রাঘবং ক্ষছর পিণং। ধ্যাত্ম। যজেচন্দনালৈ মানি সমুপদীপকৈঃ। ভোজনাবসরে কিঞ্ছিং জপং কৃত্রা নিবেদয়েং।
গুহাতিগুহু গোপ্তা বং গৃহাণাশ্মংকৃতং জপং। সিদ্ধিভবতু মে দেব ত্রপ্রসাণাত্রি স্থিতা। ইতি।

স্বাধিষ্ঠানগতে কুতে ত্রিকোণে বহ্নিমুজ্বলেৎ। চি-জনপং প্রণবেনাথ ত্রাত্মানং স্বয়ং হুনেৎ। পূজাহোমা-দিকং দেব কুতং যত্ত্বসূত্রহাৎ। তেন প্রীতো ভব স্বং ভো শুদ্ধং মে মানসং কুরু। নমো রামায় শান্তায় সদ্গুণায়াদি-হেতবে। নিবেদয়ামি চাত্মানং স্বং গতিঃ পরমেশ্বর। শ্বাস-

ভ্রতা এক পাত্র ছাবাই পরস্পার কার্য্য চালাইবে। সকল উপক্রণের অভান ভ্রতা নিশ্মণ জলেই সমস্ত বস্তুব ভাধনা কবিয়া তদরাবা অর্চনা কথিবে।

ন্ত্রাদির সংগ্রহ করিরা মানসিক অর্চনার অস্টান করিবে। ত্রহ্মকণ মূল হইতে উথিত যে জ্ঞানকপ মূলাল কলপি স্থানেভমান, বৈরাশাকপ কর্নিকাযুক্ত এবং ঐখগ্যাত্মক অষ্টদলপত্মতে নির্মালকলী জ্ঞাননর শ্রীনামচক্তাক ধ্যান ক্রিয়া মন:করিত গ্রহপুষ্প গৃপ দীপ নৈবেদ্য প্রাকৃতি উপচার্যাবা অর্চনা ক্রিয়া ম্বাকৃতি জ্বপাত্তে গুলাতি হা বিয়া ম্বাকৃতি ক্রেড জ্বপম্পূর্ণ করিবে।

অনন্তব মানসিক হোম প্রণালী প্রদর্শিত হইতেছে। বিকোণ সাধিচান(লিজম্ল)
স্থিত কুণ্ডে চিন্মা অগ্রিজালিবা ভালতে আত্মার হোম করিবে। হে প্রভে।
আমি এই পুলাহোমাদি বাহা কিছু করিবাম, ভূমি ইহাতে অনুগ্রহ প্রকাশ
করিয়া ভৃতিবাত করিরা আমার চিত্তকে নিম্মণ কর। হে প্রভে। ভূমি জগভের আদিকারণ, শান্ত, সদ্গুণশালী ও একমান গতি আমি প্রণাম করক্ত ভোমাতে জান্মসর্মণ করিবাম এই বলিয়া সাস পথে গৃহীত তেক প্রদাম আর্গে গতং তেজ ইত্যুক্ত জানমর্পয়েৎ। তন্ময়: সচ্চিদানন্দ। ভুৱা তিঠেৎ কিয়ৎ কণং। ইত্যন্তর্যাগঃ।

মানদৈঃ কৃষ্টমরর্চন সাহিকী সা শুভা মতা। অনিমনিল্যা পরা শুদ্ধা মোক্ষরা দিদ্ধিদা শুভা। তত্মাৎ সর্বপ্রয়েন মানসং যজনং পাতং। আদে চৈবং প্রকর্তব্যং পশ্চাদ্বৈর্ণঃ শুবিস্তবিঃ। ও আত্মতত্ত্বায় নমঃ। ও বিদ্যাতত্ত্বায় নমঃ। ও জ্ঞারাম তত্ত্বায় নমঃ ইত্যুক্তার্য্যাচম্য বহির্যাগং কুর্য্যাৎ।

আদে লিখেদ্যন্ত্রাজং রঘুনন্দনবিগ্রহং। কামক্রোধাদিদোনোথ—দীর্ঘত্তথনিযন্ত্রণাং। যন্ত্রামত্যাভ্রেডিমান্রামঃ
প্রীণাতি প্রিতঃ। যন্ত্রণ মন্ত্রময়ং প্রোক্তং মন্ত্রাম্যা দেবতেতি
চ। দেহাম্যনোর্যাভেদো মন্ত্রদেবতয়োত্তথা। তন্মাং
পীঠে যন্ত্রাজং লিখিছা তন্ত্র পূজ্যেং। বিনা যন্ত্রণ চেং
পূজা দেবতান প্রানিতি। জীরামঃ পূজিতো যন্ত্রে দীত্যা

কবিবে।অনস্কৰ আত্মাকে সভিদানন বিশ্বহ তন্ময় চিশ্বা কৰিয়া কিঞ্ছিৎ কাল অৰম্ভিতি কৰিবে।

মানসকলিত পূলাদিখাবাই সাথিকী পূজা ইইব। থাকে, এই রূপ অর্চনাত্তে সাধকের মনঝামনা পূর্ণ ও সর্বাথা নঙ্গল হয়, অভিমন্তপূথক ইহার অনুষ্ঠান কবিবে, মানসিকপূজা সমাপন ইইলে ত্রব্যাদি দারা অর্চনা কর্তব্য। অংক্ষত্ত ওঁ আয়া ভ্রাম আহ। ইত্যাদি মন্ত্র্যে তিন্বার ফলপান করিয়া আহমন কবত বাহু পূজাবস্ত করিবে।

ৰাষ্পুৰাতে প্ৰথমত রধুনাপের মৃত্তিখন্ধণ তদীয় বস্ত্রবাধ লিথিয়া লটবে। কান কোধ লোভ নোহ প্রভৃতি দোবেতে উৎপন্ন বন্ধণা ভোগের নিবাবক বলিনা ইহাকে যত্র বলা হইনাছে, রামচক্র বন্ধেতে পুলিত হইলে নিশ্চর ক্রীতিলাভ করেন। বস্ত্র মন্ত্রপুর, এবং নম্ভ্রপুরণই দেবতা, দেহ স্থানার অভেদেব কান মন্ত্র দেবতার অভেদ জানিবে। পীঠোপরি বন্ধ-জার লিথিয়া পুলা করিবে বন্ধ বাভিরেকে পূজা করিলে জীরাসচক্র প্রসন্ধ

সহ মক্তিতঃ। যদিষ্টৎ তৎ করোত্যেব নাত্র কার্য্যা বিষ্টারণা। উচাতে কামদং নুণাং মোক্ষদং ধারণাদপি। ত্তিরেখাপুট-মালিখ্য মধ্যে তারম্বরং লিখেৎ 1 তথাধ্যে বীক্তমালিখা जनभः नः धार्माल तथे दिजीया खक जत्मार्कि मर्छ। खर मा-धकर ज्या । कूरू वशक जर्लार्य नियं बिश्वी का स्टार তৎ সর্বং প্রণনভ্যাঞ্চ বেউয়েচছু দ্ববুদ্ধিমান্। দীর্ঘঞ্জি ষড়ব্রেষ্ লিখেদীজং হানাদি'ভ:। কোণপার্বে রমামায়ে **उन्दर्य हम्मानि (४९। (क्रांधः (क्रांगा आस्टर्स्म निधिया** চাভিতে। গিবং । রত্ত্রয়ং চাষ্টপত্রং সরোজং বিলিখেৎ স্বরান্। কেশরেম্কিপত্তেষ্ বর্গাইকমথালিখেৎ। তেষ্ यालायत्नार्त्तर्गान विलिय्यक्टियार्था । ज्ञान अकाकता-হন না, নথ্রে:৬ সাভার মাতত পুলিত শ্রীরামচফ্র নিশ্চয়ত মনোবপ্র পূর্ণ करवार । ग्रह्मभारत करिएन मुक्ति । कामनामिकि छे छत्र है हम । यत्र श्रीमिकि চইতে । বিনটি বেপাধারা একটি নিকোণ ক্ষেত্র করিনা ভাষাব উপরি व्याप का को के कि का निर्मा के किया के ওঁ এট বাদ্ধনুর লিখিবে। পবে এট লিখিত মধ্বেব নিয়ে সাধ্য অর্থাং পুजार बन्न नह कविरत विक्रीबाह (एवकाव नाम ( मीवामः ) वनीकद्रवानि ण्डल वर्णानित नाम विशेषाविष्ठकाच कतिया (क्रुक्क कास:) এवः डेब्रिविड মাত্ত্ব উর্জ ভাগে বজীবিভক্তি বারা সাধিত সাধকেব নাম । তারালসের দেবৰ্মণঃ) তুই পাৰ্যে কুক কুক এট বৰ্ণ চস্টুৰ লিখিয়া নিম্ন লিখিড বীৰের উর্দ্ধানে শ্রীং এই বীল লিখিবে। এট লিপিত সমস্তবর্ণ পুর্বোক্ত खँकात बुक्षि वाना (नष्टिक करित्य । आव उतिथिक वर्षे काना कान (कारणटक बार खनवीय नगः, बीर निवरम चाहा, अर निवादेव ववहे, देवर कव-हाद्र हूँ, त्वेश त्मकाख्याः त्वेबहे, वः बद्धाव कहे वह बहुबकान बद्ध निविद्याः কোণ পশুসৰলে রয়া বুলি ( জীং ) মারা বীল বুাং কোণাগ্র স্থানে ক্ষেণীক (क्रीर) ब टकाव बीच हर, चार्त द्वानास्टा है जिन्दित शह छक के द्वान दक्तवत देशविकाल बुखरर व्यक्ति करिया दक्तवत महिक करेरन शक्

## वाभाक्षिके सिका र

পোৰং পুনরক্ষালং লিখেছ। তেষু নারায়ণান্তার্থ লিখেছেৎ
কিশরে রমাং। তৃষ্ট্রি দিশদলং বিলিখেছাদশাক্ষরং।
তথাং নমো ভগবতে বাহুদেনায় ইতায়ং। আদিক্ষান্তান্
কেশরেয় রুতাকারেণ সংলিখেছ। তৃষ্টিং ধোড়শদলং
লিখেতে কেশরে প্রিয়ং। বর্দ্মান্ত্ররতি সংযুক্তং দলেয় ঘাদশাক্রং। তৎসন্ধিলিরজাদীনাং মন্ত্রামন্ত্রী সমালিখেছ। ত্রা
কং ভং রং লৃং শৃং জ্ঞু লিখেছ সম্যক্ত ততো বহিঃ।
ঘাত্রিংশারং মহাপদ্মং নাদ্যিক্সমাযুতং। বিলিখেনান্ত্ররাজাণিন তেষু পত্রেমু যুক্তঃ। ধ্যামেদক্টবক্ষ্নেকাদশক্ষতাংশচ
তত্ত্র বৈ। ঘাদশেনাংশ্চ ধাতারং ব্রট্কারঞ্জ ত্রহিঃ। ভুগৃহং
বক্ত্রশ্লাত্যং রেখাত্রয়ন্ত্রহণ। ঘাবোপ্তঞ্জ রাশ্যাদি-

এবং প্রের উপরিষ্ঠানে অপর একটি বুর নিখিবে। অনম্বর দিখিত অইকে नात का वा है के हे जानि जारम शहीि शहीि कविशा श्वतवर्ग नकन, आहे भव माशा क्रमायाय क. इ. हे फ. भ-ग-इ. म था अहे बहेरार्श विकक्ष कर्का-द्राप्ति वर्त भमल जवर व नत्मा अगवाक वयुनन्यनाय ब्राक्याप्त विश्वाय म्यूड-প্রাণন্ত্র অমিততেজ্বে বলার রামার বিষ্ণুবে ননঃ এই মালামলের ৬টি ৬টি করিয়া সপ্তাপত্তে লিখিয়া অবশিষ্ট পত্তে অবশিষ্ট মঞ্জের পঞ্চাক্ষর निबिद्ध । अनुष्ठद भावत छेभित दृहत्त्व निधिया भूनसीत अष्टेमन भग्न धदः चाहै भत्तम्या उँ नत्मा नारायगात्र कहे कहाकत अकृष्ठि करिया विस्रस्ट कविटन । हेहात ८कमात औँ अहे बीझ निश्चित अलत बार्गमन अहिङ कतिया खँ नहा क्रावट वाक्टप्रवाद धड़े दाम्भाकत धक्रि क्रिया छाछि भछा লিখিয়া কেশরভানে বুত্তাকারে অকারাণি ককারাত বর্ণ সকল ৪টা ৪টা कविशा निश्चित चविनिष्ठे शत्व अवनिष्ठे मश्चाकत निश्चित व्यवस वह बामनन-লের বৃহ্বিত্রারে বোড়শদল পল্ল অকিড করিয়া ভাষার কেশর সকলে খ্রীং, " भवारता हर करें नमः हैं नाम जनवाक वासामवात्र वह त्वांज़ंब वार्वत वके धक्षि निविद्या भछ 'मकरनव मिस्यारन व्यावतरायक श्रमान् अञ्चि (बाइन रमेसकोत मारमत माना चाना वर्णत महिल सकान युक्त कविवा ( मधारम्बारमत

ভূষিতং ফণিসংযুতং। অনস্তো বাহাকিকৈ ডকাং কৰে ছিপদাকো। মহাপদান্তথা শৃষ্ণঃ কুলিরোহুটো কুলাণি চ।
অনস্তক্লিয়ো বিপ্রো বহ্নিবর্ণাছতো। প্রত্যেকস্ত
সহস্রেণ ফণানাং সমলস্কৃতো। বাহাকিঃ শ্রুপাণিশ্চ
ক্রিয়ো পীতবর্ণকো। প্রত্যেকস্ত ফণাঃ সপ্তণতসংখ্যাবিরাজিতো। তক্ষকশ্চ মহাপদ্মো বৈশ্যাবেতো অহা
স্থাতো। নীলবণো ফণাঃ পঞ্চশত্যুক্তোভমাঙ্গকো। পদাক্রে টিকো শৃদ্রো ফণাত্রিংশতকো সিতো। এবং
মণ্ডলমালিখ্য তস্য দিক্ষু বিদিক্ষু চ। নারসিংহঞ্চ বারাহং
লিখেন্সন্তব্যঃ তথা। ইদং স্ক্রাজ্বকং যন্ত্রং প্রাক্তক্ত্যুধিসেবিতং ।ইদং রহ্সাং প্রম্মীশ্রেণাপি ভূর্তিঃ। এবং
বস্তুং সমাখ্যাতং ন দেয়ং প্রাকৃতে জনে। গুরুদার্শিত-

क्षें हे आहि ) (बाड्मदीस जावर कर पर इर तृ नृ र मृ हर जह मश्रवीक पृथेर पृथंक कर्ति विविधा प्रवस्ति तृष्क जावर का जिस्मार प्रव भा आहे क किया प्रवस्त स्था केंग्रर वीतर हे का हि वादर महर्ग महर्ग महर्ग स्वाप्त स्वाप्त के किया जार प्रवस्त स्वाप्त स्वा

অন্তব মণ্ডলেব বহিচাণে ভূপুরে চতুবলকণে রেখা,এর অন্তি করিয় ভাষাব দিক্সকলে বন্ধ ও গুড়িদিকে শূলাক্ষতী শিশিষা চড়দিকে দ্বার দাদশ রাশি এবং অনুধাধি অস্তনাগ লিখিবে। অনস্ত ও কুলীর প্রায়ণ জাতীয়, স্ববর্ণ এবং সহল ফণাযুক্ত। বাহ্যকি আর শংখ্য পীত্বর্ণ, ক্ষরিয় জাতী এবং সাতশভ ফণাতে বিভূষিত। ফুক্ষক এবং মহাপদ্ম বৈশু লাজী লীলবর্ণ, পাঁচশত ফণা ধারণ করিয়াছেন। পদ্ম আর ক্ষেঠিক শ্তা, ওল্প বর্ণ এবং ত্রিংশতফ্বা ধারী। অন্তর দিগবিদিগে ক্ষেণিক এই বীক্ষম

भारती खतूबा रेनव मः निरंबर । अर्क्यूकां कियाः संवी নিক্ষলাঃ স্থাত্তা ধ্বং। রামপ্র্বতাপনীয়টীকায়াৎ যক্ত্র-নায়কঃ। প্রপঞ্চিতো গথাস্মাভিদ্র উবাঃ সিদ্ধিকাঙ্কি ভিঃ। ইতি পূর্ববামতাপনীয়োপনিষত্তোহয়ং যন্ত্রগভোদ্ধার:।

অস্মিন পূজা মহাচক্তে রাবণস্যাধুনোচ্যতে। भीर्रः मरशृक्षस्त्रनारनी म अन क्रम डेहारछ। श्रवाम-ভাগে शिक्षकराजा नगः। এवर शतमक्षकराजा नगः। পরমেষ্ঠিগুরুভ্যে৷ নমঃ ৷ পরাংপরগুরুভায় পরাপরগুরুভার। নমঃ। ইতাভার্চ্চা অদক্ষিণভাগে গং গণ-পত্রে নমঃ। সংগরস্বত্তৈ নমঃ। ছং ছুর্গায়ে নমঃ। क्टिर (फाजुशालाम नगर। हेर्डाकाला गांगगृहमस्या **ड**ॅ वाञ्च पुरुषाध नगर। भौकेमरमा ए मध्काय नगर। ए কালাগ্রিক্দায় নমঃ। ওঁ কুর্মাব নমঃ। ওঁ খাণার-मल्हरत् नगर । देजुलगुं अगुं अर्थ स्थानात नमः। 'उँ कज्ञतुष्करञ्जा नमः। उँ तङ्गतिकारेश नमः। 'ওঁ রত্নসিংহাদনায় নম:। ইত্তেড্রি আগ্রেয়াদিপীট-भारतमु धर्माभी १ म्हजुरता यर छ १। भोठेशा द्रम् भन्तीनि व्यस-লি:খবে। ইত্যাহার বল খনিগণ বড়ক কলিত ও অনুষ্ঠিত চইবাছে ইছা: चिंदिश्हा माभादान्य निकेष चाका छ अन्य डेलामनाङ्गाद्यास्ट निविध्य খীয় বৃদ্ধিদ্বাবা বিবেডিয়া অক্ষিত কবিবে না, যে ছেতুক গুণ ক'ড়ক অন্তপ-विष्ठे कार्या मकन कदिला कृतनाम स्यामा। এই ग्रुपाम श्रीवाननात्रा পদিখদের ব্যাখ্যাতে বিশেষ বিবৃত ১ইছে। সংপতি এই মহাচজে ব্যুনাথেব অর্চনার অবাণী প্রদর্শিত হটতেছে। প্রথমত শীঠ পুছার অনুতান কবিবে हेश म्राहे क्रम्लेट नका बहेरव म्लाइनारव धर्मा प रववता ठ्रेट्टेस्ट वर्ग, छ बहेरन पदत भीठेगाद्यक भूकी विकास व्यवस्थावित भूवा कविना कविकारक छ व्यानम् क्यांत्र नमः उ नीनगरवाक्श्य नमः, भाकाः छ। नमः, रक्यरदरङ्ग-

প্রাণিং স্থাবি চ। কর্ণিকারাং তথানন্দকলনীলং স্রোক্তং।
পত্রাণি কেলরাংলৈচব কর্ণিকাঞ্চ তথা বলেহ। সূর্বোন্দ্রম্যর্ণপ্র্যনক মৌন্দ্র ত্রিমগুলং গুণত্রমঞ্চ সহাদি ততলচাক্মচতুইয়ং। মায়াভত্বং কলাভত্বং বিদ্যাভত্বং পরং তথা।
একৈকোপরি সংপ্রা ততঃ শক্তীর্যজেররঃ। বিমলোহকর্ষিণী জ্ঞানা ক্রিয়া যোগা চ পঞ্চমী। প্রজ্ঞা সভ্যা।
তথেশাণাকুগ্রহা নবমী পরা। পূর্বাদ্যকত্ব পত্রেষু কর্ণি
কারাং যন্দেহ ক্রেমাহ। চতুর্থ্যা নম্যা যুক্তৈঃ সৈং ক্রেরেব চ নামভিঃ। কর্ণিকারাং যন্দ্রেহ পশ্চাহ পীঠমন্ত্রেণ
মন্ত্রবিহ। প্রণবং পূর্বেমচ্চার্য্য নম্য শব্দং ততো বদেহ।
ভগবহপদমাভাদ্য বিফবে ইতি বৈ বদেহ। সর্বাভ্রতাআনে চেতি বাহ্রদেবায় ইত্যাপি। সর্বাজ্বসংযোগ যোগগীঠাজনে ন্য স্ততঃ। মূলমন্ত্রেণ চানেন দদ্যাহ পূল্পাপ্রালহ প্রঃ। ইতি সংপ্রভাতে পীঠে দেবমাবাহ্য

नमः, कर्निकरित्र नमः मः निषमिखनां प्रत्नकनाञ्चात्न नमः, व्यः स्वामिखनां वानि कनां वात्न नमः, वेः ठळ्याखनां वाद्य कनां वात्न नमः, पर नवां वात्म वाद्य नमः, वर व्यव्यावान नमः, व्याः वाञ्चाद्य नमः, वर वाञ्चाद्य नमः वरः व्यव्यावान नमः। मार मात्राव्याय नमः, करक्नां व्यायान नमः। विश्वादित्र नमः वरः विश्वादित्र नमः। विश्वादित्र नमः, व्यव्यादित्र नमः विश्वादित्र नमः विश्वादित्र नमः विश्वादित्र नमः विश्वादित्र विश्वादित्य विश्वादित्

भुजरत्र । नामचारम विरम्पन सकेवाः भौठेनुक्रांन । ইভি পাঠপুজা।

চৈতস্ববিত্রহৎ রাম: স্থিতং জ্বরণক্ষরে ৷ খাস-' মার্গেণাগতৎ তৎ চিন্তয়েৎ কুহুমাঞ্চলো । পাতুকামুদ্রয়ানীয় मृर्की नश्रयाक्रसाबिया। मृत्याः व्यवन्तिश्मश्रवन् कार्याह-नामिकाः । उथाठांगखाः । आवाहनी मनिधी खाभनी ह कत्रगी-তথা। সমিরোধিনী মুদ্রাচ সংম্থীকরণী তথা। সকলী করণীচৈব মহামুদ্রা তথৈব চ। শহাচক্রগদাপমধেত্র-कष्ट्रभगोक्रपृष्ठि । श्रीवरम वनमाना ह त्यानियुक्ता ह मर्भारत् । এতাভিঃ সপ্তভিশ্চৈর দশভিশ্চ বিচক্ষণঃ ৷ যোরামমর্চয়ে-দিত্যং মোদয়েৎ স স্থারেশ্বরং। ফ্রাবয়েদপি বিপেজ্য ততঃ পার্থিতমাপ্রয়াৎ।

হস্তাভ্যামঞ্জনিৎ বদ্ধা নামিকাগৃলপর্বণাঃ। অঙ্গুড়ো-নিঃক্লিপেৎ দেয়ৎ মুদ্রা ত্বাবাহনী স্মৃতা। এবৈবাধো-

जनश्रव व नत्मा खर्गवत्क विकाद नर्त्रकृताश्रान वाश्वानवात्र नर्वाच সংযোগ বোপপীঠান্তানে নমঃ এট মন্ত্রে পূলাঞ্জলি আদান করিয়া মূল দেখ-ভাব আবাহনাদি কবিয়া পুঞা করিবে পাঁঠ পূলায় বিশেষ ন্যাস আগানীতে क्षृष्ठेवा। रेडिनीर्व भूषा।

পাতক। মুদ্র। খারা জনবস্থিত চৈ চক্তরুপী শ্রীরামচন্ত্রকে খাসমার্নে পুপাঞ্চলিতে আনীয়া প্রতিমাতে বিশ্বস্ত করিয়া আবাহনাদি সপ্তদশ মুদ্রা প্রদর্শন করা-हेटव । आवाहनामि मूळा वथा।--आवाहनी, खागनी, निवधीकदेशी, निक्र-(दाधिनी, मध्मूबीक्त्रणी, नक्नीक्त्रणी, मश्मूखा, मध्म, ठळ, शना, भन्न, (धम् कष्ट्रण, शक्ष्र, खीदरम, वनयाना ७ (यानिमूला) (य माधक वहे मर्सम्भ त्रुष्ठा धान्मीन कत्राहेशा जीतात्वत्र शृंका करत तम धाष्ट्रक वृश्चिमाण करा-ইরা খাকে, শত্রুপক্ত পরাভূত করে এবং ভাষার মনোহভীট সিদ্ধি হয়।

মুখী মুদ্রা স্থাপনী শস্তে বুধৈঃ! উন্তাস্ত্রধার্মেন মুপ্তীকৃতকরদ্বা। সমিধীকরণী নাম মুদ্রা দেবার্চ্চনে विदर्भ। अत्रृष्ठंगर्जिनी देवव मूला मार्ग मश्विदाधिनी ! উত্তানমৃষ্টিযুগলা সংমুখীকরণীমভা। অকৈরেবাঙ্গবি-ন্সাদঃ দকলীকরণী ভবেৎ। অকোহস্থাঙ্গুর্ছদংলয়। বিস্তারিতকরদ্বধা। মহামুদ্রেয়মাথ্যাতা নূনোধিকসমা~ পনী। কনিষ্ঠানামিকা মধ্যাত্রপাঙ্গু ষ্ঠান্তরেইগ্রভঃ। গো-পিতাসুষ্ঠমূলেন সমতা মুক্লীকৃত।। করছয়েন মুজা স্যাৎ শহ্মাথ্যেয়ং হুরাচ্চনে। অফোন্সাভিমুখস্পর্শব্যত্য-য়েন তু বেইটেরে । অঙ্গুলীভিঃ প্রবড্নেন মঙলীকরণং মুনে। চক্রমৃদ্রেয়মাখ্যাতা গদাপদ্মৌ তভঃ অন্যোহ্যাভিমুধলিন্টাঙ্গুলী প্রোন্নতমধ্যমা। অঙ্গুছচিতয়ং মধ্যে দত্বাপি পরিতঃ করে। মগুলীকরণং সম্গঙ্গুলী-

মুদ্রা লক্ষণ অভিচিত ইইডেছে। এই চস্ত স্বস কৰিয়া অভুষ্ঠ দ্য অনামিকা অঙ্গুলীববেব মূলে নত কবার নাম স্মাবাহনী মুদা। এই মুদ্রতেক অধোধুলী করিলে স্থাপনী মুদ্র। হয় । এই হাত মুঠট করিয়া অসুঠ্বয়-উরত করার নাম সরিণীকবণা। অত্তরণ মধো রাপিয়া মৃষ্টি করাব নাম मः निर्दाधिनी । इहेश्य पृष्ठे किद्रिश छाशास्त्र डेखानी क्वा श्रीशत मध्यू श्री कत्ती मूर्जा इस । त्वराहार क्षत्राणि बङ्क्ष्य क्षत्राणि बङ्क्ष्य क्षात्र क्यात नाम मक्नोक्द्रशी। अनुष्ठंबरत्रव भवन्भंत मश्रमान कतिवा रखन्त्रव विन्दाव कवि:न महायुष्टा हव । এই महायुष्टा कतिदन कार्यात नानाधिकछा (मात्र विनष्टे इस । क्मिही अनामिका अ मधामा अञ्चलीपात्रा मृष्टि कदिया एक्किनीटक मदल মাৰিয়া ভাষার মূলে বৃদ্ধাসুণীৰ অঞাতাগ গোপিত কবিলে শৃথ্যায়া ह्य। इहेड्एउने बहे भूजा हहेट शारत। व्यर्शमूबिन नाम इत्त्वद छेनदि छेखामीकृष्ठ पक्ति इस दाविया अञ्जी मकृत्वद नदम्बद व्यक्तिम्त्र व्यर्ग कविरण ठक्क मुझ क्या व्यक्ती मकत नद्वन्त्र मृश्वसीस्कः মাধ তপোধন। প্রমুদ্রা ভবেদেষা ধেরুমুদ্রা ততঃ পরং।
আনামিকে কনিষ্ঠান্তাং তর্জনীভ্যাঞ্চ মধ্যমে। অভোইআভিমুথলিটে ততঃ কোন্তন্তসঙ্গিতা। কনিটেইব্যাহ্মসংলগে
ইভিমুখে চ পরস্পারং। বামদ্য তর্জনীমধ্য দেবানামিকরোরপি। বামানামিকসংস্পৃতী—ওর্জনীমধ্যশোভিতা।
পর্যায়েণ ততাল প্রষ্ঠা কোন্তন্তলকণা। কনিষ্ঠান্তোহ্ম্যসংলগ্না বিপরীতবিয়োজিতা। অধন্তাং প্রাপিতাল প্রা
মৃদ্রা গারুড়দংজ্ঞকা। তর্জন্যস্কুষ্ঠমধ্যম্বা মধ্যমানামিকাদ্রা। কনিষ্ঠা নামিকা মধ্যা তর্জন্যকরন্ধনী। মুনে
শ্রীবংগমুদ্রেরং বনমালা ভবেত্তঃ। কনিষ্ঠা নামিকা
মধ্যা মৃষ্টিকতানতর্জনী। পরিভ্রান্তা শিরম্যুটেচন্তর্জনীভ্যাং দিবৌকসঃ। মৃদ্রা যোনিহ সমাধ্যাতা সংকোচিত্তকরন্ধনী। ওজ্বিয়াল্যাক্রানামিক্যুণ্যি-

সংস্থা কবত মধানাজুলীকে উন্নত কৰাৰ নাম গদামুলা। অঙ্কু ঠুৰ্য় মধ্যে বাপিনা চতুদিলে অপৰ অফ নীস্কল ধাৰা মঞ্জাকাৰ ববিলে পদা মুদ্ধ হয়। অনামিকাৰ্য কনিঠাছনে দতিত এবং স্থানাজুলীব্য় উজ্জনীব্ৰের সচিত অগ্ন অধানাজুলীব্য় উজ্জনীব্ৰের সচিত অগ্ন অধানাজুলীব্য় উজ্জনীব্ৰের সচিত অগ্ন অবাধনা কৰিল বাম ব্যাহাল্ডৰ হজানী ও মধানা দকিব হুপ্তেথ মধানা ও অনানকাতে গুলু কবত ৰামহন্তেৰ জনানিকাতে হজ্জনীখ্যা রাধিষা পর্যায় জনেতে অঙ্কু ঠুৰ্য় বিস্তাহ কৰিলে কোন্তুত মুদ্ধ হয়। হজ্জনী ও অঙ্কু ঠেয় নিয়ভাগে অঙ্কু ঠুল্য বিশ্বা ও কিলি কৰিল গুলু হয়। হজ্জনী ও অঙ্কু ঠেয় মধান্তাৰে মধানা ও অনামিকাজুলীকে বাধিয়া কনিলা ও অনামিকার মধ্যে তেজানী বিশ্বত করিলে জীব্ৰ য়। কনিলা অঙ্কু নীগ্য দেবতার মন্ত্ৰ- কোন্তি ক্রমণ করাইলে বন্নালা স্থা হয়। কলিলা অঙ্কু নীগ্য দেবতার মন্ত্ৰ- কোন্তি ক্রমণ করাইলে বন্নালা স্থা হয়। তেজানীব্র দেবতার মন্ত্ৰ- কোন্তি ক্রমণ করাইলে বন্নালা স্থা হয়। তেজানীব্র স্থা স্থাকান জনা-

का। नगम्नचिडाक्षे तम्बर मछार्कतन मूर्तन है छि। मृजानकनर।

मानवारम चांवरत ह नावाइनविमन्दरन। मानवाम-শিলাদৌ হি নিভাং সমিহিতো হরিঃ। যুলমুচ্চার্য্য রামগায়-তীঞ্চ সায়ুশায় সবাহনায় সপরিবারায় সণক্তিকায় পুষ্পাঞ্জলং हेकि भूष्भाक्षनिर भाषानिध्भवात्वयू কল্পয়ামি নম শৰ্কত पगार। আদে পুষ্পাঞ্জলিৎ দত্তা পাদাৰ্চনমতঃ-भागामर्गमाठमनः मधुभकः यर्थाठिखः। ... अखाः কৈষিৰ্জনে কুয়া মহামানং সমাচরেৎ। অভিষেকাঙ্গ-বজ্ৰঞ্চ দৰো নীরাজয়েদ্ধরিং। স্নানং পুরুষসূক্তেন ভিদ্ধ-भाषानरकन **ह। कौ**तनशाकामध्**छिः था**खन ह्र पृथक् পৃথক্। নারিকেলোদকেনাপি তথাতাল ফলাস্না। গন্ধত্ব্যশ্চ বহুভিন্তথা গক্ষোদকেন চ। ঐক্ষবেণোদকেনাপি কপূ-ব্লাদিহ্বগদ্ধিনা। কদলীপনসাত্রোত্মজলেনাপি হুগন্ধিনা। শতং সহস্রমযুত্ত শক্ত্যা চাপ্যভিষেচয়েছ। পূৰ্ব্য তেনৈব সপুষ্পেণ রঘূত্বং। সক্ষাগুরুধূপেন

भिकाषत्र अध्यार नश्या कत्र मधामाम् लीवत्रत भूत्म अनुष्ठेतत नश्याः कत्रित त्यांनि मृत्ये इटेटन।

শালগ্রাম শিলাদিতে অন্টনা করিতে হইলে আবাহন ও বিস্ক্রন করি।
বে না যে হেতু ইহাতে দেবতার নিত্য অধিষ্ঠান এইয়াতে। অনস্তর শ্রীরামের মন্ত্র ও গাল্ডী উচ্চারণ করিয়া সামুধার সবাহনার সপরিবাবার সশক্তিন
কাম পুলাঞ্জানং কণ্পরামি নম এই বলিয়া পুলাঞ্জাল প্রদান করিয়া
পাদাদি অর্পন করিবে। সমস্ত উপচারেরই পূর্বে পূর্বে পূলাঞ্জালি দিতে
হয়। পাদ্য, অর্থা, আচমনীর, মধুণক ও তৈল হরিজাদি অভিশেকের হস্ত্র
ক্রেমান ও নীরাজনা করিয়া প্রকর্মক পাঠ করত শব্দ পরিত্র জল ও সবি,
ইক, য়ভাশাল্প ভিনা, নারিকেল লগ, তালের লগ, ইক্রান, কর্মা, কর্মান, করিয়া

আন প্রকৃতি বৃক্ষসম্পূক্ত জল, নানা গদ্ধণৰা ও নানাবিধ প্রবাসিত এলধাৰা
মহাসান সমাপন কবিবে। প্রানেব সংখ্যা শৃত, সংগ্র ও অসুত সাধকের
শক্তাহ্যারে কত্তবা। জনস্তব প্রপার সাহত প্রাসিত কাল্যাবা শম্পাত্র
পূর্বিত কবিয়া ক্ষান্তকর্পো সন্তাপদা্যা প্রভাব প্রীতিবর্ধন কবিবে।
পরে একাপ্রতিতে নিমাল এলধাবা জীবামকে সান করাইবে। বাজ্যাবাী
বাক্তি জীবামের অভিবেক করিলে বাজ্যালাভ করিয়া রাজ্যান্ত সকলা আনক্তি হুইবে। জনস্তব আচমনীয়, বস্ত্র, প্রাচ্মনায় উত্তরীর ও যজ্যোশবীত প্রদান করিয়া পাত্রা মুদ্রাধাবা পাঠোপনি প্রভূবে স্থালিত কর্ত
মানাবিধ যথাযোগ্য অলক্ষার ও তুলসা প্রবাবা অলক্ষ্ত করিবে। ক্ষেত্র
মৃশ্যুত্র অল্প এবং ৮ বাব প্রপান্ধলি প্রদান করিয়া জী সীতারৈ নমঃ এই
মন্ত্রে ব্যাস্থিতা সীতাদেবীর পূঞ্য, দক্ষিণকোণাত্রে লং লক্ষ্যান্ত নমঃ,
আই ক্ষেত্র প্রথা ধবিবে। জনস্তব ব্রিকোণের বান পার্যে প্রশান্ত

खँ तार क्षमग्राय नमश। खँ तीर भित्रमं खाहा। खँ त्तर শিখারৈ বষট্। ওঁরৈৎ কবচায় হূৎ। ওঁরৈগৎ নেত্রা-ভ্যাৎ বৌষট্। ওঁ রঃ অন্ত্রায় কট্। আগ্রেখ্যাং হৃদয়ং পূজ্যং শিৱঈশান কোণকে। শিখাং নিখাভিদি-গভাগে বায়ব্যাং কবচং যজেৎ। নেত্রঞ্ব পূর্ববতঃ পূজামন্ত্রং দিকু সমর্চায়েৎ। ততো হত্তো প্রকাল্যা-চম্য রামায় গন্ধং দভা পূজাঞ্জলিং দক্ষিণহস্তাঙ্গুতজ্জনী-यशुमाञ्जू ली ভिগु दी इ। मर्सा मर्खानकथ नन्तार । बाहि मर-সারদর্শালাং শরণ্য শরণার্থিনাং। ভক্ত্যা সমচ্চিয়াম্যদ্য প্রথমাবরণার্চনং। ইত্যুক্তার্য্য তজ্জনং ত্যক্ত্রা পুষ্পা-ঞ্জলিভিরর্চ্চয়েৎ। শত্মাদিমুদ্রাদর্শনৎ হস্তর্শকালনাদি-কঞ্চ প্রথমাবরণাদি দশমাবরণাচ্চনিপ্রযুক্তং প্রত্যাবরণং क्रां। विजीशावतनार्कनः। ज्जीशावतनार्कनः। हर्जा-वत्रवाक्तं । পঞ্মাবর্বাক্ত নিং। यष्ठीवत्रवाकृ निং। म-श्वमावत्रवाक्र नः। अकेमावत्रवाक्र नर। नवमावत्रवाक्र नर्। দশমাবরণার্চনমিতি। ইতি প্রথমাবরণং।

কার নম: এই তুই পূলা করিয়া অনুজ্ঞাপ্রাপ্ত হর্মা অক্লাদিব পূজা তে প্রবৃত্ত হইবে। যপা অগ্নিকোণে ওঁ বাং কদরার নম:, জিনানকোণে রীং শিবসে আহা। নৈকাত কোণে ওঁ কং শিথারৈ বষট্। বায়ুকোণে ওঁ বৈং কবচার লঁ, সমুবে ওঁ নেরাভ্যাং বৌষট্। চহুর্দিগে ওঁ অস্তাব ফট্ এই সকল মন্তে ষড়ক পূজা সমাপিয়া হস্ত প্রকালন পূর্বক আচমন করিয়া দক্ষিণহন্তের অকুষ্ঠ তর্জনী ও মধ্যমাকুলী ছারা সচন্দন পূপা ও শক্ষোদক লইবা ত্রাহি সংসারস্পামাং ইভ্যাদি মন্ত্রপাঠ করত শব্দ জল পরিত্যাগ করিয়া গৃহীত পূপাঞ্জলি শ্রীয়ামকে প্রদান করিবে। শক্ষাদি মুদ্রা প্রদান হস্ত প্রকালন, আচমন ও পূপাঞ্জলি প্রদান প্রথমারবণ হস্ত ছেইবে।

ওঁ আং আয়নে নমঃ। ওঁ নিং নির্ক্তির নমঃ। ওঁ অং অন্তর্গাল্পনে নমঃ। ওঁ প্রং প্রতিষ্ঠারে নমঃ। ওঁ পং পরমাল্পনে নমঃ। ওঁ বিং বিদ্যারৈ নমঃ। ওঁ জ্ঞাং জ্ঞানাল্পনে
নমঃ। ওঁ শাং শাইন্তর নমঃ। বিতীয়াল্পাদিকৈ দেঁ বৈরফীজে—
মূলকে তথা। যথা রামন্তথিবৈতে শক্রুণ্ট করামুজাঃ।
ইতি বিতীয়াবরণং। ওঁ বাং বা প্রদেশায় নমঃ। ওঁ আং
প্রিয়ে নমঃ। ওঁ সং সকর্ষণায় নমঃ। ওঁ শাং শাইন্তর নমঃ
ওঁ অনিক্রন্ধায় নমঃ। ওঁ বং রত্যৈ নমঃ। তৃতীয়া বাহ্ণদেবাব্যে রক্তপত্রে তথেব চ। চাপশরধরস্তাদ্যং পরঃ শশিধরঃ
স্মৃতঃ। প্রচ্নান্থ পঞ্চশরবাননিক্রন্ধান্ট চাপবান্। দক্ষিণাণঃ
করা জ্যোঃ ক্রমাদ্দেশ্যং করামুজাঃ। ক্র্ণটিকস্বর্ণ দুর্কেন্দ্নীলাভাস্ত্রিদশাঃ ক্রমাং। স্বর্ণজ্বিদ্যানলান্ত্র প্রিয়ঃ
স্মৃতাঃ। ইতি তৃতীয়ং।

ওঁ হং হ্মুমতে নমঃ। ওঁ হাং হা গ্রীবার নমঃ। ওঁ ভং ভরতার নমঃ। ওঁ বিং বিভীলনায় নমঃ। ওঁ লং লক্ষানার নমঃ। ওঁ লং লক্ষানার নমঃ। ওঁ লং লক্ষানার নমঃ। ওঁ লং শক্রে রার নমঃ। ওঁ জং জাষবতে নমঃ। চঙ্গী বারুপুত্রালৈয় পত্রাত্রে পুর্বভঃ ক্রমাৎ। দেবাত্রে স্বাতে প্রাতি লাগতে প্রাতি কিলেণৈঃ। স্বাতে শামলঃ ক্রমঃ স্বাতে নালতঃ ক্রমাৎ। বাচয়ভং হ্নুমভং দেবস্যাতে স্বপুত্তকং। রম্যে ভরতশক্রমো পার্যরাষ্ঠিত-

আঁনশ্বর ও আখনে নমঃ ইত্যাদি মূলোকে পুজা সকল অইদলের মূলে কবিতে হয় এই বি নীযাবব্যাস্তর্গত শক্তি সকলেৰ ২০ত গ্লা রচিয়াছে এই প্রকার ধ্যান কবিবে।

ভূতীয়ার বলে লগত পূজা কইব। এতে গল্প পূজা ও বাহুদেবার নসঃ ইন্ডাাদি ক্রমে অইদলে প্রজার ম্যোঞ্জ দেবত। সকলেব পূঞা করিতে হয়।

চামরো। ধু তাতপ্ত্রং সৌমিত্রিং কৃতাঞ্চলিপুটান্ পরান্। শিয়ত্বাৎ পুনল ক্ষণ গ্রহণং। ইতি চতুর্থং।

ওঁ স্ফারে নমঃ। ওঁ জং জয়ন্তায় নমঃ। ওঁ বিং বিজমায় নমঃ। ওঁ দোং দোরাষ্ট্রায় নমঃ। ওঁ জকোপায় নমঃ।
ওঁ ধং ধর্মপোলায় নমঃ। ওঁ জং স্মন্ত্রাগ নমঃ। স্ফারি
মন্ত্রিণঃ পূর্ববিদক্রমেণ কৃতাঞ্জ-ীন্। আধিক্ষিকীং মন্ত্রমত্রো
দিতীয়ান্টদলে ২০চয়েৎ। ইতি পঞ্সং।

ওঁনাং নারদায় নমঃ। ওঁবং বশিষ্ঠায় নমঃ। ওঁজাং জাবালয়ে নমঃ। ওঁগৌং গৌতমায় নমঃ। ওঁভং ভর-ছাজায় নমঃ। ওঁবাং বাল্মিক্ষে নমঃ। ওঁসনকায় নমঃ। ওঁসং সনন্দায় নমঃ। ওঁসং সন্কুমারায় নমঃ। কম গুলু-ধরান্ সর্কান্ মন্ত্রমূচ্চবতো মুনীন্। স্বাদশারেহর্চ্চয়েৎ পূর্ব-দিক্কুমেণ চ তৎ পরান্। ইতি ষষ্ঠং।

ওঁ নীং নীলার নমঃ। ওঁ নং নলায় নমঃ। ওঁ তং হুষোলায় নমঃ। ওঁ নৈং নৈন্দায় নমঃ। ওঁ সং সরভাগ নমঃ ওঁ বিং দিবিদায় নমঃ। ওঁ চং চন্দনায় নমঃ। ওঁ গং গবে-কার নমঃ। ওঁ কিং কিরীটায় নমঃ। ওঁ কুং কুগুলায় নমঃ ওঁ বীং জীবংসায় নমঃ। ওঁ কোংকোস্কভায় নমঃ। ওঁ শং শ-

मनभावनन नर्गास क्रमान्य म्लाननाय भूक। किन्त । (मन्जा क्रमान्य स्वाननाय भूक। किन्त । (मन्जा क्रमान्य स्वाननाय भूक। किन्त मिक्यान्य भूक। किन्त भूक। किन्त मिक्यान्य किन्त के प्रतिक क्रमान्य । एक्यान्य किन्त के प्रतिक नम हे जामि विक्रीय क्षेत्र क्रमान्य क्रमान्य क्ष्मान्य क्ष्मा

श्वाच नयः । ७ हर हजात्र नयः । ७ तर शकारेत नयः । ७ भर भणात्र नयः । त्वाज्ञात्वर्कत्त्रः शृक्तिक् क्रायम कृष्ठाक्षणीन् । इति मश्चमर ।

ভঁ এং এ বায় নম:। "ও ধং ধবায় নমঃ। ও সোং দোমায় নম:। ওঁ আং আপায় নম:। ওঁ অং অনিলায় নম: ওঁ অন্লায় নমঃ। ওঁ প্রং প্রত্যোয় নমঃ। ওঁ প্রং প্রভা-षाय नमः। 'अँ नीर नीज्ञातां म्राप्त मारा 'अँ मर मञ्जूरत नमः। र्खं निर निति गांत्र नमः। उँ वर व्यक्टिक निर नमः। उँ वर অহিত্রধায় নমঃ। ওঁ পিং পিণাকিনে নমঃ। ওঁ ভুং ভুব-নাধীখরায় নমঃ । 'ভ কং কপালিনে নমঃ। 'ভ দিং দিক-পালায় নমঃ । ওঁ স্থাৎ স্থানবৈ নমঃ । ও ভং ভগায় নমঃ । खँवः वक्रगांत्र नमः। । १९ सृ र स्थांग्र नमः। । ७ ८वः ८वना-ঙ্গায় নমঃ। ওঁভাং ভানবে নমঃ। ওঁইং ইন্দ্রায় নমঃ। ওঁরং রবয়ে নমঃ। ওঁ গং গভস্তিনে নমঃ। ওঁযং সমায় নমঃ उँ हिः हित्रगुदत्र उटम नमः। उँ निष् निर्वाक तांत्र नमः। उँ মিৎ মিত্রায় নমঃ। ওঁ বিং বিষ্ণবে নমঃ। ক্রনালৈর উমারুত্তি-र्चाजिर्मनक्ष्मे जारक। आदा भवन्छ (मामन्छ नामोर्ने विन-শোহনলঃ। প্রভাষশ্চ প্রভাষশ্চ বদবোহকৌ প্রকীর্টিভাঃ। শূলং থড়গং তথা চক্রৎ পট্টিশং কবচং ছুনীং। কোদওং म्लातरेकव वम्नामास्थर क्यार। वीतक्रमण मस्तू मह नित्रीमम्ह মহাযশাঃ। অলৈকপাদহিত্ত গ্লন্থ পিণাকী চাপরাজিতঃ। ज्नावीयवरेक्टव कथानी ह निमार अखिर। ज्ञानूर्र्वभक ভগবান্ রুদ্রাশ্চেকাদশ স্মৃতা ৷ নন্দকং মুকুরং শূলং শিখরং यममः द्वेकः । कृष्णां हिकः शिनां कथः आरवात्राद्वेः छथाकू गः। শটাক্ষ স্থামুপরং শক্তিহেতিধরাতথা। রুদ্রায়ুধানি চৈতানি

প্রেক্তবান্ ক্রমতঃ শিবঃ। বরুণঃ সূর্যবেদার্কো ভাসুরিস্ত্রোরবিস্তথা। গভরিস্ত যমঃ স্বর্ণরেতাশ্চাথ দিবাকরঃ। মিত্রো বিফুরিতি প্রোক্তো আদিত্যা আদিতঃ ক্রমাৎ। পাশস্ত মুদারং শহুং শল্যং শৃঙ্গং কৃপাণকং। গদাং দহুং চক্রমক্তং তথা সর্পং স্বদর্শনং। আদিত্যানাং হাদশানা মারুধানি বিহুঃ ক্রমাং। ইত্যক্তমং। ওঁ লং ইন্দ্রায় স্বাধিপতয়ে সায়ুধায় স্বাহনায় স্পরিবারায় স্শক্তিকায় রাম পার্যদায় নমঃ। ওঁ অং অয়য়ে প্রেক্রাধিপতয়ে নায়ুধায়েত্যাদি স্ব্রক্রি। ওঁ যং যমায় প্রেতাধিপতয়ে ইত্যাদি। ওঁ কং নিশ্রতয়ে রক্ষোধিপতয়ে, ওঁ বং বরুণায় জলাধিপতয়ে, ওঁ বং বায়বে প্রাণাধিপতয়ে, ওঁ বেলং দোমায় নক্ষত্রাধিপতয়ে। ওঁ হেলং ক্র্লানায় বিদ্যাধিপতয়ে ইতি প্র্রাদ্যক্রিক্তা ওঁ আং ব্রক্ষণে লোকাধিপতয়ে ইতি প্র্রাদ্যক্রিক্তা ওঁ আং ব্রক্ষণে লোকাধিপতয়ে ইতি প্র্রাদ্যক্রিক্তা ওঁ আং ব্রক্ষণে ভ্রেণিতয়ে ইতি প্রেক্রাদায়র্মির্যার্মধ্যে ইন্দ্রান্ত্র্যার্থিপতয়ে ইতি নৈশ্রতপাদ্যমর্মের্যার্মধ্যে ইন্দ্রান্ত্র্যার্থিকয়ের ইতি নৈশ্রতপাদ্যমর্যার্মধ্যে ইন্দ্রান্ত্র্যার্থিকয়ের ইতি নেশ্রত্রশানয়ের্যার্মধ্যে ইন্দ্রান্ত্র্যার্থিকয়ের ইতি নেশ্রত্রশানরের হিতি নবমং।

ওঁ থড়গার নমঃ। ওঁ পাশার নমঃ। ওঁ থকার নমঃ।
ওঁ গদারৈ নমঃ ওঁ ত্রিশ্লার নমঃ। ওঁ অঙ্গার নমঃ।
ওঁ চক্রার নমঃ। দিঙীরে ভূগৃহেহর্চয়েই। ইতি দশমাবরণই।
তভঃ সমর্পয়েদ্ধ পং ঘন্টাবাদ্যজয়য়নৈঃ। ধূপস্থানং
সমভ্যক্তঃ ভব্জন্যাস্ত্রা হরেঃ। বনস্পতিরসোহপরো
গদ্ধান্যো গদ্ধউত্তমঃ। আন্তেরঃ সর্বদেশানাই ধূপোইয়ই
প্রতিগৃহতাং। সংক্রোবই ভতঃ পুস্পাঞ্জলিই দ্বা যশঃ পঠেই।
তথাত বহল্ত পরিশিক্টে —ধুপক্ত ব্যক্তনেতির ধূপেনাঙ্গবিধূপনে। নীরাজনের সর্বেষ বিক্ষোন্মানি কীর্তয়েই। জয়

ওঁ বস্তায় নমঃ। ওঁশক্ষে নমঃ। ওঁদঙায় নমঃ।

বোৰং প্ৰকৃৰ্মীত কাৰুণ্যকাতিকীৰ্ত্তয়ে । তথাসঙ্গলবোৰক জগৰীজন্য চ স্ততিমিতি।

বামে কোদওদওং নিজকরকমলে দক্ষিণে বাণমেকং পশ্চান্তাগে চ নিত্যং দধতমভিমতং সাধিতৃণীরভারং। বামে-হ্বামে বসন্তাং সহমিলিততকুং জানকীলক্ষণাভ্যাং শ্যামং গামং ন্যামি প্রণতজন্মনঃ খেদবিচ্ছেদদক্ষং।

য়তাক্তং গুল্লবং যস্তুরাঘবায় নিবেদয়ে । ন ভয়ৎ বিদ্যতে তথা জনামৃত্যুজড়াদিকং । ইতি ধূপঃ। আরাত্তিকঞা বিষমবহুবর্ত্তিদমির তং । অভ্যক্ত রামচন্দ্রায় বামমধ্যময়া-পয়ে । অধ্বকাশো মহাদীপঃ সব্বতন্তিমিরাপহঃ। স্বাহ্যাভান্তরজ্যোতিদীপোহয়ং প্রতিগৃহতাং। নমো দীনেশ্বরাধ্যতি দ্বাদ্যৈ পুজ্পাঞ্জালং ভতঃ। অবধ্প্যাক্ত দ্বাদ্যৈ মু-

অউদলে পূঞা করিতে হয়। সাযুবায় সবাহনায় সপরিবারায় সশ**ক্তিকায়** রাম পার্যনায় নন এই মঙ্গ সমস্ত মস্তেব ''অদিপতত্বে'' ইহাব পব যু**ক্ত ক্রিয়া** পূজা ক্রিবে। এঁ বজ্ঞায় নম ইত্যাদি হাবা দ্বিতীয় ভূপুবে পূজিবে।

অনধর ধ্ণপাত্রে অজনা করিয়া ঘণ্ট।বাদা করত বনপতি ইত্যাদি
মন্ত্র পাঠ পূর্বক ডজনী ও অঙ্গুঠ ধারা পূপপাত্র লইয়া যথোজমন্ত্রে নিবেদিরা পূপাঞ্জনি প্রদানপূর্বক তব পাঠ করিবে। বহুবৃচ পরিনিটে লিখিড
আছে—প্পানিরাবা নাবাজনা (আরতি) কবাব সমরে দেবতার নাম
কীর্ত্রন, জগধ্বনি কারুণা সন্ধার্ত্রন, মন্ত্রণ ধ্বনি ও তাব পাঠ কবিবে। নমস্বার
মন্ত্রাই বিনি বামকরে, শরাসন, দক্ষিণ করে শর এবং পৃষ্ঠদেশে অসির সহিত ভূণীর
ধাবণ করিয়াছেন, বিনি বামভাগন্তি। জনকনলিনী ও দক্ষিণভাগন্তিভলক্ষণ
কর্ত্বে আলিজিত এবং বিনি ভক্তজনের মান্সিক কট নিবাবণ করেন সেই
ভাষেত্রত্ব বিরিদ্ধিক প্রথমিন করে ভারার জন্মধারণ জাভ্য প্রভৃতি ভার কারণ
ক্রিরাম্নক্র তর্বর্ধক নিবেদন করে ভারার জন্মধারণ জাভ্য প্রভৃতি ভার কারণ
স্কল সন্ত্রবিত হর না। জভঃপর বাম হত্তের মধ্যমান্ত্রণী ঘারা পর্পাধ্বরত

দ্ধিনীরাজ্যেৎ প্রভুং। ধ্যায়েদাজামুবাছং প্রভশরধমুইং বদ্ধপদ্মাসনস্থং পীতংবাসো বসানং নবক্মলদলস্পদ্ধিনেতাং প্রদান্ধ। বামাঙ্গারাদুসীভামুখক্মলমিলজ্যোচনং মীরদাভং নানালফারদীপ্রং দধতমুক্জভামগুনং রামভদ্রং। শ্রীরাম জ্যো-ভ্যাদি পঠেছ। ইতি দীপঃ।

হৈরণ্যং রাজতং তাত্রং কাংশ্যপালাশপত্রকং। নৈবেদ্যায়াজপত্রং বা পাত্রং বিফোরতি প্রিয়ং। ভক্ষ্যং ভোজ্যং
লেহুপেয়ং চোষ্যমন্ধং গুণাম্বিতং। দদ্যাৎ প্রীহরয়ে নিত্যং
লভেৎ পুণ্যমনন্তকং। প্রক্ষিপ্য ভুলসীং প্রোক্ষ্য সপ্তক্ষেথংভিমন্ত্রয়েৎ। প্রদর্শ্য বিশ্বেদক্রেই বামাঙ্গুর্তম সংস্পৃশেৎ।
পাণীয়ঞ্চায়তীকৃত্য পরেশায় নিবেদয়েই। শালীভক্তং স্কৃতকং
শনিকরসিভক্রক পায়সাপ্পসূপং লেহুং পেয়ং স্টোষ্যং
সিত্মম্ভফ্লং ফীরকাদ্যং স্থাদ্যং। আজ্যং প্রাজ্যং

আনুথানতি (শণ্ডা) গৃক্ত পঞ্জদীপাদি উৎসৰ্গ কৰিয়া স্প্ৰকাশো মহাদাপ ইত্যাদি মন্ত্ৰ পাঠ কৰিয়া পুলাঞ্জলি প্ৰদান কৰত দুমাপত্ৰ প্ৰভৃতি হাবা মন্তকাদি স্থানে নীবাজনা কৰিয়া ধ্যায়েদাজাপ্তবাহং ইত্যাদি স্থব পাঠ কৰিবে। তবাৰ্থ— আজাকু লম্বিত ভূজ ধহুধাৰী ক্মশানন শ্ৰীবাসচন্ত্ৰ, পীজবন্ত্ৰ পৰিধান কৰিয়া পলাসনে উপবেশন কৰত বাম পাৰ্যস্থিত। সাঁভাদেবীৰ বৃদ্ধিত নিজ নয়ন মিলিত কৰিতেছেন ইনি মেঘ্বৰ্ণ ও নানাভ্ৰণে বিভূষিত এবং বিশাল কটাজুট ধাবী আমাদেৰ চিন্তনীয়।

অনস্তর নৈবেদ্য নিবেদন কবিবে। খণ, রজত, তাম ও কাংখ্যনিশিত পাল এবং পলাশপল ও পদাশল এই সমন্ত নৈবেদ্য পাল বিষ্ণুর অধিক প্রের। ভক্ষাভোজাদি চতুর্বিধ সামন্ত্রী বিষ্ণুকে প্রদান করিলে অসীম পুণা হয়। নৈবেদ্যে তুলসী পল বিন্যুক্ত করিয়া অভ্যক্ষণ ও সাতবাব অভিমন্ত্রিভ করিয়ে পরে বেশ্ব, চক্র অন্তর্মুদ্রা প্রদর্শন করাইরা বামালু ঠ বারা স্পর্শপুষক স্কল বিন্তু করিয়া শাণীকতেং ইত্যাদি প্রাথনামন্ত্র স্কল পাল্পীক্তি ।

সধান্তাং নর্নক্রিকরং জাতিকৈলামরীচং স্থাদীয়ঃ শাক্ রাজীপরিকরময়তাহারজোষং জুরস্ব। নিবেদন মন্ত্রঃ। অক্ষেন্ শাদাৈঃ পরির্ভ উক্তিটিঃ স্পবিক্টিঃ স্যেতো লক্ষ্যা সিঞ্জবলর-কর্মা সাদরং বীজামানঃ। নর্মক্রীড়া প্রহসনমূখেহাসয়ন্ পংক্তিভাক্ত্র ভুঙুকে পাত্রে পবিত্রে কনকন্ত্র্যটিতে ষ্ড.-সংশ্বিবেশঃ। ইতি ভোক্ষনমন্ত্রঃ।

যশ্চিন্তারত্বকামজন বিভবভূবাং মগুনং মগুনানাং সর্বাসাং
সম্পদাং যন্ত্রিকগতি অগতাং মঙ্গলং মঙ্গলানাং। সৎপাত্রতা
ন্তর্কা দণিমধূলবনৈদ্ প্রিমুভার্য চার্য্যে নীরাজ্যে রামচন্দো
দিনকরকরজি দ্রন্থাপাবলীভিঃ। লক্ষ্মীনারায়ণেতি পঠেছ।
পশ্চাৎ যথাশক্তি জপং বিধায় গুস্থাতিমক্ত্রেণ হর্মে
নিবেদ্য। কুণ্ডে যথাবদিহিতে স্থয়ক্টে সংস্থাপ্য বহিংং
লুভ্যাদবশ্যং ইতি নৈবেদ্যান্তোপচারঃঃ।

বিধিবছিতে কুণ্ডে শুণ্ডিলে চতুবল্রকে। আছবনীয়ং
গৃহ্থ বা লোকিকং বাগ্নিমুকজ্বলং। আনীয়াস্ত্রেণ নৈঋত্ত্য ক্রন্যাদাংশং পরিত্যজেশ। দেবাংশং, মূলমস্ত্রেণ স্থাপয়েশ পুরতঃ স্থীঃ। অগ্ন্যাধানাভিধং কর্মানিত্যছোমে ন বিদ্যুতে। বীক্রণং মূলমস্ত্রেণ শরেণ প্রোক্রনং মতং। তেনৈব তাড়নং

অনন্তৰ বন্ধনৰ প্ৰদীপৰাজি দাবা নীৰাজনা কৰিয়া জয় ললীনাবাৰণ ইত্যাদি পাঠ কৰিয়া শকাছ্সাবে মূলমন্ত্ৰ ভপকৰিয়া, গুহাতিশুহ গোপ্তাবং সূহাণাত্ম কৰু জপ: । সিদ্ধিৰ্তৰ হু মে দেব স্বংপ্ৰসাদান্ত্ৰ প্ৰিচা ৷ এই
ৰজ্ঞে লগ স্মৰ্থণ কৰিবে ৷ অভঃপৰ, বিধি অভ্সাবে নিৰ্দ্ধিত কুণ্ডে আথবা,
চ্ছু প্ৰস্তেখিণে আহ্বনীয়, গাছপিতা অথবা গৌকিক আগি আনিয়া কি

ক্ষু সংগ্ৰে তেখি তি কোণে ক্ৰৱানাংশ প্ৰিচ্যাগ কৰিয়া অব্শিষ্টাংশ মূলমন্ত্ৰ

मर्दे र्सर्पानाष्ट्राकनर चुछर। অद्याशायाय अर्घाका निवसीधा বথাবিধি। প্রাণানাযম্য লক্ষীলং সাঙ্গং সাযুধমব্যরং। সিদ্ধা-মদ্রব্তোয়ালৈরিতি সংকল্প বাগ্যতঃ। স্থাসং কৃষা প্রণীতা ন সুখোকণ্যাদায় তত্ত্বৈ:। যজ্ঞগাধনসংভারং প্রোক্রে-মা লমস্ত্রতঃ। পবিত্রোৎ পবনাস্তন্ত কুর্ব্যাৎ কর্ম স্বগৃহতঃ। সহ-व्यार्कित इत्याय नमः। यश्चिश्रीय भित्रा याहा। ভ ডিঠপুরুষায় শিখায়ৈ বষট্। ধূমব্যাপিনে কবচায় হুৎ। সপ্তজিহ্বায় নেত্রত্রায় বৌষ্ট। ধ্রুদ্ধরায় অস্ত্রায় ফট্। ও নমো বৈশ্বানর জাতবেদ ইহাবহ লোহিতাক সর্ববিদ্যাণি ওঁ চিৎপিঙ্গল হুতবহ সৰ্বাজ্ঞা জ্ঞাপন্ন স্বাহা। ওঁ আগ্নং প্রজ্ব-लिख् रतम काखरवममम्बिंख ए। हित्रगावर्गममनः ममृद्धः সর্বতোমুখং। জগৎকারকবহুত্ত গর্ত্তাধানাদিকাঃ ক্রিয়াঃ। সম্পাদ্য বিধিবতেন স্বাহান্তেন হুনে হুতঃ। মণিবদ্ধো সমৌকুত্বা করোপ্রবিতভাঙ্গুলী। সধ্যমে মিলিতে কুত্রা তন্মধ্যেংসুষ্ঠকো

ভাগিত কবিবে। নিত্য কোনস্থলে অগ্নাধানাদি কবিতে হয় না। অনন্তর মূলমন্ত্র বাক্ষণ, ফট্ এই মন্তে প্রোক্ষণ ও দুর্বারা তাডন করিয়া ই এই মন্ত্রে অভ্যাক্ষণ করিবে। অভ্যাপর বথাবিধি আগ্ন পর্যাক্ষণ ও পরিস্তবণ করিয়া প্রাণায়াম কবিবে এবং সিদ্ধারাদিবাবা অল ও আগুধেব সহিত লক্ষ্মীকান্ত্রের অর্ডনা করিয়া, বাগ্যত হুইয়া, প্রানাম্ভান কবিলা, প্রণীতাপাত্তহ্ব পরে গ্রেক্টনা করিয়া, বাগ্যত হুইয়া, প্রানাম্ভান কবিলা, প্রণীতাপাত্তহ্ব পর্যাক্ষ্মীপাত্রে আনিয়া সেই অল্যারা মূলমন্ত্রে যজ্ঞীর উপকরণ সমস্ত কোলিত করিয়া ক্ষম গৃহাত্মসার পবিত্রেংপবনাস্ত কার্যা সমাপিয়া, সহস্রাচিথে ক্ষমায় নম ইত্যাদি মূলোক্ত অল্ভান কর্ত্যাস ও ধ্যান পূর্বক আবিহানে প্রমাণ স্থাকি সম্বাণ ক্ষমাণ স্থাকি সম্বাদ্ধান ক্ষমাণ স্থাকি সম্বাদ্ধান ক্ষমাণ স্থাক সম্বাদ্ধান ক্ষমাণ স্থাকি ক্ষিয়া আগ্রির স্থাধানাদি ক্রিয়ার হোম ক্রিয়া

এই সম্বেদ্ধেও লিখিত আছে। সংগতি স্থালছৰ। মূলুগণ শিত হ ই তেতে সৰিবন্ধ্য সমভাব বাৰ্থা হওৱংখৰ আলুলি সকলে বিস্তৃত করিয়া মধ্যা এজুলহাব। শ্বশ্পবামলিত কাবলে উক্ত মূলা হয় এই মূলা প্রদশন ক্বাইবে। (হ্বলা, পানা, রকা, ক্লো, পীতা, পাতা, সিভা ও স্ক্রিছিপ্রদা এই সাত্টী অগ্রি জিহ্বা জানিবে।

অনপ্তর বহিল্পীঠে সংজ্ঞাতি হৃদ্যার নম উভাগি বজ্পের পূঞা কবিয়া পূর্বাদি অষ্টদিলে ও অধ্যে আত্রেদস নমঃ, ও অধ্যে সপ্তা-বিহ্বায় নমঃ, ও অধ্যে হ্বাবাহনায় নমঃ, ও অধ্যে অস্থোদবজার নমঃ ও অধ্যে বৈখানবার নমঃ, ও অধ্যে তেশাবিকেজনে নমঃ, ও অধ্যে বিশমু-পার নমঃ ও অধ্যে দেবনুধার নমঃ এই ময়ে অধ্যির অইমুদ্রিক পূজা করিবেঃ অস্তঃপর অধিয়াযো অবিহান করিয়া প্রভূকে আনিধা সম্ভ্রাসাদি সম্ভাব ও স শক্তিবীজং মস্ত্রেশং লপ্ত। স্থাহাং বদেওতঃ। মন্ত্রাপ্ত আহতিকেপন্ত্যাগঃ সর্বাহৃতিদ্বিপ। যোড়শাহৃতিভির্দ্দেবং যমেনাদো সশক্তিকং। দ্বারপীঠাঙ্গদেবেত্য একৈ কামান্ত্রিং ততঃ। গণেশাদি দ্বাত্রিংশস্তবন্তি দ্বারদেবতাঃ। অউচম্বারিংশহ পীঠদেবতা মন্ত্রাদয়ঃ। অউাদশশতং দেবা ভবস্তি হদ্যাদয়ঃ। সর্বেষ্ নবতাধিকং শতং দেবাঃ প্রকীর্ত্তিরাঃ। গণেশায় সবিত্রে চ মহেশায় হিয়ে তথা। চতত্র আহতীর্দ্দমা ততো ব্রহ্মাপনাহতিঃ। ইতঃ পূর্বাং প্রাণবুদ্ধিদেহধন্মাধিকানতে । জাগ্রহ স্থায়স্ত্রাবস্থায় মনসা বাচা কর্মাণা হস্তাভ্যাৎ পদ্যামৃদরেণ শিচু। বংকৃতং যহস্ত্রহ যহস্তেং তৎসর্বাঃ ব্রহ্মাপনং ভবতু ও ভূর্ত্বঃ স্বঃস্বাহা ইদং ব্রহ্মণে নমঃ। মূল-মন্ত্রম্বার্হা সাক্ষায় সায়ধায় সবাহনায় রাঘবায় সাবরণায় সশক্তিকায় শ্রিমীতাপতয়ে স্বাহা। শ্রীরামায় ইদং নমঃ।

পূর্বেবং মুদ্দাকল কবিয়া পঞ্চোপচারে অঘি ও পবিবাৰণণেৰ সাহত জীৱা-মের পুঞা করিবে। জ্ঞাবাভাব হটলে মৃগমূলতে ছোম করিবে। অথবা নাগণতাব পত্তে জ্ঞাচ কবিয়া ডাহাব মধ্যে তুপসীপত্র বাখিয়া ভাহাদাবা হোমাসুষ্ঠান করিবে। ক্রাচ্চারা সূত লইবা কং এইমন্ত্রে অবভ্রিত কট এই মন্ত্রে পরিরক্ষিত্ত মুশ্মসে পবিরক্ষিত ও অভিমন্ত্রিত করিয়া তুইবার অ্যাতে মৃত ধারা প্রদান কবিবে।

অনশ্বর সীতাময় ও রামমপ্রবাজের অন্তেতে সংহা উচ্চারণ করিয়া বোড়শবার করিয়া উভয়েব আচতি ও প্রত্যাহতি কেপণ করিয়া পুরোজে অঙ্গ দেবতা, পীঠ দেবতা ও দাব দেবতাব প্রক্রোকের একটা একটা আহতি ও প্রত্যাহতি দিবে। পরে ও গণেশার স্বাহা ও সবিজে স্বাহা ও মতেশার স্বাহা ও জিরে স্বাহা এই সকল মত্রে ৪ বাব হোম করিয়া ইতঃ পূর্কঃ ইক্যাদি মন্ত্রে জ্বার্গণ হোম এবং ইদং প্রস্কাবে নম ইহাবারা প্রত্যাহাত দিয়া মুলম্ম উচ্চারণ করিয়া সাল্যর সাম্বার ইত্যাদি বারা পুর্বহোম দিবে। সভঙ্গ

इंडि প्रीङ्खिर कवा कवा भित्रम्हमर। खाक्ष्यर कमनरक्षण মজেৰ ভন্ম ধারয়েছ। পূর্ণপাত্তং পৃষ্ঠা ভোৱে: স্তক্তছাহ-**छिप्रक्षिरेजः। जाजानग**िर्धिरकेक मृतृर्द्धवनगीर्गाः। বিকীষ্য পূজাঞ্জলি মিদ্ধভাব: কুৰ্যাৎ প্ৰণামৎ হুতভুৱাুধায়। छेवाम् विक्तिनभाषिरभभः विनर हरत्रहेत्रवरयांशिनीचाः। देखि निखारहामः।

ৰূপস্যাথ দশাংশেন হুনেদাব্যং সভক্তিকঃ। তদ্ধংশাং-(भन गृत्मन शक्षपुष्णाकरेजच्चे तिः । मात्रर त्रांभर जर्गग्रांभीः ত্যেবং সম্বর্পয়ে বিভূৎ। তদ্দং শাশেন তত্তোরিঃ সপ্তকুছোই-ভিমন্ত্রিতৈঃ। আত্মান মভিষিঞ্চেৎ কেসদূর্বৈস্তলদীদলৈঃ। ইতি তর্পণাভিষেকো। গ্রাত্বানীয় চ দেবস্তৎ দ্রারামৎ পীঠ-भागकः। मुगानीमानकः भाकादित्रतमानः ममाहरतः। मर्क-দেব স্থরপায় পরায় পরমেষ্ঠিনে। এরামাদনযুক্তায় বিষক্ रिनाश (ज नमः। वायर्जा तायहत्मा अनक्तिः मुमर्गरेष । শতাংশং বা সহস্রাংশ স্বর্যা নিক্ষলং ভবেং। গণেশে-

পৰ পৰিগমুহনাদি করিয়া ও কশ্রপত আাগুবং ও বমদপ্রেক্সাযুবং ও বদ্দেবানাং काागृदः उँ ७८ ता व्यागृदः धरे मक्न मृद्ध क्ष्मधा किनक भारत करिया পূর্বপৃষ্ণ ক্ল মৃলমন্ত্রে সাতবার অভিমন্ত্রিত করির। বশরীরে অভিষেক করিয়া দ্র্রা ও তুলসীপত্তের সহিত পুলাঞ্জলি প্রদানপূর্বক অগ্রিকে व्यागम कदिता अधि विमर्क्यन ९ टेक्टर यातिनीपिश्तत वनि व्यापान করিবে। ইভি নিভাহোম বিধি।

त्य मःशाक कथ क्टेंदि जाहात म्याःम द्याम, द्यामित म्याःम श्रमण्याः कक क सम्बाता मुनमञ्ज केळा अपभूक्त नाकर नामर जामर क्याम नम बहेमाज তর্পন করিয়া তর্পনের দশাংশ মূলমন্ত্রে সাতবার অভিমন্ত্রিত কল বারা অভি-दुव क्रिया। अञ्चलके केलान क्लानिक किश्वित देनद्वमा नवेबा क्लायुक

वक प्रशास मृर्या प्रशास महत्वर्गहार । माजाविष्ट प्रशास प्रशास । में जिल्ला विकास । माजाविष्ट के प्रशास । माजाविष्ट विकास ।

মহাপ্রদাদ ইত্যুক্ত্বা প্রাহ্যমঞ্জলিনা বুধিঃ। পাদোদকঞ্ নির্দ্ধাল্যং নৈবেদ্যঞ্চ বিশেষতঃ। উৎস্ফায়্তদেবকান্ জন্ন-জয় স্বামিন্ সমালোকয়েত্যোৎস্ক্যান্সিতরাং স্বয়ং প্রহায় ভ্ত্যান্ পুরোহবন্তিলান্। বিশ্বক্দেনমুখান্ প্রহ্যা পরম-প্রীত্যা মুদালোকয়ন্ বন্দে পক্ষক্ষকিশিলিনয়নং জ্রীরামচন্দ্রং পরং। বহুচ পরিশিষ্টে 1—পবিত্রং বিষ্ণুনৈবেদ্যং স্থর্সিদ্ধ-র্বিতিঃ স্মৃতং। মন্যদেবস্য নৈবেদ্যং ভুক্ত্বা চান্দ্রায়ণকরেং। অগ্রাহ্যং শিবনির্ম্মাল্যং পত্রং পুষ্পাং ফলং জলং। শালগ্রাম-শিলাযোগাৎ সর্বং যাতি পবিত্রতাং। ইতি প্রসাদ্ধীকারঃ।

গাণ্ড্যিকং জলং দত্তা দণ্যাদাচমনং ততঃ। হস্তণাদং সকপ্রিং মৃক্টং ভূষণানিচ। কুগুলাদীনি শন্তাদি দশমুদ্রাঃ প্রদর্শয়েং। ধলুকাণো তথাবামকরাগ্রাংশার্গিভং ধমুঃ।

কৰিয়া সৰ্বাদেৰ স্থাকপাৰ ইত্যাদি মান্ত প্ৰীৰামচন্ত্ৰের বামভাগে বলিপ্রদান করিবে। বলির প্রমাণ নৈবেদার শশুভাগ অথবা সহস্র ভাগ গইবে, ইহার অন্তথা হইলে নিফল হইবে। গণেশের পূজাতে ওঁ বক্ততৃশুদ্ধ নম, স্থোব পূজাতে ওঁ চণ্ডাং শবে নমঃ, শক্তি পূজাতে ওঁ কি হিইচাণ্ডালো নমঃ এবং শিবের পূজাতে ওঁ চণ্ডাগুরাম নমঃ এই বলিয়া বলিপ্রদান করিবে।

অতন্তর উৎস্টাম্ভদেবকান ইত্যাদি পাঠ করত মহাপ্রসাদ বলিয়া নৈবেদ্য এবং নির্দ্ধান্য ও পাদোদক গ্রহণ করিবে। বহুত পরিশিষ্টে লিখিভ আছে যে, দেবগণ প্রভৃতি বিষ্ণু নৈবেদাকে অভি পবিত্র বলিয়া নির্দ্দেশ করিয়াছেন অভএব ভাহা গ্রাহ্ছ, অন্ত দেবভার প্রসাদ ভোজন করিবে ভোজাকে চাস্ত্রামণ ব্রভ করিতে হয় এবং শিব নির্দ্ধান্যও অগ্রাক্ ভবে পাশ্রীম সম্পক্ষে স্ক্লই পবিত্ত হয়

थमोर्या विकर्शकृष्ठिक नावानमृद्धनः। नरम्बीरिज ককোল চূর্ণৎ ক্রমুক খাদিরং। কর্পুরং ভুলদীপত্তং ভাষ্পুলৎ माञ्गक्रकः। चानर्गरत ख्यानर्गर कल्लाह्य ब्रह्मानरत । देव-দিকং মন্ত্রমূচ্চার্য্যদদ্যাৎ পুষ্পাঞ্চলিৎ ততঃ। রাজনং শ্রীমন্মঙ্গলেশায় কল্পয়েৎ ।জপলেবং নমস্ব্যাৎ প্রদীদ ভগবন্ধিতি। ধ্যেয়ং সদা পরিভবন্ধমতীফলাভং তীর্থাস্পদং শিববিরিঞ্চি মুতৎ শরণ্যং। ভৃত্যার্তিহৎ প্রণতপালভবান্ধিসেতুৎ বন্দে মহাপুরুষ তে চরণারবিন্দং। ত্যক্ত্রা হুতুন্ত্যজহুরে-প্লিতরাজ্যলক্ষীৎ ধর্মিষ্ঠ আর্য্যবচ্না যদগাদরণাং। নায়া-মৃগং দয়িতয়েপিলভমন্বধাবদদে মহাপুরুষ তে চরণারবিন্দং। শ্রীরামচন্দ্রযু পুঙ্গব রাজবর্য্য রাজেন্দ্ররাম রঘুনায়ক রাঘবেশ। রাজর্মধরাজ রঘুনন্দন রামচতক দাদোৎহমদ্য ভবতঃ শরণং গতোংস্মি। যন্যামণ্ নুপদদঃ হ্যশোহ্রুনাপি গায়স্ত্য-ঘত্মমূষয়ো দিগিভেজ্ঞপট্রং। ভন্নাকপালবহুপালকিরীটজ ফং পাদাঘুজং রঘুপতেঃ শরণং প্রপদ্যে নমো জন্মণ্য দেবায় রামায়াকুণ্ঠমেধনে। উত্তমশ্লোকেধূর্য্যায় ন্যন্তদণ্ডার্পিতা-জ্বারে। ইন্দীবরদলশ্যামো রামোরাজীবলোচনঃ। বর্ততে মানদে যদ্যান্তাৎ শীতাৎ প্রণমাম্যহং। দোর্ভ্যাৎ পদ্ত্যাঞ্চ

অতঃপৰ গড়ৰ পৰিষ্ট অব বারা আচননীর প্রদান করিয়া ক্প্রিদি স্থানিত বস্তু সকল এব কুগুল মৃক্টাদি অলফাৰ নিবেদিয়া প্রবিৎ শঞ্চাদি দশ মৃদ্রা দশন করাইবে এবং বামহত্তে ব্যু দক্ষিণাস্ঠ ও তর্জনীযুক্ত করিয়া বাণ অর্পন করিয়া লবক্ষ প্রভৃতি মৃলোক্ত ক্রাসকলসমেত ভালুল ও আদর্শ প্রভৃতি নিবেদ্ধ করিয়া বৈদিক মত্তে পুলাঞ্জলি প্রদান করিবে। অনশুস্থ প্রধান আরতি করিয়া ধ্যেয়ং সদা ইত্যাদি মৃলোক্ত তব্ পাঠ করিয়া প্রায়া চন্দ্রেয় প্রশাম এবং ইন্দীবর দল্ভাম ইত্যাদি মহে সীতার প্রশাম করিবে।

জার্মিত্য। মুরসা শিরদা দুখা ।মনসা বচনা চেতি প্রণামে ই জি ইড়িতঃ । বাছভাগি সজামুত্যাং শিরদা বচনা ধিয়া। পঞা-ক্ষকঃ প্রণামঃ স্যাৎ পূজাত্ম প্রবর্গবিমোঁ। ইতি প্রণামঃ ।

उठ्ध श्राक्षणेर क्र्यासाचनमा सम्मदिनः। मश्रमीभधता-मानभूगार उद्ध शरम शरम। श्रमक्षण्यस् क्र्याम्दर्शकाम ममस्जः। इरमयुक्कविमारमम विक्रूलाकर म शब्हि । कक-इन्द्रश्रमामण्ड कर वाणि श्रमक्रिनर। स्वकारम मर्गमर विरक्षा-इश्वि भूगार भूताकृत्यः। ইতি श्रमक्रिनर।

ত সংস্থাত শ্ৰীবামং চামরণ্যজনাদিভিঃ। স্তাতে শস্তা মহামন্ত্ৰাঃ শ্ৰুত্যকা অমৃত প্ৰদা:।

অথ হৈনং ভরদ্বাজো যাজ্ঞবন্ধ্যমুবাচ হ। অথ কৈম স্থৈও স্তুতঃ শ্রীরামঃ শ্রীভোভবতি আত্মানং দর্শয়তি তল্পো ত্রুহি ভগবন্ধিতি। সহোবাচ যাজ্ঞ্যবন্ধ্যঃ। শ্রীরামেণেবং শিক্ষিতো ব্রহ্মা পুনরেতয়া গাণয়া নমক্ষরোতি। ১। বিশ্বাধারং মহা-বিস্থং নারায়ণমনাময়ং। পূর্ণানন্দৈক বিজ্ঞানং পরং জ্যোতিঃ শ্বরূপিশং। মনসা সংশারন্ ব্রহ্মা তৃষ্টাব পরমেশ্বরং। ২।

জুগদর, চরণদর জাত্দর বক্ষ, মন্তক ও নেত্র ভূমিতে সংলগ্ন কৰিছা বাক্য ও চিত্তে যে প্রশাস করা হর ভারাকে অন্তাদ প্রশাস বলে। বাত্দর জাতুদ্য, মন্ত্রক, বাক্য ও চিত্রদারা যে প্রশাস ভারাকে প্রশাস প্রশাস ক্ষতিত হইয়াছে এই দিবিধ প্রশাসই পুরাদিতে শ্রেষ্ঠ।

कानवत्र सत्रश्वनि कत्रक क्षित्रास्त्र क्षण्यक्षण किर्दा नश्वनीण। शृथिनी सारम द्य क्षण इत क्षित्रास्त्र क्षण्यक्षण क्षित्रकारण द्यारे क्षण केर्दा । कष्किश्वानत्र वात्रका क्षित्रभटक क्षण्यक्षण किर्दाण कार्मावणकी विभारत् क्षण्यक्षण किर्मा क्षण्यक्षण कार्मा कार्मा कार्मा क्षण्यक्षण कार्मा का

🗳 যে৷ বৈ জীরাম: দ ভগবানদৈতপরমানন্দান্তা যঃ পরং জন্ম ভূর্বঃ শ্বস্ত শ্বৈ নি নি না না । ৩। ওঁ যো বৈ জীরাম্-চল্রঃ স ভগবান্ বশ্চাথত্তিকরসাত্মা ভূর্ত্বঃস্থ তথ্যে বৈ নমো नगः। 8 । ॐ रा। रि श्रीवामः मञ्जरान् यण्डजनानमात्र्रावश कृष्ट्र विश्व के किया कि निष्य निष्य । देव श्री के किया कि श्री का में ভগবান্ যশ্চ তারকং ভ্রন্ধ ভূতু বিঃ স্বস্ত স্মৈ বৈ নমো নমঃ। ৬। ওঁ ষো বৈ জীরামঃ সভগণান্ যশ্চ ব্রহ্মা বিষ্ণুরীশ্বো যঃ সর্ব-বেদালা ভূর্বস্বঃ স্তাস্মৈ বৈ নমো নমঃ। ৭। ওঁ যো বৈ জীরামঃ স ভগবান যে চ সর্কে বেদাঃ সাঙ্গাঃ সশাখাঃ সপু-त्रांगा जुर्जूनः वे छरेना देन नत्या नमः। छ। ७ त्या देन खीतामः স ভগবান যোজীবাল্লা ভূতুবিঃ স্তুবিয় বৈ নমো নমঃ। ১। ওঁ যো বৈ আঁরামঃ সভগবান্ যশ্চ সকাভ্তান্তরাত্রা ভূর্বঃ श्व छोत्या देव नरमा नभः। > । ७ द्या देव 🕮 बामः म छ नवान् বে দেবান্তরসমুষাদিভাবা ভূভুবিঃ স্বস্তব্যৈ বৈ নমো নমঃ ১১১ ওঁ যো বৈ প্রীবামঃ দভগবান্ যাচ মৎসাকৃশ্মাদাবভারঃ ভূভূ तः चछरेण देव नत्या नमः। ५२। उँ त्या देव 🖹 तामः म छ-গৰান্যণচ প্রাণো ভূভুবিঃ স্বস্তব্যা বৈ নমো নমঃ। ১৩ । ওঁবো বৈ জ্বানঃ দ ভগনান্ যশ্চান্তঃকরণচক্টয়াত্মা ভূজুবি: স্বস্ত সৈ বৈ নমে। নমঃ। ১৪। ওঁলোবৈ জীরামঃ স खननाम् यण्डः वत्भा कृष्ट्रां श्रष्ठतेया देन नत्मा नमः। ১৫ 1 **७** ८ग रेन श्रीतांगक्ष म जगवान ् गम्हांखरका जुर्जू वह श्रश्रीत्रा रेव नरमा नमः। ১৬। ७ त्या देव खीतामः म खननान यन्त प्रवृत ুভূভূবঃ স্বস্তব্যে বৈ নমো নমঃ। ১৭। ওঁ যো বৈ জীরামঃ त्र जननान् यन्हायुज्य क्र्जूनः ऋकत्य देन मस्या नयः। ১৮।

ওঁ যো বৈ জীৱানঃ সভগবান্ যানি চ পঞ্মহাভূতানি ভূভ বিট স্তুদ্রে বৈ নমো নমঃ। ১৯। ওঁ যো বৈ জীৱামঃ স ভগবান यम्बावत्रक्रमाञ्चरका कृष्ण् वः चल्ठरेन्त्र देव नत्मा नगः । २०। ওঁলো বৈ প্রামঃ সভগবান্যে চ পঞ্চার্যো ভূভূবিঃ স্তুব্র देव नत्या नयः १२)। ॐ त्या देव खीतात्रः म खगवान् सम्ह সপ্তব্যাহ্বতথাে ভূভূবিঃ স্বস্তবৈশ্ব বৈ নমো নমঃ। ২২। ওঁ যাে। বৈ শ্রীরাসঃ স ভগবান্যা বিদ্যা ভূর্বঃ স্বস্ত স্থৈ বৈ নমো নমঃ । ২৩। ওঁ যো বৈ জীরামঃ দ ভগবান্ যাচ সরস্বতী ভূর্বঃ স্বস্ত দৈয় বৈ নসোনম: 1 ২৪। ওঁযোগৈ শ্রীরাম: সভগবান্ শাচলক্ষী ভূৰিঃ স্বস্ত দৈয় বৈ নমোনম:।২৮ । ওঁযোৰে রাম: সভগ্নান্যাচ গৌরী ভূর্ব: স্তুক্মে বৈ নমোনমঃ । ২৬। ওঁ যো বৈ জীরাম: দ ভগবান্ যা চ জানকী ভূভুবঃ च्छित्य देव नत्मा नमः। २१। ७ त्या देव 🕮 द्रामः म छगवान् যচ্চ ত্রৈলোক্যৎ ভূর্বঃ স্বস্তব্যে বৈ নমো নমঃ ২৮। ওঁ যো বৈ জ্রীরামঃ দ ভগবান্যণ্চ সূর্ব্যে ভূভুবিঃ স্বস্তবৈ নমো নমঃ 1 ২৯। ওঁযো বৈ জীরামঃ সভগবান্ যক সোমো ভূ-🗲 বঃ স্বস্ত স্মৈ বৈ নমে। নমঃ। ৩০ 1ওঁ যো বৈ 🗐 রামঃ দ ভ-গ্ৰান্ যানি চ নক্জাণি ভূভূ বঃ স্বস্ত সৈ বৈ নমো নমঃ।৬১। ও যো বৈ জ্ঞারামঃ দ ভগবান্যে চ নবগ্রহা ভূভু 🕾 স্বস্তামা বৈ নমোনম: 1 ৩২। ওঁযো বৈ জীরাম: সভগবান্ বে हारकी वनरवा पूर्व्यः श्वष्ठतेश्व रेव नरमा नमः। ७०। ७ रग देव औद्रांगः न खगवान (य हारकी लाकशानाकरेन्द्र देव नरमा नमः । ७४ । ७ त्या देव श्रीतांमः म छगवान् त्य देवकामभद्र-खोखित्य देव नत्या नमः। ७०। ७ त्या देव श्रीवामः म छनवान्

CB ह बालभाविज्याखरेना देव नत्था समः । ७७ । **७ त्या** देव জীরামঃ স ভগবান্ যচ্ত ভূতৎ ভব্যৎ ভবিষ্যৎ ভূতু বি: স্তুক্তি তে বৈ নমো নমঃ । ৩৭। ওঁ যো বৈ জীরামঃ স ভগবান্ ষশ্চ ব্লাণ্ডসাত্ত কহি বলৈ গোডি বিরাট্ভূর্ব: স্তেস্থ বৈ নমো নমঃ। ৩৮। ও বো বৈ এরামঃ স ভগবান্ যশ্চ ছিরণ্যণক্ত্রো ভূভূবিঃ স্বস্ত সৈ বৈ নমো নমঃ ৷ ৩৯ ৷ ওঁ যো ় বৈ শ্রীরামঃ স ভগবান্ যা চ প্রকৃতিভূ ভূবিঃ স্বস্ত সৈ তে বৈ নমো নমঃ ।৪০।ওঁ যে। বৈ জ্রীরামঃ স ভগবান্ যশ্চোকারো ভূ জু র স প্র সৈ তেও বৈ নমো নমঃ। ৪১। ওঁ যো বৈ জীরামঃ সভগবান্ যাশ্চ চতত্রোহর্দ্ধনাত্রা ভুতু বিঃ স্বস্ত স্থৈ তে বৈ নমো নমঃ। ৪২ । ওঁযো বৈ এীরামঃ স ভগবান্য শচ পরমপুরু-বে। ভূর্বঃ স্ব ও সৈ তে বৈ নমো নমঃ। ৪৩। ওঁ যো বৈ **এরামঃ স ভগবান**্য\*5 মহেশ্বরো ভূ ছু´বঃ স্বস্ত সৈয়ে তে বৈ নমোনমঃ। ৪৪। ওঁযো বৈ জীরাম: স ভগবান্ যশ্চ মহা-प्तरता कुर्ज्य अकरेया ८० देव नरमा नमश । ८৫ । ७ दा देव জ্রীরামঃ দভগবান, যশ্চোৎনমো ভগবতে বাস্থদেবায় মহা-বিষ্ণু ভূতি বিঃ স্বস্থ বৈয়া তেনমোনমঃ 18৬। ওঁ যো বৈ শ্রীবামঃ দ ভগবান্ যশ্চপরমাত্মা ভূর্ণঃ স্তুম্মে তে নমো নমঃ ১ ৪৭ ৷ ও যোবৈ শীরামঃ সভগবান্যশচ জ্রানাতা जुर्द्र अश्रदेश देव नरमा नमश। ६৮। ७ रहा रेम श्रीतामः স্ভগশন্যক সজিনক। বৈতি করসালা ভূভুবিঃ স্কুলৈয় তে বৈ নংমা নমঃ । ৯১। এতান্ অক্ষবিৎ স্প্তচ্যারিং শ্মাক্স-মিত্যং দেশং স্তুষন্ ততো দেবঃ প্রীতো ভবতি তত্মাদ্যএতৈ-মন্ত্রৈ নিভাং দেবৎ স্তোভি দ দেবৎ পতাভি সোৎমৃতত্বক

গছতি সোহয়তত্ত্ব গছতে। ইতি রামোন্তরতাপনীরে মন্ত্র-স্তুতিঃ সমাপ্তা।

যদা হসুমতা প্রোক্তং মন্ত্রাচাত্মকং গুবং। সংপ্রাদায় প্রদীপো যস্তবেত্তেন রন্থতমং। হতুমাতুবাচ। ভিরশ্চামপি ब्रांट्किक नमवाशंर मभीश्यार। यथा स्कीवम्थानार यस्त्रम्थर नमामादः । मकूटपर व्यमनाग्न विभिष्ठोरेग्नर यः विश्वर । विष्ठी-ৰণায়াকিতটে যন্তং বীরং ন্যাম্ছেছ। যৌ স্থান্ পুজিতো वांशी महात्कः कऋगांमृजः। व्यञ्जर त्यन करे। त्या क महा-বিষ্ণুং নমাম্যহং। তেজদা ব্যাপিতা যদ্য জ্বলতি জ্বলনাদয়ঃ। প্রকাশতে যঃ স্বতন্ত্রো যন্ত জলস্তং নমাম্যহং। সর্বাতো মুখতা त्यन नीनश्रो पर्मिका वतन । त करमश्रत्याधानार कर वरन সর্বতোমুথং ৷ নৃভাবং যঃ প্রপন্নানাৎ হিনন্তি চ যথা নৃষু ৷ मिरु मरब्बिरवार कृष्ठेखः नृमिर्शः न्यामारः । यत्राधिः ভাতি বাতাক জ্লনেন্দ্ৰাঃ সমূত্যবঃ। ভিয়ৎ তনোতি পাপানাং ভীমণং তং নমামাহং। প্রস্য যোগ্যভাপেকা त्रहिल्जा निजामकलः। मनार्लाव निक्तीमार्यान यखर छत्तर নমাম্যহং। যো মৃত্যুং নিজদাসানং মারমুভ্যথিলেউদঃ। ততোদাহতয়ো বভো মৃত্যুত্থে নমাম্যহং। যৎ পাদপথ প্রণতো ভবত্যভ্রসপূক্ষঃ। তমঙ্গৎ সর্বাদেধানাং নমনীয়ৎ নমাম্যহং। অহস্তাবং সমুৎক্ষিপ্য দাসেটনৰ রঘুত্তমং। ভ জেহৎ প্রত্যহৎ রামং স্মীতং স্চলক্ষণং। নিত্যং জ্রীরাম ভক্তস্য কিন্ধরা ধ্যকিন্ধরাঃ ৷ শিবময্যো দিশস্ত্রস্য সিদ্ধয়স্তস্য দাসিকাঃ। ইমং হসুমতা প্রোক্তং মন্ত্রাজাত্মকং স্তবং। পঠেদকুদিনং यस म तारम एकियान् स्टब् । देखि औरसू-

## मडा ८ थांकर मज्जनांबाजकः ८ छात्रः ममार्थः।

र्ज श्रीमोडादेश नमः। नीननीतकमनाग्रटकमनार नकाना अञ्चनावनकानाः। अधिकामहत्न अपिरनजीर छावरम মনসি রামবলভাং ৷ অভিন্যন্তিতদৃশং কুশাঙ্গিকা মঞ্কান্তি পরিভূতহাটকাং। ভাতকারিপরুষোক্তিবিরুবাং ভাষয়ে মনসি রামবল্লভাং। কৃন্তলাক্লকপোলমাননং রাছবক্তৃগহুধাং শুস্তুয়তিৎ। বাসদা পিদধতীং হিয়া কুনাং ভাবয়ে মনদি রাম-বল্লভাং। কায়বাঙ্মনসগাং যদিব্যথাং স্বপ্নজাগৃতিযু রাষ্বে-ভবং। তদ্মহান্ধমিতিপাবকং যতীং ভাবয়ে মনসি রামবল্লভাং। বানপাদযুগলং কলয়স্ত্রীং চেতদ। ত্রুতাধুনীহতপাপাৎ। অস্মীৰ পুৰুষে হনলে স্থিরাং ভাবয়ে মনসি রামবলভাং। ইন্দ্রক্রধনদাঅপানিকৈঃ সন্বিমানগণসংস্থিতির্দিবি ! পুরু वर्षभयूत्रः छ जभीशार जानता सर्नात त्रामनद्वजार । कानि-मानमनत्त नित्रमा मुद्राम वामज्यूनिष्कि जत्रमार । कृलनी-बर्कानजार वताननार जागरत यनि तायवलजार। मकरेत्रिक বিষ্দাং বিমানগৈর্বিসমাকুলমনোভিরাকিতাং। তেজসাপি দধতীং সদাভূশং ভাবয়ে মনদি রামণল্লভাং । এত দফকমনি-ইহানিকুদ্যঃ পঠেদথ শৃণোত্যহমুথে। অন্তরায় রহিতান্ত

অনন্তব চামৰ বাজন কৰিয়া অথহৈনং ভাষাজ ইত্যাদি মুক্তিপ্ৰশ্ব ক্ৰত্যক্ত তাৰ পঠে কৰিবে। অপবা হছমৎ কৰ্ত্ক যে, হল্মাস্বাচ। তিওলা-মলি রাজেতি ইত্যাদি মন্তবাজাত্মক ভোৱা অভিহিত হট্যাছে ভাষা পাঠ ক্রিয়া প্রভ্ব প্রাতিবন্ধন করিবে। অভঃপর নীলনীবলাষ ইত্যাদি সীভাদে-বীর স্তাতিপাঠ করিতে হয়। উল্পিত ভোৱা পাঠ স্মাপন হলবে নৃত্যুগী-ভাদি করতঃ প্রভুব সভোষ ক্রাইবে। আইভিজ্, ভালজ এবং বীণাবাদনে নৈথিলী তদ্য ভূতিমতুলাং প্রবছতি। ইতি রামবলভাভো-অং সমাপ্তং

স্তাদি ক্র্বিত বিল্পেরায়িত্তমে। বীণাবাদনতত্ত্তঃ

মৃত্যাদি ক্র্বিত বিল্পেরায়িত্তমে। বীণাবাদনতত্ত্তঃ

শুভিলাতিবিশারদঃ। তালজ্ঞলাপ্রয়াদেন মোক্ষমার্গং

স গছতে। ইতি সংগীতশাস্ত্রং। কেশবাগ্রে নৃত্যগীতং
ন করোতি হরের্দিনে। বক্তিনা কিং ন দ্যোহসৌ গতঃ
কিংন রসাতলং। ইতি পুরাণং।ভারতে। নৃত্য গীতে তু যঃ
ক্রাং বিপ্রঃ স্বাভাবিকেহলি বা। স্বাভাবিকে তু ভগবান
প্রীণাতীত্যাহ সৌনকঃ।

অথ পূজ্পাঞ্জলিং দ্বা কৃত্বা তৎপাদয়ো: শিব:। প্রার্থয়েদ্রোবাং ভক্তা কপিমুদ্রাং প্রদর্শাতক্ষ ন্যােহসূচ মূলে কৃত্বানাাঙ্গলি থােত্বং স্যােৎ সংপুটিতয়াাঃ পাল্যে। মুদ্রা বানরসংক্রিকা। যদ্ যত্ত বা সর্বাগতাহতা তে ধ্যানেন চেতঃ পরভাহতাতে। স্বত্যানয়া বাক প্রতাহতা তে ক্ষমস্ব সর্বাং মম
দেবদেব। অজ্ঞানাদ্যাদিবাজ্ঞানাৎ অভ্তং কর্ম্ম যৎকৃতং।

বিশাবদ বাজিবা অক্লেশে সৃষ্টিকলাত করিয়া থাকে। বিশেষতঃ একাদনী দিবসে বিষ্ণুব সরিধানে নৃতাগীভাদি না করিলে পরিভাগ ও অধঃপঠন লাড় করিতে হয়। ভারতে লিশিত আছে যে, কেবল নৃত্যগীভাদি হারা ও ভগ্ যান প্রীত হয়েন।

অনস্তর প্লাঞ্জনি আদান করিয়া রখুনন্দনের পাদপদ্ধে মন্তক নত্র করিব। বানব মৃদা প্রদর্শন করাইয়া আর্থনা কবিবে। তর্জনী অসুনিবরের অগ্রভাগ বর অল স্বরের মৃলবেশে নিহিত করিয়া আল অল অলুনি সমন্তের প্রস্পার শোগেতে কব্যর পৃটিত করিবো বানর মুদ্রা হয়। আর্থনার মৃদ্রাক্ত বাইত্যাদি মৃদ্রা জইবা।

শক্তমহানি তৎ সর্কাং দাসোনৈব গৃহাণ মাং। জ্রীগোবিদ্দা মুকুন্দকেশব শিব জ্রীবলত জ্রীনিধে। জ্রীবৈকুণ্ঠ হংকণ্ঠ কণ্ঠিত খলস্থানিমকুণ্ঠোদয়ঃ। শুদ্ধধ্যেয় বিধৃতভূতধরণ জ্রীমাধবাধোকজ জ্রুদ্ধাবদ্ধ বিধেহিনজ্বয়ি ধিয়ং ধীরাং ধরি-ত্রীধর। ছযোব ভক্তিং জনয় ছমেব মামুদ্ধরাত্মৎ কুপয়া ভবাকেঃ। ক্লিউৎ কুপালোন দয়ান্তি তে চেং তহীণ হা কর্ম্মবশাদ্ধতোহাম্মাইতি প্রথনা।

দেবদেব জগরাধ শহাচক্রগদাধর। দেহি রাম মামসুজ্ঞাৎ তবতীর্থনিবেবণে। লক্বামুক্তাৎ তত্র তাঁর্থে পাত্রশ্থে
মন্ত্রমালিথেৎ। কুশমূলে লিখিত্বা চ পঠেমন্ত্রমঘাপহৎ।
অকালমত্যহরণং সর্বব্যাধি বিনাশনং। বিফোঃ পাদোদকং
পুণ্যৎ লিরদা ধারয়াম্যহং। ওঁ চরণং পবিত্রং বিততং
পুরাণং যেন পুতস্তরতি চুক্কতানি। তেন পবিত্রেণ শুদ্ধেন
পুতাত্মা পাপ্মানমরাতিং। ত্বমেব লোকস্য ঘারম্কিতিও
মপবিত্রং। জ্যোতিশ্বন্তাজনং মহতস্তদমূতস্য ধারা বহুধা
দোহমানং চরণং লোকে স্বধীতাং দদাতু। ইমং মন্ত্রং সমুচ্চার্য্য সর্ববিভূত্তিগ্রহাপহং। প্রাশ্রীয়াৎ প্রোক্ষয়েদ্দেহং
পুত্রমিত্রপরিগ্রহং। কৃত্বা পাদোকং শন্থে বৈফ্রবানাং মহাজ্বনাং। তুলসীমিপ্রিতং দদ্যাৎ পিবেশ্ব্র্দ্ধাভিক্সারেৎ।

অতঃপর দেবদেব অগরাথ ইত্যাদি মত্তে অহ্মতি গ্রহণ করিয়া পাত্রেস্থাদোদকে কুশমূলবারা ইউমত্ত লিখিয়া বিফোঃ পাদোদকং পুণাং ইত্যাদি এবং ও চরণং পৰিত্রং ইত্যাদি স্থাতাং দদাত্ ইত্যস্ত মন্ত্রের পাঠ ক্রিয়া পাদোদক পান ও পর্ব শ্রীরে ও পরিবংরবর্গে প্রোক্ষণ করিবে এবং বিস্কৃতক সাধ্যকলের পাদোদক শম্পাত্রে লইরা ত্পগীষ্ক করিয়া ভাষ্ধ- ভগবান্ পৰিত্ৰং ভগবংপালোকং পরিত্রং ভংপানেয়া
চমনীয়ং যথা ছি সোমেছিভিত্রুতঃ। শালগ্রামশিলাভোয়মপীয়া যস্ত মতকে। প্রক্ষেপণং প্রক্ষাতি অক্ষহা স নিগদ্যতে। বিফোঃ পাদোদকং পীভং কোটিজন্মাঘনাশনং।
ভবেদইগুলং পাপং ভূমো বিন্দুনিপাতনাং। হত্যাং হস্তি
য়দজ্মসঙ্গুলনীপেয়ঞ্চ ভোয়ং পদায়ৈবেদাং সভ্মদ্যপান
ভূরিতঃ গুর্বঙ্গনাসক্ষং। যতাধানমতেঃ কিতঃ জরপুরেইঙ্গে তস্য নো কিল্লিমং শালগ্রামশিলান্সিংহমহিমা কোংপ্যেব শোকোত্রঃ। ইতি তীর্থপারণং।

ভুলদ্যা মাপতিং রামমর্জয়িরা যথাবিধি। দর্বপাপবিনিশাঁুকো িজো: দাযুজামাধায়াৎ। যা দৃষ্টা নিথিলাদদংঘশমনী স্পৃন্টা বপুঃ পাবিনী রোগানামভিবন্দিতা নিরদনী
দিক্ষান্তকত্রাদিনী। প্রত্যাসতিবিধায়িনী ভগবতঃ কৃষ্ণদ্য
সংরোপিতা অস্তা ভচ্চরণে বিমৃক্তিকলনা তদ্যৈ ভুলদার্জা।
ইতি নম্বাগত্য দেবমপরাধান্ ক্ষমাপয়েৎ। ইতি ভুলদার্জা।

দিগেৰ নমন্বার প্রঃসর পান কবিৰে। আচাততে আভতিত আছে, ভগবান্
ত্বাং পৰিত্র তাঁহার পাদেদক ও পনিত্র, সোমবদ পানে বাদৃশ উপকাব ও
পবিত্রতা হর পাদেদকে ও ততু লা। বে বাজি শালপ্রাম চক্র সম্পূক্ত কল
পান না করিয়া ভাগে করে সে একহতাার পাপভাগী হয়। বিজ্পাদেদক
শান করিলে কোটি স্বনার্জিত পাপ সকল বিনই হর কিন্তু তাহার নিজুনাত্রেও যদি ভূমিকে পতিত হয় তবে কইন্তুপ পাপ ক্রেয়ে। বাহার প্রীপদে অপিত
ভূলস্থী ওপীত পাদেদক হত্যাজনিত পাপ বিনাশ করে, নৈবেদা প্রসাদ প্রহণ
ক্রিলে মদাপান ও গুরুপত্বী সমনজনিত পাপ বিনাশ করে, নৈবেদা প্রসাদ প্রহণ
ক্রিলে মদাপান ও গুরুপত্বী সমনজনিত পাপ বিনাশ করে, দিশার্লী ভার্ম
ব্যুনের অসম্ভা মহিমা।

यारैनर्का भाष्ट्रिकर्काभि अमनर क्रावस् गृह्ह। त्मरवादमंतामारमवाद्यामध्यनामक्रमञ्ज्ञ । केव्हिट्के देव हार्त्मोटह क्रावविकार । विकर्वध्यनामक एटम्ब्राइट ध्यम्बिन्द ।
भामध्यमात्रनकार्वा कथा भर्याक्रवक्षनः। महनर क्रम्पकाभि
विवेशाकायन्यन्य । केटिककार्या निर्धाक्रका द्यामनानि ह
विव्यव्ह । निर्धास्त्र व्यव्हा देवन खीत् ह क्रम्बायनः । क्रम्पमावत्रनेत्कन भत्र निर्मा भत्रक्षितः। क्रम्पमानकारकेन भत्र निर्धाक्षम् ।
क्रिक्कारमा भारको । त्रीत्माभिनात्राख क्रिक्विक्रमाः।
क्रिक्कारमाख्यानाक क्रमामीनामनर्भाः। विनिधुकार्यमान्
क्रिम् ख्रमानर व्यक्षनामिन। भृष्ठीकृत्रामनरेकन भरत्यामिकः

आकः भव जुलनी माश का जार्नि । को का एन भागावा यथा विश्व निश्वी-का खिव चक्रमा कहित्त जरुन गृष्य खाशु व्य । जुलमी व मर्गदम निश्चिम भाशा विनाम, न्मर्गदम नेवी दिव मिल्या, समझादा द्वानक्षय जवर चिक्तिक यम्बद्ध निवृद्धि स्त्र । च्यात चनवात्मत भागभाष्य व्यर्भि । स्टेट्स मृष्टि खाना कद्य चाउ जव माथक वृत्मत जुलमी जिका छ नमक का निद्य । जुलमी वन्मनामि ममा-भिष्ठ स्टेटम चनवर मिल्या चनवात्म वा जिल्या खान्या चनवाद्य क्षावी

অতঃপব দাবিংশং প্রকার অপরাধ অভিহিত কইতেছে। দেবভার গুক্তে
শক্ট ঘোটক প্রভৃতি বানে আবোহণ করিয়া এবং পাছকাদি লইরা প্রবেশ
করা, দেবভা দর্শনে ভদ্যে প্রণামীদা করা, উচ্চিষ্ট দ্রাদারা ও আশোচ
সময়ে দেবভার অর্চনা করা, এক হতে প্রণাম করা, ক্রুডারলি না হইরা
দেবভা প্রদক্ষিণ করা, দেবভাভিমুখে পাদপ্রসারণ, উচ্চ আসনে উপ্রেশন,
শর্ম, ভ্রোজন, মিথাকেগা বলা, উচ্চয়াকা, পরশার জরনা, ক্রুড্রা
অল্লীদ বাকা মলা, অধোবার নিঃসরণ করা কালাকে ভিরন্ধার ও প্রশংসা
করা, স্লীইলাকের প্রতি ক্র বাক্য বলা, মানসিক কটের গোণন করা,
পরের নিক্ষা ও প্রশংসা করাশক্ষি থাকিশে আবস্করীয় মুগা উপরাব না দেওরা

वांचनर । खर्डी भीनर निकारखांखर एनवर्णानिक्ननर छ्यो।
धनावांचाख्या विरक्षांचांखिण्य भी कि कि छि । धनावं महत्यांग कि इरखर विशेष महा । मारमाहि कि सार मंद्रा क्ष्मस्य मश्रम्मन । है कि मखर मश्रम्भा धानरम् छ वर्ष्ण विषय वाह। मनरमित्रि के विश्व विश्व कि इस्ता चारम् स्वा वाह्य कर्मा वाह्य कर्मा वाह्य कर्मा क्ष्मा क्ष

গজাস্যাদিত্যপঞ্চাস্যশক্তিসিংহাস্যরেপবান্। মম কত্যে-ন সর্বাত্মা রামঃ প্রীণাতি চিছপুঃ। সভ্যপি ভেদা-বগমে নাথ তবাহৎ ন মামকীনস্ত্যা সামৃদ্রো হি তরঙ্গঃ কচন

অনিবেদিত দ্রব্য ভক্ষণ, এবং শেইকাশে বেই ফল হয় তাহা অর্পণ না করা,
ব্যঞ্জনাদি উপকরণ ক্রের অগ্রভাগ অল্যেক্স কার্যে গ্রহণ করিয়া অবশিষ্ট
দেবতাকে নিবেদন করা, আসন সমূথে উপস্থিত না করিয়া অভ্যাগভকে
অভিবাদন করা, গুক্সরিধানে মৌনাবদ্যন, নিজের প্রশংসা এবং
দেবতা নিন্দা করা এই রপেছাজিংশং প্রকার অপরাধ জানিবোজতঃপর অপ্রাধ সক্রাণি ইত্যাদি মন্ত্র পাঠ করিয়া ভ্রিতে দণ্ডবং প্রণাম করিবে।
আনস্তর কৃষ্ণ প্রণামী ব্যক্তির প্রশংসা কথিত হইতেছে। দশাখনেধকারী
ব্যক্তিও এক্সন কৃষ্ণ প্রণামী ব্যক্তির ভূলা হইতে পারে না, বেহেত্ দশাখশৈষী ব্যক্তির পুনর্কার জন্ম হয় কিন্তু কৃষ্ণপ্রণামীর আর ভ্রমাতনা ভোগ
করিতে হয় না।

অমন্তর শব্দপাত্রন্থ কল দইয়া নাধুবা সাধু বা কর্ম ইত্যাদি পাঠ করিয়া বের্বভার দক্ষিণ্ডক্ষে কর্ম সমর্শণ করিবে। অভঃপর, গ্লাভাদিত্য ইত্যাদি সমৃদ্রো ন ভারমঃ। সোহহৎ দাসেত্রিতি বা বুদ্রিসা।
মলা দৃতা। কণ্মভিন্ সবধ্যেত হাকর্তৃত্বাচিদের সঃ। মনেবাহমহঞ্চ সং সম্মাত্রবপুর্ধর। আব্যোরস্তরং প্রান্তির্নশ্যমাজ্ঞাবলাত্তব। ইতি তথিবাত্মার্পবং।

ছয়োপভুক অগগন্ধবাদোলঙকার চর্চিতাঃ। উচিছকী ভোজিনো দাসান্তব মায়াৎ জ্যেমহি। প্রপন্ধ পাছ মামীশ ভাতং মৃত্যুগ্রহার্ণবাৎ। ইতি সংপ্রাথিতে দেবে দভামাশিষ-মৃদ্ধন্। মহাপ্রসাদইভূয়কো পরমপ্রীতিপূর্বকং। ভচ্ছেযগন্ধপুষ্পানিঃ সম্যাগায়ানমহ্যেৎ। ইত্যাশী গ্রহং।

ধ্যাত্বা বানং জপেনান্তং তিঠেদ্যাননানা হাদ। গুছাতিগুহানব্রেণ পূজাং দেবে নিবেদ্যেৎ। ভিক্তানং ক্রীয়াহীনং
মন্ত্রীনং রুমাপতে। স্থপজিতং ম্যা বাম প্রিপূর্ণ তদস্ত্র
মে। ইতি পূজ্পাঞ্জিলিং দন্ত্রা সংস্ক্রান্ত্রণ হলে। ভজ্যা
পাঠ ববিরা পুরুর্গ আর্মমর্পণ কবিবে। গজাত ইন্যাদি মনাও। গণেশ,
দিনেশ, ভৃতেশ, শক্তি ও সিংল এখ অনুনি দেবগণ সমন্তই যালার প্রতিমূলি
সেই ভগবান জীরাম্চক্র আমাব এই অচ্চনাতে গ্রীন্যাভ কবন। হে নাথ।
স্থাবৃত্তিতে ভেদজান থাকিলেও ভোমাবই আমি কিত্ত গুমি আমাব নও সম্প্রেরত্বক কিত্ত সমুদ্র কথনত গ্রুত্বের বলা মাধনা। যেবাতি আ্থাকে প্রভ্ ভইতে আ এর কিংবা প্রভ্রুব দাস ব ব্যা জ্যান করে শাহার কথন ও কর্মবন্ধহর্মা স্থান্তরং মুক্তিশাত কবিয়া বাকে। হে চৈত্রসম্ব জগদীখন। তুমিই
আমি, আমিই তুমি কিত্র আনার নে ভ্রান্তরণতঃ ভেদজান হন্ন ভালা
ভোমাব আদেশে বিনষ্ট হউক।

জভঃপৰ আমোপভূক ইত্যাবিধারা প্রার্থনা করত দেবতাতে জর্পিত পুলাবিধাৰা মংগ্রেদান এই বলিণা প্রমানন্দপূর্ক আশীকাদ গ্রহা করিয়া নিবেদিত মাল্যাদিবারা বিভূষিত হইবে।

অনস্তঃ একাগ্রচিত্ত হইয়া প্রভূকে চিস্তা করিয়া ভদীয় মত্র লগ করিয়া গুড়াভি গুড়া ইড়ারিল মত্রে লগ সমর্গন করিয়া পুশাঞ্জনি লইয়া ভক্তিহীনং

## वीत्रार्कनहिंदा है

সংশোধিতং স্বান্তং বিশ বিশ্রামহেতবে। প্রাথৈ বিং পাছকে দ্বা সাক্ষমদানরে বিষয়। প্রাণায়ামং বড়ক্ক কৃতা মুদ্রাং বিশক্ত নীং। শহং রামো ন চান্তোহ স্মি মন্ত্রমত ছুলীরয়েং। ইতি বিসক্ত নং। খাল্পানং সভতং রামং সম্ভাব্য বিহ্নরন্তি যে। ন তেষাং ছক্কতং কিঞ্চিদ্ ক্লভোখা ন চাপদঃ। ইতি শ্রীমন্ত্রকারন প্রমহৎস পরিব্রাক্ষকাচার্ষ্য

জ্ঞীচরণপক্ষজশিষ্য জ্রীত্থানন্দবন বিরচিতয়াৎ রামার্চন—চন্দ্রিকায়াৎ তৃতীয়ৎ পটল:।

ক্রিরাহীনং ইত্যাদি মন্ত্র পভিয়া অর্পণ কবিবে। অতঃপর ভক্তা। সংশোদিতং স্বাস্থং ইত্যাদি পাঠ কবিয়া পাতৃকা প্রদান পূর্বক অঙ্গাদিদেবতার সহিত প্রভূকে উত্থাপিত করিবে। প্রাণায়াম ও অঙ্গভাসাদি কবিয়া বিস্ক্রনী মুজা কবিয়া বিস্ক্রন কবিবে। যাহাবা অবিবত আত্মাকে রানময় চিস্তা। করিয়া কাল্যাপন কবে তাহাদিগকে পাপ ও বিপদের ভাজন হইতে হয়না। তৃতীয় পটল সমাপ্ত।

वर्ष्ठ निनविज्ञारम जू क्र्यां र तथ महामस्त्र । रेनरेवा दिलान वर्ष्यः मार् दर्जाञ्ज वनिमानछः । रेनर्जा विद्यान् महाराज्ञ मार् दर्जाञ्ज वनिमानछः । रेनर्जा विद्यान् महाराज्ञ रेनर्ज्ज वनिमानछः । क्षिमम श्रामामा छर्नराष्ट्र । क्ष्या विद्यान्य । क्ष्या । व्याप्य । व्य

ইতিহাসপুরাণাভ্যামংশং সপ্তমকং নয়েং। 
শ্রীমন্তাগবতং তত্ত্ব বিশেষেণাদরাৎ পঠেং। বৈন প্রুত্তং ভাগবতং
পুরাণং নারাধিতো থৈঃ পুরুষঃ পুরাণঃ। হুতঃ মুথে যৈ
ন ধরামরাণাং তেষাং গতং জন্ম রথা নরাণাং। চরিতং
রঘুনাথস্য শতকোটিপ্রবিস্তরং। একৈকমক্ষরং পুণ্যং মহাপাতকনাশনং। অন্তঃ গতোহিপি বেদানাং সর্ব্বশাস্তার্ধবিদ্যদি। পুংসোহপ্রুত্তপুরাণস্য ন সম্যুগ্তিদর্শনং।
বেদার্থাদধিকং পুণ্যং পুরাণার্থক ভাবিনি। পুরাণমন্তথা

অতঃপর দিবরৈ ষষ্ঠতাগ উপস্থিত হইলে পঞ্চ মহায়জ্ঞ কবিতে হয়। দেবমহায়জ্ঞ হোমসাধা, ভৌত মহায়জ্ঞ বলিদানপাধ্য, শৈল মহায়জ্ঞ গ্রাহ্মপজ্যেলন অথবা পিতৃপুক্ষের অর্চনা ও তর্পণ সাধ্য, নৃষ্ক্ত আত্থি সংকার সাধ্য। বেদাধ্যরন কিংবা পুরাণ পাঠের দাম গ্রহ্ময়ক্ষ জানিবে।

অনতর সপ্তমভাগ উপস্থিত হটলে ইতিহাস প্রাণাদি পাঠ করত কাল যাপন করিবে, বিশেষ শ্রীমন্তাগবত একান্তই সাদরে পাঠ করিবে বেক্ড্ ভাগবত অবশ, প্রাণপ্কর প্রুয়োজ্যের আরাখনা ও রাদ্ধণ দিগকে ভোলা বস্তপ্রদান বাহারা না করে ভাহাদের করই নিম্পাকথিত হইরাছে। শ্রীরাম চরিত পাঠেবভোভ প্রাণ বেদাদি পাঠঅপেকার শতকোট অধিক মাহাত্মা, শ্রীরাম চরিতের একট একট অক্সর পাঠে অশীম পুণ্য অব্যেও মহাপাতক বিনাশ হয়। স্মপ্ত বেদ ও অভোভ নিধিদা পালের পারদ্দী হইরাও বদি কৃষা তিৰ্যাগ্যোনিমবাপ্ন হাং। ন বতা বৈকৃষ্ঠকথা স্থাপগা ন সাধবো ভাগবতান্ত দাশ্ৰয়াঃ। ন বতা সজেশনখান্মহোং-নবাঃ স্বান্ধানোহিপি ন যাতি সেব্যতাং।

## ইাত সপ্তমভাগকুত্যবিধিঃ।

ভাগেৎউনে উপাসীত সন্ধাং শ্রীরাঘনীং তথা। কুত্যামিহোত্রং বিধিনা ততো হোমং সমাপয়েং। ন্যাসং বড়ঙ্গকং
কুত্বা প্রাণায়ামপুরঃসরং। সকুদভ্যর্জ্যনী রাজ্য প্রার্থিয়েজ্ঞানকীপতিং। বলীয়সা পদা স্বামিন্ পদবীমনধারয়। আগচ্ছ
শর্মাগারং সীতয়া সহ রাঘব। পর্যান্তে তিলকপ্রশস্তফলকে
ভোগীক্রাচিত্রাঙ্গকে স্ক্রপ্রচ্ছদভাবুকে মৃত্রশিরঃ স্থানোপধানাদিকে। উন্মালংকুলশীলয়া দয়িতয়া শ্রীসাতয়া সং
কৃতে খেতে নিতামগণ্যপুণ্যকলদ শ্রীকোশলেন্তাে নৃপঃ।
ইতি শয়নোপাসনা। ইত্যেইমাংশবিধিঃ।

সায়ৎ প্ৰাত বিশ্বাতীনাৎ অভ্যক্তমশনৎ ভতঃ। উচ্যতে রামসম্ভটেট্য অগ্নিহোত্তসমৎ প্রিয়ং। আন্ত্রপাদঃ শুচিভূ বা

অন্ধঃ দিবার অউমভাগে প্রীরামচজের সভ্যা কবিরা অরিহোত্ত করিয়া কলেম সমর্পিবে। প্রাণাধাম ও অক্সাসাদি কবিরা একবার, নাজে প্রভ্র এচিন্নেশ্বর নীবালনা করিয়া বনীরসা ইত্যাদি সুলোক্ত প্রোর্থনা মঞ্জে প্রার্থনা করিয়া প্রনোধার্যকা স্থাপিবে। শঙ্গীয়াৎ সন্থত শুভং। উপবাসাৎ পরং হ্বাং হ্বাং পরম্বাচিতং। শ্বাচিতাৎ পরং নজেং পি রং দেবস্য চজিপঃ। তত্মাৎপরেশসন্তব্ট্য বিপো নজেংপরো ভবেং। বিফুলজো বিশেষেণ দিনপাপাপকুত্তরে। অন্ধং দৃষ্ট্য তং পুণমেৎ নিত্য-মত্মাকমন্ত্রিত। তেকোহসীতি জপেমন্ত্রং গায়ত্রা তীর্থ-বারিণা। সভ্যং ত্রেনেভিমন্ত্রৈঃ পোক্ষমেদন্নাদরাং। ধর্ম-রাজায় চিত্রায় চিত্রগুপ্তায় বৈ বালং। অন্ধীয়ামন্তরাজেন স্বান্ধং সপ্তাভিমন্ত্রিতং। তেজন্বী স্কভগঃ শ্রীমানরোগায়্দ্র জায়তে। অনং ব্রন্ধা রুগে বিস্তুর্কোক্তা দেবো মহেশরঃ। এবং জ্ঞাত্বা তু যো ভূঙ্ জে সোহমদোবৈন লিপ্যতে। অন্তশ্চ-রসি-ভূতানাং গুহানাং বিশ্বতোমুগঃ। তুং যজ্জন্বং ব্যট্ কারন্তং স্বাহা তুং স্বধেতি চ। তুয়োপভূক্তপ্রগ্রন্ধ বাসো-

ধিজাতিসকলের শ্রুতি নিকাচিত ভোলন করিতে ছব অতএব প্রভ্র প্রিয় অগ্নিহোল সদৃশ তোলনাম্বান করিবে। পাদপ্রকাশ নাদি করিবা গুছচিত্ত হইয়া সম্বত সামগ্রা শোলন করিবে। উপবাসে অনক্ত হইবো স্বত তদশক্তে অবাচিত ভোলাবস্ত রালিতে ভোলন করা বিধের টেহাই ভগবানের প্রীভিদায়ক জানিবে। বিফুড্ডে সাধু সকলেব দিনকৃত পাশক্ষ্যার্থ নক্তরত অর্থাৎ রালিতে ভোলন করা একাস্ত বিধের। ভোলা বস্তু উপস্থিত হইলে নিত্যমন্মাক্ষম এই বলিবা প্রণাম করিয়া ওঁ তেলাহিল গুকুমনা মৃত্যসি ধামনামানি প্রিয়ন্দেবানামনাগৃষ্টং দেব্যক্তনং এইমন্ত্র অনের উপরি কপ করিয়া গায়ত্রী ও সভাং হর্তেন ইত্যাদি মন্ত্র পাঠ করত তীর্থে দক্ষারা প্রোক্ষিত্র করিয়া ওঁ ধন্মরালায় নমঃ, ওঁ চিত্রগুলার নমঃ ওই মন্ত্রে উক্ত করিয়া ওঁ ধন্মরালায় নমঃ, ওঁ চিত্রগুলার করিয়া মন্তর্যার অভিমন্ত্রিত অরাদি ভোলন করিলে বলবান্ ক্রিয়া মন্তর্যার সাভ্রার অভিমন্ত্রিত অরাদি ভোলন করিলে বলবান্ ক্রিয়া মন্তর্যার বে বাজি ভোলন করে সে অর্যার দোবেণ্ড লিপ্তাহয় না।

34

नकात्रविक्ताः। উव्हिकेटलाब्दिमा नामाकुत मात्राः करत्र-ষৰি। জপদ্বেবং ভগৰতঃ জীতীর্থং তুলদীযুত্ত। অমৃতোপস্ত-রণমসীত্যগ্রতঃ প্রাশয়েততঃ। মধ্যেত্র বরুণ কুবের ব্যাদগ্ পতানি কুণানি। অস্বাহার্য্যাহ্বনীয় গাহ পত্যসভ্যাবসভ্যাভি-ধানা বহুয়ঃ।ওঁ গার্হ পজ্যে পু।ণায় স্বাহেতি হিরণ্যয়া কৃত্বা প্রা-ণাগ্নিছোত্রং দ্যাৎক্রিকাঙ্গুক্তত: ক্রমাৎ। অবাহার্য্যে ত্রপানার স্বাহেতি গগনাঞ্চা৷ কনিষ্ঠাঙ্গুষ্ঠ্যুমেন বিভায়ামাভ্তিং स्ति वानायाह्यनी (यश्यो व्रक्टवर्गाक्का स्थी । मधार्मा-ক্ষষ্ঠ বোগেন তৃতীয়ামাহুতিৎ হুনেৎ। সত্যে তৃদানসংজ্ঞায় क्रक्षवर्गट्या जथा। उड्ड नाक्र्ष्ठियारान हजूर्थी माङ्जिर इरनर। আবসতো সমানায় হুপুভাবর্ণয়া শ্রুচা। জুত্যাদসুলীভিস্ত সর্বাভিঃ পঞ্চমাত্তিৎ। নৈবেদ্যশেষং তুলদীবিমিশ্রং বিশে-ষতঃ পাদজলেন বিষ্ণোঃ। যোহশ্বাতি নিত্যং পুরতো মুরারেঃ পার্রোতি যজাযুত কোটিপুণ্যং ।প্তিবিদ্ধং ন চাশ্লী য়াৎ পবিত্তমণি নাম্বতং ৷ হস্তাদৃতেংখুনান্যেন নাখন্

उ अखनावित ज्ञानाः इंडानि वदः उद्धि छाजितानामा इंडानि लाठंकर्ताः उ अमृर्डालखनमानि वर्ड वित्रा ज्नमी मण्यू क कन भान कावतः ।
क्षम मर्था श्रुक्तिनि छुक्तित व मधाद्याति दिन भक्तु छ अवाशवानि ।
क्षम मर्था श्रुक्तिनि छुक्तित व मधाद्याति दिन भक्तु छ अवाशवानि ।
भक्षिय मस्मान कित्रा भार्ष भछा अवित्र दिन्न।। नामक छन्ने व किस्तार्छ
द वानाव श्राद्य वर्ष वर्ष मत्त्र किस्ता छ असूर्व असूनीवाता अवव्यवन कित्रा
द्याम कित्रित, अवाहार्य विद्य भग्नाकिस्तार्छ अनामिकाछ वृक्षासूर्वत त्यारभ
क आभ्यात श्राद्य वर्ष पर्धीत आहाक व्यान कित्रत, छुकी व आहक्रिट आहर्तनीव अवित वक्ष्यन्। विस्तार्छ मधामास्न व असूर्वत त्यारभ द व्यानाव श्राद्य अव्यानाव कित्रा ।
क्रिट अहर्तनीव अवित वक्ष्यन्। विस्तार्ष मधामास्न भवा, विस्ता इक्षा
क्रितीव असूर्वत त्यार्थ के देशानाव श्राद्य विदेश आहि विदेश । मक्ष्यम्

পাত্রন্থিতং পিবেং ৷ দক্ষিণস্ত পরিতাজ্য বামে নীরং বিধা-পরেং। অভোচ্যং তদ্তবেদনং পানীয়ঞ্ হুরাসনং। তৃঞ্জো দণ্যাদমশেষং ভূমৌ তুর্গতভ্প্রয়ে৷ যত্র কচন সংস্থানাং কুজিফোপহতাত্মনা?। তুর্গতানাং ময়াদ্তমক্ষ্য্যমুপতি-ঠ তাং। অমৃতাপিধানমদীতি পিদধ্যাভীৰ্বারিণা। অর্দ্ধং তদস্তুভাগে দদ্যাদ্রগতত্পরে।সম্যগাচম্য দক্ষাজ্যেরপুঠে বারি নিঃ'কপেং। অমুষ্ঠমাত্রঃ পুরুষোংগুঠঞ নমান্ত্রিতঃ। ঈশঃ সর্কাদ্য জগতঃ প্ডু: প্রীণাতু বিশ্বভুক্। ততঃ সংস্মৃত্য সম্বতঃ পুষ্টিনামিউদেবভাং। সন্নিকৃটৈউক্তঃ শিকৈউদেপ-দলণতেম নুন্। অলপতেংলদা নোধেহনদীরদা ভাগিও। পূাপদাতার ছার্যউজ : মে: ধেহি বিপদেশক কুষ্পদে। অগন্তা বহিহু বিভ্ৰানল ক ক্তং স্বাস্থ জ तथ जुरममः। হ্রথক মে তং পরিণামসম্ভবং দতামরোগঞ্জ স্থায়ুরস্ত । বিফুঃ সমন্তে ক্রিখনে হলে হী পুধান ভূতে। ভগবান্যগৈকঃ। সভ্যেন তেনার্মশেখনেত দারোজনং মে পরিণামমস্ত ৷ ভক্ষেদ্পি

অবসভা ৰহিব অ্পভা ভিহবাতে প্ৰাফুলিং ব্যোগে ভূঁ সমানাহ আহা এই মানে হাম কৰিবে। যে ব্যক্তি বিফ্ৰ পালেদক ও ভূগদীমিলিক নৈধেদা শেষ প্ৰতিদিন ভোজন কৰে সে অসুভকোট যজজনা ফললাভ কৰে। কোন ও প্ৰকার অভাতি জান কোনকোনা গুটি চইলে ও ছাত্ৰজিভ ইইলে অগ্রাহ্ম জানিবে। ভত্তপালে উক্ত এবং বামভাগাহিত জল অংপর। উক্ত নিম্নের অঞ্জা কুচ জল মদ্যের ভূলা এবং অন্ন ও অভোজা জানিবে। অভাপর ভোজনাবলিপ্ত অন্নকল লাল্যা যন্ত্রন সংস্থানাং ইত্যাদি সাল ফ্রান্ত বাজিদিগের ভূপাও ভূমিতে বলিহাদান কবিয়া ও অসুভাপিধানমাস এইমস্তে অভিমন্ত্রিত তীলোদকের অল্প ভূমিতে কেশণ এবং অদ্ধ পান্ করিবে। অন্নর আচমন ও বাদ প্রকালন কবিয়া অনুষ্ঠমানঃ পুব্র ইন্ড্যাদ্দ মন্ত্র প্রিয় আহ্মক আর্ব কবিয়া অনুষ্ঠমানঃ প্রের উন্তান্ধ

ভাস্বং প্রাদাজ্জানকীপতে:। শিকৈরিটকেপেদিব্যং ভগবন্নামসলং। ইতি পুংগাগ্নিহোত্তং।

মৃতি: শৌচবিধিং বিধায় চরগোপুকাল্য চোপম্প্লেদ্বিঃসংশ্বত্য জগৎপতিং কুলপতিং জ্রীকোশলেন্দ্রং নৃপং। প্রের্ম্যা
নিমিষং শিবন্প্রিয়ন্থধাধারায়মাণাং দিবং বস্ত্রেণজ্যি যুগং
পুমৃজ্য শয়নং ত্বামন্য সদ্যঃ স্বপেৎ। রামং ক্ষন্মং হনুমন্তং
পদ্মনাভং বকোদরং। শয়নে যঃ স্মরেমিত্যং স হঃক্ষপ্রং
ন পশ্যতি। মূলং শ্বত্বা জপমাত্মরকাং বিদ্বোপশান্তয়ে।
শুর্বর্থেতি পুনঃ পদ্যং স্ত্রিয়া ব্যত্তঃ স্বপেৎস্বধং। ঋতুকালাভিগামী যঃ স্বদারনিরতশ্চ যঃ। স সদা ত্রন্মচারীই বিজ্ঞোঃ
স গৃহাশ্রমী। ঋতুঃ বোড়শ্যামিনাশ্চত স্রস্তান্থ গহিতাঃ। পুত্রস্তান্থ চুযুগান্ত অযুগাঃ কন্যকাপুদ্রঃ। তাজ্যু চন্দ্রমাণ ছুইং
ম্বাং মূলং বিহায় চ। শুচিঃ স্নিবিশেৎ পত্রীং পুনামক্ষে

হয়ত্ত নোখেহি ইত্যাদি মন্ত্ৰ পাঠ পুৰ্মক ভোষন করিবে। অন্তর প্রীরামের প্রসাদিত ভাষুলাদি ভক্ষণ করির। আয়ীয় শ্বজনের সহিত ভগবানের মন্ত্রণমর নামকার্তন করিবে। অতঃপব মৃত্তিকা ও জলদার। পাদদরের শৌচ ও প্রকাশন করিয়া আচননান্তে, জানকীর সহিত বিরাজমান জানকীনাগকে শ্বরণ করিছা শ্বন করিবে। যেব্যক্তি শহন সমরে রাম, স্কল, হলুমান, পল্লনান্ত ও বুকো-দর্মক শ্বরণ করে গে ছংশ্বপ্রদর্শন করেনা। অতঃপর মৃন্যমন্ত্র শ্বরণ করিব। যেব্যক্তি গল্পরাভাইত্যাদি পাঠকরিবা সন্ত্রীক শ্বন করিবে। যে ব্যক্তি বাহুলালে পত্নীকে গমন করে তাহাকে পুণাবান গৃহস্থান্ত্রমী ব্যাহর। প্রহৃত্তাল বোড়শরান্তি পর্যান্ত, ভল্লাবো প্রথম ৪ রাত্র গহিতি জানিবে, অবলিই দাদশ রাজির যুগ্রান্তিতে অর্থানে ১, ৮, ১০, ইত্যাদি দিনে স্ক্রেব প্র স্বতি অর্থা রান্তিতে স্ক্রম কল্পা সন্তর্ভি হয় জানবে। এই বাদশ রাজিত অর্থা রান্তিতে স্ক্রম কল্পা সন্তর্ভি হয় জানবে। এই বাদশ রাজিতে অর্থান্ত ও মহা নক্ষত্রের বর্জন করিবে,বিশেষতঃ পুক্র বাচক যে নক্ষ নক্ষত্র ভাহাতে গুচি হটনা শ্রীসংস্প্র করিবে,বিশেষতঃ পুক্র বাচক যে নক্ষ নক্ষত্র ভাহাতে গুচি হটনা শ্রীসংস্প্র করিবে,বিশেষতঃ পুক্র

বিশেষ জীঃ। তচিং পুত্রং পুসুয়েত পুরুষার্থপুবর্তকং। ইত্যাদিমবাদিমূনি এণী তশান্ত প্রথানঃ । न वाबाटल क्रःथनकर्माशादेगः श्रीतामहत्त्रमा श्रानः न अहि। ইভি শরনবিধিঃ। ইভি রাত্রিপ্রথমযাম কুত্যং।

व्यथ और अत्राक्षमा भूत कत्र ग्राह्म । विना (यन न मिकः স্যান্মক্রো বর্ষশতৈরপি। গুরোম ব্রবরং লক্ষা সর্বাভীউ-व्यम् तूष । পृर्विव ९ भृज्य विकास वि ষট্সহত্রং সহত্রংবা শতং চাটোত্তরং শুচিঃ। এবমা-রাধিতো রামো যদা ভক্তং প্রশোধয়েছ। পুরশ্চরণকত্যায় পূর্ববেবা বিধীয়তে। যথাশক্তি নিয়ম্যান্তর্বহিরাত্মান-মাজাবিত। পুরন্চরণবত দর্ববং কুর্যাদ্ধোম্থ বিহায় তত। **७ इ: मक्क्सर क्**र्सी इ शूनकात्र न्या पत्र ! हो इ शून्त क्र हार । ততঃ সক্ষর্য কুকৌত পুরশ্চরণমাদর। । নিরন্তরাক্ত রেণৈব নিয়মাত্মা দৃঢ়ব্রতঃ। শৈলাগ্রে জলমধ্যে বা তীরে

পুল জালিবে ৷ এই প্ৰকাৰ মাননীৰ মনু আং চুভি মহাধুদিবের পশিত शृद्ध रमशृक्षि व्यवश्विक करत्र रम कथालात्म यक्ष मा इहेवा अभिनेत्र अधि इस । ষতঃপর মন্ত্রাজের পুরশ্চরণ সম্বন্ধে লিগিত ।ই. গড়ে। পুরশ্চংশ বাতিরেকে শতথর্ষেও মন্ত্রিক হয়ন। গুচ হটতে মনোংভীষ্টলদ मध्याश्न कवित्रा निश्माकृताव्य शृसक्ता कार्कना व व्यक्षित्वत्रणक व्यवा मध्य अपना यज्ञेनस्य जन कतिया निष्ठा कार्य। ममानन कडिटन, बहे खेकात्र कावायनाएउ (यह नमत्र श्रीरायहत्त जी उ रहेशा खिल्व केटम बन्त. हे द्वन, त्रहे मम य भूदण्डवत्वत भूक्तं कर्छवा कांगां मक्त आवस्य করিবে। শক্ত মুসারে আছবিক ল বালা নিবম সকল অর্থাৎ লেম জির भुद्रम्हतरण त्य मक्त अपूर्वान कविर्व इय त्यहे मक्त अपूर्वान कतिर्व ।

. अन्यत महत्र क्रिया भू १०६वन अदिष्ठ क्रिया नी ह वाष्ट्रित महत्र्त

বা লণণাসুধে: । নদীতটেহখখমুলে রম্যে বিশ্ববনীতির।
প্রত্যেওমুখই শিণস্থানে র্যলাদিবিব জিতি। অখপবিজ্ঞত্ব লদীবনে পুজ্পান্তরাবৃত্ত। গবাৎ গোঠেবু তীর্থেবু পুণ্যকে-ত্রেযু শদ্যতে । ইতি স্থানানি।

বৈদিকাচারবুকানাং শুচীনাং শ্রীম হাংসতাং। সংক্লি স্থানজাতানাং ভিকাশীলাগ্রজমনাং। ভুঞ্জানানাং হবি-স্যামং শাকং বাবকমেব বা । পয়ো মূলং ফলং বাপি ঘদ্যজো-প্রপদ্যতে। ইতি গৌতমীয়ে। চরুমূলফলকীরদ্ধিভ-ক্রামশক্তবঃ। শাকঞাউবিধং চামং সাধকস্যোচ্যতে বুধৈঃ। ইতি ভক্জানিয়মঃ।

লবণঞ্চ পলকৈব কারং কোন্ত্রং রসান্তরং। মাষমুদ্রণ মুরাদ্যান্ কোন্ত্রাংশ্চণকাদিশি। অসম্ভাষণমন্যোহনা, বর্জ্বরু মেদন্যপূজনং। বিনাশ্রমোচিত: নিত্যমর্থ নৈমিত্তিকঞ্চ বং। জীশুদ্রপতিত্রাভ্যনান্তিকে। চিছ্ফি:ভাজনং। অসতঃভারণ;

বজিত পর্বাতশৃকে, ক্রমধো, লবণসমূদ্রেব তীরে, ক্রমীতারে, অখন মূলে অথবা মনোত্র বিভবনে, নানাপুপাসমাকীর্ণ গ্রমীকাননে, গোঠে অথবা তীর্ণস্থানে পুরশ্চরণাদি কাষ্য কবিবে। ইতি স্থাননির্বা

অতঃপৰ বৈদিক। চাৰৰত মহামাদিপের ভকাৰত সকল আছিছিত হটতেছে। গোতমীয়ে নিধিত আছে, যে হবিলাল, শাল, যাৰক, তথ্ন এবং ফল মূলাদি বেড়ানে বাগা ঘটে তাগার ছাবাই নিয়ন কলা করিনে। এবং চক কল, মূল, তৃথা, দ্বি শালাল, শক্তু (ছাতু) এবং শাক এই ভাই প্রার্থ ভাই লাল সাম্থী সাধকের বাবহর্ত্বা।

সংগ্রতি বর্জনীবের নির্দেশ করিতেছেন। লবণ,মাংস, কাব, মধু, মাব, মুদগ, সম্বৰ, কৌজৰ, এবং বৃষ্টাএই নমন্ত ভোজন কবিবে ন। মোৰ অভোৱ আন্তাৰ, অঞ্জ বভার কাঠনা এবং নিডা ও সীয় সাম্রম বিধিত কার্যা, বাডিরি कांना छात्रनर अदिवर्ध्वा १ । ठाटक प देव कन १९ टिक्का-ভাষণং পরিবর্ছ্রেং। সত্যঞালি ন ভাষেত জপহোমাণি-কর্মান্ত। বাঙ্মনঃকর্মভিন্নিতিং নিম্পুত্। বানতাদিযু়। বর্জনেদ্গীতবাদ্যাদিশ্রবণং নৃত্যদর্শনং। তাত্ম লং গন্ধলে-পঞ্ পুত্পধারণমের চ। মৈথুনং তংকথা লাপথ তদ্গোষ্ঠীৎ পরিবজ্জ রেং। কেটিল্যং কোরমভাঙ্গমনিবেদিতভক্ষণং। অদক্ষল্পিতকুত্যঞ্জ বর্জায়েন্মর্দ্দনাদিকং। তারেরুফ জলমানং স্থান্ধামলকাদিকং। ইতি বৰ্জ্যানি।

স্নামাচ্চ পঞ্গব্যেন কেৰ্লামলকেন্চ। শ্রুতিশ্বতি-शूबार्गाक्तमरेखः साम्रामनचनः। भएको जिनातकः स्नान মন্যথা দকুদাচরেৎ। ইতি স্থান নিয়মঃ।

देनिमिन्तिक क्या वर्ष्वनीय चानित्त । ही, शृष्त प्रिक्त, मण्याव विशेन व ना ह-टकर अपू द्वीत ट्वाइन करा निधित खार मिला। कथा प अना शाखान व्यत्नेहरू कानित्व, दशेषिना अभिव द्यांश कवित्व । सभ दशमानि कार्या मृह्य श्राह्य करां अ निविद्धा कारमाना बादका विषय मा हा बाब इदेर । ती व नामा किनान न मुका पर्यम कार्या एक क्रिका कार्या करा करण मान्य विकास कार्या । छो मझ, छवियद्वय शाखात अ तमने विगत्यव मभाष्ट्र शतिकाश कविद्व । अप्रवेश বাবহাব, কোৰ, তৈল বাবহার ও অনিবেদিত ভক্ষণ বজ্জীয় এবং সঙ্গলাভি-बिक्ट कार्या, शाख्यर्फनाहि, डेक बटन यान ९ शक खवाहि पारा मान श्रवक ब्रमापि कार्या निषिद्ध कानित्य।

यान निषय। अध्यक्तः शक्याया । व्यामनकी मात्र दावी जान कविता शरक क्षि प्रिया छ अप्रात्मा क अप्रतार्थ किया यान कवितन । नारकात नारक वे कुन यान कित दात. अभएकत भएक बक्वात कर्कता

অনন্তৰ কুৰ্মাক্ত অভিন্তিত হউতেছে। বৰ্ত্ত ল এব টীংক্ত অন্ধিত করিবা ভাহাকে নৰ কোঁটা দ্বাৰা বিভক্ত কৰিবে, এই চক্ৰটী কুলাকাৰে গাৰিণত হইবে। পৰে নৰকোঁঠাৰ অইকোঠাতে ইক্ৰাণি অই দিক ক্ৰমে অলা হউবে। পৰে নৰকোঁঠাৰ অইকোঠাতে ইক্ৰাণি অই দিক ক্ৰমে অলা হউবে ক্ৰমে ভূটটা দুণ্টী আৰু লিবিয়া বছিলিগে পূৰ্কাদি ক্ৰমে উত্থিদিক পৰ্যান্ত সপ্তান্তৰ কাদি হান্ত সপ্তবৰ্গ এবং ঈশান কোণে অবশিক্ষ লক্ষ্ণ, এই ভূটটা বৰ্ণ লিবিৰে। ক্ষেত্ৰৰ মধ্যস্থল কুমেৰ পৃষ্ঠ স্থান এবং ক্ষেত্ৰৰ আদ্যা অকৰ বেই দিলে থাকিবে, অৰ্থাৎ পূৰ্কাদিলে কুমেৰ মুখ নিৰ্ভিত্ত কৰিবে ইহাকেই দীপস্থান বলে। ঈশান কোণে ও আল্ল কোণে হত্তম নৈশ্বতকোণে ও আলু কোণে গাদ্বল এবং পশ্চিমদিলে পূজ্ নিৰ্দিত্ত কৰিলা মুখ্য হইবা কাৰ্য্য কৰিলে নিৰ্দিষ্টে কাৰ্য্য সিদ্ধি হয়, কুমে হক্ষেন্তিতিতে নিজাপ্ত ক্ষ্ণ, পাৰ্খবন্ধে ও চন্নপ্ৰৱে হুঃৰ ও ক্ষৃত্তি এবং পূজ্জদেশে হিভিত্তে বন্ধন শীড়া হন্ন আনিবে। কাৰ্যাণ্ড আভি চাৰিক কাৰ্য্য অনন্ত ৷ জীকামনাতে পশ্চিম কাৰেৰে। ইহাৰ দক্ষিণভাগে আভি চাৰিক কাৰ্য্য অনন্ত ৷ জীকামনাতে পশ্চিম কাৰে। নিবে। আনুনায়েণে আভি চাৰিক কাৰ্য্য অনন্ত ৷ লাক্ষ্য কাৰ্যাণ্ড কৰিবে। আনুনায়েণে আভি চাৰিক কাৰ্য্য অনন্ত ৷ লাক্ষ্য কাৰ্যাণ প্ৰাৰম্প আনিবে। আনুনায়েণে প্ৰাৰম্প ক্ষাণানে বৈৰিবিনাশ এবং বাল্কে দিপ প্ৰাৰম্প কাৰ্যাণ কাৰিবে। আনুনায়েণে প্ৰাংমে অন্তৰ্গা কি প্ৰত্তে মেন্থানে ইউক দীপস্থানে

আমে বা বিপিনে বাপি যত্ত্র কুত্রাবিলোকনে। দীপ. ছানে ৰপ: কাৰ্যাঃ দৰ্বকাৰ্যাঘভীপ ছভিঃ। কুৰ্ম্মচক্ৰমবিজ্ঞায় यः क्र्याङ्कभषञ्चकः। उना यञ्चकनः नाणि नर्व्यार्नपा কল্লাভে। ইভি কৃশাচকে: 🏾

क्षांकिनायरत्वाथं कब्रारम्गामन वृधः। यसिकानिः ज्यामनाज विरमञ्ज नित्रांकृतः। खञ्चान भक्कामा मा। সারণে সাহিষং তথা। মেষচর্ম তথোচচাটে খড়গরৎ বশাকর্মণ। বিধেষে জামুকং প্রোক্তং ভবেদ্গোচর্ম। শান্তিক। দর্বাসদ্ধা ব্যাহ্রদর্ম জ্ঞানদিদ্ধৈ মৃগাঞ্জিনং। বস্ত্রাসন্থ রোগছরং বেত্তজে বিপুলাথ শ্রিয়থ। কোনেয়ে পোঞ্চিকং কাৰ্ব্যৎ কম্বলং ছুঃখমোচনং। বংশাসনে চ দারিদ্রাৎ দৌর্ভাগ্যৎ দারুজাসনে। ধরণ্যাৎ তু:থসস্তৃতিঃ পাষাণে ছঃথসম্ভবঃ। ভূণাসনে যশোহানিরেতৎ সাধারণে खर्भ। हेळामनः।

উপবিষ্ট হটয়া কাৰ্যা করিলে অভীষ্ট কাৰ্যোব সিদ্ধি হয়। কৃশ্ব চক্ৰ অবগত না हरेया चल (हामानि कवित्न छाहात कन नाउ हय ना अवः मभक्र कानार्थत BO EP

ष ड: পর দর্ভ, চর্দ্ধ, অধবা বস্ত্র ধারা নির্মিত্র আসনে - সন্তিকাদি ক্রমে ष्टित हिटल छेन्दि इटेबा कार्या कतित्व। जानता निवय कथित इटेल्डाइ, रखान रखिठम्,माताण महिर हम्,हेक्टाहान हाशहर्य, वाक शकात हम्,विरहरव জাষ্ক চৰ্ম শাস্তি কাৰ্যো গোচম্ম নাধারণে বাাজ্বর্ম এবং জ্ঞানসিদ্ধি কামনাতে মুগচর্ম প্রশস্ত জ্ঞানিবে। বস্ত্রনির্মিত জাগনে রোগনিনাশ এবং বেএনি:শ্রতে भवदेगवर्गा इस । दशेरवह कर्षाए दिनम बाता निर्मित कामन मामान कार्या च थन छ । कश्रनामान कः श्री दुः छि, वैश्मित कामान विक्रिका धरा वाकामान

क्रमाक्रमध्यभूषाक्रभूळ की वक्रमां ख्रिकेश । क्रिकेट विवाद क्रिकेट क्रकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रकेट क्रिकेट क्रिक

দৌ গ্রাগ্রা মৃত্তিকাতেও পাষাণে জংখ, এবং তৃণাসনে যশেব গানি হয়। সাধারণজপেট এই প্রকাব আসন মিয়ম জানিবে।

অনম্বর অপথানাব প্রাণানী কথিত হুটাতছে। কলাক, শৃথা, পদ্মবিত, জীবপু লকা, মুকা, ক্ষিক, মনি, বড়ু, স্থর্ণ প্রবাল ও কুশম্ব ছারা নিশ্মিত নালা জপ কার্যো প্রশস্ত জানিবে। গৃহীদিগের অঙ্গুলী লাগা সংখ্যা রাখিলে কলিত কব মাত্র লাভ হয়, তাহার বেখাসকল হাবা অইত্যুগ জীবপুত্রিকাতে দল গুল শত্রমালিকাতে লত গুল, প্রবালে সহস্তপ্রণ, মনি, রত্বে ও ক্ষিকে অযুতগুল মৌজিকে লক্ষ্ক, পদ্ম বীজে দশ লক্ষ্ক, স্থানি বেলিটি, কুশনিশ্মিতে লত কোটি গুল এবং ক্ষাক্ষে অনম্ভ কল জন্মো। তুলনীর মালা সমস্ত কার্যো প্রশস্ত এবং মনোতাই কল প্রদ হয়। সাধারণ শ্মেণে অন্তান্তর শত্র, চহুং পঞ্চালং অথবা সপ্রবিংশতিসংখ্যাক সালা প্রশন্ত । মুমুক্লিগের স্থানিংশতি, বনাক্ষ্মির পঞ্চিংশতি, প্রী কামনাত্র ও সপ্তবিংশতি অভিচাবে

ज्ञान । शुकेशो मखिविश्मणा भक्षनमां जिनिक्त ।

मरमक्रिक मकिवर्रमां नामाम (याजिनाः छन्न । त्राभूकः मन्नो कार्या এ हार्यं मरमक्र । यूगः यूप्य मरः र्याका भूकः भुष्कः भुष्कः निर्याक्ष स्व । त्याज्या मिठत्र कार्यः व्याका भूकः भुष्कः भुष्कः निर्याक्ष स्व । त्याज्या मिठत्र कार्यः म्रेड छर्दमीमित्रः । ज्ञानाशः विधार स्व १ क्षायः मात्र व्याकः मित्रः भक्षायः भक्षायः भक्षायः भक्षायः मात्र व्याकः भव्यः । भूष्यः मात्र व्याकः भव्यः भक्षायः भक्षायः भक्षायः भव्यः भव्य

পঞ্চল সংখ্যক মালা হাবা জপ করা প্রশন্ত। সংখতি গাঁহৰ নিষ্ম বলিতেতেন। শুলু অথবা বক্তার্থ হাক ছানা গোপ্টেছৰ ভাল মেনৰ সহিদ্ন মালা গাথিবে, মুখে মুখ হবং পুছে পুছে সংলগ্ন কৰিব। অথবাতঃ পঞ্চাৰা ছানা প্রজান কৰিব। অথবাতঃ পঞ্চাৰা ছানা প্রজান হাবে। মালাব ক্রিয়া লাজন এবং চন্দ্রন মপ্তক গ্রন্থতি গঞ্জনা হাবে বামান দেব ইত্যাদি মাজে ঘ্রন্থ কৰিব। আবাৰ ইত্যাদি মাজে পঞ্চম মজ ও মুখ্যান আবাৰ ইত্যাদি মাজে গঞ্চম মজ ও মুখ্যান আবাৰ ইত্যাদি মাজে গ্রন্থ মাজনাবাৰ কৰিব। মাজিক ক্রিয়া প্রস্তান মালাবার কৰিব। আই মজে আবাৰ ক্রিয়া লাভিক। ব্যব্ধ সেই মজই প্রত্যাহ স্থাপ ক্রিয়ে এক মজে প্রত্যাহ ক্রিয়া লাভ্যাহ জাবার ক্রিয়া প্রস্তাহ স্থা ক্রিয়ে এক মজে প্রত্যাহ ক্রিয়া লাভ্যাহ স্থাক ক্রিয়া প্রস্তাহ করিয়া লাভ্যাহ স্থাক ব্যাহ করিয়ে লাভ্যাহ স্থাক ক্রিয়া লাভ্যাহ স্থাক ক্রিয়া লাভ্যাহ স্থাক ক্রিয়াল লাভ্যাহ স্থাহ করিয়া লাভ্যাহ স্থাহ করিয়াল লাভ্যাহ স্থাহ করিয়াল লাভ্যাহ স্থাহ করিয়াল লাভ্যাহ করিয়াল লাভ্যা

নিষ্ঠাকর্ষণে জেরা জপকর্মণি সিদ্ধিদা। অঙ্গুট্ঠন বিনা কর্ম কৃতৎ তদফলং ভবেৎ। তর্জনা ন স্পৃশেৎ সূত্রং চালয়ের বিধ্নয়েৎ। অঙ্গুষ্ঠপর্বমধ্যস্থং পরিবর্তৎ সমাচরেৎ। আরভ্যা-নামিকামূলাৎ প্রাদিক্ষিণ্যেন বৈ ক্রমাৎ॥ সধ্যমামূলপর্যান্তং জপেদ্দশন্ত পর্বস্ত। জপমালালক্ষণং।

জপঃ স্যাদকরার্ডিঃ স উচ্চোপাংশুমানসং। ইউচ্চং
নীচসমকৈঃ শব্দৈঃ স্পান্তপদাক্ষরৈঃ। মন্ত্রসূচ্চারয়েরাচা জপ

যজঃ স বাচিকঃ। শনৈক্ষচারয়েমান্ত্র মাঘদোষ্ঠং প্রচালয়েৎ।
কিঞ্চিচ্ছ্রণযোগ্যঃ স্যান্তপাংশুঃ স জপঃ স্মৃতঃ। ধিয়া যদঃ
ক্ষরপ্রোণিং বর্ণস্বরপদান্মিকাং। উচ্চব্রেদথ সংস্মৃত্য স উত্তো
মানসো জপঃ। উচ্চৈর্জ্বপাদ্বিশিকঃ স্যান্ত্রপাংশুর্দশিতি

मानारक बाम इन्नहादा न्यमं जब॰ कवल्र हे तिर्दित मा। अभूष्ठं मुक्तिश्रम, उर्ध्वनी देविविनानिनो जबर मधामाभूनीत्व अर्थ मार्थ नाड रहा। नाक्षिकारण स्वा-मिका, आदर्शन कान्छ। स्वा-स्व कान्य कान्य कार्य कार्

জাতংশর ক্রপণক্ষণ অতিথিত হইতেছে। মন্ত্রাক্ষরের যে আর্ক্তিকবা ভাহার নাম অপ, ইহা উচ্চ, উপাংশুওমানসভেদে ত্রিবিধ। বর্ণ স্কল স্পষ্ট করিয়া উচ্চ, নীচ ওসমবাবের যে মন্ত্রোচ্চারণ করা হয় ভাহার নাম বাচিক্ জপ বজা। ওঠকে ঈবৎ প্রতাশিত করিয়া কিঞ্চিনাত্ত প্রবণ যোগ্য করিয়া যে মন্ত্রোচ্চারণ ভাহাকে উপাংশু অপ বশাহর। মনেতে মন্ত্রাবণ করিয়া যে মানসিক উচ্চারণ করাহয় ভাহাব নাম মানসিক অপ। উচ্চারণ করাহয় ভাহাব নাম মানসিক অপ। উচ্চারণ করাহয় ভাহাব নাম মানসিক অপ। উচ্চারণ বিশিপ্ত ক্ষণ

পশুভাবে ছিতা মন্ত্রাণ্ড বেবলা বর্ণরাপিণঃ। সৌর্থ্রবয়ুঃ
ফরিতাঃ প্রভূত্ব প্রাপ্ত কেবলা বর্ণরাপিণঃ। সৌর্থ্রবয়ুঃ
ফরিতাঃ প্রভূত্ব প্রাপ্ত কেবলা বর্ণরাপিণঃ। সৌর্থ্রবয়ুঃ
করিতাঃ প্রভূত্ব প্রাপ্ত কেবলা বর্ণরাপিণঃ। ক্রিনাপ্ত চাল্ড করিতাঃ প্রভূত্ব প্রাপ্ত চাল্ড করিছে। কর্লিনাল ভাবয়েব।
বিধং মুনো) মন্ত্রাক্ষরাণি মণিবচ্ছক্তো প্রোভানি ভাবয়েব।
তাবেব পরমব্যোক্ষি পরমাম্ভর্থহিতাং। দর্শরন্ত্যাক্ষদণঃ
ভাবং পূজাহোমং বিনাপি সঃ! ন দোষো মানদে জাপো
সংবিদেশহাপ সর্বাদা। জপনিষ্ঠো বিজ্ঞেষ্ঠঃ সর্ব্যক্ত্যকাং
গভেব। সংবিধানের যজ্ঞানাং জপযজ্ঞঃ প্রশাসতে। অহিং:
স্মাপি ভূতানাং জায়তেইসো মহাফলঃ। যজ্ঞানাং জপঃ
যজ্ঞোহমিতাই ভগবান্ হরিঃ। পদ্মনাভীয়ে। মাবন্তঃ
কর্মান্তরিঃ স্তঃ প্রদীপ্তানি তপাংসি চা সর্বেল তে জপযজ্ঞস্য
কলাং নাহান্ত ষোড়শাং। জপেন দেবতা নিত্যং স্ক্রমানা

প্রান্তি, উপাণ্ড জপে দশগুণ, কিছুনা দ্বারা জপে শহগুণ এবং মানসিক জপে গংগুপুণ কৰা লাভ্যয়। গণাপ নমু সকল পশুণ গুলা জাইছল অবিছল অবিছিল আনুত্রি করিয়া গণেক স্থানা দ্বারা ধ্বনি ইইবা উচ্চারিত ইইবো দেই মন্ত্র সন্বান্তার মন্ত্রণ দকল শক্তিতে সংলগ্ন আছে দেই পরেনামুছ দ্বারা অভিবিক্তা শক্তিব পরমান্ত্রাতে মুক্রযোগ ভাবনা কিরিবে। এই কাণ চিন্তা করত জপ করিলে পূদ্ধা হোম বাভিরেকে ও অভীক্ত কণ প্রান্তি হয়। মানসিক জপ সাধাবণ স্থানেও সদা কাল করিতে পারা যার ইহান্তে কোন প্রকারেই কোন দোষ ঘটারে সম্ভাবনা নাই ক্লপণ্যায়ণ বাক্তি দিল শেষ্ঠ বলিয়া কণিছ হন এবং সমন্ত স্ক্রের ক্লণাত্ত কবিয়া থাকেন, সমন্ত্রণ মধ্যে জপক্রণ মঞ্জই প্রসন্ত শে হেছু জপক্রণ মঞ্জ প্রাণিহিংলা দ্বাভিরেকে বিশ্ব হইয়া থাকে স্তরাং জপ বজ্ঞ মহা কলপ্রান উপান হাব

গ্ৰামীনতি। প্ৰদান বিপুলান্ ভোগান্ মৃতিং দদ্যাক্ত শাৰতীং॥

মানসং গিনিকামানাং পৃষ্টিকামৈরপাংশুভিঃ। বাং

চিকো মারণে চৈব প্রশাস্তো জপ ঈরিতঃ। মন্ত্রদেব প্রকাঃ

শিকায়াং।— সূর্যাসায়েও রোরিন্দোদ্দীপস্য চ জলস্য চ।

বিগ্রাণাঞ্চ গণাজৈন সন্নিধৌ সংমুখো জপেৎ। মন্ত্রাণিবে!—

মনঃ সংহরণং পৌচং মৌনং মন্ত্রার্থিন্তনং। অব্যক্তরমনির্বেদো কপসংপতিহেতবং। উদ্ধানী কঞ্কা নয়ো মুক্তকেশো
গণারতঃ। অপবিত্রকরোকশুদ্ধা প্রকা কপেৎ ক্রিছ।

অপ্রারতো করো ক্রমা শিরসা প্রার্তো হপিচ। চিস্তাানা

লুলচিতো বা ক্রিছা ভাতঃ ক্র্ণাবিতঃ। অনাসনঃ নমানো

ব্লিরাছেন যে, ব.জাং মধ্যে জপ রূপ বৈষ্ঠ ভাষা সাসি পিল্পনাছীয়ে লিখি দ আছে যে, সমস্ত কর্মাজ এবং অভিক্রজ্ব সাধ্য তপভা ইকারা কেইট লগ ব্রুব মোড়শ ভাগেক ভাগেব যোগা হয় না দেবতা যদি লগেছে সন্তুটি লাভ ব্রেন তবে বিগুল ইম্বর্যা ও মুক্তি প্রদান ক্রেন।

নিন্ধি কামনাতে মান্সিক, পৃষ্টিকামনাতে উপাংশু এবং মাধনে বাচিক জপ প্রশস্ত ।মন্ত্র দেব প্রকাশিকাতে নিধিত আছে নে, ত্র্যা, বহ্নি, গুরুক, চক্র, প্রদাপ, জার, প্রাহ্মণ ও গো ইকাদিগের সমাপেতে সন্মুব হুইরা জপ কবিবে । মন্ত্রার্থিব বিলিয়াছেন।—মনেব স্থিতা, পবিজ্ঞান, মেনার্থিব বিজ্ঞান, একাগতা ও স্থতা এই সমস্ত জগনিষ্কির কাতি কারণ এই সমস্ত ব্যতিরেকে জপনিদ্ধি হর না। উক্ষাশবারী, বস্তাব্ত, বস্ত্রবিহীন, মৃক্তকেশ, বহুজনাত্ত জনবিজ্ঞাক, অগুচি এবং প্রাণাণী ব্যক্তি জপকার্যা জথকারী নহে। মন্তর্ক সমন্তর্কা জথবা হত্ত বয় জনাচ্চাদিত কবিয়া জপ করিবেনা। চিশ্বাতে জনস্মি করিছে, কুন্দু, জান্ত, কুন্দুপ্র এবং আসনবিহীন ব্যক্তি জনেতে

বা গচ্ছন্ ভুঞ্জান এব বা। রখায়াসশিবে স্থানে ন অপে.

ভিমিরান্তরে। উপানদ্গৃত্পালো বা যানশ্যাগভন্তথা।
প্রার্থান জপেৎ পালাব্ৎকটালন এব চা। পতিভানামন্ত্যজানাং দর্শনে ভাষণেহপি চা ক্ষুতেহধোবায়ুগমনে
জ্প্তনে জপমুস্মৃত্জেং। প্রাপ্তাবিচম্য ওতেষাং প্রাণায়ামং ষড়ক্ষকং। কৃষ্ণ সম্যক্ জপেচ্ছেমং যদ্বা সূর্য্যাদিদর্শনং। মার্জারং কৃষ্টং ক্রেঞ্ছং খানং শুদ্রং থরং
কপিং। দৃন্ধাচম্য চরেৎ কর্ম প্রান্থী, স্নানং বিধীনতে।
অপ্তচিব্বা শুচিব্বাপি গচ্ছন্ তিষ্ঠন্ স্বপম্পি। মল্লৈকশর্ণো বিদ্বান্মনদৈব সদা জপেও। গৃহে জপঃ সমঃ
প্রোক্তো। গোষ্ঠে শত্তণ্ড সঃ। আরামে চ তথারণ্ডে
সংস্প্রণমৃচ্যতে। অয়তং প্রিতে পূণ্ডং নদ্যাং দশগুণ-

জনধিকারী। গমন ভোজন মথা। শংন করিয়া লগ কবিবে না।
পথে সমঙ্গল স্থানে এবং সন্ধানের জপ করা নিবিদ্ধ। চথাপার্ত্রনা
ধানণ করিয়া এবং শ্যাভেন্তিত হউলা অথবা পার্থ্যাবল করিয়া ছলপ্রকা নিবিদ্ধ। উচ্চাদনে, পভিত্র ও চথাগাদির দশনে ও ইংলদিগের সহিত্র জালাপে জপ করিবে না। হাচি, অধোরাণু নিংলনণ ও
ক্সান হইলে জপ পরিত্যাগ কবিবে। উদ্ধিকিত প্রতিবন্ধক উপস্থিত
হলৈ আচমন, প্রাণাধান অঙ্গতাস ও স্থাাদিদশন করিয়া অবশিপ্ত
জপ কবিবে। মাজার, কুকুট, বক কুকুব শৃদ্ধ গাধা ও বানর
এই সকলের দশনে আচমন করিয়া এবং প্রশানে লান করিয়া বার্য্যে
প্রক্রিক ইবে। শৌচে, অশৌচে, গমনে ও শ্বনে স্থাাই এক মন্ত্র
মাত্রে পরায়ণ হইরা মানসিক জগ করিছে গাঙে।
জপক্র অভিত্রিক ইংতেছে। গৃহে কুপ করিলে সুস্য ফ্ল, শৌচে

স্তুতং। কোটিং দেবালয়ে প্রান্তরনন্তং শিবসমিধে।।
শক্তশ্চেৎ সর্বনেবৈতদশক্তঃ শক্তিতো জপেৎ। ন নিকামোহপ্যনশক্তো নিষেধবিধিগোচনঃ। তথাচোক্তং শ্রীভাগবতো। তাবৎ কর্মাণি কুববীত ন নির্বেদ্যেত যাবতা।
সৎকথাপ্রবণাদৌ বা শুদ্ধা যাবন জায়তে।সদয়ো রাম চল্লোহয়ং বিশেষং নেচছতি কচিং। রসনাস্পৃক্ ফলত্যেব পাবকঃ সংস্কৃতো যথা। ইতি জপলক্ষণং।

জপেচ্চ নিয়তং নিতাং ত্রিকালং পুরুষোত্রং।
অর্চয়নের চাব্যগ্রো যাবং মড়্লকমাদিতঃ। তপ্য়েচ্চ
বিধানেন দশাংশং শুদ্ধবারিণা। পুষ্পাক্ষতাদিযুক্তেন জলোসংপূজ্য পুর্নবিং। ততাে বিল্লফলৈঃ পুষ্পোঃ পত্রৈরাপ
হতাশনে। পুর্নোক্তেন প্রকারেণ রাম্যাবাহ্য পূজ্যেং।

भारखन, छेन्नरान ९ तरन महत्यखन नर्साठ खानू छन, नही ही रव भन्न छा, माधारन प्रवालास रकाँ छन এवः नियमीर्भ खनक्रण लाड इह । ममस्य नियम ने मरक्रत नर्म, खनरक्रत रयक्षण मस्ति उन्द्रमारहरे छन्न करिरत । कानना छ निक्षण्य व्यक्ति रकान निर्धा छ विवित नक्षा नर्म। छान्नराठ निविष्ठ खार्छ, राकान नर्गास कर्छ ना हम अवश् म्रक्श। स्थानराज किंदिन ना हम रमहे कान नर्गास क्षा कहिरत । खां। रमक्षण मरमू हहेरान कृत स्थान किंद्रमा शास्त्रमा कर्मा करित हस्ति न्याम स्थान क्षा करित । स्थान नर्मा स्थान करित करित नर्मा स्थान करित करित करित नर्मा स्थान करित करित करित नर्मा हिर्द क्षण नक्ष्म।

আতিদিন ত্রিকাণে কবাতা ইইন জীবাম চল্লেব অর্চনা করতঃ ছয় লক্ষ জগ সম্পূর্ণ করিনা দশাংশ নিয়মে শুদ্ধ জল ছারা তর্ণ-এবং পুর্বোজ্ঞ নিয়মে পুশাদি ছারা অর্চনা এবং হোম ও ত্রাক্ষণ মধ্রতায়সংষ্ঠিতঃ পদ্মর্কা পায়দেন বা। তিলৈনানার দৈ
বিলি বাঙ্গণান্ ভোজয়েততঃ। পূজা তৈকালিকী নিতাং
জপস্তর্পন্মব চ। হোমো বাঙ্গণভুক্তিণ্চ পুরশ্চরণসূচ্যতে। গুরোল বিস্যু মন্ত্রস্য প্রসরাজ মথানিধি। পঞ্চাক্রোপাসনং সিদ্ধেঃ পুরশ্চতদ্বিধীয়তে। নিজামানা মনেনৈর
সাক্ষাৎকারো ভবেনিতি। অর্থনিদ্ধিঃ স্কামানাং ভবেদেবং
ন সংশয়ঃ। পঞ্চাঙ্গমেতৎ ক্রিীত যঃ প্রশ্চরণং বুণঃ।
স বৈ বিজয়তে লোকে বিলৈয়্র্য্যক্লাদিভিঃ। জাদাবস্তে
চ মধ্যে চ ব্রাহ্মণান্ ভোজয়েরছ্ন্। দিনে দিনে মথাশক্তি রামস্দিশ্য ভক্তিতঃ। সভোজতেম্ বিপ্রেয়ু তৎ
সাঙ্গং সফলংভবেৎ। সংসারে ত্রঃখভ্রিতেম ইচ্ছেৎ
স্থমাল্লনঃ। পঞ্চাঙ্গোপাসনেনৈব রামং ভজ্ব ভক্তিতঃ।
পঞ্চাঙ্গোপাসনং ভক্তা। পুরশ্চরণম্চাতে। এতিরি

ভোজন নির্কাহ করিবে। নিত্য জ্বণ, কাল্লেযে পূজা, তপণ, হোম ও প্রাক্ষণ ভোজন হইলেই প্রশ্নংগ সাজ হয়। প্রসারপ্তকর নিকট হইছে লব্ধ মপ্তের যথা বিধি পর্যালোপাসনা হটলেই সিদ্ধি হইয়া থাকে। নিজানী দিলের এই প্রশানবেই অভীষ্ট দেবত্তর সাক্ষাৎ হয়। এবং কামীদিনের ও ইছাতেই কামনাসিদ্ধি হয়। সোধাক পঞ্চাক্ষ প্রশানণ করে সে বিদ্যা ও ঐর্যাণালা হইয়া লোকে শ্রেষ্ঠা প্রশান করে হয়। প্রশারপাক আদিতে অত্তে ও দিনে ব্যত্তর প্রাক্ষণভোজন করাইবে। প্রাক্ষণ ভোজনে পবিত্র ইইলে অন্তর্ভিত কার্যা সম্পূর্ণ ও ফল প্রদান হয়। যিন এই হংগের আক্ষণ সংসারে নিজের অ্ব অভিলাস করেন তিনি পঞ্চাক্ষোপাসনাতে প্রীরাম্চল্লকে প্রীর ক্ষন।

বিছুষাং শ্রেষ্ঠং সংসারচেছদকারকং নানেন সদৃশো ধর্মো নানেন সদৃশং তপঃ। নানেন সদৃশং কিঞ্জিফীর্থস্য চ সম্বলং। ইতি পুরশ্চরণং।

যদি হোমে স্থাক্তঃ স্যাৎ পূজায়াং তর্পণে হপি ব!।
তাবৎসংখ্যা জপেনৈব ত্রাক্ষণারাধনেন চ। ভবেদস্বরে
নৈব পুরশ্চরণমার্য্য বৈ। যদ্যদঙ্গং বিহীয়েত তৎসংখ্যা
ভিতণো জপঃ। কর্তব্যঃ দাঙ্গদিদ্ধার্থং তদশক্তেন ভক্তিওঃ।
ন চেদঙ্গং বিহীয়েত তত ইউমবাপ্রায়াৎ। অঙ্গহীনং ভবেদ্
যদ্যৎ কর্মা নেইযার্থ সাধকং। সর্বেধা ভোজয়েছিপ্রান্ব্যঙ্গ
সাঙ্গস্থাসদ্ধার। বিপ্রারাধনমাত্রেণ কর্মাণঃ সাঙ্গতা ভবেৎ।
জপাদ্দশংশতো হোমং তদ্দশংশেন তর্পণং। মার্জনং
তদ্দশংশেন তদ্শাংশেন ভোজনং।

## ইতি ন্যুনাতিরিক পূর্ণতা।

ভক্তি প্রায়ব যে পঞ্জোপাসনা করা তাহাত্ত প্রশ্বণ বলে। পাধক সকলের ইহাই সংসাণ্ডেদনের আমান মূল ইহার সদৃশ ধর্ম নাই ইহার সদৃশ ওপতা নাই এবং ইহার সদৃশ অভীট সিদ্ধির আধান সম্বানাই।

হদি পূলা, হোন এবং তথা ব অশক্ত হণ তবে কপ ও র, জার্থ ভোলন এই অলম্বনে ও পুরশ্চবন সিদ্ধি হটতে পাবে। অশক্ত হটনা যে বে অপ্নের পবিচ্যান কৰিবে মূলসংখ্যানুসাবে ভালার বিশুন হালে দেই অপ্নের শিক্তি হইবে। সাল কর্মা করিলেই অভীষ্ট ফল আধি হন, অলম্থীন করিলে অভীষ্ট সিদ্ধি হ্না না। বিশেষ মূপে আলগভোলন করাইলে অজ্ঞানি জন্ম দেশা ইইতে পাবে না। জপের দশাংশ হোম, হোমের দশাংশ ভর্পা, তর্পানের দশাংশ মাজন (অলি-বেক) এবং অভিবেক্তর দশাংশ প্রাক্রণভোজন কানিবে।

তত্ত্বোদয়ং পরিজ্ঞায় কশ্ম কুর্যাদ্যণোচিতং। ক্ষারত্ত্ব শুস্তবং কুর্যাদাগু:ব্রন চ শান্তিকং। বশ্যমাকর্ষণেটের

ভানত্ব বট্কর্ম বিবৃত্ত হবৈতি ছে, মর নিজি হইলে এট সমস্ত বিধেয়। প্রধান, বিদত্ত, সংপুট, বোধন, যোগ ও পানব এই ষ্টিব প্রয়োগ অনস্থব বক্রবা কার্যা সকলে প্রশাস্ত জানিবে। বিধি মন্ত্র্যাবে নাম-বর্ণ সকলকে বে মন্ত্রবার্ণ অপ্রবিত করা ভাবার নাম এখন ইল্লাপিকিলার্থ্য প্রশাস্ত্র। মন্ত্র বর্ণবিলের মধ্যে সাধ্যের নাম কার্যাক্র লেপাকে বিশ্রত্ত বলে। ইহা ব্যাকিংক কার্য্যে প্রশাস্ত্র। নামের আদিতে ও অস্ত্রেতে মর লিখিয়া বে পুটিত করা হয় ইলার নাম সংপুট স্কেন্ত্রনারে বিধেয়। আরু মন্ত্রের আদিতে ও অস্ত্রেতে বিধেয়। আরু মন্ত্রের আদিতে ও অব্যাক্তর বাম সংস্টি স্কেন্ত্রনার বিধেয়। কার মন্ত্রের আস্ত্রেতে নাম লেখার নাম বলে ইহা বিদ্যার কার্য্যে প্রশাস্ত্রের অস্ত্রেতে নাম লেখার নাম গোগ উচ্চাটন কার্য্যে প্রশাস্ত্রের অস্ত্রেতে নাম লেখার নাম গানব ইলা মারণ কার্যে প্রশাস্ত্র বিশ্বত্র বিশ্বত্র বিশ্বত্র নাম বিশ্বাহ্নের।

তেজ স্তরোদয়ে সতি। উচ্চাটনং মক্লতত্ত্ব ব্যোমতত্ত্ব চ মারণং। জানীয়াছ্দিতং তত্ত্বং বর্ণৈবিবন্দুগঠৈঃ পৃথক্॥ ইতি তত্ত্তানং।

বেদান্রং যোনিমর্দ্ধেন্দু ত্রাম্রং বৃত্তং বড়স্মকং। পঙ্কজাকারমফাস্রেং শান্তিকানে নিযোজয়েং। ইতি কুণ্ডানি।

লোকিকেইমো শান্তিকং স্থাৎ পোষ্টিকঞ্ শুভ-ন্তথা। বটজে স্তম্ভনৎ কুর্যাৎ শাণানক্ষে তু মারণং। বিভীতকাগো বিদ্বয়ঃ যট্কর্মণ্যায়ো মতাঃ। ইতাগ্যঃ।

অঙ্গুঠানাসিকাভাক জপেতৃত্তমকর্মণি। অঙ্গুঠমধ্যমান ভাগিক জপেনাকুন্টাসিক্ষে। তত্র্বাঙ্গুঠ সংযোগান বিবেয়োচ্চাটনং মতং। কনিষ্ঠাঙ্গুঠকাভ্যাঞ্চ জপেনারণ-কর্মণি। ইতি জপ জানং।

তরে, দর অবগচ ংইং। কার্ণা কবিবে। পৃথিবী ওয়ে জন্তুন, জ্লা ভাষে শাস্ত্রি কার, তেজস্তুয়ে ধনী কবণ ও আক্র্ণ, বাযু জরে উচ্চটন আবি আকাশ ওয়েব ইদয় হইলে মারণ প্রশস্ত। বিল্পত বর্ণছাবঃ পুর্ব্ব ক্রণে ভয়েদের অবগত হইবে।

চতুৰ্য, যোনি, অৰ্জচন্ত্ৰ, আস, রক্ত, ষ্টকোন প্রা ও্মন্তাস এই ব্রথিণ কুণ্ড শাহিস্পেড়াত কাংশা ক্ষরা।

জন ধর অধির নিশ্ধ কবিতেছেন। লৌকিক বহিংত শান্তিক পৌ-ষ্টিক ওমাঙ্গলিক কামিপ্রশাধ বিউব্জোৱে বহিংতে ভান্তন শাশাণানলে মাবশ, বিভীতক বহিংত বিদ্বেধ ভউচোটন কাম্য কবিৰে।

উৎক্টকাৰ্ব্যে অংস্টওঅনানিকামানা আকর্ষণে অঙ্গৃষ্ঠ ওমধ্যমালুলি মানা, বিংখ্যে ও উচ্চ:টনে তঞ্জনীও অঙ্গৃষ্ঠবার৷ মারণে খনিষ্ঠাও অঙ্গৃষ্ঠবারা লগ ক্রিতে হয়। উদয়াদ্যাম পর্যান্তং হেমন্তে পৌষ্টিকং জপেং।

যামজয়ং পূর্বরাত্রেঃ শিশিরে মারণং কপেং। বসন্তে
প্রহাদুর্জং যাবন্যাধ্যাহ্নিকং ভবেং। কার্যামাকর্বন্তর মক্তৈরিন্তান্য বস্তুনঃ। ত্রীলে ভূতীয়কো
যামো হিতো বিজেষকর্মান। তথাহাহ ময়পর্যান্তমুক্ত,টে ভোয়দাগমে। অর্বরাত্রে নিশীপে চ জপেচহরাদ্
শান্তিকং। তথাচাহ বশিষ্ঠঃ, যাম্মিন্ কাস্মিল্টো কার্যাহ্লে
ব্রীভিনাশনং। উচ্চটে মপরাহ্লে ভূ সন্ত্যায়াং মারণত্তথা।
শান্তিকর্মার্জিনাত্রে চ ভূর্জিং দর্বনকর্মান। ইতি শান্ত্র্যানাং।
প্রবিন্ত্রণাদ্যক শান্তিকং। সাকর্মনাথায়ের
উত্তর্গাদ্যক শান্তিকং। সাকর্মনাথায়ের
বৈন্ত্রের মারনত্তথা। উচ্চটেনক নায়ন্যে ঐশান্যাং মোলভ্রাদ্
দায়কং। ইতি দিন্তনিয়মঃ।

শোষ্টিক কাষ্য ক্ষেত্ত অভূতে বস্থা ইছাতে বিশ্বনিধ হইছে।
একপ্রহর প্রান্ত জ্বল কাবৰে। মাবৰ শিশিব প্রশাস্ত এবং রাজিব প্রথম
মামন্ত্র প্রান্ত জ্বল, আকর্ষণ বসত্ত কালে বিধের মধ্যক্তে প্রান্ত জ্বল,
বিষ্ণের প্রীল্ল কাল্ডভূতীয় বাম প্রান্ত জ্বল। উচ্চটিলে বর্ষাকাল ও
স্থাতিপ্রান্ত জ্বল করিলে। শান্তিক কার্যা শ্বংকালে বস্তব্য কাজিবলের
ভাষা স্বর্থান্ত জ্বল করিলে। শান্তিক কার্যা শ্বংকালে বস্তব্য কাজিবলের
ভাষা স্বর্থান্ত জ্বল করিলেও হল।

वनीकवान भूकंतिक, आधिकावित्क मणिन, उन्छान शिक्षण, भाष्टिक डेळा, आकर्षण आध्यक्ष, भावेदन देनकार, डेक्ट्रांटन बागूकान स्थाककामनारक जेनान दक्षण द्यांक्षण आनिदन। শুরুপকে বিতীয়া চ তৃতীয়া পঞ্মী তথা। বুধনেব:
গুরুপেতা শান্তিকে চাথ সপ্তমী। ষষ্ঠী অয়োদশী চৈব
চুক্মী নবমী তথা। সোমদেবগুরুপেতা পৌষ্টিকে শং:
সিতা বুলৈ:। অইমী নবমী চৈব দশম্যেকাদশী তথা।
শুক্রভাসুস্থতোপেতা শস্তা বিষেষকর্মণি। ততশ্চপুর্দশী
কুক্ষা শনিবারে তথাইমী। উচ্চ:টনে তু শস্তোমং ক্রপঃ
শঙ্করভাষতঃ। অমাবস্যাইমী ক্রন্ধা তাদৃক্ চৈব চতুর্দশী।
ভাত্মনা তৎস্তোপেতা ভুস্পতেনাপি সংযুতা। মারণে
শুস্তনে চৈব জপে হোমে প্রশংসিতা। ইতি তিথি নির্ণয়ঃ।
লক্ষ্ম তদর্শ্বনা জপিছা তদ্দশাংশতঃ। তিলৈর্বা
ক্মলৈত্বা যদ্যদিইং তদাপ্যতে। বিল্পপ্রম্নরৈশ্বনি

শান্তিকার্যা শুকু পক্ষের তৃতীয়া ও পঞ্চনী এবং বুধবার ও শুক্রবার প্রশন্ত। পৌষ্টিক কার্যো শুকু পক্ষেব সপ্তমী বজী আয়োদশী,
চঙুর্দ্দশী ও নবমা এবং সোমবার ও শুক্রবার প্রশন্ত। বিশ্বেষ শুষ্টমা, নবমা, দশনী ও একাদশী এবং শুক্রবার ও শনিবার প্রশন্ত। উচ্চাটনে কৃষ্ণ পশ্চীয় শুষ্টমা চুর্দ্দশী ও শনিবার প্রশন্ত। মারণে ও শুক্তনে অমাবসাা, কৃষ্ণপশ্চীয় শুষ্টমা ও চুর্দ্দশী এবং শনি রবি ও ম্বাল বার প্রশন্ত ভানিবে।

এক লক্ষ অথবা তদক পরিমিত কাপ করিব। তাহার দশাংশ নিরমে তিল প্রভৃতি দারা হোম করিবে। বিরপুপা দারা হোম করিবে। বিরপুপা দারা হোম করিবে। বৈরপুপা দারা হোম করিবে। বৈরপুপা দারা হোম করিবে। বেগা করিবা তাহার দারা হোম করিবে রোগম্ভ ও দীর্ঘারু হয়। আরেগ্যাণী ব্যক্তি অরের উপরি ৮ বার রাম্যন্ত কাপ করিবা তোক্ষব

বেদবিদ্ধবেৎ। দুর্বাভিশ্চ গুড়ুচীভিঃ প্রান্তের্মণ চাণ্ফতিঃ। নিরাময়োহিপ দীর্ঘারুর্ভবত্যের জপোনিধে। আরোগ্যকামো ভুঞ্জীতে অলং মন্ত্রাভিমন্ত্রিতং। অইধামন্ত্র-পৃতান্তঃ পারা ভক্তঃ কবির্ভবেৎ। রোগোক্তেমিধি হোমেন রোগাল্লাচ্যত তৎক্ষণাং। সম্যক্চক্ষনতোরিশ্চ প্রত্যান্ত্রিক সমাক্ষতিঃ। জাতিপ্রস্টনর্ভ্রা তু রাজানং বামানয়েৎ। ধ্যাত্ব। জাতিপ্রস্টনর্ভ্রা তু রাজানং বামানয়েৎ। ধ্যাত্ব। তু মল্মথং রামং সীতামিপিরজিং স্মনেং। মধুরত্তয়নুকেন পায়সেন ভ্রেন তু। বাঞ্জিতং ধনমাপ্রোতি ভ্রা রক্তোৎপলৈন বৈঃ। ভ্রা নীলাঞ্জিতং ধনমাপ্রোতি ভ্রা রক্তোৎপলৈন বৈঃ। ভ্রা নীলাঞ্জিতং ধনমাপ্রোতি ভ্রা রক্তোৎপলৈন বৈঃ। ভ্রা নীলাঞ্জিতং ধনমাপ্রোতি ভ্রা রক্তোৎপলৈন বৈঃ। ভ্রা নীলাঞ্জিলতেথ্যে প্রয়োগবিং। মধুরত্তয়নুক্তেন পায়সেন ভ্রেন তু। সর্বাধিপত্যং বৈছ্যাং ভবত্যের ন সংশায়ঃ। বিশ্বপ্রান্তর কুমুদৈ স্তথাবিত্রদলৈরপি। ভ্রা তু লভতে লক্ষীমচিরানমন্ত্রপাধকঃ। আরাণ্য রামং চণ্ডাংশ্রমণ্ডনে

করিলে আরোগ্য লাভ করিবে। ৮ বার রামনত্রে অভিমন্তির কল পর্ন কবিলে কবি হইবে। ক্ষাব বে রোগে বে ঔষধ নির্কাচিত হইবে ভাছার হারা হোম কবিলে তংক্ষণাৎ মাত্র বোগ হইতে আরোগ্য হইবে। সচক্ষনজ্পনিজ্ঞিত জাতি প্রশাস হারা হোম করিলে রাজা বশীস্ত হইবেন। রাম মর্মণ, সীভা ও রতিকে ধ্যান করিয়া ম্পুর্ত্ত্বেশ পারস হারা হোম করিলে বাঞ্ছিত ধন লাভ হয়। নূহন বক্ত পদ্ম ও নীল পদ্মহাবা হোম করিলে নিশিল জগৎ বশীস্ত হয়। বিধি অনুসাবে রামের আরাধনা করিয়া মধুর অরমুক্ত পারস হাবা ভ্রালত বহিন তে হোম করিলে সমন্তের প্রতি আধিপত্য ও পাণ্ডিত্য লাভ হয়। বিধাপ্ত বিশ্বপ্রতি ও কুমুল হারা হোম করিলে অচিরেই শ্রীলাভ ইইবে

বংগরং মুনি:। উদয়াদস্তমানান্ত জপেয়ন্তমননাধীঃ। ফলং ভবতি তদ্যান্ত দেবানামপি তুল ভং।রাজ্যেখর্যোপভোগাধী জপেল্লক্ষমননাধীঃ॥ পদ্মৈনিবল্পপূনৈন্চ দশাংশং জুত্যান্ত্র। সমুজভীরে গোঠে বা লক্ষজাপী পয়োত্রতঃ। পায়দেনাজ্য যুক্তেন হুত্বা বিদ্যানিধি ভবেৎ। পরিক্ষীণানিধাতোয় শাকাহারো জলান্তরে। জপেলক্ষ জুত্যাৎ বিল্পুর্বপূর্দিশাংশতঃ। তদেব পুনরাযাতি স্থাধিপত্যং ন সংশয়ঃ। উপোয়া গঙ্গাদিজলান্তরক্ষো রামং স্যারাধ্য জপেচ লক্ষ্। ভ্রা দশাংশং কমনৈত্তিলৈর্কা। বিল প্রস্থান ধ্রজ্বয়াকৈও। রাজ্যং শ্রিয়ৎ বিক্ষতি মক্ষভাগ্যো হপায়্র দাস্থ বহুবাঞ্জিতং স্যাৎ। মাঘমাদে জলে ছিত্রা জলমূলফলাশনঃ। জপেল্লক্ষ জুত্রাৎ পায়দেনা-কিত্রানলে। জ্বীরামনদৃশঃ পুত্রঃ পোজেহিপ্যায় প্রজারতে।

धक वरगव नशास छेन्। विभाग क्षेत्र मृतिनृष्ट व्यवज्ञ कवणः व्यवज्ञ कवणः व्यवज्ञ कवणः व्यवज्ञ कवणः व्यवज्ञ क्षेत्र व्यवज्ञ व्यवज्

বলিষ্ঠৈঃ শত্ৰুভিৰ্মন্ত্ৰী পরিভূতোহ্বমানিতঃ। তণা হন-रत्वज्ञा नामारेखरेकांत्रगाः सर्परा गारतप्रपृष्ठिः कुदः कालानन मराभारः। चाकर्गमणताकृष्टेः Cकावश्यक्र মওলং। রণাঙ্গনে রিপুন্ সর্কান্ তীক্ষাকুলর্ষ্ঠিভিঃ। मरहत्र यहां गीतम् धरेम खत्र क्रिया । निकालि महा-वीरेतः रेननद्यक्ररदाक्रिकः। (वर्षाथजानस्कारेतव्र छ जूका महातदेव:। ननस्डिश পরিধাবন্তি: সমরে রাবণ-ত্রভ। এবং ধ্যাত্বা নিরাহারো মারণায় রিপোঃ পুনঃ 1 जूल्याः भानानीशूरेल्याभ्याः मञ्जनाधकः । चरित्र धरानः यूर्टिशेरिन माळा वगरगा ७ त्व.। देविविव तावनः धादा তথাত্মানং রঘূৰহং। বিধায় পূর্ববিৎ দর্ববিদ্যায়াদেন মার-एयर। मोजार्यगरमाकाकि उष्ठीकृडमराठजनर। करल-দ্রঘুপতিং ধ্যায়ন্ নিরাহারে। জলে বদন্। দশাংশততিলৈ হুঁহা স্তম্ভনেদংহতিং। নিধায় বায়ুখীলান্ত তল্লানা-ত্রাসয়েতি চ। জপেন্মস্ত্রং নিরাহারো জুত্যাৎ স্তিলৈরপি।

প্রাথী হটবে। ফল, মৃন ও জল দাবা জীবিদা নির্পাহ করিয়া মাদ্
মানে জলাত্তর্গত হটয়া লক জল ও পায়ন দায়া হোম করিনে
শীরামচন্ত্রের পূল্য পূত্র পৌর জ্ঞাতরে। বলবান শক্রণস্থিত পরাজিত
বাজি যদি প্রেজন রহিত ইইয়া ধ্যায়েজবুপতিং ক্রাদ্ধং ইত্যাদি সমবে
রাবণস্থাতি ইত্যান্ত মৃলোক্র ধানা করত শ্বিতীয়ায়্ত শক্রনামের
পরে হন হন ইত্যান্ত মন্ত্র লান করত শিতীয়ায়্ত শক্রনামের
পরে হন হন ইত্যান্ত মন্ত্র জল কবিয়া দশাংশ নিয়মে শাস্ত্রনী পূলোব
হেম করে ভবে কলাচ ও শক্রের বশতাপন্ন হটবে না। আব
শক্রকে বাবণক্রণী এবং আত্মাকে শীরামক্রণী চিন্তা করিয়া পূর্বে
নিয়মে জল হোমাদি করিলে নিশ্চয়ই সাধক জনায়ানে শক্র বিনাশে
সমর্থ ইবৈং। জলাত্রপতি ও ভোজন বিনীন ইইয়া শীরাম চক্র সীরা

রাগং ধ্যাত্বা বিষয়ক দীতাত্বেবণকারকং! ভাষয়ভ্যচিরং
সাক্ষাভ্রেমাতিমপি বৈরিণং। অন্যেহপি বছবঃ সন্তি
প্রয়োগা মন্ত্ররাজকে। প্রয়োগসিদ্ধিরেতেযাং কলং
নান্যন্তবভ্যপি। নিক্ষামাণাঞ্চ ভ্রনাং জপহোমাদিকর্মাত্ব।
মৃক্তিরেব ফলন্তেষামিছ কিঞ্চির বিদ্যুতে। বিদ্যান ভ্রন্মান্ত্রমাদায় শশকাদো ন সোচয়েং। নারং মৃক্তিপ্রদো মন্ত্রো
মারণাদো প্রযুদ্ধতাং। ইতি প্রয়োগদাধনং।

অথাতঃ সংপ্রবক্ষাম নানাযন্ত্রাণি মন্ত্রিগাং। নানার্থদানি রাম্প্র নানাকল্লাগমাৎ পৃথক্। পঞ্চরাত্রে অক্ষসংহিতারামুক্তং প্রতন্যতে। তথাহি — ষট্কোণং
চক্রমালিথ্য স্বরকেশরদংযুতং। কোণের মন্ত্রবণাংশ্চ বহিরন্টনলা, স্কুলং। দলের বিলিখেমাল্রং ততঃ প্রথবসম্পুটং।
পুনঃ পূর্বং পুনঃ পদ্মং দানশার্থ দলের্থ। তৈলোক্যমোহনং বীজং নামদংযুক্তমালিথেং। কর্ণিকারাং
লিথেল্লাম তার্মধ্যবিদ্ভিতং। মহান্তদর্শনেনেদং বেন্তিতং

বিঃধ্যনিত শোক্সাগবে শুরুও চৈত্ত রহিত হইয়াছিলেন এইরূপ চিম্বা করিয়া জ্বপ ও তিল্ছোন ক্রিলে অবিকূল মোহিত হয়।

শ্রীনাম চক্র বিষয় হইবা সীতাদেনীকে অবেষণ করিয়াছিলেন এইকপ ধান করত আহাব ত্যাগী ইইবা যং রাম ত্রাসর এই মল্ল কপ এবং ভিল হোম করিলে স্থানক ও বলি শক্ত হল ভাহাকে ও শ্রমণ করা-ইতে পারে। এই মন্থ রাজের ও অল্প অল্প বছবিধ প্রারোগ পাছে, কিন্তু কামী দিগের প্রয়োগদিত্বি ছিল্ল অল্পকোন ফল হল না। কামনারহিত সাধক বৃলের অপহোমানি কার্য্য বালা স্থুক্তি মাত্র ফণই হল ঐ হিক কণ কিছুই হল না। পণ্ডিত ব্যক্তিরা কখন শশ-কের প্রতি অক্ষাল্র কোপণ করেন না ক্তর্রব এই স্থুক্তি প্রার্থিক সাবেণানি কার্য্য প্রারোপ করিবে না।

চক্রমুগুমং। পৃথিব্যা সংপ্টংবাছ্যে বস্তানীকার স্থিতং।
চতুকোণং অনমথাকুণপাশাবনীরুতং। স্কুলপত্তে লিখেদেতং রোচনাল্য: শুভেইন। বিলিখ্য ধারয়েমান্ত্রী মুর্জি,
বা দক্ষিণে স্কুজে। ন তস্য বিদ্যুতে পাপং যাবত্তর প্রজে
স্থিতে। ব্যাধিন্তিনান্তিস্থারত নামিন্তিন্ত তক্ষরৈঃ।
নারিন্তিনাইস্কুলজন্তঃ। ব্রিয়ো বশ্যা
ভবস্তোব দর্শনান্তম মন্ত্রিশঃ। রাজানো মণ্ডলীকাশ্চ
সমস্তা রাজমন্ত্রিশঃ। ধনধান্যসমৃদ্ধিঃ স্থাং সর্বান কামাংশ্চ
বিন্দন্তি। ত্রাপ্তান বক্তব্যং যন্ত্ররাজং মহোদয়ং। ন
শিব্যায় ন পাপায় ন চাশাস্তায় চ কিচিং। শিস্যায় মন্ত্রনিষ্ঠায় শ্রেলিন্ত্রায় চ। বক্তপ্রদায় দাতব্যমন্যথা
নরকে গতিঃ। অস্যার্থঃ, বই কোণং চক্রমালিথেৎ পরস্পারবৈমুখ্যন ত্রিকোণযুগ্রং পিথেং। তত্তিকস্তামায়

অতঃপর সাধক বুলের নানার্থপ্রদ বছবিধ পঞ্চাত্র ও ব্রহ্ম
সংহিতা সম্মত বছবিধ যক্র বিবৃত হুইতেছে। এই সম্রতী
শুক্তবিনে গোরোচনাদি ধারা ভূর্জ্জপরে নিধিবা দক্ষিণভূজে
অথবা মন্তকে ধারণ কবিবে, বে কাল পর্যান্ত মনীবস্থ থাকিবে তত কাল
আম যক্র ধারকের কোন পাপ ও কোন বোগ জ্বিবে না এবং অগ্নি,
চৌর, শক্রু, হত্তি, ব্যাঘ্র অথবা অতা কোন অন্ত কর্তৃক পরাভূত হুইবে
মা, সাধককে ধর্মন করা মাত্র প্রীসকল এবং বিরুদ্ধ যালা ও স্বাস্কবে বশীকৃত হুইবে এবং ধন্ধান্যাদি এখার্য প্রভৃতি সমস্ত অভীট
বিশ্ববের অভিনের লাভ হুইবে। হে পুতা। ভূমি কদাচ ও এই মহাপ্রভাবশালী বন্ধ রাজ বাজে করিওনা এবং পাপিঠ ও অশান্ত নিহাকে দিবে বা,
বে শিষ্য মন্ত্র ও ভক্তি পরারণ হুইবে ভাহাকে মাত্র বন্ধবন প্রণালী বিবৃত্ত

নৈখ তবারুণবায়ব্যোশানাস্তাঃ ষট্ডুমরুকা ভবস্তি। তত্ত্ব छायरम्ब बहे द्वांगठा खेनानीर विभागतना चारामासर ममानित्यर। जात्मवात्र जात्मवात्र विनित्यः দিমান্। রাৎ রামায় স্বাহেতি বামত আরভ্য প্রণবেজিরং মতং। সেমং ষট্কোণভোদিতা। প্রকেশর সংযুত-মিত্যেত্বহিরফীদশাস্থাসিত্যনেন সংবধ্যতে। কোণেরু मञ्जदर्गान, शृद्धानिषठे (काराम हुँ करे স্বাহেতি মন্ত্র:। জীরামায় হুঁফট্ স্বাহা ইতি বা। রাৎ नामात्र हुँ करें वाहा है ि वा ) यह मल्यान यथाक मर লিধিত্বা ততো বর্জুলং রেখাবয়ং লিখেও। বহির্ট দলাংঘুরুৎ ভর্ষরিউদলং পদ্মং স্বরকেশরসংযুত্ৎ। ষোড়শস্ব্যকেশব্দহিতং। দলেবু বিলিখেমালং ভেষ্ট দলেষু চ ওঁ নমে। নারায়ণেতি মূলমন্ত্রং লিখেং। ততঃ व्यनवमः शुष्टे (मिरेक कमक्कतर व्यनवद्यमधानजर यथा छत-छथानिर्थं भूनः भूक्वव यहे रकांगर भूक्वव माखाक महिरु

स्रेट्टिश भत्रण्य विमूष कित्री छ्रेष्ठी जिटकार वाटी धक्छी यहेटकार अस्ति क'त्राय भूसि, असि, देनब'ड, बक्रम वासू छ जेगान धरे
स्विष्टिश छम्प्रत आकात সম्वारण स्वेष्ठी ट्रिश्म अस्ति स्रेट्टिश भट्टिश अस्ति विदेशित वाटकारण वास्य वास्य धर्म धर्म यहेन्द्रिश वर्जुम द्वारा अस्ति कवित्रा छात्रात विश्विष्टिश अहेन्द्रम भक्त भट्टिश अहेन्द्रम भ्राम विद्या भट्टिश अहेन्द्रम अस्ति भट्टिश अहेन्द्रम अस्ति भट्टिश अहेन्द्रम अस्ति भट्टिश अहेन्द्रम अस्ति मात्रात्रवार धर्म प्रदेश अहेन्द्रम अस्ति अस्

লিখেছ। ভতঃ কোণাগ্ৰম্প যুৰ্ভ লং কোৰয়ং কুৰ্ব্যাৎ। भूनः भन्नर वामभातर चाननत्त्वपु दिख्याकारमाद्यर वीकर क्रामिजि नाममरमूळका निरंपर। छङ: कर्नि हातार निरंपर ह वहे त्काश्मर्या वर्जु लरतथावत्र शिर्थर कर्निकायार छमारः . সাধ্যস্য বস্তনো নাম লিথেছ। কথং ভুতং তারমন্ত্রবিদ-र्जिज्य । जात्रामि नवमःशाकमञ्जाकदेविकार्छ जय । भारमी मखाकत्रदार जनस्तर माधानामाकत्राकि भूनमें खाः ক্ষরত্বরং অনন্তরং নামাক্ষরমেকমিতি এবং নাম্লোহকর: मगाशिर यानवानित्रिंद। अविषिक्तिंदः। छथा मजार-শকে ।—ত্বে দ্বে মন্তাকরে যত্র একৈকং সাধ্যনামকং । বিদক্তি ভম্ভ তং প্রোক্তং সর্বরক্ষাকরং পরং। ইভি। শাস্তিকে चारती बखर मम ग्रं लिखिचा अनुसुत्र माधानाम मम गर বিলিখ্য পুনমন্ত্রৎ সমগ্রং লিখেছ। এতৎসংপুটমুল্যতে। उथाठ मञ्जमानिथा পूर्वर देव माधाक उपनखतर। भून-শ্চান্তে ভবেশস্ত্র: সংপুটঃ শান্তিকর্মাণীতি। বশ্য মাণে

হর অভিত করিয়া হাল্পদল পদ্ম লিখিবে এই পদ্মের হাল্পদলেই क्री बोब लिविया कर्तिशटा अर्थार वर्षे रकारन्व मधा'युक वर्त्त न कर्निकारक उँकाशामिनवाक्यकमध्य विवर्षिक ৰস্তৱ নাম লিখিবে অৰ্থাং আলিতে ভুটটা মন্ত্ৰাক্ষৰ পূৱে সাধোৰ धकाकत शुनर्वात महाक्त्रवत धकेल्ला माभाकत्व त्मव व्यत्र भगाव भाषित ও अध्यक्त रही रही महाक्त्र निवित्। महाना शक्तान निविष चाह्य द्यष्ट्रां चाम्रिक धहेळा बद्धाकरम्ब, शह একাক্ষৰ পৰে আৰাৰ মন্ত্ৰাক্ষর ধর বিক্রম্ভ হকৰে ভাহাকে বিদ্ধিত बिन कर्ष इत । मासिकारी वर्ष थी। पट समध्यत्र निवित्र। भटत नम् अन्य । नामाण्य बारः वा. अ व्यादात नम् अ मजान्त्र विविद्ध

মস্ত্র প্রথমাক্ষরং। ততে। নালঃ প্রথমাক্ষরং পুনমন্ত্রিছি-ভীয়াক্ষরং এবং যাবৎ সমাপ্তিন্তাবল্লিখে। বিবিধকুত্বন প্রথিতমালাবৎ সংপুটীক্লতং ভচ্চ প্রথিতং তথাচ একৈকং সাধ্যবৰ্ণিয় মালাবৎ সংপুটীকৃতং।মন্ত্ৰাৰ্ণৈত্ৰ বিভং চেত্ৰৎ বশ্যা-কুউবিধৌ স্মৃতমিতি। পরমন্ত্রভেদনে তু আদৌ মন্ত্রৎ সমগ্রৎ লিখিত্বা পুনর্বান্সোহবশিকীন্যক্ষরাণি বিলিখ্য পুনর্মস্তেৎ সমগ্রং লিখেছ। এতদ্গ্রহু তথা চ আদৌ মধ্যে তথাস্তে इ मञ्जः कूर्वााव विवक्तनः। मत्या मत्या कत्वर मर्ब्हा वास्य-মিত্যভিধীয়তে। অয়মেব বোধ ইতি কেচিদাছ:। যোগ-ত্তেবং আদৌ মন্ত্রৎ সমগ্রৎ শিথিতা পশ্চালামাকরাণি সমগ্রং শিখেদিতি ৷ তথাচ তত্তাদৌ যোগউদ্দিউস্চান্তে চেৎ পল্লবঃ খ্ৰুত ইতি। তয়োশ্চ বিনিয়োগ স্তথৈবোক্তঃ! তথাহি শান্তিকে দিব্যে প্রায়শ্চিতবিশোধনে ৷ মোহনে मीलटन ट्यांगः श्रयुक्षस्ति मगीविगः। मात्रटग विवनारम **ह** ভুতগ্রহ বিনিগ্রহে। উচ্চাটনে চ বিষেষে পল্লবং সংপ্রচ-ক্ষতে। স্থদাণ্যযুক্তং বিশিধ্য ততঃ স্থনাম চতুর্যান্তং মহ্যৎ পদোত্তরৎ ততঃ ফলবাচকং দিতীয়ান্তৎ ততো দেহি कृर्वित वा द्वित्र डारमर। अस विधिः माञ्चलाम्निकः। अवर

ইতার নাম সংস্ট শান্তিকার্য্যে প্রশক্ত। বনীকরণাদিকে আদিতে
মঞ্জের প্রথমক্ষের তৎপর নামের প্রথম অক্ষর পুনর্মার মঞ্জের বিভীয়াক্ষর
এই প্রথমলিকৈ নামস্মাপন পর্যান্ত নিবিলে নানা পুশ্বারা প্রবিভ মাণার ভার মন্ত্রাক্ষরে পুটিত হইবে ইহাকেই প্রবিত বলিয়া নির্দিক্ষ তইয়াছে। বনীকরণ, উচ্চাটন ও মার্বপ্রভৃতি কলে বজের কর্বিলাতে সাধ্যের নাম লেখার প্রভঙ্গ প্রভ্ত বিধান আছে ভাষা মূলে ভৃত্তি করিয়া লইবেন। আবশ্রক্ষত প্রহোগালুসারে বিধিয়া শ্বদর্শন মহা- কৃণিকারাং প্রয়োগাসুরূপে। সিধিছা বেষ্টয়ে দিত্যাই বের্টিভং মহাহ্মশননেতি। ইনং যন্ত্রং মহাহ্মশনিমন্ত্রেণ বেইয়ে নিতি। মহাহ্মশনিমাই। হ্মশনি মহাচক্রাদ্ধ ধন-ধগান্তক তৃষ্টভয়য়য় ছিলা ছিলা ভিলা ভিলা বিদারয় বিদারয় পারমন্ত্রান্ধ প্রস্ প্রস্ ভক্ষয় তাসয় তাসয় হাঁ ফট্ স্বাহেত্যনেন বেক্তিং যথা ভবতি তথা লিখেং। চক্রম্ভমং এতত্বংকৃষ্টং যন্ত্রং। পৃথিবীসংপুটং বাহ্যে পৃনিবীমগুলং চতুজোলসংপুটং যুগ্রং ব্যন্তলিঞ্ভমন্তকোলনিতি যাবং। মন্ত্রাক্তবং ভদেব যন্ত্রং প্রতিকোশলিভিতলাকানান্ত্রিকং সংবদ্ধং লিখেং। ভতো বহীরেখায়য়ং লিখিছা অনন্তরং চতুজোণং কুর্যাং ভংকোণেয় ক্রোং লাখিছা অন্তরং চতুজোণং কুর্যাং ভংকোণেয় ক্রোং লাখিছা অন্তরং চতুজোণং ক্র্যাং ভংকেনেগ্রু ক্রোং আং লাখিত অন্তর্শানাবনীবীজানি লিখেং। ভ্রুপত্রে লিখেনেত-ক্রোচনাল্যঃ শুভে হহনি। এভচ্চক্রং ভ্রুপত্রে ভংকামনার্থী বিহিতাধিকারী রোচনাল্যঃ বোচনাকুল্মচলনকপূর্ণ;

চক্ররাজ ইত্যাদি মূলোক মংগ্রেদর্শন ময়ে যন্ত্রকে বেটিত কারবে।
তৎপর বন্ধের বহির্ভাগে ভূপুর অর্থাৎ চতুকোণ হয় লিখিয়া চতুদ্ধাণের
আতিকাণে বজ্রুপ্রতি অল্বিত করিবে অন্তর বিভিন্তা চতুকোণ রেখা
দিয়া প্রাত্ত কোনে কোঁ আঁ লাঁ এই বীল্লের দারা ভূপিত করিবে।
বজ্রেক প্রয়োগালুগারে গোরোচনাদি দারা ভূপ্তিপত্রে লিখিয়া শুরুণিবলে
বরের চতুদ্ধিকে প্রাণ্যাকিটা মন্ত্র লিখিয়া ধারণ করিবে। মূলে এই
সম্বন্ধে বহুবিধ মত্ত বহুবিধ প্রয়োগ লিখিত আছে দৃষ্টি করিবেই
বোধগমা হটবে। কামনাবিশেষে শেখনী কাল ও জ্বাাদের বিশেষ
লিখিত আছে প্রবিত্তরে সম্প্ত অনুদিত হইল্যা গ্রহণার যন্ত্র ও
নানাবিধ উল্ভাকরিয়াছেন কার্যা বিশেবে শক্রের ও বিশেব মূলেই শ্রশাক্তী
লিখিত বলিয়া অপ্রাণর বন্ধ সকল ক্ষরাবে প্রিভাক্ত ইইলঃ

वानिखरियाः अध्यक्ष्म अक्ष्रभूमानि विरम निरंबर देखि। अर्डिन अपूर्कर खर्वां भारती वर्षे द्वानर क्रक्र निस्थर ততো বর্জ রেথাবয়ং ভডে। হউদলং পদাৎ ভলৈ কৈৰৎ मलर त्कनंत्रवययुक्तर ज्ञाननावान्शृक् वर्जुनद्वशावयर ততঃ यहेटकां १९ छटा बाम गमनः श्रम्य श्रम छरेवन दन्नवा-ষয়ৎ ততঃ ষট্কোণং চক্ৰং ভতন্তবৈধৰ রেখাৰয়ৎ তত णानायहे एकानमधायम वर्जुनमथान कर्निकारधा मरबा माधाः नामगरिष्ठ र यद्वः निर्थय। यहे कार्ष्य मञ्जर्गान् निर्थर। ততোহউপত্তেয়ু অতীক্ষরে নারায়ণমন্ত্রৎ লিখেছ। পতা-केटकमत्रवास्यू यथात्ररथार वाष्ट्रमत्रतान् नित्थर । छमन-खन दन्धावसम्बद्धाः कानिनकालान् श्रनः वहे दकार्षव् ষক্রবর্ণ.ন্। ভতোংনন্তরবর্তুলরেখাদ্যমধ্যে অমুষ্পোণা रेंद वाना वाग्रा कीन हेद वि उद्द वाग्रा मर्व्यक्तियानि অমুষ্য বাৰ্ডমনশ্চকুস্ত কুন্ডোক্রআণপ্রাণ। ইহাগত্য হ্রথৎ চিরৎ তিষ্ঠন্ত স্বাহা ইতি প্রাণপ্রতিষ্ঠামন্ত্রং নিখেৎ। অদ্য তু विरमस्य अक्रमुशास्य खाउराः। कृष्णव्हानामाकाकः **ज्ञा बानमनत्म्यू दिवानाकारमाद्यवीवर मांगाममिह्जर** ততে৷ বর্জুলরেধান্মমধ্যে হৃদর্শনমন্ত্রং অউকোণেযু প্রতি-कांनर वज्राकांत्र निर्धर। छ। विश्वकृत्कार्ष्य भागाम् नावनी बीजानि लिएवट । देखि विलिश शांतरस-দিত্যাদি স্পাষ্টার্থং। অত সর্বা যন্ত্রসাধারণমূহর্ত।দি বিশেষো মন্ত্রাৎশকোক্ত উচ্যতে। তথাচ ছদিনে শুভনকত্তে ছ্দেশে শল্যবন্ধিতে। সুশিষ্যস্তকে আচাৰ্য্য: শিষ্যো वा जनवावज्ञः। जेनअगूर्या वा भून्वांगा जेनविना धानगा हा

कुक्र वित्यपंतर (१वर छट्डा यखर नगांनिव्यर । कांग-नाष्ड्रात कृ कानविराणवश्च कथारा । वन्नाक्राको निर्धं পুষোহদিতো বিষেষণং স্মৃতং। আর্দ্রাথ সারণং প্রোক্তং त्रचा काळाहरन करवर । जथाकामनाधीरना रमधनीविरण বোহলি। তথাচ লেখন্যা চ লিখেদ্যন্ত্র বশ্যে দুর্কাঙ্কুরো-খ্যা। আকৃত্তে তু করজোখা মারণে চ নরাছিল। গুড-কর্মণি বিজেয়া রাজবৃক্ষোদ্রবা মতা। শান্তিকে পৌষ্টিকে टेव्य ठामुकाम विश्वीख्या। मर्वाभन्यात्रंन टेव्य कन्नत **खडातर्णि वा।** विख्यार्भागत देव भिनश जू क्षन-मार्छ। धत्रवर्षां विषया भर्ष्कावेन थर्म कीरबारन ष्ट्र छथानगा **छन्। वा ना** श्री स्थान । स्थान स्थान । শত্রুণাং মারণং তথা। লিখিছা সাধ্যেৎ সর্বাৎ পীত-वाख्य नानाथा। जबाखवारज्याक्ति। सरेवारेक्टवर विदेष-**खबळम्मना ७ ऋरत्राहरेन:। छेनी त्रकी त्रशूरे खन्ह ना**ख कार्या निहांतना । नारमस्यमम्बना देव ख्या वर्गा ह त्राहना । ভবৈধ কুর্ব্যাদ্শত্রেন চিতাঙ্গারেণ সোগা। তাড়নোচ্চা-টনাদীনি কুদ্রকর্মণি সাধয়েৎ। থিষাক কীর মুক্তায়াঃ मर्यारिश मोत्रवर श्रृष्ठः। मञ्जाकर यञ्जताद्यक अवर मः निश्र यक्र छः। शृक्षत्रम् गक्त शूष्मिरिता श्रीका ८ पवः वाग एकः। जिल्लाहरबर्ष्टिजः कृषा छजः পृकास कांब्रहरू। (प्रवर इन्द्रगढः कृष् माधरप्रद माधरकालमः। करत कर्छ निः খায়াৎ বা বথ। সমিহিতং ভবেদিতি। ফর্দেশে শলা-ৰৰ্জিতে হুদেশে সমে শুদ্ধে বা শল্যকন্তি অহাদি-त्रहिट्ड हेडार्यः।

अथ विकीयः रख्यः। नाम मधानदः मत्या सर्हे कानर বাংয়তো নিখেৎ। মন্ত্রাক্রাণি কোণেযু কোণয়োর্শ্বমো-इनर। मार्ट्य छनर वांट्र क्लारन विनिधिनिषर। ब्रह्म. नाना नित्वादयन ठालराइ थानिताधिन। मधा निर्मि रोमधानः মন্তামিপি বশংনয়েও। অস্যার্থঃ। নাম সপ্রণবং মধ্য ইত্তি আলে লিখিত বর্ত্ল রেখাবয়মধ্যে সাধ্যস্য বস্তনো নাম व्यनवष्यमभागुकः नित्थः। वर्षे द्वां वर्षः व द्वाद्वा नित्थः। **এতচ্চ প্রাপ্ত ক্রারেণ কার্কি। খ্যবর্তুল রেখাম্মাদ্বিং-**लि (४२। मञ्जाक शांव दकारण वृ अँ त्रामाग्र क् कहे वाहा, রাৎ রামায় হুঁফট স্থাহা ইত্যক্রান্যানি বা। चार्टिक यक्न नाणि यहे एकार्यम् यथाक्न मर निरंथर। कागरवार्विष्याहनः चायार्वाशाध कागरवार्यास्या মোহনং ও জী ক্লী জী দাশরথায় সীতাবলভায় ত্রৈলোক্য द्रमाहनाय नमः देि मञ्जर यथामखनर निर्थर। मारहेकर-मधनः वाटश वर्षे दकान विद्धारण श्रेष्टकान ठकः नित्य मर्द्भव दिवार व वकात विलियं । क्यारन विनिर्धित छ । देनर यखः नत्राभवद्यक्रभारम निर्थर। रेकप्र रेवाविकाह রক্তেন অনামিকোখেন কনিস্তাদ্ধিতি তাঙ্গুণীনিগতেন इटकन मिर्धिन डार्थं । जांभराद थानियां ग्रेमा मञ्जातन् मञ्जर महञ्जर कर्णर। मछिनिवनः शानित्रमिखिः थानिवाधिना जानस्य । (भवः ख्वाकः।

অথ তৃতীয়ৎ যন্ত্ৰং। ইদমেব পরং যন্ত্ৰৎ নায়াবীক্সেন বেষ্টি ঃ । ভূৰ্ফে বিশিষ্য বিধিৰ্থ সাধ্যমূক্ত্যন্ত্ৰসালিখেৎ। কৃষ্য পাণানে খননং সন্ধ্যাধাৎ বিজয়েশলং। তিক্তি দি- निम्मदः नामाकिर्यन्यायहर्। जनार्थः। हेमस्य नाः यद्य हेमस्य यद्यः छेरक्यः, कथिन्छाह मामावीट्यन दिख्छिः होगिनि वीद्यन निम्मदः निथिन् हिष्मियः हिष्मियः प्रदेशः भवः जवन् । ज्ञानि वीद्यन निम्मदः निथिन् हिष्मियः विभिन् ज्ञानि । ज्ञानि विभिन् ज्ञानि । नामाम्हान्याम् विभिन् ज्ञानि । नामाम्हान्याम् विभिन् विभागः नामाम्हान्याम् विभागः नामाम्हान्याम् । नामाम्हान्याम् । नामाम्हान्याम् । कृष्णः भामादन प्रमाः वाक्षिक्षः भञ्जनः भूषे । कृष्णः निमाणः मनमाह्यम् । कृष्णः निमाणः मनमाह्यमा । कृष्णः निमाणः निमाणः निमाणः विष्यापानः निमाणः विभागः निमाणः विभागः निमाणः विभागः विभागः विभागः नामाणः विभागः वि

ज्य हर्ष्य यखर। विकीशांक तमः युक्तः माम मर्पा निर्थमू न। त्कार्षम् कृत्रतम् वर्गान् विद्या कृत्रम श्रमः । वाक्य कृत्रम श्रमः । वाक्य कृत्रम श्रमः । वाक्य कृत्रम श्रमः । व्या कृत्रम । व्या कृत्य । व्य कृत्य । व्या कृत्य । व्या कृत्य । व्या कृत्य । व्या कृत्य । व्य कृत्य । व्या कृत्य । व्या कृत्य । व्या कृत्य । व्या कृत्य । व्य कृत्य । व्या कृत्य । व्या कृत्य । व्या कृत्य । व्या कृत्य । व्या

क्रिक्र मधनर मर्छे कानाविह धं भूताकारर मधनर निरथर। বারুণং পরিতো লেখ্যং বংইতি বরুণবীরং স্পতে নিরম্ভরং লিখেৎ। ততশ্চত্ফোণ্যওলং সর্বসাধারণং তৃপুরাখাৎ পাশাকুশাবনাবীজ্যুক্তং লিখিয়া লাক্ষার-**टमनाटवर्केट्यः भन्नाटेला** कलटमामटेकर्गन्नानिमात्रक्टरेनः কুল্পং প্রয়িত্বা তিম্মিন্ কলদোদকে ভদ্যমুৎ নিঃকিপেৎ ভন্ম থে কল্লিডং দীপং কপিলাজ্যেন পুরিতং। তদ্য কৃষ্ণ-য মুখে কল্লিভৎ দীপৎ কুর্য্যাৎ ক্পিলাল্লভেন পুরিভং শরাবং ক্রয়া ইতার্থঃ। মন্ত্রেণাবাহ্য দেবেশং শ্রীরামং দাপাধ্যস্থান্ত আবাহ্য বিধানত ইত্যস্যায়সর্থঃ। জীরাম-মন্ত্রস্যাগন্ত্য ঋষিঃ পঙ্কেশ্চলঃ পরমাতা দেবতা রং ই ত বীজং স্বাহেতি শক্তিঃ। ককরাণান্ত একা ভৃগু-खंतका विचा माखार्थ (शोडमः। शूनरङ्गा वामरणव मह থাষাঃ পরিকার্ত্তিতাঃ। তথা ছন্দাং দ্যাপ জমেণ যথা গা। ক্রেন্ফ গতুষ্ বৃহতী ৭,ঙিজেরেবচ। জিফুপ্চ জগতী চৈৰ ছন্দাংস্থ্যক্তানি সূ<sup>ৰ্</sup>রভিঃ। দেবভাণ্যক্র-ক্রমেণ। পরমাত্মা ২৫.1 তুগা সূর্য্য: ক্ষন্দঃ পিতামহঃ। এতাস্ত দেবতাঃ প্রোক্তা বীভিহোত্তস্ত দপ্তন:। বর্ণাস্ত প্রথমঃ খেতো বিতীয়োহ্মিণমপ্রভঃ। তৃতীয়ঃ পিকলবর্ণচং. ভূর্থে। হরিভপ্লভঃ। পঞ্চমঃ কুষ্ণবর্ণ: ন্যাৎ ষষ্ঠঃ পীত। সমপ্রভঃ। সপ্তমো নীলবর্ণঃ স্যাৎ এতে বর্ণাঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ। চতুর্ণামাল্যবর্ণনোং উলাত্তঃ কথিতঃ পরঃ। অ'রতঃ পঞ্চো वर्गः यर्छन्टर्गारुकः। छिनास्तः मश्रुरमा वर्गः ऋताः त्थाका महानच। **३**ट्डाड६ थानामामानि विनिद्याभर

শংকার্ত্ত ব্যাপকন্যাদং কুছা স্বাহেট্ড্যনেন কর-শুদ্ধিং কৃষা রাময়ে হু ফড়িতি শির:শিখা কবচ-নেত্রেষ পঞ্চাকরাণি ন্যােশ্ স্থাহা অস্ত্রায় ফড়িতি অন্তং দিকু বিন্যাসেও। এবং মড়ক্ষবিনাদঃ। ততে বোনিশরচাসমুদ্রাঃ প্রদর্শ্য প্রণবেণোর্দ্রমূগৎ কুরা ব্যা-मनभागाः काषामूक्षेमि छङ्। मिन्या ख्रास्तर (मनर निराक्षणकृतिकर। नाकरन लक्ष्मनर भारत कर्नकांकर কির।টিনং। বামভাগে জগদ্যোনিৎ প্রকৃতিং পরসেম্রাং। भी डा९ क्वक्लाबाको९ (४ ड । खु व छ व डा९। भवी-ভরণসংযুক্তাং বিভুলাং রল্পুলাং। ধ্যাত্ম লক্ষত্রয়ং জপ্ত। অশোককুর্মৈর্নে২। অনেন বিধিনা সিদ্ধান্তঃ मन. क्ष्यमुश्यन्तर्रात क्षिष्ठभौति यहरकमन्यः (प्रवर चाराइनमूज्यानीस चारानीमित्रधोकत्रगारिमूजाः अन्ध षष्ट्रनामि क्वा त्यानिश्तानातु अनुभा छ । সী গ্রাৎ লক্ষাঞ্চ গদ্ধনীদ্য উচ্ছ ততে। গুরুং গণপাতং **क्यालान** जात्रा लाक्यानान् क्रांश उर्पार বিখক্দেন গরুড়নারদাদি ভক্তান ততো হলুমৎ প্রত্রীবাদি-পরিণারান্ আবাহয়েৎ। তত এতৎপরিবারস্থিতৎ **८मवर (साइएमाना देव व उर्जा अवर क्यां तैर** ৰা অভ্যৰ্ক দীৰ্ণমধ্যে কিং ভিষ্ঠতি প্ৰোভ্যক্ত্ৰা দাপ্ৎ थमर्भः ॥ । তত সংলক্ষেমন্ত্রা রূপং ভগবভঃ ফুটং। ইত্যাদি স্থগমং।

অত্থ পঞ্চাং যত্রং। ক্রিকান্তর্গতং নমে ভূতীয়াক্ষর

गिर्कि जरा सिकेश्विरतंत्रु मर्गिश जर्लाश्रेनाः भित्रत्वः केराय । भार्विवर मधनर छक् विनिध्यम् छत्वा निभि । अङ् কেনাজবৃক্ষা কোটরে তবিনিঃ কিপেএ। মুখতভো গঙি: স্তম্ভে জিহ্বাস্তম্ভে ভবত্যতঃ। ইত্যদ্যাৰ্থ:। কণিকাস্ত-প্তিমিতি ষ্টকোণাস্তৰ্গত্বৰ্লৱেশালয় মধ্যগত ২ নাধ্যস্য নাম তৃতীয়াকরগর্ত্তি ৩ৎ সাধ্যদ্য বস্তুনো নামমন্ত্রদ্য বা ইত্যনেন তৃতীয়াক্ষরেণ সংপুটিতৎ লিখেদিত্যর্থ:। শ্বিটাস্তcaষু সংলিখ**েওঁ রামায় হুঁফট**ুইতি খ্লিফীন ্ষড়্ বর্ণান ্ ষট্কোণেয়, লিখেৎ। তভোহনাঃ পরিবেইটারেৎ অন্তরং স্বাহেতি বর্ণবয়াভ্যাৎ পরিবেট্যেৎ পার্থিবমণ্ডলং वाट्य পाणाञ्चणावनोवोजनिह्छ ह्यूकागनिह्छ वरि-লিখিং যত্বান্ ন্যাসাদিকং কৃত্ব। আসনে আত্মনো রক্ষাং বিধায় লিখেছ। কাম্যকর্মবন্তম্য দৈবাদ্যৈরভিভবসম্ভাত। ভথা চ কামাকৰ্মপ্ৰস্ক্ৰন্য শুভদ্যাপ্ৰাশুভদ্য চ! অরিষং ভলতে মন্ত্রঃ সিদ্ধরং তদ্বিপর্যায়াৎ। তদ্য পাপা-खद्रां शतिहार्या महर्षे थाएँ मार्याता पृश कामाकर्य কুৰ্যাং। কান্মন্কালে নিশি রাজৌ দার্ঘামাত্পরি চতুর্থ বামাদর্ক।ক্ যন্ত্রং সম্পাদ্য প্রাণপ্রতিষ্ঠাৎ ক্লবা পূজাং বিধার জতুকেন লাক্ষাবেক্য সংস্থাবনভিমন্ত্র্য অঞ্চলুক্ষ্য কোটরে পলাশর্ক্ষ্য উদরে ভদ্যস্ত্রং নিঃ ক্ষিপেৰ। শেষঃ হুগমঃ। অগন্ত্যসংহিতায়াৎ দে ৰজে करबारक देकेरन। मर्त्यवार नाममञ्जानार खरवाः প्रा - প্রশ্বাতে।

व्यथ वर्ष्ट्रर रखर। वार्षा वहेट्नानगृहरू

श्रीमार्जनहिक्सा । १०६

ততো হতং লিখেগুনে। দলানি বিলিখেদতে। ভারত माक्र वृत्रकार। मर्यानका मण्याद राकर मर्यमाना इतर क्रमस्त्रक्षि एकाल्य गांधायाम्बाक्रवर्गाईहर्। क्योक्र বিনিখেন ভূরত্তৎ ক্রোড়ী কুতমন্মধং ৷ ততন্তৎ পঞ্চ বী-वानि भूमवावर्खस्याद्व। भूनक्ष्याक्रस्तरेव उत्तव श्रवि. टबक्टरार । सङ्काना शिरकां निम दकार के दिवर किया हार पर ख्था (कानक्शात्मयू होँ कें. एव वितित्थe छ्यी: I ह नोक् थि (काना धर (क्न द्रार्धिश ह खतान्। मानाः मखना वर्गाः स्राम्हवातिरमञ्च मक्ष छ। दर्गाः मखमरनास्व ष्ठे यहे शकाकरम मरन। श्कारजा त्वकरम कारेमाछक मर्त्वक ज्राभिन। निधिनिक् निर्येषीकः नत्रनिश्हवता-হয়ো:। কৈ । হুঁ চৈবেতি প্রবাদভূগৃহে চতুরত্রকে। যজেংশ্মিন্ সম্গারাধ্য ভতিং মুক্তিক বিন্দতি। এতদ্-यख्र ममानिश्र मिनर्ग ताजर अरहे। कृष्ट वा ममा-গালিখ্য গুড়িকীকৃত্য ধারয়েৎ। অপুত্রো লভতে পুত্রান্ चर्रा धनमार्थां, यां । किमल वक्तारकन मर्किमान्न धनर নৃণাং। যন্ত্রমেতৎ সমার্থাতেং ধারণাৎ পাতকাপহং। অস্যার্থ:। ষট্কোণাদি ধরণ্যস্তং মনোহরং যন্ত্রং লিখিয়া क्रमा यसमा मार्या ख्वाकः यथा छवछि छथा माधार्या। क्षत्रशिक्ष् जर जना जीवामा गोकः निर्देश जर्मन्तरः मनात्वन (का कि कुछार्वामिरिकेम जारिर्गर्भ नावर (वक्षेत्रर । अन-र्मनाक्त्रत्न ह भूनखनाक्षर (विकेशाद । अकेननार्वाहर्म-শাক্ষর বেক্টনমিভি, বশিষ্ঠকল্লভেদঃ। শেষঃ স্থগম ইভি। देखि देखि वर्ष्ट्र यवः।

##."

जन मखन यखः। यह कानानि ध्वनाखर भूनवनम् विनित्ध দ্ধ। তদ্য মধ্যে লিখেতারং ষট্ত কোণেছপিক্রমাৎ। মৃশ-মন্ত্রাক্ষরাণ্যের সন্ধিন্ধ ক্ষেত্রাক্ষরা । মায়াৎ গণ্ডেন্ কি-अस्य ज्वागर त्मरं र मङः। भरतम् शृतिकानामस्या (नर्गः क्टरमण दि। प्रभाकारतम मध्यक काणीन बाअनगान हा षिश् निष्यू निर्थवोज्ञ नातिभिरहवताहरहाः। **अ**जन्यसुर **हितर हाछ मात्रावत्रगमर्फाराय । स्मीनर्ग त्राक्र छ छोड्ड** निर्श्वित्रमाहरद्वे । यनन्तु পूर्वन्क्ष्टक्ष्य मञ्जनः। ना বিচক্ষাে অন্যার্থ: চতুরত্রে নেফিত্ন্যাফদলন্য ক: প कांगनमा मत्भा यहे (कांनः। जन्मत्भा व्यनवर यहे छ दकाः ণেষ্ ষড়কবর্ণনিজ্বাৎ রী কং বৈ বেল রঃ ইভাকা-নায়ো দেকে শিশক্ষিয়ু ক্লাঁহাঁ কোণগণ্ডে অফ দলকিঞ্জ-ক্ষেযু স্বরান্ তৎপত্তেষ্ট স্প্রাণিক্র মেণ সপ্তচ্যারিৎ শৎ মাল।মন্তাবট্ বট্ সংখ্কান্ অফীমে পঞ্সং: খ্যকান্লিখেং। হুঁ জানকীগলভায় বাহেতি দশাক। cत्र विहर्त्वकीयद्यो छटेलन कानिकाटेखन्ड निग्नि'नकू কোঁহঁই ত নৃদিং হবরাহনীকে লিখেৎ। শেষঃ স্বস্প টঃ। चवाकेमर राष्ट्रर । चरेजरा क्रिमशरकान राखर क्रिजर প্রতন্তে। অগন্তা:।-- वक्तामि ताममञ्जना यञ्जৎ कवह-मिन हर । श्रांत्रां विमा मर्जानार कांग्रद्ध मर्विमिक्सः। নশ্য সর্বপাপান বিপদো ষান্তি সংক্ষাং। ভূতপ্রেত-পিশারাদাাঃ পলায়ত্তে চ দর্শনাং। মিত্রাণি স্থিরতাং যাত্তি भवर्षा याखि मिळ्डार। छहाः धनाममाग्रासि मानार

यासि गरीसृडः। कियब वहानास्क्रिन नास्त्रानन द्यन-

व कि:। यः खन तांत्रहत्त्वता वक्षत्रक्षत्रतिका। (कार्रिष्ट भरिक्विर्मछ।। अरिक्विश्वविष्यिकः। विनारमञ्जूष्यर চক্রমেতান্মন কবচৎ শিথে ৷ দ্বাদশাক্ষরবর্ণান্চ সুংগ मारख्य विनारम्य। अञ्चरमामविद्यामानार आपिकगा-क्तान ह। ताचनामीन नामानि नमकात्त्रण त्याकत्त्रव। त्य भितः পाषिकौर माद मर्वरका राकार्याकना। माना-था। तर्यु उर में केश यः (६०७) का नर्ण गृह्य । विकास निक् বাস্বণিন্ নারসিংহমতঃ পরং। লক্ষীপাশাসুশার্শভ বার হং ফট স্থর বকং ৷ স্বাহেতি রামভদ্দ্র দ্বাদশাক্ষর-মীরিতং। সৌধর্ণে রাজতে পাত্রে ভূর্ক্তে বা সমাগা-লিখেৎ। অথবা ভাত্রপাত্তে চ গুড়কীকুতা ধারয়েৎ। यावञ्चावस्य (गोवर्ग कोर्या विश्वास्तिका। पुरन वामभवर्षांग **उनकर** छाञ्चभाजरक। धवर त्मशर विद्रभः ষেণ যথে শক্তিঃ প্রতিষ্ঠিত।। এতাং রামবলোপেতাং ইত্যাদি শ্লোকষট,ককং। য<sup>মাত্ত</sup>ঃ প্রদেশেষু হতাকারং यथानित्थः। नर्त्वहृत्छोत्रभगमनः नर्त्वालस्वनामनः। षागुवादताना देशवरी भूजरशी जीववर्षन १ नत्वान कामाः নবাংখতি বিফুলোকং স্গচছতি৷ ভস্যার্থ:॥ বক্ষ্যামা-ত্যারভা বক্ত প্রর সংক্রিতারঃ স্পার্টং। দাকণোত্র-**त्रिभा ब्राह्मा श्रीह क्षाक् अन्तिम त्र्राह्म हिम्स्क इंगिट** इ षाः-९ गरिकार्छकाभिछ विश्व । अखिमत्कारेष्ठ्र गरेषा ८३ थ।-भकतरान धकविरभांक कार्कन ज्यांस। टेटर गर्किर शक्ष्वप्रविष्ट्रावेष्ठर छेख्यर ठकर विनारमर। তত জীরাম কবচৎ লিখেৎ। তদ্যথা দাদশাক্ষমতা বর্ণানাং

याथा धोकरकन प्रांचवांग्र नगः हम मिदः लाक्षिक तथा-किंडः गरभूषिंड (मरेक्क्श्यान कार्षे अमिक्शाम अवमू-পরিপংক্তাবাসুলোম্যেন দশপদানাৎ সমাবেশঃ। অধ্তন भरको बाजिलास्मन भूनिक्निहीरज्देनर मञ्जवर्गितिकः **टकन मर्श्रुटि जानार छे** प्रतिजनानार मम्प्रमानार ममाद्वण । जिनान कर्म वारक्षा कित्र कर्म कर्म कर्मा क्रिकार मर्था भाषीयाः क्त खरमव वर्षमार विभावेखर निर्दर। **ध्वरमक्विश्मिक्टिकार्कानार विभिट्यानः। छटतव द्वाम्म** বর্ণাক্সকৎ মন্ত্রৎ প্রদর্শনিত স্বেড্যাদিনা। সৌবর্ণ ইত্যাদি মন্শক্তি: প্রতিষ্ঠিতেতান্তং স্পৃষ্ট:। তত্ত্ব যাবজ্জীবমি: ক্যাদি তাত্রপাত্তে ইত্যন্তং সর্ববিদ্ধাণারণং। এতামি-জ্ঞাদি শ্লোক্ষট কং যন্তাছছিঃ স্থানে বুক্তং যথা ভবজি ख्या निर्देश दिन्द न्य के । न मखि छ बरवा यगा टेनव नीकाविधिकमधा त्रांगतकार यनदत्रव कुलगीनलमः र्णायः। भोकास्वर्भाष्टनाणि देनज्य कलमवाणारज। हेजाशस्त्रात्नाकचास्रामनकाममायज्य थानिकनाकरमन ८० जि हकात मृंह छार्थर अञ्चास्ट ताकर कर्के गर। (हमी भन्मा वीजर महार मध्य वीजानावा निरंथर। हर मः माहमिछि वागर खेगानाामिकमालि. थर। देर केर निर्व नारम्य भार्य छेर छेर ' (आद्य छर्चन हा विस्थरमध्येममार्यो ह भावजी निर्मान मुकः। यमत्रामाम विषाद वन्नधानाम थीनहि। छात्रा यमः आहातमार। देखान् यमगाम्बानः शिविभवर विद्या नित्यरः। यद्भवा वयवानारम धाः विकार वानमार नित्यंद । वाह्याननाहत ।—पूनि म्लाकेद

শবস্পৃষ্টং যক নির্দ্ধাল্যদঙ্গতং। দক্ষমাল জ্বতং শীর্ণং যন্ত্রং ক্ষাতুন ধারয়েছ। ইতি দর্ববিষয়ে সাধারণ ক্রেমঃ। ইত্যক্তমং যন্ত্রং। ইতি শীরামার্কন চ্প্রিকায়াং চতুর্থঃ পটলঃ।

চৈত্রাদিমাসকতাং যদধুনা তং প্রকাশ্যতে। রামচন্দ্রদার দিছার্থং যতুক্তং নারদাদিভিঃ। মধো শুক্তৃতীরারাং জানকীরমণং প্রভুং। রাজ্যোপচারেঃ দংপৃদ্ধ্য মাসমান্দোলারে কলোঁ। দক্ষিণাভিম্থৎ দেবং দোলমানং হরেশরং! স্বপৃত্তিতং সকৃদ্ধী সর্ব্বপাপৈও প্রযুচ্যতে। চৈত্রে মাসি নিতে পকে ভূতীরারাং রমাপভিং। দোলার্কৃৎ সমভ্যক্তি মাসমান্দোলয়েত্রদা। দোলার্কৃৎ প্রপশ্যন্তি যেহপি কৃষ্ণ মাধবে। অপরাধসহকৈস্ত স্কুলিভে নাজ্ম দংশরঃ। দোলার্কৃদ্য দেবস্য যেহত্রে কৃষ্ণভি জাগরং। স্বিপুণ্যক্লাবাপ্তিনি।মধেনিমিষে ভবেৎ। ইতি গারুড়ে দোলাঙ্মবঃ।

সংগ্রতি নারদপ্রভৃতি খুনিগণ করুক অভিহিত চৈত্রাদিনাস সমস্তেব করিব্য কার্যা সকল বিবৃত হইতেছে। চৈত্রমাদের করু পক্ষীর তৃতীরা তিথিতে রাজ্কীর উপচার দ্বারা অর্জনা কবিরা কলিকালে একমাস পর্যান্ত শীরাম চল্লকে দোলার্ল্য করিবে, দোলমঞ্চে দক্ষিণ মুধ হইরা দোল্লামান ভগবানকে একবার দর্শন করিলেই সকলপাপ হইতে মোচন হর। নাহারা বৈশাথ মাসেও ভগবানকে দোলন্তিত দর্শন করে তাহাবাও ভগবৎসরিধানে সহল প্রকার অপ্রাধের ক্ষমার পাত্র হর।যাহারা দাগ্রণ পূর্মক ভগবানের দোলোৎস্ব করিবে ভাহাবিগের প্রতি নিসিবে সম্ভ পুণ্য কল লাভ হর।

হৈত্ৰশুক্ষনৰম্যান্ত কৰ্ত্তন্যং ত্ৰতমূত্ৰমং! অগস্তাসং হিতায়াং যশাহাত্মাং সমুদীরিতং। 🖺 রামনবমী প্রোক্তা কোটিসূর্য্য হাধিকা। তিম্মন্ দিনে মহাপুণ্যে রামমুদ্দিশ্য ভক্তিতঃ। যৎ কিঞ্চিৎ কুরুতে কর্মা তন্তবত্যক্ষাং নৃণাৎ। উপোষণং জাগরণং পিতৃকুদ্দিশ্য তর্পণং। ত স্মিন্ দিনে তু কর্ত্তন্যং ত্রন্ধপ্রিমভীপ্স্ভিঃ। রাম এব পরংত্রন্ম তদ্দিনে রামতোষণং। ইত্যাদি মহিমা। নিতাং নৈমি-ত্তিকং কামাং ভ্রতক্ষেতি বিচার্য তে: নিকামাণাং বিধা-নাত্ৰৎ কাম্যতা নোপদিশ্যতে। মুমুক্ষবোষ্পি ছি সদা শ্বাসনব্মীত্রতং। ন তাজন্তি স্বর্জেষ্ঠ। মুনীন্দ্রোহিপ বিশেষতঃ। সদাপদস্য গ্রহণাদেতৎ স্ততিপরং ন ছি। নৈসিত্তিকঞ্চ ন তথা সদেতি আগতে যতঃ। যাৰজ্জীৰ-विভাবাত্ত मनामग्रार्था व চानाथा। टेहरळ गामि ववगगस्त ভরপকে রঘতমঃ। প্রাহানীৎ পুরা ত্রকন্পরং ত্রিকাব কেবলং। তিমান্দিনে তুকর্ত্রণং উপথাণ্ডভং সদা। নিত্যমেৰ ভবেত্তস্থাৎ জীরামনবমীব্রতং। নৈৰ ভূ দ্যা-

অনতার রামনবমীএত বিবৃত হইতেছে। অগতা সংগ্রাণে শহর বত্তর মাহাত্মা কীর্ত্তিত হইরাছে। তৈত্র মানেব শুক্র শক্ষীর নবমা তিথিতে এই প্রত করিতে হর, রামনবমী তিথি কোটি প্রাঃ গগণের দিবসাপেকার ও অধিক প্রাণারিনী, এই দিনে যে কার্যা ক'ববে ভাষা অক্ষর কল্পাদ হইবে। এই দিনে উপবাস আগরণ এবং শিতৃত তর্পণ করিবে। রামই সেই পরস প্রত্ম কভত্তবে ঐ দিনে রাম সন্তোবিত হইলে প্রক্ষাযুদ্ধা প্রাপ্তিহর। এইপ্রত নিভা, নৈমিভিক ও কাম্যা ভোগে অধিষ্ট অথমত বলা যাইতে পারে কিন্তু কামনারহিত সুমুক্ত্রিব সর্বাণ কর্ত্তবা বলিয়া ইহার নৈমিভিকত্ব ওকামাত্র নির্মাচন কর্ম না। তৈর যাগের উক্ল পক্ষীর নবনী দিবসে সেই পরম প্রক্ষ

দনিত্যহং প্রত্যকং দ্যাদিতি প্রতিঃ। সূর্বাগ্রহে কুরু-**टक्कार्ख महामारेनः कृरेल्य्य्यं हः। यद कलः जनवाद्या**जि জ্ঞীরামনব্মী ব্রতাৎ। ইত্যাদি। নৈবং ফলশ্রুতে নিত্যং লক্ষণাভাবতে: ২থবা। ন নিত্যতা তত্ত্ব নাদ্যো হগ্লিছো-जारनो निर्वाव ३३। नारका २० उक्त वर्ग क्रा महारमाय-অন্ত ক্ 🖟 । প্রাপ্তে শীরামনব্যাদিনে সর্ত্যে বিষ্ট্রীঃ ! উপোষ: ৭ ন কু + তে কুন্তীপাকেষু পচ্যতে ৷ যস্ত রাম-ন শ্যান্ত ভুঙ্কে মোহাদিমৃত্নীঃ। কুন্তীপাকের বোরের পচ্যতে নাত্র সংশয়ঃ। ইত্যাদি। অতো ২ম্য করণে দোষ প্রবাসি ভাষা হিতা। ক্র্যান্তাম নবম্যান্ত উপো• ষণমভব্ৰিত:। ন মাহুৰ্গব্ৰুণাপ্লোভি স বৈ রামো ভবেৎ স্বয়ং। তত্মাৎ সর্বাত্মনা সর্বেব ক্রছৈব নবমীব্রতং। মুচ্যন্তে সর্বাপাপেছ্যো যান্তি জন্ম সনাতনং ৷ ইতি সাপে-ক্ষতাঘারা মোকার্থর্ক গনতে। ন সংযোগপৃথক্-ত্বেন বিরুদ্ধে ফলনিভাতা। 'নত্যানামপি দুর্শা দুযো-গাদি ফল চাঞ্তে: ৷ নত্বৰ্থাদরূপং স্যাৎ ফলং পাপ-क्रग्रामिकरः। ফলং স্যাদর্থবাদায় দ্রব্যসংক্ষারকর্মান্ত। हेि नागा क रेनवर मान् विधिवाधाकरल माछ। मर স্কারহাঙ্গকর্মহে ন স্যাতামিহ কর্মণি। ভূতভাব্যুপ যোগং হি দ্রবাং দক্ষার্যানিবাতে। নোপযুক্তঃ পু-মানত্ত শাস্ত্রাদ্বা নো প্রযোক্ষ্যতে। নাপ্যক্ষণ প্রধানৎ স্যাৎ আবণাদিহ ক্স্যচিং। অপ্রধানফলসম্ম যদ্-যোগ্যাক্ষমিতি ছিতিঃ। জুহ্বাদিবচ্চ কর্মবাদ্রেব্যবং নাব-কল্পতে। পরার্থত্বে নিদানঞ্ তদ্যৈবাতাবকল্পতে।

ত্ববাদহীনানাং বিধীনাং বিধিতা কথং। অর্থয় পরত্বে চ বাক্যভেদঃ প্রদজ্জতে। নৈবনর্থদন্ধং মুক্তং রাজিদজাদিযাগবং। তত্মাং পাপক্ষরদারা নোকার্থদান্চ
নিত্যতা। ন্যায়োপর্ংহিতাচ্ছা স্ত্রাস্থক্যা ন্যায়বেদিভিঃ।
ইতি জ্বীরামনব্দী কুত্যতা।

শুদ্ধা বিদ্ধেতি ভেদেন নবমী সা ছিধা মতা। সমা সুনাধিকা চেতি শুদ্ধাপ নবমী তিথা। পুনর্কতা সং-যোগবিয়োগাভ্যান্ত বছ বিধা। সমাদিগ্রক্ষ শুদ্ধি ভেদে-বিদ্ধাপি ষভিধা। এবং ছাদশধা ভিন্না নবমী ততা নি-র্গঃ। মহাকলপ্রদা শুদ্ধা পুনর্ববস্ক্ষসংযুতা। চৈত্তে মাদি নবম্যান্ত রামো জাতঃ স্বয়ং হরিঃ। পুনর্ববস্ক্ষসংযুক্তা সা তিথিঃ সর্বব্যামদা পুনর্ববস্ক্ষসংযোগঃ স্বল্লোহপি

রবুনাথ জন্ম গ্রহণ কবিয়াছিলেন যাবজ্যীয়ন এই তিথিতে উপবাস ও ব্রত কর্ত্তবা এই সকল শাস্ত্র দারা ইহার নিক্যতাই প্রভি পাদিত হয়। কুফকেলে ক্র্ডাগ্রহণ সম্যে মহাদান সকল করিলে যে কল হইরা থাকে একমান্ত এই রামনব্দী ব্রত কবিলেই ভাদৃশ কল প্রাপ্ত হইবে ইত্যাদি এই ব্রতের বহুবিধ কল প্রভিত নিবর্ধন নিত্যাথের ন্যাঘাত হইভে পারে না। যে হেছু অকরণে দোষ্ট্রাছেন গুলিতঃ পাশ্দ কার বাই স্থক্ষে নানাশাস্ত্র নানা বিচাব দর্শাইয়াছেন গুলিতঃ পাশ্দ কার, মৃক্তি সাধন ও অকরণে দোহ এই সকল দারা এই এতের নিত্য-ভাই নির্মাচিত হইরাছে।

এই নৰ্মী প্ৰথমত: ৩ছা ও ৰিছা প্ৰজেগ তুই প্ৰকাৰ পৰে সমা-নুনা ও অধিকা প্ৰভেগে গুৰু৷ এবং বিছা উভয়েই তিন তিন ডিন প্ৰকাৰ হয় পৰে আৰাৰ নক্ষৱেৰ সংযোগ ও বিয়োগ বাৰঃ যদি দৃশ্যতে। চৈত্রশুরনবমান্ত সা তিথিং সর্বকারদা।
শ্রীরামনবমী প্রেক্তা কোটসূর্ব্যহাধিকা। চৈত্রশুরা জু
নবমী পুনর্বহুত্বা ব'দ। সৈব মধ্যাক্তবোগেন মহাপুণ্যতমা ভবেৎ। মেষং পৃষণি সংপ্রাপ্তে লয়ে চ কক টাক্সয়ে।
আবিরাসীৎ সকলয়া কোশল্যায়াৎ পরং পুমান্। ইতি।
কেবলাপি সদোপাস্যা নবমী সর্বসংগ্রহাৎ। তল্মাৎ
সর্বাজ্মনা সর্বৈধিঃ কৃত্রবং নবমীত্রতমিতি। সর্বিধিরিতি
সর্বেবামধিকারঃ প্রকাশ্যতে। বিদ্ধেব চেদৃক্ষমুক্তা ত্রতং
তত্র কথং ভবেৎ। বিদ্ধানিষেধ্যাবগারবমীচেতি বাক্যতং।
নবমী চাইটমী বিদ্ধা ত্যাজ্যা বিষ্ণু প্রায়ণৈঃ। উপোযণং নবম্যান্ত দশম্যামের পারবং। বৈশ্ববানাৎ বিশো-

উত্বেবই বড়বিগভেদ, সমন্তিতে ধাদশ প্রকাব প্রভেদ ১ইল। ইবার মধ্যে প্রকাপ লক্ষযুক্তা শুদ্ধা নবমীই মহাফল প্রদায়িনী, বেহেত্ প্রকাপ লক্ষযুক্তা শুদ্ধা নবমীতেই প্রিলম চক্র আবিভূতি ছলমাছিলেন বলিয়া প্রকাপ ভিথি সর্বাহাই ফল প্রদা। নবমীতেবিতে জল্প ও যদি প্রকাপনক্ষে যোগ হয় তাহা হইলে ও দিনের জনেক মাছাল্মা। মধ্যক্ষে সমন্ন পর্যান্ত যাদ প্রকাপর যোগ থাকে ভবে ঐ তিবিকে প্রাচমা লানিবে। সেই প্রধান পর্য প্রিলমাচক্র মেষ রাশি প্রত স্থ্যে এবং বর্ক ট লয়ে কৌশল্যার গর্ত হইভে আবের্ছত হইনাছিলেন এইশাল্লাবা সৌর বৈশাশইপ্রভূত্ব জনমাস প্রতি পানিত হওরাতে প্রকাজে তিত্র মাস চাক্র নির্মাচিত হইনাছে। কেবল নন্মীতে ও এত কর্ত্বা, এই এত সাধারণেই করিছে পারিবে। জইনী বিদ্ধা যে নব্মী ভাষতে বৈশ্ব-বাতিরিক্রের প্রত কর্ত্বা প্রকাশ্বর যোগ হইলে বিশেষ প্রশন্ত। বেং-বেন্ড্ জইনী বিদ্ধা নব্মী কেবল বৈক্ষবর্গনের পরিত্যান্য। বৈক্ষবশাক্ত স্থান্বব্রই শৃশ্বীতে পারণ ক্রিতে হর। বৈক্ষবাতিরিক্রের জইনী

যাতু তত্ত্ব বিষ্ণুপরায়ণৈঃ। দশম্যাদিয় বৃদ্ধশ্বেৎ বিদ্ধা ভ্যাবৈদ্যৰ বৈষ্ণবৈধা তদনোষাস্ত সংশোগ প্রভং তত্ত্বিব নিশ্চিতং। দশম্যামের শব্দেন দশমীং কৈঃ বুজ্বাকেং। নিশ্চিত্বং বিচারেণ নব্মী প্রত্মাচরেং। ইতি রাম নব্মী প্রত্নিবিধিঃ।

বৈষ্ণবৈত্যি বাক্যাদ্ধি ভেষাং লক্ষণ্যচাতে। সাজং
সমুদ্রং সন্যাসং স্থাষিচ্ছল লৈবতং। সদীক্ষাণিধ সধানং
সমন্ত্রং দাদশাক্ষরং। অন্তাক্ষরমথান্যং বা যে যন্ত্রং সমুপানতে। জ্যোত্তে বৈষ্ণবা লোকে বিষ্ণুধর্মরতাঃ সদা।
সদীক্ষাবিধি স্থানং স্যন্ত দাদশাক্ষরং। অন্তাক্ষরস্মান্
মুক্তং মন্ত্রনাজং স্যন্ত্রকং। সহস্রাক্ষর সংযুক্তং মূলব্যুহাদিভেদতঃ। পঞ্চায়তনরূপঞ্চ যে বিপ্রাঃ সমুপাসতে।
মহাবৈষ্ণবদংজ্ঞান্তে মহাবিষ্ণোর্তিপ্রিয়াঃ। ন চলতি
নিক্তবর্ণধর্মতো সম্মতি রাজ্য স্ক্রিপক্ষে। ন হরতি
নিক্তবর্ণধর্মতো সম্মতি রাজ্য স্ক্রিপক্ষে। ন হরতি
নিক্তবর্ণধর্মতো সম্মতি রাজ্য স্ক্রিপক্ষে। ন হরতি

যুক্তা নৰমীতে উপৰাস এবং নৰমীর অস্তে দশনীতে পাৰণ ব্যৰ্ছা সক্ষত। বৈক্ষৰদিগেৰ দশমী যুক্তা নৰমীতে উপৰাদ, প্ৰদিন দশমী কিছু কাল থাকিংশ দেই দশমীৰ অস্তেতে পাৰণ করিবে।

সংপ্রতি বৈক্ষবেও লক্ষণ কথিত হটতেছে। বঁলোবা মূল, তাস ঋবিক্ষকালি, দীক্ষেক্ষবান, মন্ত্র ও বজাদি হারা প্রভূব উপাসনা করিয়া বৈক্ষবধন্মে বত আছেন তাঁহারা বৈক্ষব লক্ষণে লক্ষিত হন। আর হাহারা পূর্কোক্ষে লক্ষণে লক্ষিত হটরা পঞ্চাক্ষোদাসনাতে এতী থাকেন তাঁহারা মহাবৈক্ষব বলিয়া কীঠিত হন। বিশেষ বুলা হট-তেছে বঁহারা স্বলতি নিক্ষপিত ধর্ম হইতে চলিত না হুম এবং ইতি পালো। ত্রিভ্বনবিতরহেহতবে হপ্যক্ঠশ্বতিরজিত। স্বাদিভিক্সিয়গাং । ন চনতি ভগবংপদারবিন্দা ম চলতি নিমেবং ধর্মাদিশি স বৈষ্ণবাগ্যঃ ইতি জীভাগবতে। ইত্যাদি বৈষ্ণবিক্ষণকৰং।

অসামর্থ্য শরীরস্য ত্রতে চ সম্পাগতে। কাররেদ্ধর্ম পদ্ধীং বা পুত্রং বা বিনয়াশ্বিতং। পড়ো জীবতি
নৈব জ্রী উপোষ্য ত্রতমাচরেং। আবস্তক্তাদ্ভুঞ্জীত যদ্য
দত্রোপয়্ল্যতে। অলকারং পুল্পভুষাং গদ্ধপুল্যান্তুং
লেপনং। উপবাসেন ছুষ্যেত পুণ্যন্ত্রীণাং তথাঞ্জনং।
সভাস্ল মতাস্কং সভোজনমভোজনং। মন্ত্রাদি স্নিভিঃ
প্রোক্তং চতুর্বিধন্যপোষ্ণং। ত্রিরাত্রাদি স্তাস্ল্ মেকাদশ্যানভোজনং। অতাস্লক্ষ্ণ পক্ষান্তে সভোজনম্দা-

শানী বক পীড়া নিবন্ধন অশক্ত সময়ে ঐ এত উপস্থিত হইলে ধর্মনিটা পত্নী দ্বানা অথবা বিনীতপুঞ্ছারা এত করাইবে। পতি জীবিত সহে জার উপবাদ করিবা এতাহন্তান করা নিবিদ্ধ অতএব, সংবাজীগণ আব্দ্রাক মত ভোজন করেবা এত করিবে। কিন্তু উপবাদ সময়ে অলভার, পূপা, চলান ও অঞ্জন এই সকল ধারণ করিবে না। ভাষ্য ভোজনের সহিত এবং ভোজন বর্জিত এই চতুর্বিব উপবাদ মহু অভ্তি মুনিগণ কর্তৃক ক্ষিত্ত ভইরাছে। জিয়াত্র উপবাদ সংগে ভাষ্য ভোজন করিবে ও ভাষ্য কিন্তুৰ। ভোজন ব্যক্তিত উপবাদ থকাদ্বী হবে এবং আমাব্দাদি

ৰ্ফ ও মিজে সনজ্ঞান কংবল থাকেন আব কাহারও কোন তাবা অপ-হরণ কি বিনাশ না করেন তাহাগেই নির্মাণ্ডিত বৈক্ষবভাষ্ঠ বলিয়া পরিগণত হন। ভাগবতে লিখিত আছে যিনি নিমেব সমরের জ্ঞা ও ভগবানেব পাদ শল্ম হউতে এবং ধন্ম হউতে চলিত না হন তিনি পর্ম বৈঞ্চব গৈন্ধ। কীঠিত হন।

ছতং। এক ভকেন নকেন ড থৈবা য়াচিতেন চ।
পায়ামূল ফলৈর্বাপি বালবৃদ্ধাত্নঃ ক্ষিপেং। হবিষ্যভোজনমানং সভ্যমাহার লাখবং। অগ্নিকার্য্যমধঃ শ্যা
নক্তভোজী বড়াচরেং। এক দিত্রি চতুর্ভোজ্যা দানাদে
কাসনাদিকং। অসুকরেনাপি কার্যাং নিভ্যত্বান্তবাং। পরমাপদমাপনে হর্ষে বা সমুপস্থিতে। বিবাহব্রতবন্ধাণী যুদ্ধে বাভ্যাদয়ে তথা। সূতকে মৃতকে
বাপি ন ত্যাজ্যং নবমীব্রতং। অফৌ তাক্সব্রতমানি
আপো: মূলং ফলং পয়ঃ। হবিব্রাহ্মণকাম্যা চ গুরোব্রচনমৌষধং। ইতি প্রতিনিধিঃ।

স্তীক্ষ মাত্ চাগন্ত্যঃ প্রকারঃ সোত্তিধীয়তে। ক্রমেণ যোজয়ে সম্ব্রিরমায় ব্রতাত্মনাং। ভড়ক্ষরাদিকৈ ম'লৈঃ স্থানাসপূজনং যথা। সর্বেষাং রামমন্ত্রাণাং

উপবাদেতে তাৰুল বর্জিত উপবাদ করিবে। শিশু বৃদ্ধ ও রোগী ব্যক্তি
একখনে মাত্র বাত্রিবোগে ভোজন করিবে উপবাদের ফল প্রাপ্তইবে। আর
ইহাদিগের পক্ষে অয় চিত ফল মূল জলাদি দেশন উপবাদ
দিদ্ধি ছইতে পারে। রাজিযোগে ভোজন করিয়া এত কারকেব হবিহালেন, সান, সভাবচন, ভোজন লাঘব, অগ্নিকার্য্য এবং অবোদেশে
শয়ন এই ছয়টী নিয়ম প্রতিপালন করিতে হয়। রামনবনী রভের
নিতাতা নিবন্ধন বিধির অয়ুক্র করিয়াও কার্য্য করিবে। নিতাস্ত
আপদ কিংবা অভাস্ত আনন্দের বিষয় অথবা বিবাহ, অভোক্ত এহাদি
মুদ্ধ এবং কোন মান্দলিক কার্য্য উপস্থিত হইলে এবং জনসাশোচে
ও মরণাশোচে রামনবনী এত ভাগে করিবে না। অশ্যক্তর পক্ষেল, ফল মূল, ভুয়, বৃত্ত, ঔবধ এবং ওক্ষ ও প্রান্ধণের অভিমত কর্য্য
ভোক্তনে এত ভক্ষ হয় না।

সন্ত্রাকিঃ বছকাঃ। ভারকং এক চেত্যুক্তং তৈন পুরা প্রণক্ততে। মহাপুরুণসূক্তোকৈ দীকাবিধি মন্তানতঃ। रेवनिककाशाबादन जू जामगरेख छ व म् ध्वन । ककेमार **टेड ब्रमान अक्ष्म १ कि ভে ক্রিয়ঃ।** দন্ত ধাবনপূর্বক স্ক প্ৰাতঃ স্নাধান্যথাবিদ। নদ্যাং তড়াগে কুপে বা হুদে প্রস্রাণ হপি বা। ভতঃ সন্ধ্যাদিকৎ কুর্গ্যাৎ সংস্মরনাবৰৎ হৃদি। গৃহ্যাগত্য বিপ্রেন্ড্র কুর্য্যান্ত্পা-সনাদিকৎ। দান্তৎ কুটুন্মিনং বিঞাং বেদশাস্ত্রপরৎ সদা। জীরামপুজামিরতং অশীলং দম্ভবর্চ্ছিতং। বিধিত্যং রাম-মন্ত্রাণাং রামমক্রৈকসাধিনং। আছুয় ভক্তা সংপ্রা বুণুমাৎ প্রার্থান্নতি। জীরামপ্রতিমাদানং করিষােহ্ছং বিজোক্তম। ততাটার্য্যোভ্য প্রীতঃ শ্রীরামোহপি ব্যায মে। ইত্যক্তাজ্যেন তংবিপ্রং স্নাপায় হা তভঃ স্বয়ং। তৈলেনাভাজা চ স্বায়াজিত্যন্ রাঘাৎ হলি। খেতা-ঘরং শেতগন্ধং খেতখাল্যানি ধারটেছে। জর্চিতো ভূ-বিত্ত শৈচ্ব কুত্ৰমাণ্যাহ্নিকজিয়: | আচাৰ্য্যৎ ভোজয়েৎ পশ্চাৎ সাধিতালৈ: স্থবিস্তরৈঃ। ভুঞ্জীত স্বামপ্যেবৎ

সংগ্রহ অগন্তাকর্ত্ক অভিন্তে ত্রতাদেশের নিগম সকল প্রদর্শিত হইন্ডেছে। শ্রীরামচন্ত্রের সকল মন্ত্র হইতে ষড়কর মন্ত্রকেই মন্ত্রবাজ্ঞ ও তারকত্রক্ষ বলিয়া নির্মাটিত হইরাছে অতএব এই মন্ত্র হারাই পূলা করা প্রশন্ত। পূর্মবিশ্বের কর্ত্তরা কার্যা প্রদর্শিত হইতেছে। তৈরে মাসের শুরু পক্ষীয় অন্তর্মীতে জিতেজির হইয়া দল্প ধাবন পূর্মক নদী প্রস্তৃতিকে মান সন্ধা। প্রস্তৃতি করিয়া শ্রীরামকে মানসিক স্থরণ করিয়া প্রত্তিতে মান সন্ধা। প্রস্তৃতি করিয়া শ্রীরামকে মানসিক স্থরণ করিয়া প্রত্তিত উল্লিখ উল্লেখনের কনিবে। রামজ্জে বেদ পার্ম ব্রহ্মিকাকে জাহ্বান পূর্মক বরণ করিবে। ব্রতীর নিকটে শ্রীরাম প্রাক্তি

হুদি রামমনুদ্ররন্। অইম্যা মেকডজেন বঙ্গভ্তন রাঘব। ইক্ষাক্বং শতিলক প্রীতোভব ভবপ্রিয়। ইত্যেকডজে নিবেদন মন্তঃ। এক ভক্তরতী তত্র মহাচার্য্যে জিতেন্দ্রিয়ঃ। শৃণুনামকথাং দিব্যামহঃ শেষং নয়েশ্রেন। সায়ৎ সন্ধ্যাদিকং কুর্যাৎ ক্রিয়াণ রামমনুদ্ররন্। আচার্য্য সহিতো রাজৌ অধংশায়ী জিতেন্দ্রিয়ঃ। স্থপেৎ স্বয়ং তথৈকান্তে জীরামার্পিতমানসঃ। আচার্য্যকরণে হণ্ডভঃ স্বয়ং ভুক্তা স্বপেৎ স্রখং। ইত্যইমী কৃত্যং।

ততঃ প্রাতঃ সমুখার স্নান্থা সন্ধাৎ বিধার চ।প্রাতঃ
সর্বাণি কর্মাণি শীব্রমেব সমাপয়েও। উপোষ্য নবমীৎ
ব্রদ্য যামেষ্ট্রস্থ রাখব। তেন প্রীতো ভব ছৎ ভোঃ সংসারাত্রাহি মাৎ হরে। ইত্যুপবাদ নিবেদন মন্তঃ।

ততঃ স্থমনা ভূষা বিশ্বস্তিঃ সহিতো ২নঘ। স্বগৃহে চোত্রে ভাগে যাগমগুপমাচরেৎ। চতুদ্ধরিং পভাকাচ্যৎ স্থবিতানং স্থাভিনং। মনোরমং মহোৎসবং পুশানিয়ঃ

ষাদানের সহর করিয়া উভয়েই ঘৃত ও তৈলাদি দারা সান করিয়া খেত বস্ত্র পরিধান পূর্ব্বক গদ্ধ পূলাদি দারা ভূষিত হইবে। অভ:পব মধ্যাহ্ছ বিধের কার্য্য করত অইম্যামেক ভক্তেন ইত্যাদি মূলোক্ত মন্ত্র পাঠ করিয়া উভয়েই একাহাবে জীরামের নাম কীর্ত্তন করতঃ দিন শাপন করিবে।

পর বিশ্ব প্রতে: সন্ধা ও স্থানাদি স্থাণিয়া উপোষ্য নধ্যীং ছদ্য ইত্যাদি উপশাস মত্র পাঠ করিয়া উপশাসের সক্ষম করিবে। জপর যথা বিধি মগুপাদি করিয়া পুণাহাদি বাচন পূর্বাক সক্ষম করিবে। অসুসাবে শীরাষের পূজা ও ভণীর অর্থময়ী প্রতিমাধান করিবে।

শনশন্ধতং। শহু ১ক্ত হন্মন্তিঃ প্রাণ্ বাবে সমলন্ধতং।
গরুষদ্দের বাবৈশ্চ দক্ষিণে সমলন্ধতং। গদা খট্টাঙ্গলৈ
কৈচব পশ্চিমে সমলন্ধতং। পদ্মস্থিক নীলৈশ্চ কৌবেরে
সমলন্ধতং। মধ্যে হস্ত চতুকাচ্যং বেদিকাম্জ্রনায়তং।
বিচিত্র নৃত্যগীতৈশ্চ বাবৈদ্যাপি স্বাংয়তং। পুণ্যাহ্
বাচয়েন্তরে বিষ্তিঃ প্রীতিমানসৈঃ। ততঃ দক্ষর্য়েদেবং
রামমেবমসুম্মরন্। অস্যাং রামনবম্যান্ত, রামারাধনতংপরঃ। উপোষ্টেন্স্ যামেরু পূজ্যিত্বা যথাবিধি। ইমাং
স্বর্ণমন্থীং রামপ্রতিমাং স্প্রয়ত্বতঃ। প্রীরামপ্রীত্রে
দান্যে রামভক্তায় ধীমতে। প্রীতো রামো হর্ষাশু
পাণানি স্বাহ্ নিমে। স্বনেক ক্ষম্মংদিকান্ত্যন্তানি
মহান্তি চ। ইতি ত্রিভঃ সক্ষরঃ।

শক্তাশক্তাতিশক্তন্য মূর্ত্তিনির্মাণমূচ্যতে। ততঃ স্বর্ণ মন্ত্রীৎ রামপ্রতিনাৎ পলমানতঃ। নির্মিতাং দিভ্লাং রম্যাৎ বামাক্সন্থিভলানকীৎ। বিভাতীং দক্ষিণকরে জ্ঞান-মৃদ্রাৎ মহামতে। বামেনাত্মকরেণারাদ্বেনীমালিক্য সং-স্থিতাং। সিংহাদনে রাজতে ২ত্র পলদ্বা বিনির্মিতে। অ-

সমর্থ, অসমর্থ ও সাভিশর সমর্থ প্রভেদে প্রতিমা নিমাণ নিবিধই ইইজে পারে। শক্তব্যক্তি পলগারিষত মর্থ ধারণ বাম প্রতিমা করিবেন ই হার বামভাগে থিডুলা সীতা দেবীর প্রতিমা থাকিবে, সীতাদেবী দক্ষিণ হতে জান মুদ্রা ধারণ করিরাছেন এবং বাম হত ধারা জীরামচন্তকে আলিখন করতঃ পলম্মণরিমিত রক্ষত সিংহাসনে বিরাজ করিডেছেন, এইরণ প্রতিমা করিছে ইইবে। অন্তিম বাজি বিভাগ্যাবে এক পল, পালার্চ অথবা পলের চতুন্তাগৈ,কভাগ মর্থ ধানা প্রতিমা নিমাণ করিবে,

শক্তো যো মহাভাগ তদ্য বিজ্ঞানুদারতঃ। গদেশবা তদর্জন তদর্জার্জন বা মুনে। ততাহপ্যশক্তো রোপ্যেণ করিয়ে
দ্রম্মনং! শোহন নির্মিতাং বাপি দারুণা শিল্যাপিবা। যদ্ধা শেখাং বিলেখ্যং বা মাতুরস্কগতং হরিং।
কোমলাঙ্গং বিশালাক্ষ মিস্তানীলমণিপ্রভং! দক্ষিণাংশে
দশরপং পুত্রায়েষণ তৎপরং। পৃষ্ঠতো লক্ষণং দেবং সক্ত্রেং
কণক প্রভং!. পার্যে ভরতশক্রায়ো তালর্স্তকরাবুভো।
অত্রে ব্যব্রং হন্মস্তং রামানুগ্রহকাজ্ফিণ। বিস্তান্তি
মর্কান্তব মূর্তিং কুর্যাৎ প্রযুক্তরা তথাচ ভবিষ্যে।
বিভবে সতি যো মোহাৎ নো কুর্যাদ্বিধিবিস্তরং। ন
ভৎফলমবাপ্রোতি দেবজ্রোহী স উচ্যান্তী। ইতি মূর্ত্তিলক্ষণং।
আসনোপরি সংবিশ্য ন্যাস্কালং বিধায় চ। শৃষ্ঠং
প্রপ্রয়েশ্ব্যে গন্ধপুক্তাক্ষতাদিভিঃ। কলদং বামভাগন্থং

ইহাতেও অশক্ত হইলে রৌপা ধাবা অথবা লোহ, কাঠ এবং পারাণ হাবা আতিমা করিবে। নিতান্ত অশক্ত হইলে চিত্রণটে আন্ধৃত করিবে। চিত্র করার নিরম, বিশাল নেজ ইক্রনীলমণির সমবর্ণ শ্রীরাম্চক্ত কৌশলার ক্রোড়ে বিরাজ করিতেছেন, ইহার দক্ষিণ ভাগে দশ্বথ, পৃষ্ঠভাগে ছজ্ঞধাবী-অর্ণ কান্তি লক্ষণ পার্মদেশে তালবৃত্তধারা ভরত ও শক্রম এবং সনুধে ভক্তি নাম হনুমান দভাবমান রহিয়াছেন এই প্রধার চিত্র করিভে হইবে। মুর্ভি নির্মাণ বিষয়ে বিজ্ঞের শঠতা করিবে না। ভবিষা প্রাণে লিখিত আহে, বিত্ত সব্বে মোহ বশতঃ বিধিবিহিত কার্যা না করিলে কর্ত্তব্য কার্য্যের, ফ্ল লাভ হর না এবং এভাদুশ ব্যক্তি দেববিষ্টেই ক্ষিত হন।

'कानक्षर क्षानाम डेनिविड दहेवा नाम प्रकण कतिया 'कन भूर्व मध्य

পূषा ज्वानि गंपित्। भावक त्थाकरम्डका गणानः मञ्जूकरत्थ। देखि मच श्रीकर्षः।

विनिर्देश मर्विराज्य (विमरकोशित समात्र। जिर्धा-গুর্দ্ধগতা রেখা: কুর্য্যাদেকোনবিংশতী:। খণ্ডেন্দ ত্রিপদা ट्यार मुक्ता शकरकां किता। वकान मना बल्ली कल्ल नवां भटेषः। ह्यूर्व्सिरमभा वाशो भविधिर्वरमाज পদৈ:। মধ্যে বোড়শভি: কোঠে: পদায়উদদ্ৎ স্মৃত:। मिरउन्यू मुधना कुका राज्ञान नीरनन পृत्रिकाः। छवा-রুণা দিতা বাপ,ঃ পরিধিঃ পীতবর্ণ হঃ। বাহ্যেন্তরদলে **एचडा कर्गिका भी डवर्गिका। यए अपू मुद्दानावली वाभी-**ভদ্র পঞ্চমং। পরিধ্যাবেফিতং পল্লং বাহ্যে সৃত্তং तक्रस्यः। नर्गाञ्जमम्मिकेर नर्वर्जाञ्जमधनर। मर्सा ব্ৰহ্মান্টাহ দিকু সোমাণ্য। দেবতাঃ সৃতাঃ। বায়ু-टिनामबद्याम त्था वसूनत्छो ह कात्रदार । त्यास लेगान-ट्यांगर्था क्रखारनकाम्मारख्या। क्रमान देखर्याग्रिया আদিত্যান্ ঘাদশান্ লিখেং। ইন্দ্রাগ্রিমধ্যে চ তথা-चित्तरत्री পृक्तरत्रक्टः। चारत्रत्रयगरत्रामरिधा शक्कर्वाभ्यत्रमः कुक् । वितिको तमामद्याम (४) इन्हारनव ममक्र देश । कम्पर मन्त्रीचत्रर भूमर मशात्मवक कांत्रस्य । वितिकी णानरमार्गार्थः पकानिः मथर्मागः। बस्तस्यसाख्याः মধ্যে ছুৰ্গাৎ বিষ্ণুৎ ভবৈষচ। ত্ৰহ্মাগ্ৰিমধ্যে চ ভথা. धवाः (पवीर धकांवराष्ट्र। वितिकियमरत्राम (वं मक्र जः मश्र रेव क्का विकाशः शामम्रात् (मिननीर छक कांत्रशर । कारवती नंत्रीकारेहर, यमूना ह मतत्र हो। शका क्या छथा

গোলা: পৃষ্ণাঃ সপ্ত চ সাগরা:। কারকীর সন্যস্পি নীরেকুলবি সাগরাঃ। ত্রকাঞ্জানমিত্যালৈ ম দ্বৈস্তান্তান্ত লেবতাঃ। গদ্ধপুষ্পাদিভিঃ পৃজ্যা: সপ্তমীপাশ্চ সর্বতঃ। স্বিভোভদ্রং যুমানু স্বিতো ভদ্রবৃচ্যতে। ইতি স্বিতো-ভদ্রং।

মধ্যে তীর্থাদকৈঃ পূর্ণ কৃষ্ণ রছোদরং শুভং।
চূত্রপল্লন পুল্পেশ্চ যুতং সংস্থাপ্য চার্পিতং। সৌবর্ণে
রাজতে তাত্রে পাত্রে ষট্কোণমালিখেন। অলাভে
বিস্থপাঠেনা কলসোপরি সংস্থিতে। স্থাননীরং।
যুগ্যবন্ত্রমন্তিরং স্থদশং শুভং। দিব্যসিংহাসনে তত্র
স্থাপরিহাচ্চারেৎ শুভিঃ। ও নমো ভগবতে বিকরে
স্ক্রিভ্তাত্মনে বাস্লেবার স্ক্রিজ্মশংযোগপদ্মপীঠাত্মনে
নমঃ। ইতি মস্ত্রেণ তন্মধ্যে দত্যঃ পুল্পাঞ্জলিং পুনঃ।
ইতি পীঠাচ্চা।

লেপ্যাবৈদ্যরভিষেকঃ স্যাদ্দদ্যাদ্ যজ্ঞোপবীতকং। ইতিস্নানং।
গদ্ধ পূলাদ্রারা অর্চনা করিবে এবং বাম ভাগে জলপূর্ণ কুন্ত ও সমস্ত
পূলাদ্রারে আসাদন করিরা প্রোক্ষণ করিবে। অনস্তর সর্বভোভদ্রমণ্ডল
করিমা মূলোক্ত দেবতা সকলের পূলা করিরা মণ্ডল মধ্যে তীর্থোদক পূণ
কুন্তে হল্প নিক্ষেপ করিরা স্থবণিদি পাত্রে লিখিত বট্কোণ যত্র এবং অন্তর্মন্তর দশ্যে সহিত বস্ত্র যুগ্য ও প্রব প্রপাদি বিন্যক্ত করিবে। অতঃপর সিংহাস্নোপরি স্থাপিত প্রতিমাতে ও নধ্যে ভগবতে বিহুবে ইত্যাদি ম্যের
পূলাঞ্চলিত্র প্রদান করিবে।

कार्या शांतामिक ए ममां आनः शकांग्रिक न हा

অন্তৰ অৰ্থাদি প্ৰদান করিয়া স্থান্ধি জব্য দারা শেপন ক্রভ প্ঞায়-ভাদি দারা প্রতিমার অভিবেক করিয়া বজোপনীত দিবে। ভতঃ সংখাপ্য পীঠে তৎপূজাং কুর্যাদ্যথাবিধি। আবাহনং আপনক সমিবাপন মেবচ। সমিবাধন মেবস্যাৎ অবগুঠন মেবচ। তত্তমুল্রাভিরেব স্যাদ্দেবং সংপ্রার্থ্য ভব্তি তঃ।
নানারত্ববিচিত্রাণি দদ্যাদাভরণানি চ। হেমাপ্ত স্থান্ত ক্রচির
ঘনসার সমন্বিতং। গল্ধং দদ্যাৎ প্রয়ন্তেন সাগুরুক্ষ
সক্ত্র্য। কন্ত রিকায়া ছোভাগো তথৈব ক্রুমস্য চ।
চন্দনস্য ত্রেমাভাগাঃ শশিনভ্তেক এবচ।
যক্ষ কর্দম ইত্যেষ সমস্ত প্রভোজনঃ। নানাবিধিং পূজ্যফলৈরচ্চ য়েদ্রভ্নন্দনং। কহলার কেতকীজাতি পুরাগাদ্যঃ
প্রপ্তরেং। চম্পাকৈঃ শতপত্রেশ্চ স্থান্তিঃ সমনোহরৈঃ।
চূতপল্লবপুল্লৈন্চ দ্র্রাভিন্তল্গীদলৈঃ। কোমলৈবিত্তিঃ
পত্রেশ্চাপ্যশোককৃত্বমন্তবা। রামস্য জননী চাসি রামাস্থাক্ষেণে জগং। অন্তন্ত্বাং পূজ্যিষ্যামি লোক্মাতন নি

নমো দশরপায়েতি পৃক্ষেৎ পিতরং ততঃ। ইতি
পিতৃপ্তনং। ততোহসুজ্ঞাপ্য দেবেশং পরিবারান সমচেরেং। পূর্বিষট্কোণকোণেযু হাদয়াদীনি ষট্
ক্রমাং। প্রথমাবরণং।

২ন্মন্তং সন্মানিং ভরতং স্বিভীষ্ণং। লক্ষ্ণাস্ক শতুদ্ধং কাষ্ণবন্তং দলাদিয়ু। দ্বিতীয়াবরণং।

স্তিং জয়ন্তং বিজয়ং সৌরাক্ট্রাক্ট্রার্কনং। অ-কোপং ধর্মপালাখ্যা অ্যন্তং দলমধ্যতঃ। ভূতীয়াবরণং।

मनाट्य तमाकनःनार्ण्ड । हजूर्यः । जनवानि जनवातः । हजूर्यामाधिरें उरेण्डवनामयरेखर्यकान् जान् । शक्षमावद्रगर् ।

ঘণ্টাঞ্চ বাদয়ন্ ধূপং দীপঞ্চান্ম সমর্পয়েও। ভক্ষ্য ডেজিয়াদিনা ভক্ত্যা নৈবেদ্যং বিধিনাপ্য়েও। আচমনং হুতাফুলং মহানারাজনং ততঃ। নমস্কুর্যাততঃ স্ত্রোত্তঃ মন্ত্রতঃ প্রজেশে শৃণুন্ জয়ন্তী মাহাজ্যং দিব্যাং রামকথাং তথা। রাম ভত্তিঃ সমং যাবং নয়েদ্রামমস্কুল্রন্। ইতি প্রথম্যাম্ক্রতাং।

শশ্বপাত্রাসনাচ্চ থি কুর্য্যাদ্ যামেষ ভব্তিতঃ। যাসে ছিতীয়ে সম্পূজ্য মধ্যাহ্নে জন্ম ভাবয়েৎ। উচ্চত্তে গ্রহ-পঞ্চকে স্বরগুরোদেনের নবম্যান্তিথো লগ্নে কর্ক টকে পুনর্ববিস্থযুতে সেষৎ গতে পৃষণি। নির্দিশ্ধ থ নিথিলাঃ পলাশঃ সমিধো মধ্যাদযোধ্যারণে রাভিস্ত্রমস্থদপূর্ববিজ্ঞবং যথ

আবরণ পুলাত্তে তাখুণ নিবেদন করিছা মহানীরাজনা করিছা নানা বিধ স্তবে নমস্কার করিছা বধাশক্তি মূলমন্ত্রপ কবিবে, জপ সমর্পণত্তে জনতীয়াছাত্মা ও রাম বিষয়ক প্রস্তাব শ্রণ করত ভক্তবৃদ্দের সহিত প্রথম প্রচর অভিবাহিত করিবে।

বিভীয়বামে শ্রীরামের পূজা করিয়া তদীয় জন্ম চিতা করিবে। জবোধার দ্ধাপ আর্থি কাঠ হইতে সমস্ত রাক্ষস দ্ধাপ পদাস সমিব দগ্ধ করার জন্য অতৃতপুর্ব অনৌধিক শক্তি সম্পন্ন একডেজ আবিভূতি হইবাছিলেন ই হার किकिए एकर गृहः। सर्वेष्यः वान्रत्रम् वान्रानिस्तिः सर्गाः च्छार १८७३। कल्पूलाच् मन्त्रां गृहाचा नेश्रम्खाः। चान्र कक्ष्यर्भः मर्ग्युक्तर कुलनीतरेगेः। स्नान्न नवाः-धान्न वर्षाम् वर्षाम् वर्षामान्न । भीनवानार विनानान्न रेप्त्यानाः निथनान्न । निव्यानान मानुनाः कार्जा नानः प्रमुर् हिन्द्रः। गृहार्गाण्डर मन्ना एखर खाळ्डिः महिर्जाहन्य। हेळाच् मखः।

পুনঃ পুষ্পাঞ্জলিং দত্তা ধামে যামে হত জৈত: । পৃষ্করে। ছিধিবস্তক্তা দিব রাজিং নয়েদ বুধ:। ইভি নবনী কুতাং ।

ততঃ প্রাতঃ দম্পায় লানদয়াদিকাঃ ক্রিয়াঃ। দমাপ্য বিধিবজামৎ প্রয়েৎ প্রবিশ্ম নে। ততো ধ্রেমৎ
প্রক্রীত ফ্লমস্ত্রেণ মস্ত্রবিৎ। প্র্রোক্তপদ্মকৃত্তে বা
স্থাবিদি। লোকিকায়ে বিধানেন শভমক্টোতরং ব্রতা। সাজ্যেন পায়দেনিব শ্রেন্যানন্যধাঃ। ততে।
ভক্ত্যা স্পন্তোষ্য আচার্যাৎ প্রয়েশ্মনে। ক্রনাভ্যাং
সরদ্বাভ্যা মস্রীয়ৈরনেকধা। গদ্ধপ্তাক্ষতির্বার্কিচিক্তিঃ

আৰিডাৰ সময়ে পাঁচটী গ্ৰহ উদ্ধেশনে স্থিতছিল, বুচম্পতি ও চল্লের যোগ ছিল নবনী তিথি, কৰ্কুটগা ও পুনৰ্বস্থ নক্ষা ছিল! এইরপ চিস্তা কবিয়া বিবিধ বাদ্য বাদনায়ে ফল, পুলাও ক্ষা সংকৃত্ত শব্দ পাত্রস্থিত অব্যা লইবা দশানন বধার্থায়ে ইত্যাদি মন্তে অর্পন কবিবে।

জতঃ পর প্রহরে প্রহার পূপাঞ্জল কাদান বরিষা দিরামাত্রি যাপন করিয়া প্রাতঃ সমরে ঘণা বিধি প্রাতঃ ক্তা সমাপিরা প্রনিষ্ধ পূলা কবিরা পদ্ম-কুপ্তে অথবা স্থিলে লৌকিকারি স্থাপিত করিরা, অটোবৰ শত সম্বত পার্য হাবা হোম কবিয়া কুণ্ডলাদি অলম্বার ওপুশাদি হারা আচার্যের অর্চনা কবিয়া

शंगरनाहरेतः। ভতো রামৎ সারন্ पन्नारप्यमञ्जूषी. রয়েৎ। ইমাৎ স্বর্ণয়গ্রীং রামপ্রতিমাং সমলক্তাং। চিত্র বস্ত্রযুগাচ্ছমাৎ রামে। ১২৭ রাঘবায় তে। এরাম প্রীত্যে দাস্যে তুটো ভবতু রাঘবঃ। ইতি দানমন্ত্রঃ। ইতি দহা বিধানেন দদ্যাবৈ দক্ষিণাৎ ভুবং। অন্যেভাটিচ যথা-यোগ্যৎ গোহিরণ্যাদি শক্তিতঃ। मम्याम् वारमायूगर शानार ঘথাবিভবসাত্মনঃ। আকাণৈ: সহ ভুঞ্জীত তেভ্যো দদ্যাচ্চ দক্ষিণাং। তব প্রাদস্বীকারঃ কৃতৎ যৎ পারণং ময়। 1 ব্ৰতেন তেন প্ৰীতন্তং স্বামিন্ত ক্তিং প্ৰয়ছমে। ইতি পারণসঙ্কল্পঃ। কুত্রিব বক্ষাহত্যাদি পাপেভ্যে। মূচ্যতে क्षवर। जुनाशुक्रयमानामि कन् थार्थाजि मानवश। **चारिक क्यामः मिक्ष भारिशा मुंगाल क्ष्यर । वहना कियि-**হোত্তেন মুক্তিন্তদ্য করে স্থিতা। কুরুক্ষেত্রে মহাপুণ্যে সূর্যা हळ्याद उथा। जूनाश्रुक्षमानारेगः कृरेखर्ममाट कनर। তৎফলং লভতে মর্ত্তো দানেনানেন স্বত। দশমী কুতাং।

সভোষ জ্বাইবে। পরে ইনাং অর্থনীং ইত্যাদি নজে দকিণাব সহিত প্রতিমাদান করিবা তব প্রসাদ খাকার ইত্যাদি পারণ মজে প্রসাদ নিরা পারণ করিবে। প্রতিষাদানে বহুফল তুলা পুক্ষদানে বে ফল অভিহিত হুইরাছে ইহাতেও তাদৃশ কল লাভ হয় এবং ব্রক্ষত্যাদি পাপ হুইতে এবং গুড় জ্বাঞ্জিত পাপ হুইতে মুক্ত হুইবে। অধিক আর কি প্রতিমাদাতার হুক্তেতে মুক্তি অবস্থিতি করে। কুক্সেকে চন্দ্র স্থাপ্রহণ সমরে তুলা পুরুষ দামাদিতে যাদৃশ ফল তাদৃশ ফল প্রাপ্তি হয়। দাগরণং ভক্তা প্রবেদিশেষ দানী দিনে। কর্মা দাগরণং ভক্তা প্রবেদিশেষ নে। স্মান রামং ধিয়া-দ্বা প্রবেদিশেষ নে। জপন্নামম্যং মায়ারমানস্বম শ্বতং। একাক্ষরং বা বিধিবং সর্বন্যাস করেটার তেঃ। প্রাতঃ সন্ধ্যাঞ্জ বিধিবদ দিবা সন্ধ্যাদিকাঃ ক্রিয়াঃ। গো ভূতিলহিরণ্যাদি দদ্যাদ্ বিভাসুসারতঃ। জ্রীরাম্চল ভ্ ভূতিভাহিরণ্যাদি দদ্যাদ্ বিভাসুসারতঃ। জ্রীরাম্চল ভ্ ভূতিভা বিদ্বাঃ জ্রেষান্তিঃ। পারণঞ্ প্রক্রীত বালাণৈঃ সহভ্তিতঃ। এবং যঃ ক্রতে ভক্তা সর্বা-পাপেঃ প্রমৃচ্যতে। গ্রায়াং প্রক্রিপেলেপ্যাং লেখ্যাং দেবগৃহে ন্যুদেং। ইত্যাকিঞ্ন ব্রতং।

শক্তম্য যদুতং প্রোক্তমশক্তোদ্যাপনক্ষরে । তদপি

ন্যাদ্য্থাশক্ত্যা সাক্ষ্য সম্পত্তঃ । একামপি নরোভক্ত্যা

ক্রীরামন্বমীং মুনে । উপোষ্য কৃতক্তঃ স্যাৎ স্কাপাপৈঃ

দরিজ ব্যক্তিব পক্ষে নবমীতে উপবাস ও আগংশ করিয়া শঞাপ্রসাবে পূজা কবিশা মারা,লক্ষী ও কামবীজস",ক্ত লশবা একাক্ষর মন্ত্রসারা শ্রীবামকে স্মবা করত অপ বিবিধা । পদ দিন প্রাতে সন্ধ্যাদি সম্পিয়া রাম ভক্ত সাব্দিগকে বিরান্সাবে গোপ্রভৃতি দান করিয়া কার্য্য সমাপন কবিবে। এই অতে সকল পাপক্ষ হয়। মৃথাধী প্রভিমা হইলে গঞ্চাদি অলে বিস্কৃত্রক করিবে চিলিডা চইলে দেবালয়ে রাখিবে।

मक्तराकित भरक (यह भ विक कि कि इरेगाए कामरकार भरक व्यक्ति मनाय जिल्ला कर्ति हैशा भागशास्त्रात सानित्व, कार्या मान इरेशा मन्पूर्व कल्या हम। विकास विक विक भूर. मत जेभवाम करिया न्योदिक क्ष्मीन कर्त्र कार्य इरेश्व द्वी मक्त भाग स्ट्रेश मुक्क इरेशा প্রায়চ্যতে। অণি শব্দাণজন্য মৃর্তিণানস্ত স্চিতং। ইত্যকিঞ্ন ব্রভোদ্যাপনং।

বর্ষে বর্ষে সমর্থস্য ত্রতেনৈর প্রপৃণ্ডা। ন ত্রােণ্ডা দ্যাপনং কিঞ্ছিতাদন্যছিধীয়তে। সর্বাত্তস্য পৃত্তির্থা মিদং রামত্রতঞ্চরেং। নান্যেনাস্যান্তি সংপৃত্তিরনেনাস্যৈব পূর্ণতা। ইতি সমর্থাদ্যাপনং। ইত্যাগস্থ্য সংহিতারাং শীরামনবমী ত্রতং।

ছাদশ্যাৎ চৈত্রমাসস্য শুক্রাযাং মদনোৎসকঃ। বোখাষনাদিভিঃ প্রোক্তঃ কর্ত্রন্যঃ প্রতি বৎসরং। তত্র স্যাৎ
স্বীয়তিথিয় বহু্যাদের্দ্ধমনার্পাং। অগ্রিকিরিঞ্চির্গিরিফা
গণেশঃ কন্ট বিশাখো দিনকুন্মহেশঃ। তুর্গান্তকো বিশ্বহরি
স্মরাশ্চ সর্বঃ শশী চেতি তিথীয়ু পূজ্যাঃ। ক্রিয়ালোপবিঘাতার্থৎ যত্ত্বয়া বিহিতং প্রভো। ন মে বিল্লোভন্দেত্র
কুরু নাথ দ্যাৎ মি।। সর্বর্গা সর্বাগা সর্বাগা বিষ্ণোমম ছং প্রমা
গতিঃ। উপনাদেন দেব ছাং তোষ্যামি কর্গৎপতে।
কামক্রোধাদ্যো যে মে ন তে স্মৃত্রতিঘাতকাঃ। অদ্য
প্রমৃতি দেবেশ সাবদ্বৈ শেষিকং দিনং। তাবদ্রকা
ছ্যা কার্য্যা সর্বাগ্যা নমোহস্ততে। এবং বিজ্ঞাপ্য

যে ব্যক্তি প্ৰতিবংশরে এই প্ৰতাপ্তধানে সমর্থ, তাগাকে প্রতিষ্ঠা, কবিতে হয় বা, তাগার প্রত ছালাই সম্পূর্ণতা জানিবে। বত্তিক অফ কিছু বস্তব্য নাই, রামনব্যীপ্রত করিলেই সক্ষ প্রত সাক্ষ করা হয়।

काछ वरमत टेठळमारमत शक्तांभी वाषणीर महत्मारमय समना रनाभ्य कतिर्दा विशास मूर्य मर्कता । भावनाषित्र माम प्राप्ती पिका ना

Cनर्यं ७ अनार्वे अन्मा ह। थाछः सांचा नमस्त्रहा **८** एटर विधियक्कः । शब्दक्षमन् । त्राम्यम् कामणार् श्रुटमांडन् । जन्यगानांत्र छटेज्व श्रुक्तरत्रक्रम्मनानाः নেষ্যামি কামপূজার্থ মিতি সংপ্রার্থ্য তৎ নমেং। উৎ পাট্য পঞ্চাব্যেন প্রোক্ষ্য প্রফাল্যবারিণা। অশেকমূলে नद्यारेनाः चित्त श्रुक्तार क्रमार । चार्माकक छशा কালং বদন্তৎ কামনেব চ। ও সংশাকায় নমস্তভ্যৎ कामञ्जीत्भाकनानन। त्भाकार्त्तिः इत्र त्म निजामानमः कनसम्बद्धाः व्याप्तन शृक्षरयः शूरेल्यूवरणाकः त्नाकना-नामन । उ क्रिंगि कि निभी खंड का निकासी महावन । কালতেহ্বয়বঃ সর্বাৎ ও শ্রৈ কালায়নে নমঃ। খনেন পূজয়েৎ কালমক্ষ্য কলনাত্মকং। ও বসন্তায় নম-স্তভ্যৎ বৃক্ষগুলালতাপ্রিয়। সহস্রেমধননাহ কালরপ নমো-হস্ত তে। বসন্তপুলৈপরমুনা মতুনা কামরূপিণং। ওঁ কাম ভন্ম সমৃস্কুত রতিবাস্পপরিপ্লুত ৷ খা ষণন্ধর্বদেবাদি विस्माहक नेत्रारुख ८७। मरगृहा नमनर भूष्मर भूजारम्य-सूनागृना । ७ नरमाश्च शुक्रावागाय कर्गमाञ्चामकातिरा । সম্মণায় জগরেত্রে রতিপ্রীতি।প্রয়ায তে। দমনং চোপ-जिएकें मद्भगातिन मन्यथर। ममनर जर प्रथक् कृषा ভাগেনৈকেন মন্মধং। পূজ্যেতুক্তমার্গেণ পরিবারদম-বিতং। কামায় নম ইত্যেগ মন্ত্রন্ত প্রধানিকঃ! মন্ত্রে-ণানেন মণনং পুরুষেদ্গদ্ধপুষ্পকৈ:। ধোতেন বাসসাক্ষাদ্য निश्रांत्र अठेटलन टेन । चन्छाश्रक्य मुक्तांतिनाह अगृह. मानहत्र् । देखि गृश्नियम्।

রুল কামদেবায় নমঃ, হী আ রত্যৈ নমোহন্তিতে।

কিন্দু সারাণরীরায়ানঙ্গায় চ নমো নমঃ। ও মন্মথায়
রামায় রুল বসন্তমধায় চ। সারায় চেক্ল্চাপায় পুজ্পাস্রায়েতি প্জয়েং। ও তৎয়রপায় বিদাহে কামদেবায়
ধীমহি। তয়েহনঙ্গ প্রচোদয়াং। ইতি মন্মথগায়ত্যা
সংসন্ত্রাটোতরং শতং। ধূপদীপৈশ্চ নৈবেদ্যৈরুপচারৈঃ
প্রপ্রয়েং। হার্দেন মনুনা পুজাঞ্জালং দহাভিবঃ
লয়েং। নমোহস্ত পুজাবাণায় জগদাহলাদ কারিণে।
মন্মথায় জগমেত্রে য়ভিপ্রিয় নমোহস্ততে। ও আমজি
তোহিদ দেবেশ পুরালপুরুষোত্রম। অভস্তাং পুজয়িঃ
ব্রামি সামিদ্যং কৃষ্ণ কেশব। ক্ষীয়োদধিমহানাগশ্যাবিষ্ঠিবিত্রহ। অভস্তাং পুজয়িয়্যামি সমিধে
ভবতে নমঃ। নিবেদয়ামাহং ভুডাং প্রাজদিমনকং শুহং।

मर्सवा मर्सविव विका नमरछश्य धावी व त्य । है थ्यां मद्या त्वर । प्रका भूणाश्चालः छछ। भूक्रिष्ठः छन्नभ-नक्ष क्रुष्टागाशित मश्चिछ्। अरख्य मर्स्र । तक्ष्य क्रिक्टा निक्ष क्रिक्टा निक्ष क्रिक्टा । तक्ष्य छन्नभरख्य मृह्द्वम भूनाथवा। खाम्नागर । नम्म छ। जीक्रमन-निक्षित्र क्रिक्टा छन्नभाषो धावा । जीक्रमन-निक्षित्र क्रिक्टा क्रिक्टा छन्नभाषा । हिल्ला क्रिक्टा क

প্রাতন দ্বাথ দেবেশং কুর্যাৎ স্থান্থ যথাবিধি। নিত্যপূজাৎ পৃথক ক্বল ক্র্যালৈমিভিকং ততঃ। দমনং मृक्तिया युक्टर शकाकाजमयविकर। क्यमननिर्दारिश-ट्रिनेट्रिन्द्र ममर्भट्यद् । ट्रिन्ट्रिन क्रिमाथ विश्विक्ष्यं-थानात्रक। क्रनि॰ चानि गर्भाखिङ। गर्भ कारभवती थित्र। हेमर मयनकर एमत शृहांग ममञ्जाहार। हेमार नार तर-সরীং পূজা: ভগবন্ পরিপূরয়। মূলসংপুটিভো হোষ বিক্ষমব্যধং। মণিবিজুমমালভিম নারকুল্নাণিভিঃ ৷ ইয়ৎ - সাংবৎসরী পূজা তবাস্ত গরুড়ধ্বজ। বনমালাৎ যথা ट्रिय दर्वाञ्च अञ्चर अति। खन्नमामनकीः मानार পৃজাঞ্চ লদয়ে বহ। জানতা জানতা বাপি কৃতং যাবন্ত। বার্চনং। তৎ দর্বাং পূর্ণতা যাতু ছৎপ্রসাণাৎ রমাপতে। নমন্তে পুণ্ডরীকাক্ষ. নমন্তে বিশ্বভাবন। নমন্তেইস্ত क्वीरकण मश्राभूक्ष शुक्तक। मञ्जरीनर कियारीनः ভिक-दीनर सनार्फन। यद शृक्षिष्ठर मन्ना एम्न श्रित्रपूर्गर छमञ्च त्य। अवर मःश्रीया (मरवमः निभर्कम् मञ्जवस्ति। अधः गर्श्वरत्रम् एका ७ सर् वजानिकां भटेन ह। यहर ध्रा

ভার্চবিষ্কৃ বিপ্রান্ সংছোজা পারয়ে গাদখনেইছং পুণামিত্যাই ভগবান্ শিবঃ। ইতি দমনারোপণং। পারণাহে ন লভ্যেত দাদশীঘটিকাপি চেহ। তদা ত্রমোন্দশী গ্রাহ্যা পবিত্রা দমনার্পণে। মাধ্বেদ্যনারোপঃ স্যান্দ্রাধী বিস্থৃতো যদি। বৈশাধ্যাং প্রাবণে ভাত্রে কর্তব্যং বা তদর্পণং। ইতি চৈত্র ক্ত্যং।

বৈশাথে পৌ গ্ৰাস্যান্ত জলতং জগদীখনং। শুক্লামেকাদশীং যাবৎ প্জয়েত্ প্ৰযক্তঃ। তথাচ গাড়ুরে।
নিঃ ।ক্ষপ্য জলপাত্তে তু মাসে মাধবসঙ্গিতে।
মাধবং যে হচ্চ গ্ৰিষ্যন্তি দেবাত্তে ন নরা ভূবি। স্থাপাত্তে তথা রোপ্যে ভাত্তে বা ম্থায়েহশি বা। ভে: মতং
যে হচ্চ থেদেবং শালগ্রামসমৃত্তবং। প্রতিমাং বা মহাভাগ তস্য পুণ্যমনন্তবং। তত্মাকৈলাঠে সদা ভূপ তোযত্তং প্রয়েছ্রিং। বী তপাপো নরন্তি ঠেল ্যাবদাহ ভ

धारक डाहा ६६ टल खर्यामनीटिंड प्रश्नाद्यां प्रविश्व । खर्थ स्वयं चंडि विकास प्रश्नाद्यां प्रत्यां प्र

বৈশাপ মাসের তক্ত্র পক্ষীয় একাদনী অব্ধি পুর্ণিমা পর্যন্ত ভগবলুর্ত্তি অন মধ্যে রাখিয়া অর্জনা করিবে। গবড় প্রাণে দিখিত আছে যে, বাঁচারা বৈশার্থ মাসে সকল পাত্রে বিফুকে রাখিয়া অর্জনা করিয়া থাকেন তাঁহারা পৃথিবীতে দেবতুল্য। অর্থরীপা, ভাত্র অথবা মৃগ্রন্থাত্রে কলপ্রিয়া ভন্মধ্যে শালগ্রাম চক্র কিংবা অন্যোন্য দেব অভিমা স্থাপিত করিয়া পৃত্রা করিবে অনত প্রা করের। বৈল্লান্ত এইক্রপ করন্ত ভগবানের অর্জনা করিবে।

मःश्लेषर। (छात्रः कानिकिद्रज्ञार्द्रमुक्तमा छात्रमा छू।
भाषामक्ष्र्र भाषा निजाপ्छार ममाभा ह। अखिनामा
नियात्रात्को (नवर नौष्ठा निजामनर। भाषाभागिरः मर्द्र भूका जीर्षर श्लाभा विमर्क्तदार। आष्रानर गृहमात्रा-मीन (जन जीर्षन भारतार। छामभा छ जल ताळा-वर्ष्ट (प्रम् भाकारणां छिन्छः। छामभा भूकदाप्रात्को मनष्द कन्नभाविनर। हिन्द्र विमाध देकार्ष्ट्राताः कृत्वर।

আষাতৃ শুকু বাদশ্যাং ক্ষীরাজিশয়নোৎ সনঃ। কার্যোহন্যথাবেহনার্প্তিঃ দ্যাৎ পৌরাণদ্য বাক্যতঃ। ভবিষ্যে।
মিথুনম্বে দহস্রাংশো স্বাপয়েমধুদূদনং। তুলারাশিৎ
গতে ভিম্মিন্ পুনরুখাপয়েং প্রভুমিতি। গারুড়ে। মিথুন নক্ষে দহস্রাংশো ন স্বাপয়তি যোহরিং। বৈক্ষরৈঃ সহ্
সংভূয়ন্ত্রনার্ফিন্ত চোভনেদিতি। মৈত্রাদ্যপাদে স্বশিতীহ
বিষ্ণু কৈঞ্যামধ্যে পরিবর্ত্তে চা পৌঞ্বিদানে চ

নিত্য পূজা সমাপন কৰিয়া সচলন ভীর্থেনিকপূর্ব পাত্রে শালগাম চক্রাদি বাধিয়া পঞ্চোপচারে পূজা করিবে তৎপত্র ঐ জল দারা গৃহ ও পরিবার বর্গকে পবিত্র কবিবে। গ্রুড়পূরাণে লিখিত আছে, দাদণী দিন রাত্রিতে ভগবানের অর্চনা কবিয়া ভদীয় প্রতিমূর্ত্তি জলময় ব্রিবে।

আষাত মাসের শুক্লা দাদনীতে ভগৰানের শয়নোৎসৰ করিবে, ইছা না কবিলৈ সেই বর্ষে আনার্টি হইবে। ভবিষ্য প্রাণে লিখিও আছে স্থান দেব মিথুন রাশিতে গমন করিলে ভগবানের শ্রনোৎসব কবিয়া স্থাদেব তুলা রাশিস্থ হইলে পর উত্থাপনোৎসব করিবে, ইছা না কবিলে সেই বর্ষে আনার্টি হইবে। নাবামণ দেব অসুরাধা নক্ষত্রের প্রথম পাদে শ্রন কমেন; শ্রবা নক্ষত্রের মধ্যম্ পাদে পার্মণিরিবর্তন ক্রেন এবং বেবংটী নক্ষত্রের

**भ्रतातिहस्रा अदूधारक गांगठवृक्षेतान। ভবিষ্যোক্ত প্রকা**-রেণ প্রোচ্যতে শরনোৎদবঃ। পারণাছে পূর্বারাজী ঘণ্টাণীনু বাদয়ন মুহঃ। বিধায় মহতীৎ পূজাৎ বিষ্থম-चार्क देवकवान्। त्नीनत्वाक श्रकादन उत्प्रकादन बांत्रवर । कर्खवार देवक्कदेवः मदेविः मच्छानात्राज्ञावणः । অভপ্তত্ত্ব ভদা যোহশুতে শ্ৰুছাইন্তৎ সমাসভঃ। ভোরং পবিত্রং বিভতং দিবস্পতের্দিশো বস্তোদ্য তম্ভবে ব্যক্তি রন্ইতি খাখেদৈ। সহোবাচ যাজ্ঞবক্ষ্যঃ তৎ পুমানাত্ম হিভাগ থেকা হরিং ভজেৎ। স্বশোকমোলের্বর্মণোহয়িনা সংখন্ত ইতি শাতাতণী শ্ৰুতি:। এতদিফো অজচক্ৰেযু তণ্ডে লখাস্তোধীন্ তর্ত্বে চর্বনীক্রাঃ। গুলে বাহ্বোর্দ-শভিঃ পুরাণান্যসান্যসে তপ্তায়ুধান্যপরিস্থিতি। সামবেদে। উরুক্রমন্য চিকৈরন্ধিত। লোকে তু স্বভগা ভবেম ইত্যথর্ব-टबन । ज्ञित्हांकः यथानिजार ८वनगांधांग्रन यथा । ব্রাহ্মণদ্য ভথৈবেদ্ৎ ভপ্তচক্রাদিধারণ মিতি। পাছে। শ্রুতিশতৈরুক্ত তুৎপ্রকারঃ প্রভনাতে। বহ্দুচ-পরিলিক্টে চ প্রোক্তোহয়ৎ শৌনকাদিভিঃ। বোড়শোপ-চারৈ র্ভগবন্তং সমভ্যক্ত অক্ষরে পরমে ব্যোমেশং নো-মিত্র শংবরুণ ইত্যেতাভ্যাৎ চক্রং শহুং চাভ্যক্ত যাদ শাক্ষরৎ নহিত জ্জীবায়েজ'ামু প্রথমন্য প্রচেতদমিত্যেতাভ্যাৎ শ্লগাবাদধ্যাৎ বৈখানরদ্য স্যামেত্যগ্রিমুপচারাৎ। পুরুষ স্থাক্তন যোড়শাত্তীত্তা ভগবন্তং পুরুষস্থাক্তন উপ-স্তুত্য পুরতো দদওবমিপতে**ং। অথ হুদর্শন মহা**ভাশঃ मूर्वा द्याष्ट्रिम अध्यः। ज्याकानाम् त्य निष्ठार विक्रुमार्गर

নিদর্শর। ইত্যাদয়:। হুদর্শনায় বিষ্তাহে মহাস্থালায় ধীমহি **छम्र-ह**ज्जः श्रदहानग्रानिष्ठि । हज्ज्यात्रगर । মহাধান ধ্বস্তপাতক সংচয়। পাহি মাং পাপিনং বোরং সংসারাণবিপাতিতং। ইত্যাদয়:। পাঞ্জন্যায় বিয়াই প্ৰমানায় ধীমহি। তত্ৰঃ শ্ৰা প্ৰচোদয়াৎ ইতি শ্ৰাধারণং। য এবং কুক্তে বিহান ত্রাহ্মণঃ প্রোত্তিয়ঃ শুচিঃ। সর্বাদ পাरिनः श्रव्हार्ड विक्रुत्नांकक शष्ट्रि। भग्ननार देवत বোধন্যাং চক্রতীর্থে ভবৈধব চ। শব্দ চক্র বিধানেন বহ্নি-পুতো ভবেমর:। ইতি মুক্রা ধারণ বিধিঃ। নীরাজ্য নবধা (मथा द्वांभा द्वांभर म देवखवः । शीजवानिक ट्वांदव दनवः नीचा जनामग्रर। भूष्पंक्षिन अमाग्राथ यानाकुखांतरग्रद थ्यपूर । जीतिरुख्यिनामि मामाना रखर नरवाभरवनराय**ः।** ধোঁতাজ্মিপাণি রচোত্তঃ কুর্য্যাৎ সকল মাদৃতঃ। ন্যাসৎ ক্ষহাথ দেবে চ স্বর্গধর্মাত্রবাক্যতঃ। তথা পুরুষ সৃষ্টে-নোত্তরনারাগণেনত। পঞ্চায়তেন সংস্থাপ্য সমভ্যক্তি রঘূর্তীমং। তদেবেতি চ মদ্রেণ জলে সংস্থাপয়েৎ প্রভুং। শেষে পর্যান্কবর্ষোহিনা কণামণিগণান্তি ! খেত-ঘীপান্তরে দেব কুরু নিদ্রাৎ নমোহস্ত তে ৷ অথ কৃষা মহাপূজাৎ গদ্ধসাধুপদীপকৈঃ। অন্ন ভান্ধ নৃত্যাদ্যৈ রীশস্যামুগ্রহং হরে:। হুপ্তে ছয়ি জগরাধ জগৎ হুপ্তং खरविष्तरः। विद्रात ह विद्राशंड क्षेत्रसारम खर्गारा । रें जि मः व्यार्था शृह्री वा विवास नियान । त्ये ज्योर प्राणिनात्य বোগিনাথে ছিতে ছায়। চাতুর্গান্ততেহসুজ্ঞাৎ দেছি লক্ষীপতে নমঃ। লকু।কুজাং শন্তহত্তে যথাপ্রোধিত

ভর্কা। চতুরো বার্ষিকান্ মাসান্ রাহ্বোপাপ্নাবাধ।
ইমং করিষ্যে নিয়মং নির্বিদ্ধং ক্রু নেহচুত। ইদং
ত্রেভং ময়া দেব গৃহীতং পুরভন্তব। নির্বিদ্ধাং সিদ্ধিমায়াতু
প্রসাদাতে রমাপতে। গৃহীতেহিম্মন্ ত্রতে দেব পঞ্জহ
যদি মে ভবে ৭। তদা ভবতু সংপূর্ণং প্রসাদাতে রম্বহ।
ইত্যভার্থাথ দেবায় শব্দোনার্ঘ্যং নিবেদয়ে৭। প্রাবিশে বর্জয়ে
শাকং দিধ ভাত্রপদে তথা। ত্রন্ধমায়্মুক্তে মানি কার্ত্রিকে
চামিষং ত্যক্তে৭। প্রান্দচুর্ণং চর্মায়্মুক্তে মানি কার্ত্রিকে
চামিষং ত্যক্তে৭। প্রান্দচুর্ণং চর্মায়্মুক্তে মানি কার্ত্রিকে
চামিষং ত্যক্তে৭। প্রান্দচুর্ণং চর্মায়্মুক্তে মানি কার্ত্রিকে
চামিষং ব্যক্তেশিক্রয়াদ্যং যদ বিষ্যোর্মনিবেদিতং।
দেশ্বের মসুরঞ্চ মাংসঞ্জ্যেক ধামিষং। রুচ্যুং তত্তক্তেশলন্ত্রং ফলমুলাদি বর্জ্জয়েও। নিস্পাধান্যজ্ঞমাষাংশ্রচ
মস্করং সন্ধিজানি চ। বৃস্তাকঞ্চ কল্মীঞ্চ অপ্রে দেবে ন

শেষ পাদে গাজোথান করেন। ভবিষ্য প্রাণ হইতে এই শ্যনোৎস্বের বিধিবিধান সকল উদ্ভূত হইয়াছে মূলে দৃষ্টি করিবেন।

মৃণামুগারে নান। বিধ উপচারে পুঞাদি সমন্ত নির্মাহ করিয়া ভগবানের শরনোংসৰ সমাপনীতে খেতবীপে ভোগীনাথে ইত্যাদি মত্রে চাতুর্মান্ত
লক্তের অম্কা প্রহণ করিয়া বিক্রুব শরন হইতে উথান পর্যন্ত চাতুর্মান্য ব্রত
করিবে। ইমং করিয়ো নিয়মং ইত্যাদি প্রার্থনা মন্ত্রপাঠ করিয়া শত্র পাজে
করেমান করিয়া শাজোক নিয়ম পালন করিবে। প্রারণ মাসে শাক,
ভাজমাসে দ্বি, আখিন মাসে হগ্র এবং কার্ত্তিক মাসে সামিব ভোজন
প্রক্রিভ্যাগ করিবে। শাসুক চুব, চর্ম্ম পাজত্ব কল,কন্ত্রীর (বাতাপীলের্) বীকপ্রক (ভালিম, ভাড়িয়) বজানে ভির অয়াদি, বিক্রুইদ্দেশে অনিবেদিত অয়াদি, দর্ম অয়, মত্রব এবং মান এই সকল জব্য আমিব জানিবে।
ব্যু দেশেন্তব ক্রি জনক ফলম্বাদি পরিভ্যাক্য। নিপাব ক্ষিণ দেশ

ভক্ষেত্র। ইতি স্থাতঃ। চতুর্যণি ছি মানের হবিষ্যাণী

ম পাণভাক্। হৈনজিকং সিভাম্বিনাং ধানাং মুদ্গান্তিকা

যাঃ। কলায় কর্নীবারা বান্তুকং হিলমোচিক।। যক্তিকা
কালশাকক মূলকং কেমুকেতরং। লবণে সৈন্ধবনামুহরাত্রকী। পিপপলী জীরককৈব নাগরাজক তিন্তিরী।
ক্ললী লবণী ধাত্রী ফলান্যগুড়ীবক্ষবং। অতৈলপকং
মুনরে হিবিয়ামং প্রচক্ষতে। অন্যান্যপি পুরাণের ক্রেইব্যাণি ব্রভানি তু। ভতস্ত্রভা চক্রপাণিং রাজন্যাশাদ্য
মঙ্গলং। শন্থতীর্থক সংপ্রাপ্য গীতন্ত্যাদিনা হরিং।
পরিভোষ্যাথ সংপুদ্ধ বৈষ্ণবান্তব্যানকং। ভগবন্তং
স্মারোপ্য গীতবাদিত্রঘোষতঃ। আগত্য মন্দিরে কৃদ্ধা

व्यक्ति निम ( हिम ) क्षणित्मित, त्राव्याय, ( वर्ष्यो व्यक्ति, त्राष्ट्र)
मरूष, मिव ( भागि ) वृद्धाक (वर्ष्ट्या व्यवः कमनो, ( भाकितिस्पर ) अहे
मक्षण क्षया हित्रभवन नमत्य कक्षण किरत्य ना । हिनियन नमत्य व साम नया क्ष हित्रण ( काष्ट्रम किल्पाणी क्ष । हिनिया त्रा । हेटेट्ट्रह, ( हमक सकुछ व चाल्य साम, मूला, जिन, यत, कनाव ( मेठेव व्यक्ट्रिंट्ट्र) क्षण ( कार्याक्रिंग) मीताव ( शाम वित्यस किलोवा शान, ) वाच्यक ( वायुवा भाक ) हिन्द्याहिका, ( हिक्स ) वित्यस किलोवा शान ) कामभाक, ( कार्यानामा ) मून, ( त्रम्क ( वृक्तवित्यस ) हेश्व मूनकिस माधावण मून, तेनक्ष्य, कक्ष्यक, प्रिम, वर्ष्ट्र, सम्बद्ध मावाःस इस, भनम, व्याम, हिन्द्यने, निक्यन क्ष्यक्ति, नागवस, ( क्ष्य व्याक्ति, क्ष्यतित्य) व्यामनकी, हेक्ष्यच्यति व्यक्ति, नागवस, ( क्ष्य व्याक्ति, क्ष्यतित्य) व्यामनकी, हेक्ष्यच्यति व्यक्ति ( क्षिप्त व्यक्ति व्यक्त আবণস্য সিতে পক্ষে ছাদশ্যাং শৌনকাদিভিঃ। উত্তঃ
সদা প্রকর্ত্তবাঃ পবিত্ররোপণে। দেবঃ। ভথাচ বহন্চ-পরিশিক্টে। হুরাতঃ সর্বতীর্থেষ্ সর্বযজ্ঞেষ্ দীক্ষিতঃ।
হরিঃ প্রীতিমবাপ্নোভি যঃ পবিত্রৎ স্মাচরেৎ। বিধিনা শাস্ত্রদ্বৌন যো ন ক্র্যাৎ পবিত্রকং। হরন্তি রাক্ষ্যান্তস্য
বর্ষপূজাদিকং ফল মিতি। পাছো। উর্জে ব্রতং মধ্যে
দোলং প্রাবণে ভন্তরোপণং। চৈত্রে চ দমনারোপ মক্রব্রোণো ব্রন্ধভারঃ। পবিত্রারোপনং বিশ্বাৎ প্রাবণে ন
ভবেদ্ যদি। কার্ত্তিক্যবধি শুরাকে কর্ত্ব্যমিতি নারদঃ।
ইতি পবিত্র নিত্যভা।

পূর্বক গীতবাদ্যাদি ধারা ভগবানের তৃত্তিবর্দ্ধন করিয়া বিধানোক্ত কার্য্য করিবে।

শাবণ মাসের গুক্লাঘাননীতে দৌনকাদি মুনিগণ বর্জ্ ক অভিহিত পবিত্রাবোপণোৎসব করিবে। বহব্চপরিশিষ্টে লিখিড আছে বে, যে ব্যক্তি পবিজ্ঞারোপণোৎসব করিবে তাহার সমস্ত তীর্থসান কম্ম কল এবং সমস্ত বজাহুঠামের কল লাভ হইবে এবং ভগবাস প্রীতি লাভ করিবেন।বে ব্যক্তি বিধানাস্থপারে পবিজ্ঞাবোপণোৎসব না করিবে, রাক্ষসগণ তাহার বংসম্ম কত পুণ্য সমস্ত অপহরণ করিবে। পদ্মপুরাণে লিখিড আছে, কার্তিক মাসে হবিব্যাশন প্রভৃতি ব্রত, হৈরেখানে গোলোৎসব ও দমনারোপণ এবং প্রাবণমাসে তল্পরোপণ না করিবে ভাহার অধংপতন হইবে। নারদ বলিয়াছেন বলি বিশ্বশতঃ প্রাবণ মাসে পবিজ্ঞারোপণ না হম তাহা হইবে

প্রােগ সারাত্ব পতিং পবিত্রদ্য প্রতন্তে। ক্রীয়ান্ বা-হুকিন'মা পৰিজো নাম নাগরাট্। নিরাহারততো 👳 👣 : रिविक्थ भंत्रपार भंजर । जगरस्य माखिला राज्यस्य गरहणतर । धीमन खनमा छमा भूतछोर भूक्रावासम्ब প্রণতার্ভিরঃ শস্তুরাবিরাসীছুমাপতিঃ। প্রদাদাভিমুধৎ मृक्ते। प्रवर मखूर करनभत्रर । क्ष्रीजनगठा शासिर बाख বরমসুত্রমং ৷ তথেত্যাভাষা তৎ তদ্বরমং স্ত্রিপুরাস্তকঃ ৷ প্রাদান্তল্যৈ বরং চান্যৎ পবিত্রায়াত্মবোগিনে। যে ছাৎ न वहमनारस यथामसाविष्ठ। यहा ! स्त्रशामिकः एउदाः ফলং ত্বামেতু নিশ্চয়াং। তত্ত্বৈৰ প্ৰাবণে মাদি নকতে वालि देवकृद्य। एक जमा द्राधग्रस छार निकारेनिकिटका-দ্যতা: ৷ বৈদিকাঃ শক্ত্ৰ হোমেন পূজাৎ কুৰ্বস্ত তে-📭 নখ। ছৎ সাদৃশ্যাসুকারেণ বিনীতেনৈব ভান্তিকাঃ। আরাধ্যারোপ্য পুজ্যারে দেবতায়ৈ পবিত্রক:। নানাগ-ध्याक्रमार्थन जमा कर्तनारजाहारजा दिसरतीभाजाञ्च-

বাস্থ্যকির কনিষ্ঠ পৰিত্র নামক ভ্রম্পরাক্ত দেবপরিমাণের শভবর্ধ পর্যন্ত নিরাহারে মহাদেবের তপজা করিয়া ভগবানের অপ্রসমতা দর্শনে তদীয় ক্ষাভ্রমতা প্রাপ্ত হওয়া বর প্রার্থনা করিছে মহাদেব সম্ভই হইয়া তথান্ত বিদ্যা প্রার্থিত বব প্রদান করিয়া অতিরিক্ত ও বর দিলেন বে, আমি ভোমাকে বেরুপ কঠে ধারণ করিলাম এই কপ যাহারা পবিত্ররূপী ভোমাকে প্রাপ্তঃসর ধারণ না করিবে, তাহাদিগের কপ বক্ষাদির ফল সমস্ত ত্মি ভোগ করিবে। প্রারণ মানে প্রবর্গ নক্ষক মৃক্ত দিবলে শক্ত হায়া হোক্ষ ও অর্জনা হায়া ভোমাকে প্রীত করিয়া পবিত্র রূপী ভোমাকে ধারণ করিবে। পবিত্রারাণগের বিধিবিধান মূলে ক্রইষ্য ।

किरियः मृद्धिः देवीरमञ्जलकार्यः। कृरेमेः करिमेक কার্পাটনঃ ভান্ধন্যা কর্তিতৈত্তথা। কন্যন্না বা পবিত্রং সার পুংশ্চলাদিভিঃ কুডিঃ। স্নাম্বা ত্রিগুণিভং সূত্রং ত্রিগুণীকৃত্য শোধয়েৎ। অভিষিক্ষেৎ পঞ্চাব্যৈরন্তিঃ প্রকালয়েরভঃ। মূলেনাটোতরণতৎ গায়ত্র্যা রামসংজ্ঞা। भाष्योगरक नांकियञ्चा शविद्यांनि वितिर्वित्यः। द्वर्धानशां-कार्विमूर्टेजः १०कशवार क्रमर विद्वः। व्याभाग्र च मधिकारिन्। Cocateिम स्थळममा है। शांत्रजाटक शक्कांताः मखाः স্থাঃ পঞ্গব্যকে। মধুবাতেতি গায়ত্রী ক্রমঃ পঞ্চায়তে তথা। ইতি স্থত্রং। তত্তোত্তমং পবিত্রঞ্ষ ষট্যা সহ শ-. তৈন্ত্ৰিভিঃ। শতৎ বা সহিতৎ দ্বাভ্যাৎ পবিত্ৰং মধ্যমং শ্বতৎ। गांगीजिना मर्लितन कनिर्छर जर मगांहरतर। पर्छा हतर তদর্কেন নবসূত্রীক্রমেণ বা। জানুক্রনাভিপর্যস্তমান্ত্রি ত্তবং ভবেৎ। অফোতরসহত্রেণ বনসালাং সমাচরেৎ। উত্তৰস্য পৰিত্ৰস্য হৈত্বগোনাপি বা ভবেৎ। আরম্য মুকুটং যাবৎ স্থলৈবিরিচতা শুভা। আপাদলন্বিনী মালা বনমালা প্রকীর্তিতা। যজমানপবিত্তং বা ধিবাসন-পবিত্রকং। কনিষ্ঠেন সমং কার্যাৎ মধ্যমেন সমং শুরো:। ষত্রে পবিত্তৎ কুর্বীত মধ্যমেন সমৎ শুভৎ। সাধারণ-পবিত্রাণি ত্রিডিঃ সূত্রৈঃ সমাচরেৎ। উত্তমন্ত শতগ্রন্থি পঞ্চাশদ্প্রন্থি মধ্যমং ৷ কনিষ্ঠন্ত পবিত্রং স্যাৎ ষট্তিং-শদ্প্রস্থিশাভনং। ষট ত্তিংশক চতুর্বিংশ দ্বাদশেতি চ কে **हर्ज्यक्श्ये दान्याकाविष्ठाक मून्द्रा विष्टः।** व्यक्रुष्ठेशक् माज्य क्रान्धिष्ट्रियोडस्म। उन्हर्कन उन् র্কেন, নগানে চ কনিষ্ঠকে। গ্রন্থীন কুর্কিটিত সর্বিত্র প্রকান অধান । ন বৈ বিষমসংখ্যাকান গ্রন্থীন কুর্কিটিত । বিশোভস্ত্রদানেন কর্ত্তঃ স্থাদশুভ্রু ক্রিটিত । বিশোভস্ত্রদানেন কর্ত্তঃ স্থাদশুভ্রু ক্রিটিত পরিয়াভজ্যা তত্যাত কুর্নিত শোভনং। কুরুমং রোচনকৈব কপূরেণ বিমিল্ডিতং। তেন সংরক্ষমের প্রেম্কালর নিমন্তিতং। ততোভিমন্ত্রণং ক্র্যাহ ইদং বিস্কৃত্ব সন্তর্ভা দানশাক্ষমন্ত্রো না সর্বিসাধারণঃ আ্তঃ। বিভিন্তব্দস্ত্রে স্যাত ভ্রেদবাধিবাসিকে। বিস্পাদ্রিভাষ্টিত পরিত্র লক্ষ্ণং।

ত হস্তানি পৰিত্রাণি বৈণবে পটলে শুভে। সংস্থাপ্য শুচিবজ্রেণ পিধায়। পুরত্তো ন্যদেৎ। অর্ত্রিস্ন্মিতাং বেণীং কুর্যাৎ ষট্তিংশত। কুলৈঃ। মন্ত্রেমালমস্ত্রেণ পঞ্চাব্যেন শোধ্যেৎ। তান্ত কক্ষান্তরে কৃত্। সানসং স্নানমাচরেৎ। ততন্ত্র সর্কাতো রক্ষাং কুদ্বাগ্রো হোমমা-রভেং। স্বয়স্ত ভগবংপুরাং মহতীক সমাচরেং। সহস্র কুহুদৈঃ পুল। মহাপুলোত কীৰ্তিতা। মহাসানং প্ৰকৃৰ্বীত উপচারাৎ স্তবৈৰ চ। দেবদ্য পুরতঃ স্থাপ্যং দস্তকাষ্ঠং জলং কুশাঃ। মৃত্তিকাঞ্চ হরিদ্রাঞ্চ কুঠ গোরোচনানি চ। পাছকোপানহো ছত্তৎ চামন্ত্রং ব্যজন স্তথা। ব্রীহ্যাদীনি চ धानानि श्रुतकः यांभरत्रककः। मधन् श्रुनिभारेकन्त रसान रेखर्नानाविरेधत्रि रिविनिकेम्डब्रेशर्पन्व यथावद शक् (वाधरायः । क्रियां माश्रीविधां कार्थः यहा विविधः श्रीकाः । भरेत्रज्द जित्राष्ठ (देव उद पूरेकी शनिवक्र । कर्म निष्त्रा क्टरमञ्ज कूत्र नाथ प्रशं नशी। नर्वश नर्वम विका ( 60 )

মম ছৎ পরমা গভিঃ! উপবাদেন দেব ছাং তোম্মানি জগৎপতে। কামক্রোধাদয়োহপ্যে তে ন মে হার্ত্র তথাভকাঃ। व्यमा थञ्जि (मरवभ यावम्रेव (भविकर निनर। जावखका प्रजा कार्या मर्वमाभा नत्माश्य एक । धवर विकाशा त्मावमा श्वक्रभार्मो अगमा ह । कूर्वी छ देवस्रदेवः मार्कः भविखा-রোপণং হয়ে। কুন্তং পুণাবুনাপুর্য সর্বতোভদ্রকে শুভে। স্থাপয়েৎ পুরতো বিফোস্তত্ত ভূতানি পুলয়েৎ। ওঁদংবং সরস্য যাগস্য পবিত্রীকরণায় ভোঃ। বিফুলোকৎ পরিত,জ্য আগচ্ছেহ নমোহস্ত তে। অনেনাবাহয়েৎ সূত্রং মূলমন্ত্রযুতন চ। উত্তমাদিত্র হং বিদান স্থারেৎ শ্লোকতারং তথা। গুণান বেদতারং চৈবধ্যা-য়ন লোকত্রয়ং তথা। প্রকৃতিং বর্ণপুর্বায়াং সালায়াং निधिनाज्ञिकार। प्रात्नाकर मूक्टो मृत्व धारमञ्जाकर শালিনি। ওঁ সর্বাভরণচিত্রাঙ্গ সর্বদেব নমস্ত। লাবণ্যরূপ বিশ্বাত্মন্ জ্যেষ্ঠসূত্রৎ সমাশ্রয়। ও সর্বলক্ষী কর জীশ সর্বজ্ঞানস্মাত্মত। নির্ভরূপ বিশ্বাত্মধ্য-मृद्ध ममाखा । অভিবেশ জগদ্যোনি পুরুষাত্মন্ দিব-স্পাতে। কনীয়োহে প্রভোদেব তেজদা সূত্রমাশ্রয়। **७** मर्त्वाधात धत्राज्ञल मर्त्वकर्ण श्रद्धाला । मर्त्वधारण्यः শ সুত্রে হস্মিন সামিধ্যৎ কুরু তে নম:। সর্বরত্বোদ্দা-কার অক্ষাণ্ডঅক্ষরে। চিষা। মুক্টোত্তম সর্বাঙ্গ শিরঃ সূত্র ইহেতি ভোঃ। পরতে জগতঃ কর্ত্রি সর্বাণাবণ্য দায়িন। প্রসূত্রে বিভাকল্যাণি সামিখাৎ কুরুতে নমঃ। উত্তমানীনি न वाणि क्यांनालका भागिना। मूनिकिम ब्राह्म कि

প্ৰয়েশ্ৰমন্তে:। বন্ধা বিষ্ণুৰ্থাদেবল্লিভিল্লি দেবতাঃ স্মৃতাঃ। ওঁকার: সোমবহুলী চ জ্রন্মা নাগঃ শশী রবিঃ। निवम्ह वित्य दणवाम्ह नवमृत्वाविदनवजा । किया हाटमी-क्रयो वीता विकासमाश्रताकिक। मनावनी कता करता ৰুক্তিছ। গ্ৰন্থিদেবতাঃ। ধাৰা বাংগামূভীরুত্য গন্ধপুঞ্চাক্ত ভাকুরৈঃ। ধূপদীপারভাক্ষ লৈঃ পবিত্রাণি বুগো যথে। वाथ ८१ व करत विचान शहेन खममूह वः । विकश्चिमान क्रू ८७। तर वशीयाम् नाषाकर। ७ मःवंदमत्क काफ विशेष मर्शूर्कनवाधि यः। পবিত্রারোপণায়ৈতৎ কুরু বহি মতে নমঃ। ও বিফুতেজোদ্ভবং রম্যং স্ক্রিপ।তকনাশনং। দৰ্কাৰাপ্ৰদৎ দেবৎ তবাঙ্গে ধার্যাম্যহং। মূলসংপৃটিতা मुखार मन्त्रांकारम পविज्ञकर। नौवांभरत्रत्वां (पवर। मझनध्यांन श्रृत्वकः। देनावमार विधिवक्रमार छाञ्चनः মমুলেপনং। উপতিঠেততো দেবং জিত্যিতা।দিঙিঃ क्षरितः। माज्ञणीय स्टात्रणांनः तमनत्तवर निमञ्जास्य । छ আমন্ত্রিতোহ'ন দেনেৰ পুরাণপুরুষোত্র । প্রাক্তর । পুরু-রিষ্যামি দারিধ্যৎ কৃক কেশব। ও ক্ষারোদধিমহানাগ-শ্ব্যাব্হিত বিগ্ৰহ। প্ৰাতন্ত্ৰাং পূজ্যিব্যামি সন্নিংগ ভবতে নম: ৷ নিবেদয়াব্যহৎ তুভাৎ প্রতিরেত্থ প্রিকং। नर्वा । नर्वा । विरक्षा नमत्त्र २ इ थाना नरम । निभरजन्त् छव-দ্ধা কিন্তা পুলাঞ্লিৎ পুনঃ। পুলিতান্যথ সূতানি क्छक भूते छः छिङ । अछ्या नर्वरछ। तरकः कवरहेनाव-क्षश्रेष्त्रः । त्राक्षम् वा ठक्रमाञ्जन नृशात्रमं सूनांथवा । खा-আণেভো নসক্তা গুরুপাদে প্রণমা চ। গীতমঙ্গলনি

ঘেরিঃ কুর্যাজ্জাগরণৎ ততঃ। অধিবাসবিদিঃ প্রোক্তর্ কথিতো নারদাদিভিঃ। ইতি পবিজ্ঞাধিবাসনং।

कडः প্রতি: সমুখায় ধ্যাত্বা দেবৎ যথোদিতং। নিত্য পূজাৎ ভতঃ কুহা পৰিত্ৰাণাৎ ভথৈৰ চ। মী-ब्राजरब्रष्ट्रिं चर्ची रेशम जनश्वनिशृक्विकः। खन्ना চ विविदेशः জোতৈ ন'ছা দেবং হ্যার্চিডং। ততো মঙ্গলন-**व्यक्तिः** मञ्जूर्वापि निष्ठनिष्ठ। शक्तपूर्वाकरेज्युक्तः দ্বাদেবায় সূত্রকং। রাম রাম নমস্তভ্যৎ গৃহাণেদং পৰিত্ৰ হং ৷ পৰিত্ৰীকরণাৰ্থায় বৰ্ষপূজাফলপ্ৰদং ৷ পৰি-অকং কুরুষাদ্য যন্মা ছফ্কতং কুতং। শুদ্ধো ভবামাহং দেব ত্রংপ্রাণাৎ স্থরেখর। মূলদংপুটিতো হোষ পবি-ত্রারোপণে মসুঃ। অঙ্গাদ্যার্ভিদেবেভ্য স্ততো দদ্যাৎ 'धनामां । रेनरनगुरु महाभूर्वा ७८७। ननाम मक्टिन्ड। নীরাজয়েততো দেবং রমাকান্তং প্রমঙ্গল: 1 সংবীজ্য চামরৈঃ পুলার্দপণং দর্শয়েততঃ। বিবিধানি চ পুস্পাণি দদ্যাৎ পুষ্পাঞ্জলিং তথা। প্রার্থয়েদেবদেবেশং মন্ত্রৈ-রেভির্থাবিধি ৷ মণিবিজুম্মালাভিম কারকুস্কুমাদিভিঃ ৷ ইয়ং সাংবৎসরী পূজা তবাস্ত গরু ধ্ধার। বন্মালাং যথাদেৰ কোন্তভং বহদে হৃদি। তৰৎ পৰিত্ৰসূত্ৰস্ত পূজাঞ হাণ্যে বহ। জারুতা জানতা বাপি ন কুতং যত্ত-খাঁচ নং। কেনচিছিপ্রদোষেণ পরিপূর্ণৎ তদ্স্ত মে। मखरीनर कियारीनर जिल्होनर बनार्फन। यर श्रिकंडर ময়া দেব পরিপূর্ণ তদস্ত মে। অপরাধ সহস্রাণ ক্রিয়স্তে-হহনি শং ময়া। দাসো হহমিতি মাৎ মৃত্য কমৰ মধু-.

সূদন। নিপত্য দশুবস্তুমো ভক্তিযুক্তেন চেতসা। প্রাণমে-टक्त वर्ष दिन्द सामिकि विषय । उन्न अभिकृति । उन्न अभिकृति मन्त्राम् श्रद्धानिशृद्धिकः। व्यदेशनः शृक्षद्यम् छङ्का वर्षवद्धाः मूर्लभटेनः। बाक्रागान् देव क्यार्टेन्हच शक्तभून्भाषिमाः क्र (त्र । ज्या थाजायरत्रजार क्र वञ्चाजाम काक्रेनः। মাসং পক্ষমহোরাত্রং তিরাএৎ বাথ ধার্যেৎ। তদেব সূত্রৎ मन्तर्छः दिनकानविवक्या। প্রত্যহং স্থানকার্যাদৌ সূত্রাস্থান্তার্য ধারহে । অভিষিচ্যাথ ভোয়েন পুনদেবে निर्वाकरत्रः। व्यथारच दन्त्रमञ्ज्ञि विरम्धाः श्रुष्टान्मरेनः। रेनरवनाः विविधर मचा ७७६ म खर विमर्ब्हरप्रर । उ गाःतदमत्रीर भुजाः भुजार गरभागः विभिन्मम। खटक मानीर भविज्ञ । वर्षे विकृत्नांकर विमार्क्किं । यावरम्दव পবিত্রাণি তাবভিষ্ঠেৎ সমাহিতঃ। ত্রন্মচারী হবিষ্যাশী দেবপুছা পরায়ণঃ। পবিত্তারোপণং কর্ম ন করোভি কথঞ্চন। ভদাযুতং জপেমন্ত্রং স্তোত্রং বাণি সমাচরেৎ। ইভি खांवन कडार।

শথ ভাত্রপদে শুক্রদাদশ্যাং কর্ণিকোৎসবং। কর্ত্তব্যো বৈক্ষবৈঃ সার্দ্ধং শয়নোৎসববদ্ধরেঃ। তথাচ ভবিষ্যো-তবে। প্রাপ্তে ভাত্রপদে মাসি একাদশ্যাৎ সিতেইহনি। কটদানং ভবেদিফো মহাপাত কনাশনং। শয়নোৎসব্মী-

ভাজমাসের গুক্লপকীয় ধাদশীতে বৈক্ষবগণের সহিত বিক্ষুব শরনোৎ-সবের ন্যায় কর্ণিকোৎসব করিবে। ভবিষ্যান্তবে কিঞ্ছিত আছে, জাক্র-মাসের শুক্লাএকাদশীতে বটদান ক্রিলে নহাপাতক বিনাশ হয়। শয়-নোৎসবোক্ত বিধানাত্ত্বাবে দেবভাকে ক্যাশর স্মীপে নিয়া ক্টদানের ত্যাতু দেবং নীয়া জলাশায়ং। কটদানোৎসবং কুর্বেইতি সকল্য পূজ্মেছ। দেবদেব জগনাথ যোগিগম্য নির প্রন। কটদানং করোম্যদ্য প্রাপ্তে ভাত্রপদে শুভে। অনেন কর্ণিকার্ভিং দক্ষিণাদি প্রকল্পয়েং। মহাপূজাং ভতঃ কৃষ্য পূর্ববং স্বগৃহং ব্রজেং। ইতি কটদা-নোংসবঃ।

আখিনস্য সিতেপকে দশম্যাং বিজ্ঞাৎদবঃ। কর্ত্ব্যঃ
সঞ্জনৈঃ দার্জং দর্বত্ত বিজয়ার্থিভিঃ। হুসুমন্ত্রাক্য মাকণ্য
দৃষ্টেতি জনকাত্মজা। আনন্দপুর্ণঃ কপিভির্বিজ্ঞাপিত
মুপন্থিতং। রথমারোপ্য দেবেশং দর্ববালক্ষার ভূষিতং।
সাদিত্ব ধুসুর্বাণপাণিং নক্তঞ্চরান্তকং। স্থলীলয়া জ্বঃ
ভাতু মাভিভূতিমজং বিভূং। রথৈরখৈগজৈঃ পদ্তিঃ
স্থানিক্সনাদিভিঃ। মুতং রাজোপচারৈন্তং শমীং প্রতি
সমানয়েং। শমীবিষ্ণ চর্কং কুর্বে ইতি সঙ্কল্য পুরুয়েং।
বিষ্ণুণর্মোক্তমার্গেন যাত্রানির্বিল্পন্ত্রে। শমীযুক্তং

সঙ্গল করিয়া দক্ষিণার সহিত কটদান কবিঃ। নানাবিধ উপচারে মহাপ্তা স্মাপিয়া পুর্কনিয়মে গৃহে শাতা করিবে।

আখিন মাদের গুক্লণক্ষীর দশমী তিথিতে বছুগণের সহিত বিষয়েংসব করিলে সর্বর্জিই জয়লাভ হয়। স্থানি, লক্ষণ ও হম্মান্ প্রভৃত্তির
সহিত ধম্বাণধানী র্যুনাথকে শমীবৃক্ষ সমাপে নিয়া শমীবৃক্ষ ও ভগবানের
পূজাব সহলক্ষিয়া নানাবিধ রাজোপচার্যারা শমীবৃক্ষের সহিত রামভজ্জের
পূজা এবং শমী শম্বভেপাপং ইত্যাদি সুলোক্ত প্রার্থনা মন্ত্রপঠি করিয়া আভগত
ভুলের সহিত সজল শমীমূলত মৃক্তিকা লইয়া সীত্রালা প্রংসর সেবভাকে

त्रोकारु ककानामव्यक्तर । अरु विका भगावन महा-য়েচ্ছ ভতঃ পুনঃ। শমা শময়তে পাপং শমী লোহিছ কণ্টকী। ধরিত্রার্জন বাণানাং রাম্ন্য প্রিয়বাদিনী। করিষ্যমাণ্যাক্রায়া বথাকালং হুখং মরা। ভত্ত নিবিশ্ব-কৰ্মী হং ভব জীৱান পুলিতে। গৃহীয়া সাক্ষতাং সাদেছি मबीगुनगंडार प्रर । भाजवानिखनिर्दारेय छाजा तनवर शृंदः नरम् । देवां भ्रम् देका ख्या खरा देवां भ्रम् खरा ख वानरेतः। रेकन्ठिकक्यूरेथर्जगुर रकामाललमा पूकेरवा নির্জিতা রাক্ষ্যা দৈত্যা বৈরিণো জগতাতলে। রামরাজ্যং রামরাজ্যৎ রামরাজ্যমিতি ত্রবন। আনয়েৎ স্থাপয়েৎ স্তঃ দিব্যসিৎহাসনে বিভূথ। ততো নীরাজ্য দেবেশং প্রণমে फ्छन् पूर्व। (मरवाशकुक बळामि धात्रदश् खकरेन: বিহ। ইভি বিষ্ণুধর্মোক্তাখিন কুত্যং।

चाबरें ज्ञाकानगीर खङ्गार कार्जिकमा ह जागतर । श्राट्यांसा দেবং কুৰ্বতি ক্ষলবাক্যাদ ছিজোত্ম। জাগরং কা-र्खिटक मानि यः कटवाका ऋट्नानंद्य । नाटमानबाटक विदश्रहरू

शृद्ध निया शांतिल कृतिर्व। खीत्रामहास्त्रत मस्होर्थ क्वर वानत, क्र्या ভল্ক, কেহবা রক্তমুপ ইভ্যাদি নানাবিধ বেশ ধারণ করিয়া জগতের শক্ত দানৰ ও ৰাক্ষসকূল প্রাজিত হুইল সংগ্রতি রাম রাজ্য রাম রাজ্য রাম बाबा हेडापि विवश बीबनाए कबिटन । अछः भन्न आत्रिक अधनाम किन्नी সিংহাসনোপরি দেবতাকে স্থাপিত করিয়া বন্ধবনের সহিত দেবোপভূকা चलानि थावन कविद्व ।

কার্ত্তিক মালের ওক্লাএকাশনী হইতে জাগরণোৎসর ক্রিয়া ভগবান্কে खादाधिक क्रिया कार्बिक्मारम बागत्रन खक क्रिया महत्व श्रीमारनम क्न नाष्ठ इस । कार्खिकमाध्य नक्तानमात्र छन्। निर्दारन नानावित्र

গোদংঅফ্লং লভেও ৷ কার্তিকে পশ্চিমে বামে ভরং গীতং করে।তি ষঃ ৷ বদেতু স চ বৈকৃঠে পিতৃভিঃ সহ ৰাবদ। ন করোভি চ যোমুদ্র কার্তিকে রাতিকাপরং। म यां जि नुबक्र (धातः इंकि शास्त्र मगीविकः। नीताः জ্যোশং ততঃ আছাৎ বিধিবজুকলৈ হরে:। ত্রতকরেৎ उथा किकिए लिएबार्क्स हिमानकः। अवत्तर करण्य, यख মাসং দামোদরপ্রিয়ৎ ৷ তির্গা যোনিমবাপোভীত্যাদি শয়লোক প্রকারেণ রথমারোপ্য মাধবং। বিধায় মহতীং পূজাং বিফোরভাচ্চ বিকাবান্। বাদ্যঘোষণ সহতা দেবং নীত্ব। জলাশয়ং। ধৌতাজ্মিপাণিঃ কুৰ্ববীত সঙ্কয়া देवकरेवः मह। अवर श्वन विभिक्तांशर द्यापिनांत्रिमितां-পতেঃ। কুর্বে প্রবেধ্যথবা বরাহোক্ত।ন্ মন্ন্ন্রেশেৎ ত্রক্ষেক্তক্রামি কুবের সূর্য্য সোমাদিভিক্রিক্তি পাঠ পীঠঃ। व्याख (मरवर्ग कर्गावराम मुख क्षेत्रांत्र स्थान (मर्व।

ন্তব ও গান করিলে পিত্রোকের সহিত বৈকুঠগানে বসতি হয়। প্রপুরারে লিখিত আছে বে ব্যক্তি কার্ত্তিক মাসে রাজিলাগরণ না করিবে
ভাহাতে অবেগানী হইতে হইবে। আর্তির পর বিধানাস্থ্যারে দ্বান করিতে হর। কার্ত্তিক মাসের মাহাত্মা অবগত হইরা ক্রতান্ত্রীন করিবে।
কোনও ব্রও না করিরা ভগবানের প্রিয় কার্ত্তিক মাস, অভিবাহিত করিবে।
তিবাগবোনিস্থাতি হয়। কার্তিকের জ্রপক্ষে প্রমোক্ত নির্মেষ্ণ স্থাতিক ধরিব করিবা ভগবানতে বরে স্থাণিত করিরা বৈক্ষৰ স্থানের সহিত্তি
বিক্র প্রধান পুলা সমাপিরা হাত্যক্ষিনি পুরংসর শেষতাকে জলাপর স্থীবেণ

हेत्रस चामनी दमवथदगंशां विनिर्धित। इदेशव मर्द्धन লোকানাং হিতার্থং শেষণাযিনা। ছয়ি ছাওে জগয়াৰ জগৎত্ত্তং ভবেদিদং। উথিতে চেউতে সর্ব মৃতিষ্ঠো-विष्ठं माध्रव । हेमः विक्रुवत्मनाच ब्रह्माछणाभाष्य अकृ । हित्रणा गर्छ हेिक ह लाकाभनाः भरहेदशा गायबीर বৈষ্ণবং সূক্তৎ যতো দেবা অবস্থিত। উভিষ্ঠোতিষ্ঠ দেবেশ যোগনিতাং বিহায চ। অনেন সকুনোখাপঃ पछीवानिखनिखरिनः। छोत् ममूलरवरणानः महासूश्रह-মর্থরেং। যোহদাবমূত্র করুণো ভণবান্ প্রবৃদ্ধ প্রেমশ্ম-তেন ন্যনাত্মকহং বিজ্ঞন্। উপায় বিশ্বিজয়ায় চ নো বিষাদং সাধ্ব্যা শিবাপন্যতাং পুরুষঃ পুরাণঃ ! ইতি भूक्षाञ्जनिर मन्त्रां म्ङ्गांधर्नगर स्था श्रांभारम् । श्रांभारम् ঘবং পঞ্চামুতৈঃ পুক্ৰদ্কুতঃ। নীরাজ্য মন্ত্রং বিনাস্য বক্তালকাবচক্ষরে। অণ্ধুপদীপ দিব্যায়তাম্ব লৈ স্থোষ্থেৎ প্রভূং। এবং কৃষা মহাপ্রাং গৃহীয়া সাক্ষতং জলং। প্রতিমাদব্রভাক্মক। রাঘবায় নিবেদথেও। অনুষ্ঠিতৈ-ম্যা নানা চাতুষ্ণারতৈঃ প্রভুঃ। প্রভূতপাতক্ল্যান্তো র'প্র প্রায়তাং নম। এবং ব্রতান্রপায়ত্বা স্তবীত প্রমাণ

বাধিকা সহায় কবিরা ব্বাছোক মাস্ত ভাগানকে প্র বাধিত কবিবে এবং অক্সেরালানি ইত্যাদি প্রাণনামন্ত্র পাঠ কবিবে। অভংগর প্রপাস্থিতি প্রাদান পূর্বাক অপন্ধবোদাক সক্ত হল করিয়া প্রাণ্যুত প্রভূতি দাবা প্রকৃষ্ঠ পাঠ পূর্বাক দান করাইরা বস্ত্রালহাগদি না- বিব উপচাবে মহা প্রদা স্বাশিখা অক্সভানিত্রিত হল লইয়া হাত্তি ন বা নানা ইত্যাদি

मृडः । व्याजिक्क डा (वनविना (जागामीनः त्रमानिकः) ক্ষমজ্যেত্যাদি বেদস্ততিঃ। স্বস্তাস্ত বিশ্বন্য থলু প্রসীদতাং ধ্যায়ন্তি ভূতানি শিবং মিথে। ধিয়া। মনশ্চ ভত্তং ভন্নতা মধোক্ষকে আবেশ্যতাং নো মাতরপ্যহেতৃকী। ইত্যাশিষঃ সমভ্যর্থ্য গীতবাদ্য জয়ম্বনৈঃ। রথমারোপ-त्य्रण् विकृष कर्नानांनन्त्रम्य मूद्यः। तथात्राष्ट्र महावित्यको মে কুৰ্বন্তি জয়স্বনং। পূজাং বাখিলপাপেভ্যো মূতা যান্তি হরে: পদং। যুক্তঃ শিষ্যাদিবগৈন রকভশয়নাৎ কিঞ্চিনী জালমালা রত্নৌঘি মৌ জিকানা মবিরতমণিভিঙ সংহতৈশ্চৈব হারে:। হৈনৈঃ কুজৈঃ পতাকাসি চৃতরক্ক-চিভিভূষিতঃ কেতুমুথ্যৈ শছতৈ রক্ষেণবন্দা স্ত্রিতহরি हरेमः পाजू रेक्डरेज बरेथर्वाः। भनायथ्वः भनामथ्वः ८ तदन দিতিজ দানবাঃ। সৎরক্ষণায শোকানাৎ রথারত। নৃ-কেশরী। ইত্যাদি বিফু ধর্মোক্ত মধ্য়ৈ সম্ভোষ্য সাদরং। প্রদাদনালাৎ নৃহরেগৃহ্বাযাদ্ভকিভাবিত:। জয় জয় महारमव रमवरमवाधिरलयत। धत रमणाथिल विश्व तक

मा हार्ज्यामा खण्ण ममर्गन करिया। नानाविष ख्व नार्ध भृत्तक व्यानिकांत खरूष करिया गीण्यामा खरूषिन भृत्यम कर्णवानाक वर्णका करिया। महाप्त कर्णवानाक वर्णका करिया। महाप्त महाप्त महाप्त करिया। क्ष्मिन वर्णका कर्णका करिया। करिया मा व्याप करिया मा वर्णका करिया। करिया करिया मा वर्णका करिया मा वर्णका करिया मा वर्णका करिया करिय

রক্ষ রমাণতে ৷ নৃতিভাব্বালৈগোগাবতৈ ঘটাবালা कत्रवंतिः। চালয়েৎ मान्यतः विस्थाः পুরমধ্যে मृत्रवा व्यथमाकर्षनः পृत्रिर পুत्रत्छ। देवजा नाग्नकः। उठः स्त्राः निक मःचा मृनिभक्ष वी नानवा । यावर भवानि कृष्णमा तथ-স্যাকর্ষণং নরঃ। করোতু ক্রতুভিস্তানি তুল্যানি নর-নায়কঃ। রথেন সহ গচ্ছন্তি পুরতঃ পৃষ্ঠতো ঘতঃ। মহাবিষ্ণুদমা ব্যেতে ভবস্তাজ্মিত্তবা অপি। 🖲 কৃষ্ণরণ-শোভাং যে প্রকৃষ্বস্তি বদস্তি চ। জয়েতি চ পুনর্বে বৈ তেষাৎ লোকাঃ দনাতনাঃ। রথস্থিতো নরৈ র্যস্ত পূজিতো মধুদূদনঃ। দদাতি বাঞ্চিতং তেধাং অস্তেচ পরমাং গতিং। (नानांग्रमानः (गांविन्तः मकन्दः मधुनुमनः। त्रथयः वागनर मृष्ट्री शूनक्ष्या न विमादछ। त्रथयर दय न शब्द खम्मागर बनार्कनः। विश्वा द्वतिविष्ट स्थि বিজেয়াঃ শ্বপচাধমাঃ। মেষাৎ গৃহাগতো যাতি রথন্তঃ শ্রীনৃকেশরী। পূজা তৈত্তৈঃ প্রকর্ত্তব্যা বিত্তশাচ্য বিব-ৰ্জ্জিতিঃ। অনন্চিতে। যদা যাতি প্ৰমাদাৎ স্বগৃহান্ধরিঃ।

শোভা সম্পাদন কবিলে লোকে প্রাধান্ত পদ শাভ হয়। বগরিত নারারণের অর্চনা করিলে অভাইফল ও অন্তেতে. সদ্গতি লাভ হয়। দোলাতে বিরাজমান এবং রথস্থ মধুস্থনকে দর্শন করিলে পুনর্জন্ম হয় না। বাহারা রণারড় হইয়া প্রমণকানী মুরারির অনুগমন না করেন ভাহারা বেদক্ত প্রাহ্মণ ইইলে ও চণ্ডাল হইতে অধ্যা। রথারড় ভগবান বাহার বাটাতে উপস্থিত ইইবেন ভাহাকেই বিভামুসারে ভদীর অর্চনা করিতে হইবে। যদি প্রমন্দত কাহারও গৃহে রব্ডারী হরি পুরিত না হয়েন ভবে ভাহার প্রক্তি ভারীয় পিতৃলোক বিমুধ হন। স্ত্রীবোকেণা রপোৎসব করিয়া মুর্জি

পিতরস্থা বিশ্বধা যাবৎ সংবৎসরং নৃপ। ব্রিয়েছিপি
মৃক্তিমারান্তি রথবাত্তাপরারণাং। নীরাজনেন গীতেন
জামতে মণ্ডলেশরং। রথোৎসবস্য মাহায়্যং, কলোনিতস্তে হি যঃ। সশৈল নেশস্যাত্যা তেন দতা বহুদ্ধরা।
ইতি পদ্মপুরাণোক্ত্যা ভাময়িকা রথং গৃহং। গতা নীরাদ্ধ্য দেবেশং শ্য়াত রাঘ্বং স্মরন্। ইতি রথোৎস্বঃ।

পৌর্ণমাদ্যান্ত সন্ধ্যায়াং কর্ত্তব্য ক্রৈপুরে। কোটা: পভঙ্গা দদ্যাদনেন মন্ত্রেণ স্থলীপাংশ্চ স্থরালয়ে। কটা: পভঙ্গা মধকাশ্চ্রকো জলস্থলে যে বিচরন্তি জীবাঃ। দৃন্টা প্র-দাপং ন চ জন্ম ভাগিনো ভবন্তি নিত্যং শ্বসচাশ্চ বিপ্রা:। ইতি ক্রেপুরোৎ দবঃ। ইতি কার্ত্তি চ ক্রত্যং।

মার্গশীর্ষে একভক্তৎ কৃষা যোহভ্যঠারে দ্ধরিং। ভোজ-মিছা, দ্বিজামুকঃ স্যাদিত্যাহ কলিপ্রিয়ং। নক্তৎ ব্রতেন যো মাসংমার্গশীর্ষং হরিপ্রিয়ং। নয়েদসৌ নরো যাতি বিষ্ণু-লোকং সনাতনং। ইতি বিষ্ণু ধর্মোত্তরে মার্গশীর্ষকতাং।

পদ লাভ করিবে। সংগাত ও নীরাজনা দ পুনংসব রথোৎসব করিলে সমস্ত পৃথিবীর অধিপতিত্ব লাভ হয়। যে বাজি কলিকালে রথোৎসব মাহাত্ম্য প্রকাশ ববিবে, সে শতপূর্ণা অরণাপর্বত সহিত পৃথিবীদানেব ফল লাভ করিবে । অনস্তর রথারাড় ভণবানকে অমণ করাইখা আনিয়া নীরাজনা সমাপিয়া রামকে অরণ করতঃ শয়ন করিবে। সংগাৎসব।

কার্তিক মাসের পূর্ণিমতে সন্ধার সময়ে ত্রৈপুরেৎস্ব করিছে কয়। উক্ত দিবসে কীটা পতকা ইওাদি মত্তে দেবালয়ে প্রাদাপদান করিবে।

রারদ বলিয়াছেন বে, অতাধারণ মাসে একাছার করিয়া বিষ্ণুক। পুংঃসুর আদ্বণণকে ভোলন ক্রাইলে মুক্তিলভি হয়। যে বাজি

পোষত্রকাদশীং ভ্রামার্ডা ছতিলেশয়ঃ। নাস माज्य ब्रघुश्रीरेष्ठा विनातः स्नानमाहरत्यः। जिकान-মর্চয়েদ্রামং ত্যক্তভোগে। কিতেন্দ্রিয়: । মাঘ্যা দাদী ख्या यावर भूगकन था। माममर्दर छमर्दर वा मणाहर वा जमक्र कर्। कृश याजि रूद्धः ज्ञानर शृजार मरस्या-দনোৎসবং। বিফোনিবিদিতানেন থফীগ্যং দেবতান্তরং 1 পিতৃত্যশ্চাপি তদ্বেরং তদানন্তায় কল্লাতে। পিতৃশেষঞ যো দণ্যান্বরয়ে পরমাত্মনে। বেভোধাঃ পিতরস্তস্য ভব্ন্তি ক্লেশভাগিনঃ ৷ নৃত্যাদিগীতৈভ ক্লেণ্চ দধিভক্তং नगर नरसरा वर्णीयदा र दो छक्ता धनानमानस्य बढि । যঃ প্রদানং হরেউক্ত্যা গৃহাতি প্রদাতি চ। বৈষ্ঠবিঃ দার্ধি দোহনম্ভ ফলমশ্বতে। মহাপ্রদাদ ইত্যুক্ত। धारामक्षाना वृदेग्ध। शारमामकक निर्मानार रेनरनमुक विटमघन् । देनि परधारनवः। माघ भावताः क्रुपः।

ভিপোষ্য পোর্ণমান্যান্ত কর। চ দোলিকোৎসবং। বসন্তার্চ্চাং প্রকৃষ্ণীত পরমানন্দরপিণঃ। প্রভাতে বি-

রাঝিতেমার ভোজন করত ভগবং প্রিয় অগ্রহারণ মাস অভিবাহিত করিবে সে বিফুলোকে গমস করিবে।

পৌষমাসের গুরুপকীয় একদশী হইতে মাঘের গুরুল দাদশী পর্যায় কুশশবাতে শয়ন ও তৃইবার সান করতঃ তিকালে রামচক্রের পূজা করিবে। মাস, মাসার্দ্ধ, তদর্দ্ধ, দশদিন অথবা তদর্দ্ধ দবস ও বদি সানঃ করত দ্বি ও তভুল দ্বারা বিফুপুলা করে ভাগ হইলে অনন্ত পুণা করে। বিফুটদেশে নিবেদিত অয়াদি দ্বারা অভ দেবতার ও পিত্লেকির অর্চনা করিলে অনত কল লাভ হর। পিত্লোকের ভোজাবিশিষ্ট বৃত্ত দ্বারা বিকুর অর্চনা করিলে পিতৃ দেবতা সকল সাভিশয় ক্লেশা

মনে জাতে প্রতিপদ্ধান্ধরোদয়ে। কুষা চাবশ্যকং কর্ম

গংপুজ্য পিত্দেবভাঃ। বন্দরে দোলিকাং ভূমিং নর্বভূফোপশান্তরে। বন্দিতাদি ভ্রেন্দ্রেণ অন্দাণ শকরেণ চ।
আতস্ত্রং পাহি ভূতেভাো ভূয়োভূতিপ্রদো ভব।
প্রতির্বিষ্ঠাময়ে রমণং রমায়া অভ্যক্ত চন্দ্রন্দান মৃত্রু
প্রাণীতবিনাদন্তীয়। মতিতে চিচ্চিতে ভদ্ধ উপলিপ্তে গৃহাজিরে। মণ্ডলং কার্যেং শ্রেষ্ঠং বর্ণ কৈ: সাক্রিঃ ভিল্প। তন্মধ্যে ভাপরেং পীঠং ভ্রেনাদেশ্রুণং
ভাং। অগ্রতঃ পূর্বক্লমং ভাপয়েং প্রতির্বৃত্য। আসনে
চোপবিউদ্য অন্দোষেণ ভাবত। অভিনেদঃ প্রকৃত্যঃ
সভূর্বিন্দ্র প্রবিষ্ট মুন্ত্র্মণ্য বসন্তর্ভব পল্বাং।
সং প্রাণ্যামি ভ্রণদ মাযুবারোগ্যান্ধনং। যে পিবন্তি বস-

মুভব কৰেন। নৃত্যগীভাদি পুৰংসর দধি ও অন্ন বিফুকে নিশাদন কবিষা বৈক্ষরগণেব সভিভ প্রেনাদ গ্রহণ কবিৰে। বিফুব প্রসাদ গুলা অনস্ত ফল ক্ষেম্যা মধাপ্রসাদ এই বলিয়া অঞ্চল দ্বায়া নিব্দা, নিম্মাল্য ও পাদোদক গুছণ কবিৰে।

ক'ত্বৰ মাসে পূৰ্ণিমাতে দোলোৎসৰ কহিবে। প্ৰতিপদিবনে স্থাধিরে নিতাকল ও পিতৃ দেবতা পূৰা সমাপিলা ৰন্দিভাসি কবে জেব ইত্যাদি বাছ দোলমঞ্চের নমস্বার পূর্বক লন্দ্রীনাবারণেব পূজা করিয়া সচন্দন আত্রপালর ও আত্রমুকুল নিবেদন করত বিবিধ নৃত্যাদ দারা ভগবানেব সভোব ক্ষাভাবে। অন্তর্ম গোমহোপলিগু পবিত্র গৃহাহিভাগে নানাবিধ বকি ছারা সগুল করিয়া ভত্পরি আ্ফ্রপর্ন ও ব্যুগ্গ ভূষিত বল্য স্থাপিত করিয়া আস্নাক্ষত হইয়া বেদ্যাহে চুক্ত-

ভাগে চ্তপুষ্পং স্চলনং। স্মাক্ ছদিছকাৰ্দ্য পুআত্তে ক্ৰিতে জনাং। অনন্তরং বিজেন্তাণাং দ্তমাগর্ধ
বিদিনাং। দদ্যাদানং যথাশক্তা কামাত্মা প্রীয়তামিতি বি
ততো ভোজনবেশারাং শৃতং প্রাণেব তদিনে। প্রাণারে
প্রথমং চারং ততো ভূঞীত বাগ্যতং। রুপ্র
ক্সান্তদা চৈব প্রবিরভিষেচ্যেং। এবং যঃ ক্রেভেগ্
পার্থ শাস্ত্রোক্তং ফান্তগেং স্বং। মং প্রসাদান্ত সিধ্যন্তি
তদ্য দর্বে মনোর্থাঃ। ব্রত্তে ত্যারসময়ে দিতপঞ্চদশ্যাং
প্রতিক্রিনন্তদ্যময়ে সম্প্রিতে চ। সংপ্রাণ্য চ্তক্ত্মং
সহ চল্লনেন স্ত্রং হি পার্থ প্রক্ষোহক্ষণতং হাথী স্থাং।
ইতি ভবিষ্যোত্রের বসভোৎস্বঃ। ফ দ্ভান কৃত্যং।

অধিনাদে তু সংপ্রাপ্তে শ্বরা সীতাপতিং ইরিং। ত্বর্ণং চাজ্যসংযুক্তৎ ভক্ত্যা ত্রিংশদপূপকং। দদ্যার্চ্চ বেদ-বিভূষে প্রোতিয়ায় কুটুসিনে। নশ্যত্যকরণে শীত্রং পুশ্যং ভাদশবর্ষজং। ইতি ভবিষ্যোক্তরে অধিমাদ কুত্যং।

পরব ও দ্রাদি দারা অভিবেক করিবে। এইদিনে সচলান চ্তকুত্ম ভক্ষণ ও দবিদ্র দিগকে যথাশক্তি দান করিতে হরা অনন্তর আহা-রের সময় উপস্থিত হইলে বিষ্ণুটদেশে নিবেদিত পক্ষারাদি ভোজন করিয়া বুজ্জনল দারা অভিষিক্ত হইবে। জগবান অর্জুনের অভি বলিরাছেন যে, বেগার্থা যে ব্যক্তি শাল্লাহ্লারে ফ:ন্ত:গাংলব করিবে ভাগার সকল মনোরথ পূর্ণ হইবে। আর বসস্ত সময়ে পূর্ণিমা দিব্দ লাত:গালে চলানমিন্তি আন মুকুল ভোজন করিলে শতবর্ষ পর্যাক্ত ক্ষ্মী হইবে।

অধিমাদ (মলমাদ) উপস্থিত হুইলে বিষ্ণুপ্ৰাপুৰ্দ্দ বিংশত পরি-

ভাগশহপি মানের পক্ষয়েক ভবোরপি। নিভ্যোৎসনঃ
প্রকর্ত্তন্য একাদশ্যাঞ্চ জাগরঃ। দশন্যাৎ প্রাভক্ষার
কৃতসন্ধ্যাদিকো এতা। দেবাচ্চনিক্রেয়াৎ কৃষা ক্র্যাৎ
সঙ্গলাদৃতঃ। দশনীদিনমারভ্য করিয়ে চ্ছং এতত্তব ।
ক্রিদিনং দেবদেবেশ নির্কির্থ ক্রুক কেশব। ইত্যচার্যাপর্যেৎ পূজাঞ্জলিৎ জ্বীবামপাদ্যাঃ। শন্ধোদকেন সঙ্গ্য
প্রন্মেদশুবদ্বিভূথ। ইতি দশনী কৃত্যং।

একাদশ্যাঞ্চ পর্ণাদৈয়নি বিত্যি দম্ভবাবনং। স্নাহা দেবাক্রনং করা প্রভাসকল্পমাচরেং। একাদশ্যাং নিরাহাবঃ
হিরাহমপরে হহনি। ভোক্ষোহহং পুঞ্নীকাক্ষ শ্বণং
মে ভবাব্যয়। ইতি চাঞ্জলিপাজেণাপ্যেদ্দেবলবাক্যভঃ।
গৃহীছৌভূম্বং পাজেং বারিপূর্ণমূদ্তমুখঃ। উপবাদং গৃহীছাথ সন্ত্রপূতং কলং পিবেং। ইত্যেকাদশী সক্ষয়ঃ।

্মিত পিষ্টক বেদজ বাক্ষণকে ও আত্মীর বাক্তিকে দান কবিবে। এই কার্য্য না করিলে তাদশবৎসরের উপার্জ্জিত পুণ্য অচিবে বিনষ্ট হয়।

প্রতিমাসের উভয়পক্ষীর একাদশীতে আগরণ করিবা নিত্যাংসব কবিবে। দশমী দিন প্রতিঃকালে নিত্যক্তব্য দেবার্চনাদি সমাপন পূক্ষক সহজ্প কবিয়া দশমী দিনমাব্দ্য ইত্যাদি ময়ে রাম পাদপল্লে পূজাঞ্জি প্রদান করিয়া দশুব্দ প্রথম করিবে।

একাদশী দিন পঞাৰি দাবা দক্ষণাবন পৰ্ক্ষক স্নানও ও নিতাকক্ষ স্মাপিয়া, একাদশী দিবসে নিবাহাবে থাকিয়া প্ৰাণিয়ন ভোজন কবিৰে ইজ্যাকার সহল করিয়া মন্ত্ৰপুত জলপান বৰিবে। উত্তৰ মুধ হহা অলপুণ ত মণাম অঞ্জলিতে লইবা সহল ক্রিডে চর। কৃষা ছাবশ্যকৎ সর্বাৎ ভাদশ্যাৎ ব্রতমর্গরেৎ। অজ্ঞান-তিমিরান্ধদ্য ব্রতেনানেন কেশব। প্রদীদ স্মুথো নাথ জ্ঞানদৃষ্টিপ্রদো ভব। ছাদশী সক্ষরঃ।

ভবিস্যোক্ত প্রকারেণ কুর্যাদ্ বৈ কৈলিনং ব্রহং ।
প্রদিদ্ধরার দক্ষাভির্দিধানং ন প্রপঞ্চিতং। কৃষ্ণ জন্মাউনী
মুখা ধর্মাণামাগনোদিতা। তত্ত্বাজ্ বিজ্ঞেয়া বৈক্ষবা
বৈক্ষবোত্তৈঃ। প্রদিদ্ধর স্বভাগিতেঃ।
প্রশিক্ষর স্থান্থাহিপ্রসিদ্ধর বিস্তরঃ। চৈত্রাদিকে
ক্রেছিক্যাভির্দিধ ন্দ্রেশ হুট্রে।

## **ब**ध शीतांग कवहर ।

ধ্যাদ্যা নীলেং পলপানে রামং রাজীবলোচনং। জানকী
নক্ষাণোপেতং জটানুকুটমন্তি হং। সানি হৃণধনু ব্বাণপাণিং
নক্তপরাস্তকং। স্থলী লয়া জগজ্ঞানু মানি স্কৃতিমজং বিভুং।
নামরক্ষাং পঠেং প্রাক্তঃ পাপদ্মীং স্বিকামদাং। জ্ঞা শ্রিরাসক্রচন্য বুদকে বিক খানিগায় ইতিহলঃ জ্ঞারাসচন্তো দেবতা ইন্রাসচন্দ্র হাতিহং জপে বিনিয়োগং। ওঁ শিরো নি লালেও দিয়ু সানি নাম্যান্য স্থানি বিদ্যানি বিশ্বি

গাদশী দিবদে অজ্ঞানতিমিরাক্ষ্য ইত্যাদি মৃ:লাকু মৃত্র ব্রত স্মৃতি। ক্রিল। পাবেশা কবিবে।

শ্রীক্ষের জরাউনী প্রভৃতি অনেক ২ বিষয় অন্তোল্প পুরেছ বিজ্ঞাক কপে লিশিত দেখিলা এই গুমু ফন্য গাঙের মালিবিত বিষধ সকল কাপ্রিক হটল।

সৌমিতিবংসলঃ। জিহ্বাং বিদ্যানিধিঃ পাতু কঠং ভরত: বন্দিতঃ। স্বন্ধৌ দিব্যায়ুধঃ পাতৃ ভূজো ভয়েশকাৰ্দ্মুকঃ। করৌ দী তাপতিঃ পাতু ছদয়ং জামদয়াজিং। বকঃ পাতু কবন্ধারি স্তনৌ গীর্কাণবন্দিতঃ। পাখৌ কুলপতিঃ পাতু কুক নিজ্যকুনক্নঃ। মধ্যৎ পাতৃ ধরধ্বংদী নাভিং জাঘু বদাঞ্জঃ। তহাৎ ক্রিভেন্ডিয়ঃ পাতু পৃষ্ঠৎ পাতু রঘুত্তমঃ। হুগ্রীবেশঃ কটীং পাতু সক্থিনী হনুমৎপ্রভুঃ। উর রঘূত্তমঃ পাতু রক্ষঃকুল বিনাশ কৃৎ। জানুনী দেতুকুৎ পাতু জ্ঞে দশমুখান্তকঃ। পাদে বিভীনণ দ্রীদঃ পাতু त्रारमार्थिन र वर्षः। এउरः त्रागवरनारभेडार वक्षार यः সুক্তী পঠেং। স চিরাগুঃ স্থী পুত্রী বিজয়ী বিনয়ী ভবেং। পাতালভূধরবেরামচারিণশ্ছমচারিণঃ। न দ্রেট্মিপি শক্তান্তে রকিতৎ রামনামহিঃ। রামেতি রামভদ্রেতি রামচল্রেতি বা সারন্। নরো ন লিপ্যতে পাপৈভুতিং মুক্তিঞ বিন্দতি। জগজ্জৈতৈকমন্ত্রেণ রামনান্নাভির্দিকতং। যঃ করে ধারয়েত্র করন্থাঃ সর্কাসদ্ধয়ঃ। ভূর্জনতে ত্রিমাং বিদ্যাৎ সন্ধচন্দনচর্চিতাং। কৃষা বৈ ধারয়েদ্ যস্ত সোহভীষ্টং ফলমাপ্রুয়াৎ। কাকবন্ধ্যা চ যা নারী মৃতবৎসা চ যা ভবেৎ। বহুপত্যা জীববৎদা সাভবেশ্বাত্তসংশয়ঃ। বজ্রপঞ্জর না মেদং যো রামকবচং পঠেং। অব্যাহতাজ্ঞঃ সর্বত্ত লভতে জয়মঙ্গলং। আদিউবান্ যথা স্থার রামরকা মিমাং হরিঃ। তথা লিখিতবান্ প্রাতঃ প্রবুদ্ধো বৃদ্ধ কৌ-শিকঃ। ধন্মিনৌ বদ্ধনিস্তিংশো কাকপক্ষরৌ শুভৌ। বীরৌ মাং পথি রক্ষেতাং তাবুভৌ রামলক্ষণো। তরুণো

क्रभ मन्नाको छक्यादो यश्वती। भूखतीक विभागादको চীর ক্রফাজিনাম্বরৌ। ফলগ্লাশিনো দাস্তো তাপদো এক্স-চারিণো। পুত্রৌ দশরথদ্যৈতো ভাতরো রামলক্ষণো। শ্রণ্যে দক্ষরানাৎ ভোঠো দক্ষতুমতাং। রক্ষঃকুল নিহন্তারো তায়েতাং বো ব্যুত্তমো। আত্সক্ষাধমুষাবিষু অপুণা বক্ষা শুগনিষক্ষসিনো, রক্ষণায় মুম রামলক্ষ্মণা বগ্ৰতঃ পৰি দৰৈৰ গচ্ছতাং। সমন্ত্ৰঃ কৰচী খড়গী চাপৰাৰ. ধরো মুবা। যচহন্ মনোরথঞাস্মান্রামঃ পাতু দলক্ষণঃ। অএভস্ত নৃশিংহোমে পৃষ্ঠতো গরুড়ধারঃ। পার্যমাস্ত ধরুত্র কুনারে রাগলক্ষাণো। রামো দাশরণিঃ শুরো লক্ষণাসুচরো বলী। কাকুৎস্থ: পুরুষ, পূর্ণ: কৌশলেয়ে। রঘু खगः। (वनाखरवरमा। यरळवाः श्रुतान श्रूकरवा हमः। ज्ञानकौ-বল্ভঃ শ্রীমান অপ্রেরণরাক্ম:। দক্ষিণে লক্ষাণে ধরী বামে চ জানকী শুভা। পুরতো মারুতির্বন্য তং ন্মামি রঘূত্র । আপদানপহন্তারং দাতাংং দক্তি দম্পদাং। গুণাভিরামং জীরামং ভূয়ো ভূয়ো নমাম্যহং। এতানি यम नामानि मसुरक्ता यः मना भर्छ । अधरमधामुख्य भूगुर স প্রাংগতি ন সংশয়ঃ। ইতি পদাপুরাণে বজ্রপঞ্জরং নাম জীরাস ক্বচং স্মাপ্ত । ওঁতৎস্থ। ওঁ যুদক্র মিত্যাদি চ शर्भ ।

ন কামতাপো ন তমোহস্তি মে যতঃ প্রকাশিতা তে-হচ্চন চন্দ্রিকেরং। তুইো ভব বং স্কৃতেন কর্মণা তমা-সমাস্যাং প্রভুরামচন্দ্র। ১। রামোহস্মীত্যবিপদ্ধীর্বিরতং দাংং ভজে প্রদাধে যান্তামেণ বিমুক্তমেতদ্খিলং রামায় প্রপ্রের। রামদেতদভিন্ননের চরিতং রামদা কো বিদ্যুত রামে দ্র্বিদং বিলায়ত ইতো হে বান নামু দ্বা কার্মণ্ডং দশককরো রলপতেঃ সংলাক ও মেথিলা দাভূত্বক বিভাস্থো বহুবিধা স্বেহ্ণ পুনর্মান্ত । সানিত্রং হলুমানুপৈতৃ।পক্তং দেবা বিশ্বোগং পিতা কোপানুগ্রহ-স্বাধ্ববিদ্যুপি প্রোভিন্ত দেবা বিশ্বোগং পিতা কোপানুগ্রহ-স্বাধ্ববিদ্যুপি প্রোভিন্ত দেবা বিশ্বোগং পিতা কোপানুগ্রহ-স্বাধ্ববিদ্যুপি প্রোভিন্ত দেবা বিশ্বোগ্রহ । স্থান দ্বাবাননা কপেশান্তা শারামচন্দ্রাক্র করিকেরং। স্থান দ্বাবাননা কপ্রভানেহ্যিদেহাল্যন্ শ্রোম্বাহ্রাল্যি মুল্প্রদাদাং। প্রকার্ পঞ্চিত্র প্রোভ্রান্ত শ্রিরাম্বাহিক কা। সানন্দ্রন্থারা হি

ইতি শ্রম্থ পর্মহংস পরিরাজকাচ্ধ্য লীগেল্সক্লান উন্চৰণ শিস্মানকাৰন বিল্লচিতাশাং উরোমা-ফনিচাল বামা পঞ্জঃ পটলং স্যাপ্তঃ স্মাধ্যাহেম জন্ধঃ

e die pre

## বিজ্ঞাপন।

नित्र निविज्ञ भूखक मकन ६ चकास मानाविक गर्म भूखक, माहेक, म्एन केमसाम ६ क्रमह गाउँ। भूषक मकन विक्रवार्थ श्रष्टक चार्फ, मूना मह गर्स निविद्याचे व्यास हरेदान। चर्डात मह कि, गि, ग्लाट्डेड गाउँ। महा

পুস্তক		মূল)	1	elesias f
ণ্ডিও বাৰ্যশিক্ষার সহজ উপায়	***	3	P+1	10
ঐ ২য়, দেন্তাৰ শিক্ষা	***	~	1	100 4
थे ७॥, त्वहामा ७ हाइमनिय	म निका	3,	***	1.
हासनागात खर्ख क्या	• • •	h'o	***	14
ভূৰত্ব উপস্থাস	••	> •	***	ofe H
স্চিত্ৰ আরব্য উপস্থাস		34	••	10
ঐ পাবস্ত উপত্তাস		24	4.0	34
ले धनाधिक मध्य दिवन	***	3	•••	40
স্বাস্থ্যাদ বৃহৎ তর্ত্তাৰ	•	Ji.	• •	.j.
खे रह, थेख		51.		40
ঐ কামৰূপ তশ্ৰ	*10	4.	***	40
্র সর্বাসিদ্ধ মণ শন্ত্র	• •	10	***	620
खे अवन विका अत्वासम्	***	34	3 10	1.
भाषाचाम वृष्ट अप्रमात		81	• •	fa.
প্রাণডোবিণী জন্ম	244	8	***	14
<b>শান্ত্ৰাদ বে</b> রও সংহিতা	***	310	4 44	1.
ঐ শিংস-ছিডা	•••	510	***	j.
ঐ বট টকা (সচিত্ৰ)	***	3/	***	4.
ঐ ভীৰ্থ ভৱান্দৰী	4.0	780	***	14
পৰীক্ষিত মৃষ্টিযোগ	***	21.	•	10
রদেশ সারস্তাহ	•	242	•	4
সাহবাদ সটক নিশান	• •	3/	•	1.
সহজ প্ৰনা	• •	Ħ	**	(2. I
महिन्द भो जाना नगना	***	# D	•	<2 °
সামবাদ স্থতিসর্মশ্ব সংগ্রহ	**	*1	• •	to c
সাহবাদ শিবণীভা	•	214		10
खनकव्हमाना ( ) भ शत्र अवस्य )	***	-10	***	10
मामयाना	***	ia	•	14
गाभवार वागार्कन इक्षिका	•••	31	***	Jo
किय्दान	_			10
) मः গर्यापग्रही होते, क्रिकाछ।।	Į	<b>A</b> 41-4		
नामाधनी श्वकानम्।	<b>S</b>	এ)গ	वेषहर्ख <b>(</b>	याय ।